ॐ अर्ह

जिनागम-ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क २९

[परमश्रद्धेय गुरुदेव पूज्य श्रीजोरावरमलजी महाराज की पुण्य-स्मृति मे आयोजित]

श्रुतस्थविरप्रणीत उपाङ्गसूत्रद्वय

सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति

[मूलपाठ, प्रस्तावना तथा परिशिष्ट युक्त]

प्रेरणा ☐
(स्व) उपप्रवर्तक शासनसेवी स्वामी श्री व्रजलालजी महाराज

आद्यसंयोजक तथा प्रधान सम्पादक ☐
(स्व०) युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी महाराज 'मधुकर'

सम्पादक ☐
मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'

मुख्य सम्पादक ☐
स्व प शोभाचन्द्र भारिल्ल

प्रकाशक ☐
श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राजस्थान)

☐ निर्देशन
अध्यात्मयोगिनी महासती साध्वी श्री उमरावकुंवरजी 'अर्चना'

☐ सम्पादकमण्डल
अनुयोगप्रवर्तक मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'
आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री
श्री रतनमुनि

☐ सम्प्रेरक
मुनि श्री विनयकुमार 'भीम'

☐ द्वितीय संस्करण
वीरनिर्वाण संवत् २५२२
विक्रम संवत् २०५२
जून, १९९५

☐ प्रकाशक
श्री आगम प्रकाशन समिति,
श्री ब्रज-मधुकर स्मृति भवन
पीपलिया बाजार, ब्यावर (राजस्थान)
ब्यावर—३०५९०१
फोन ५००८७

☐ मुद्रक
सतीशचन्द्र शुक्ल
वैदिक यन्त्रालय,
केसरगंज, अजमेर—३०५००१

☐ मूल्य ३५/-) रुपये 65/-

Published on the Holy Remembrance occasion
of
Rev Guru Shri Joravarmalji Maharaj

Sūryaprajnapti—Chandraprajnapti

[Original Text, Introduction and Appendices]



Inspiring Soul

Up-pravartaka Shasansevi (Late) Swami Shri Brijlalji Maharaj



Convener & Founder Editor

(Late) Yuvacharya Shri Mishrimalji Maharaj 'Madhukar'



Editor

Muni Shri Kanhaiyalalji 'Kamal'



Chief Editor

(Late) Pt Shobhachandra Bharilla



Publishers

Shri Agam Prakashan Samiti
Beawar (Raj)

Jinagam Granthmala Publication No 29

☐ **Direction**

Sadhvi Shri Umravkunwarji 'Archana'

☐ **Board of Editors**

Anuyogapravartaka Muni Shri Kanhaiyalalji 'Kamal'
Acharya Shri Devendra Muni Shastri
Shri Ratan Muni

☐ **Promotor**

Munishri Vinayakumar 'Bhima'

☐ **Second Edition**

Vir-Nirvana Samvat 2522
Vikram Samvat 2052,
June, 1995

☐ **Publisher**

Shri Agam Prakashan Samiti,
Shri Brij Madhukar Smriti Bhawan
Pipaliya Bazar, Beawar (Raj) [India]
Pin—305 901
Phone 50087

☐ **Printer**

Satish Chandra Shukla
Vedic Yantralaya
Kesarganj, Ajmer

☐ Price Rs. 50/- [illegible] 65/-

प्रकाशकीय

श्री जिनागम ग्रन्थमाला के २९वें ग्रन्थाङ्क का द्वितीय संस्करण आगमप्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इसमें सूर्यप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति दो आगमों का समावेश किया गया है। दोनों का एक साथ मुद्रण कराने का हेतु क्या है, इस विषय में आगम-अनुयोग-प्रवर्तक मुनि श्री कन्हैयालालजी म 'कमल' ने अपने सम्पादकीय में विस्तृत चर्चा की है, अतएव यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

प्रस्तुत दोनों आगम मूलपाठ एवं परिशिष्ट आदि के साथ ही प्रकाशित किये जा रहे हैं। अर्थ-विवेचन आदि नहीं दिये गये हैं। इसका कारण यह है कि इनमें आए कतिपय पाठों और उनके अर्थ में मतैक्य नहीं हो सका है। इसके अतिरिक्त इनका विषय ज्योतिष है जो सर्वसाधारण के लिए दुरूह है। इस विषय की चर्चा भी सम्पादकीय में की गई है।

प्रस्तुत प्रकाशन के अनेक आगम कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में निर्धारित किये गए हैं। अतएव यह आवश्यक समझा गया कि इनकी उपलब्धि निरन्तर बनी रहे। इस कारण समस्त आगमों में जिनकी प्रतियाँ समाप्त हो रही हैं, उनके द्वितीय संस्करण प्रकाशित करा दिए गए हैं।

सन्तोष का विषय है कि ग्रन्थमाला के इन प्रकाशनों का समाज एवं विद्वद्वर्ग ने पर्याप्त आदर किया है। आशा है भविष्य में इनका और अधिक प्रचार-प्रसार होगा और श्री आगम प्रकाशन समिति का प्रयास अधिक सफल और सुफलप्रदायक सिद्ध होगा।

अन्त में आगम-अनुयोग के विशाल कार्य में व्यस्त होते हुए भी मुनिश्री कन्हैयालालजी म 'कमल' ने मूलपाठ का सम्पादन कर व डाक्टर श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी ने महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना लिखकर जो सहयोग प्रदान किया उसके लिए आदरपूर्वक आभार मानते हैं। साथ ही स्व प शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने इसका आद्योपान्त अवलोकन किया एवं सहयोगी कार्यकर्त्ताओं से सहयोग प्राप्त हुआ तदर्थ उनके भी हम आभारी हैं।

निवेदक

रतनचंद मोदी	अमरचन्द मोदी	सायरमल चोरडिया
कार्यवाहक अध्यक्ष	मंत्री	महामंत्री

श्री आगम प्रकाशन-समिति ब्यावर

उदार सहयोगी परिचय

सेठ श्री किशनलालजी बैताला

सेठ श्री किशनलालजी बैताला निष्ठावान धर्मप्रेमी एवं उदारमना श्रावक हैं। आप में समाजसेवा की विशेष भावना शुरू से रही है। आपका जीवन मानवीय सद्‌गुणों से ओत-प्रोत रहा है। सेवा और परोपकार-वृत्ति आपके कण-कण में बसी हुई है। आप श्वे० स्था० समाज की अनेकानेक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

आपने अपने पुरुषार्थ बल से विपुल लक्ष्मी का उपार्जन किया और पवित्र मानवीय भावना से ओत-प्रोत होकर धर्म तथा समाज की सेवा के लिए उस लक्ष्मी का सदुपयोग भी किया। शिक्षा एवं साहित्य-प्रचार में आपकी एवं आपके समस्त परिवार की विशेष रुचि प्रारम्भ से ही रही है।

आपके पिता पू० श्री पूनमचंद जी बैताला एवं माता श्रीमती राजीबाई बैताला बहुत ही शांत, धर्मशील एवं संतमुनिराजों की सेवा करने में तत्पर रहते थे।

आपके चार भ्राता हैं—सर्वश्री दुलीचंदजी, माणकचंदजी मदनलालजी एवं कंवरलालजी। सभी बंधु उद्योग एवं व्यवसाय में कुशल, वैभव-संपन्न एवं धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में तन-मन धन से सहयोग करते रहे हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी बैताला बड़ी सुशीला, सेवाभावी, धर्मशीला नारी हैं। आपके चार पुत्र हैं—सर्वश्री प्रकाशचंदजी श्रीचंदजी, प्रेमचंदजी एवं राजेन्द्रजी।

मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कथामालाओं के प्रकाशन में भी आपके परिवार का काफी योगदान रहा है।

आप पूज्य स्वामीजी श्री हजारीमलजी म० सा०, श्री ब्रजलालजी म० सा० एवं पूज्य युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म० सा० तथा पू० महासती श्री उमरावकुंवरजी म० सा० 'अर्चना' के प्रति अत्यधिक भक्ति, निष्ठा एवं आदर भावना रखते हैं।

आपने इस ग्रंथ के प्रकाशन में श्री आ० प्र० स० को अपना महत्त्वपूर्ण हार्दिक सहयोग प्रदान किया है एतदर्थ समिति आपकी आभारी है एवं अपेक्षा रखती है कि भविष्य में भी आपका इसी प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

मन्त्री
श्री आगम प्रकाशन-समिति, ब्यावर

सम्पादकीय

ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति अर्थात् चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति

[प्रथम संस्करण से]

सूर्यप्रज्ञप्ति के सूत्रपाठ

पूर्व प्रकाशित सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रों से प्रस्तुत सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्र यदि अक्षरशः मिलाना चाहेंगे तो नहीं मिलेंगे। क्योंकि इस संस्करण के सूत्रों को कई पूरक वाक्यों से पूरित किया है, फिर भी सूत्रपाठों की प्रामाणिकता यथावत् है।

आगमों के विशेषज्ञ ही सूत्रपाठों की व्यवस्था व औचित्य को समझ सकेंगे।

सामान्य अन्तर के अतिरिक्त चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति सर्वथा समान हैं, इसलिए एक के परिचय से दोनों का परिचय स्वतः हो जाता है।

उपांगद्वय परिचय

संकलनकर्ता द्वारा निर्धारित नाम—ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति है।

प्रारम्भ में संयुक्त प्रचलित नाम—चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति रहा होगा। बाद में उपांगद्वय के रूप में विभाजित नाम—चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति हो गये हैं, जो अभी प्रचलित हैं।

प्रत्येक प्रज्ञप्ति में बीस प्राभृत हैं और प्रत्येक प्रज्ञप्ति में १०८ सूत्र हैं।

तृतीय प्राभृत से नवम प्राभृत पर्यन्त अर्थात् सात प्राभृतों में और ग्यारहवें प्राभृत से बीसवें प्राभृत पर्यन्त अर्थात् दस प्राभृतों में "प्राभृत-प्राभृत" नहीं हैं।

केवल प्रथम, द्वितीय और दसवें प्राभृत में "प्राभृत-प्राभृत" हैं।

संयुक्त संख्या के अनुसार सतरह प्राभृतों में प्राभृत प्राभृत नहीं हैं। केवल तीन प्राभृतों में प्राभृत प्राभृत हैं।

उपलब्ध चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति का विषयानुक्रम वर्गीकृत नहीं है। यदि इनके विकीर्ण विषयों का वर्गीकरण किया जाए तो जिज्ञासु जगत अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकता है।

वर्गीकृत विषयानुक्रम

चन्द्रप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा—

१ चन्द्र का विस्तृत स्वरूप
२ चन्द्र का सूर्य से संयोग
३ चन्द्र का ग्रहों से संयोग
४ चन्द्र का नक्षत्रों से संयोग
५ चन्द्र का ताराओं से संयोग

सूर्यप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा—

१ सूर्य का विस्तृत स्वरूप
२ सूर्य का चन्द्र से संयोग
३ सूर्य का ग्रहों से संयोग
४ सूर्य का नक्षत्रों से संयोग
५ सूर्य का ताराओं से संयोग
१ चन्द्र, सूर्य के संयुक्त सूत्र
२ चन्द्र, सूर्य, ग्रह के संयुक्त सूत्र
३ चन्द्र, सूर्य ग्रह नक्षत्र के संयुक्त सूत्र
४ चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, ताराओं के संयुक्त सूत्र

१ ग्रहों के सूत्र
२ नक्षत्रों के सूत्र
३ ताराओं के सूत्र
१ काल के भेद प्रभेद
२ अहोरात्र के सूत्र
३ संवत्सर के सूत्र
४ औपमिक काल के सूत्र
५ काल और क्षेत्र के सूत्र

दोनों प्रज्ञप्तियों की निर्युक्ति आदि व्याख्याएं

द्वादश उपांगों के वर्तमान मान्य क्रम में चन्द्रप्रज्ञप्ति छठा और सूर्यप्रज्ञप्ति सातवां उपांग है—इसलिए आचार्य मलयगिरि ने पहले चन्द्रप्रज्ञप्ति की वृत्ति और बाद में सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति रची होगी।

यदि आचार्य मलयगिरिकृत चन्द्रप्रज्ञप्ति वृत्ति कहीं से उपलब्ध है तो उसका प्रकाशन हुआ है या नहीं? या अन्य किसी के द्वारा की गई नियुक्ति, चूर्णि या टीका प्रकाशित हो तो अन्वेषणीय है।

आचार्य मलयगिरि ने सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति में लिखा है—सूर्यप्रज्ञप्तिनियुक्ति नष्ट हो गई है[1] अतः गुरु कृपा से वृत्ति की रचना कर रहा हूं।[2]

नामकरण और विभाजन

सभी अंग-उपांगों के आदि या अन्त में कहीं न कहीं उनके नाम उपलब्ध हैं किन्तु इन दोनों उपांगों की उत्थानिका या उपसंहार में चन्द्रप्रज्ञप्ति या सूर्यप्रज्ञप्ति का नाम क्यों नहीं है? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

दो उपांगों के रूप में इनका विभाजन कब और क्यों हुआ? यह शोध का विषय है।

ग्रह, नक्षत्र, तारा ज्योतिष्क देव हैं—इनके इन्द्र हैं चन्द्र-सूर्य—ये दोनों ज्योतिषगणराज हैं।

उत्थानिका और उपसंहार में गद्य-पद्य सूत्रों में "ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति" नाम ही उपलब्ध है किन्तु इस नाम से ये उपांग प्रख्यात न होकर चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति नाम से प्रख्यात हुए हैं।

"ज्योतिष-राज प्रज्ञप्ति" का संकलनकर्ता ग्रन्थ के प्रारम्भ में "ज्योतिष गण राज प्रज्ञप्ति" इस एक नाम से की गई स्वतन्त्र संकलित कृति को ही कहने की प्रतिज्ञा करता है।

इसका प्रमाणित आधार चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी हुई तृतीय और चतुर्थ गाथा है।[3]

---

१ अस्या निर्युक्तिरभूत्, पूर्वं श्री भद्रबाहुसूरिकृता।
कलिदोषात् साऽनेशद् व्याचक्षे केवलं सूत्रम्॥

२ सूर्यप्रज्ञप्तिमहं गुरूपदेशानुसारतः किंचित्।
विवृणोमि यथाशक्ति स्पष्टं स्वपरावबोधाय॥ —सूर्य० प्र० वृत्ति० प्र० १

३ गाहाओ—फुड-वियड-पागडत्थं, वुच्छं पुव्वसुय-सार-णिस्संदं॥
सुहुमं गणिणोवइट्ठं जोइसगणराय-पण्णत्तिं॥३॥
नामेण इंदभूइत्ति गोयमो वंदिऊण तिविहेणं॥
पुच्छइ जिणवरवसहं जोइसरायस्स पण्णत्तिं॥४॥

इसी प्रकार चन्द्र और सूर्य प्रज्ञप्ति के अन्त में दी हुई प्रशस्ति-गाथाओं में से प्रथम गाथा[1] के दो पदों में संकलनकर्ता ने कहा है—"इस भगवती ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का मैंने उत्कीर्तन किया है।"

इस ग्रन्थ के रचयिता ने कहीं यह नहीं कहा कि "मैं चन्द्रप्रज्ञप्ति या सूर्यप्रज्ञप्ति का कथन करूंगा," किन्तु "ज्योतिष राज-प्रज्ञप्ति" यही एक नाम इसके रचयिता ने स्पष्ट कहा है, इस सन्दर्भ में यह प्रमाण पर्याप्त है।

यह उपांग एक उपांग के रूप में कब माना गया? और इसके दो अध्ययनों अथवा दो श्रुतस्कन्धों को दो उपांगों के रूप में कब से मान लिया गया? ऐतिहासिक प्रमाण के अभाव में क्या कहा जाय।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के संकलनकर्ता

प्रश्न उठता है—"ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति" के संकलनकर्त्ता कौन थे?

इस प्रश्न का निश्चित समाधान सम्भव नहीं है, क्योंकि संकलनकर्ता का नाम कहीं उपलब्ध नहीं है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति को कइयों ने गणधरकृत लिखा है। सम्भव है इसका आधार चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ की चतुर्थ गाथा[2] को मान लिया गया है। किन्तु इस गाथा से गौतम गणधरकृत है, यह कैसे सिद्ध हो सकता है?

इसके संकलनकर्ता बाद पूर्वधर या श्रुतधर स्थविर हैं, जो यह कह रहे हैं कि "इन्द्रभूति" नाम के गौतम गणधर भगवान् महावीर को तीन योग से वन्दना करके "ज्योतिष राज प्रज्ञप्ति" के सम्बन्ध में पूछते हैं।

इस गाथा में "पुच्छइ" क्रिया का प्रयोग अन्य किसी संकलनकर्ता ने किया है।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का संकलनकाल

भगवान् महावीर और नियुक्तिकार श्री भद्रबाहुसूरि—इन दोनों के बीच का समय इस ग्रन्थराज का संकलन काल कहा जा सकता है क्योंकि भद्रबाहुसूरिकृत "सूर्यप्रज्ञप्ति की नियुक्ति" वृत्तिकार आचार्य मलयगिरि के पूर्व ही नष्ट हो गई थी ऐसा वे सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्ति में स्वयं लिखते हैं।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति एक स्वतन्त्र कृति है

संकलनकर्ता चन्द्रप्रज्ञप्ति की द्वितीय गाथा[3] में पाँच पदों को वन्दन करता है और तृतीय गाथा[4] में वह कहता है कि पूर्वश्रुत का सार निष्यन्द-झरना रूप स्फुट विकट सूक्ष्म गणित को प्रकट करने के लिए "ज्योतिष-गण-राज-प्रज्ञप्ति" को कहूँगा। इससे स्पष्ट ध्वनित होता है—यह एक स्वतन्त्र कृति है।

---

१ गाहा—इय एस पागडत्था अभव्वजणहियय दुल्लभा इणमो।
उक्कित्तिया भगवती, जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥१॥

२ नामेण इंदभूइत्ति, गोयमो वंदिऊण तिविहेण।
पुच्छइ जिणवरवसहं, जोइसरायस्स पण्णत्ति ॥४॥

३ नमिऊण सुर-असुर गरुल-भुयगपरिवंदिए गयकिलेसे।
अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहू य ॥२॥

४ फुड-वियड पागडत्थं, वुच्छं पुव्वसुय सारणिस्संद।
सुहुम गणिणोवइट्ठं जोइसगणराय-पण्णत्ति ॥३॥

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ में "ता" का प्रयोग है। यह "ता" का प्रयोग इनको स्वतन्त्र कृति सिद्ध करने के लिए प्रबल प्रमाण है।

इस प्रकार का "ता" का प्रयोग किसी भी अंग उपांगों के सूत्रों में उपलब्ध नहीं है।

चन्द्र सूर्य प्रज्ञप्ति के प्रत्येक प्रश्नसूत्र के प्रारम्भ में "भंते !" का और उत्तर सूत्र के प्रारम्भ में "गोयमा" का प्रयोग नहीं है। जबकि अन्य अंग-उपांगों के सूत्रों में "भंते !" और "गोयमा" का प्रयोग प्रायः सर्वत्र है इसलिए यह मान्यता निर्विवाद है कि यह कृति पूर्ण रूप से स्वतन्त्र संकलित कृति है।

ग्रन्थ एक, उत्थानिकाएँ दो

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति की एक उत्थानिका चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी हुई गाथाओं की है और एक उत्थानिका गद्य सूत्रों की है।

इन उत्थानिकाओं का प्रयोग विभिन्न प्रतियों के सम्पादकों ने विभिन्न रूपों में किया है—

१ किसी ने दोनों उत्थानिकाएँ दी हैं।
२ किसी ने एक गद्य-सूत्रों की उत्थानिका दी है।
३ किसी ने पद्य-गाथाओं की उत्थानिका दी है।

इसी प्रकार प्रशस्ति गाथायें चन्द्रप्रज्ञप्ति के अन्त में और सूर्यप्रज्ञप्ति के अन्त में भी दी हैं। जबकि ये गाथाएँ ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के अन्त में दी गई थीं।

सम्भव है ज्योतिष राज-प्रज्ञप्ति को जब दो उपांगों के रूप में विभाजित किया गया होगा, उस समय दोनों उपांगों के अन्त में समान प्रशस्तिगाथाएँ दे दी गई हैं।

ज्योतिष-राज प्रज्ञप्ति की संकलन-शैली

चिर अतीत में ज्योतिष-राज प्रज्ञप्ति का स्वरूप किस रूप में रहा होगा ? यह तो आगम साहित्य के इतिहास-विशेषज्ञों का विषय है किन्तु वर्तमान में उपलब्ध चन्द्रप्रज्ञप्ति तथा सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी गई विषय-निर्देशक समान गाथाओं में प्रथम प्राभृत का प्रमुख विषय "सूर्यमण्डलों में सूर्य की गति का गणित" सूचित किया गया है, किन्तु दोनों उपांगों का प्रथम सूत्र मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का है।

सूर्य सम्बन्धी गणित और चन्द्र सम्बन्धी गणित के सभी सूत्र यत्र-तत्र बिखरे हैं। ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के सूत्रों का भी व्यवस्थित क्रम नहीं है। अतः आगमों के विशेषज्ञ गम्भीर मनन या मन्थनपूर्वक इन उपांगों को आधुनिक सम्पादन शैली से सम्पादित करें तो गणित की आशातीत वृद्धि हो सकती है।

प्रथम प्राभृत के पाँचवें प्राभृत-प्राभृत में दो सूत्र हैं। सोलहवें सूत्र में सूर्य की गति के सम्बन्ध में अन्य मान्यताओं की पाँच प्रतिपत्तियाँ हैं और सत्रहवें में स्वमान्यता का प्रकरण है।

इस प्रकार अन्य मान्यताओं का और स्वमान्यता का दो विभिन्न सूत्रों में निरूपण संगत नहीं है।

संकलनकाल

गणधर अंग आगमों का सूत्रागमों के रूप में पहले संकलित करते हैं और सूत्रधर स्थविर उपांगों को बाद में संकलित करते हैं। यह संकलन का क्रम निर्विवाद है।

अग आगमो को सकलित करने वाला गणधर एक होता है और उपाग आगमो को सकलित करने वाले श्रुतधर विभिन्न काल मे विभिन्न होते हैं अत उनकी धारणाएँ तथा सकलन पद्धति समान सम्भव नही है।

स्थानाग अग आगम है। इसके दो सूत्रो मे[1] चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के नामो का निर्देश दुविधाजनक है, क्योकि स्थानाग के पूर्व चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति का सकलन होने पर ही उनका उसमे निर्देश सम्भव हो सकता है।

इस विपरीत धारणा के निवारण के लिए बहुश्रुतो को समाधान प्रस्तुत करना चाहिए, किन्तु समाधान प्रस्तुत करने से पूर्व उन्हें यह ध्यान मे रखना चाहिए—यह सक्षिप्त वाचना की सूचना नहीं है—ये दोनो अलग-अलग सूत्र हैं।

नक्षत्र-गणनाक्रम मे परस्पर विरोध है

चन्द्र सूर्य प्रज्ञप्ति दशम प्राभृत के प्रथम प्राभृत-प्राभृत मे नक्षत्र-गणनाक्रम की स्वमान्यता का प्ररूपण है—तदनुसार अभिजित के उत्तराषाढा पर्यन्त २८ नक्षत्रो का गणनाक्रम है किन्तु स्थानाग अ २, उ ३, सूत्राक ९५ मे तीन गाथाएँ नक्षत्र गणनाक्रम की हैं और यही तीन गाथाएँ अनुयोगद्वार के उपक्रम विभाग मे सूत्र १८४ मे हैं। इनमे कृत्तिका से भरणी पर्यन्त नक्षत्रो का गणनाक्रम है।

स्थानाग अग आगम है—इसमे कहा गया नक्षत्र-गणनाक्रम यदि स्वमान्यता के अनुसार है तो सूर्यप्रज्ञप्ति में कहे गये नक्षत्र-गणनाक्रम को स्वमान्यता का कैसे माना जाय? क्योकि उपाग की अपेक्षा अग आगम की प्रामाणिकता स्वत सिद्ध है।

यदि स्थानाग मे निर्दिष्ट नक्षत्र-गणनाक्रम को किसी व्याख्याकार ने अन्य मान्यता का मान लिया होता तो परस्पर विरोध निरस्त हो जाता किन्तु जबूद्वीपप्रज्ञप्ति आदि के आगमपाठो से स्वमान्यता का क्रम अभिजित से उत्तराषाढा पर्यन्त का है अन्य क्रम अन्य मान्यता के हैं।

प्राभृत पद का परमार्थ

सूर्यप्रज्ञप्ति-वृत्ति के अनुसार प्राभृत शब्द के अर्थ

इष्ट पुरुष के लिए देशकाल के योग्य हितकर दुर्लभ वस्तु अर्पित करना

अथवा जिस पदार्थ से मन प्रसन्न हो ऐसा पदार्थ इष्ट पुरुष को अर्पित करना, ये दोनो शब्दार्थ हैं।

---

१ (क) स्थानाग अ २, उ २, सू १६० (ख) स्थानाग अ ४, उ १, सू २७७

२ (क) अथ प्राभृतमिति क शब्दार्थ ?

उच्यते—इह प्राभृत नाम लोके प्रसिद्ध यदभीष्टाय पुरुषाय देश-कालोचित दुर्लभ-वस्तु-परिणाम-सुन्दरमुपनीयते।

(ख) प्रकर्षेण आ-समन्तात् ध्रियते-पोष्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्यानेनेति प्राभृतम्।

(ग) विवक्षिता अपि च ग्रन्थपद्धतय परमदुर्लभा परिणामसुन्दराश्चाभीष्टेभ्यो विनयादिगुणकलितेभ्य शिष्येभ्यो देश-कालौचित्येनोपनीयन्ते। —सूर्य सू ६ वृत्ति पत्र ७ का पूर्वभाग

श्वेताम्बर परम्परा मे चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के अध्ययन आदि विभागो के लिए "प्राभृत" शब्द प्रयुक्त है।

दिगम्बर परम्परा के कषायपाहुड आदि सिद्धान्त ग्रन्थो के लिए प्रयुक्त 'पाहुड' शब्द के विभिन्न अर्थ—

१—जिसके पद स्फुट—व्यक्त हैं वह 'पाहुड' कहा जाता है।

२—जो प्रकृष्ट पुरुषोत्तम द्वारा आभृत=प्रस्थापित है वह "पाहुड" कहा जाता है।

३—जो प्रकृष्ट ज्ञानियो द्वारा आभृत—धारण किया गया है अथवा परम्परा से प्राप्त किया गया है वह "पाहुड" कहा जाता है। —जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष से उद्धृत

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ में "ता" का प्रयोग है। यह "ता" का प्रयोग इसको स्वतन्त्र कृति सिद्ध करने के लिए प्रबल प्रमाण है।

इस प्रकार का "ता" का प्रयोग किसी भी अंग उपांगों के सूत्रों में उपलब्ध नहीं है।

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के प्रत्येक प्रश्नसूत्र के प्रारम्भ में "भंते !" का और उत्तर सूत्र के प्रारम्भ में 'गोयमा' का प्रयोग नहीं है। जबकि अन्य अंग-उपांगों के सूत्रों में भंते ' और गोयमा ' का प्रयोग प्राय सहज है अतः यह मान्यता निर्विवाद है कि यह कृति पूर्ण रूप से स्वतन्त्र संकलित कृति है।

ग्रन्थ एक, उत्थानिकाएँ दो

ज्योतिष-राज प्रज्ञप्ति की एक उत्थानिका चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी हुई गाथाओं की है और एक उत्थानिका गद्य सूत्रों की है।

इन उत्थानिकाओं का प्रयोग विभिन्न प्रतियों के सम्पादकों ने विभिन्न रूपों में किया है—

१ किसी ने दोनों उत्थानिकाएँ दी हैं।

२ किसी ने एक गद्य-सूत्रों की उत्थानिका दी है।

३ किसी ने पद्य-गाथाओं की उत्थानिका दी है।

इसी प्रकार प्रशस्ति गाथायें चन्द्रप्रज्ञप्ति के अन्त में और सूर्यप्रज्ञप्ति के अन्त में भी दी हैं। क्योंकि ये गाथाएँ ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के अन्त में दी गई थीं।

संभव है ज्योतिष राज-प्रज्ञप्ति को जब दो उपांगों के रूप में विभाजित किया गया होगा, उस समय दोनों उपांगों के अन्त में समान प्रशस्तिगाथाएँ दे दी गई हैं।

ज्योतिष राज प्रज्ञप्ति की संकलन-शैली

चिर अतीत में ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का संकलन किस रूप में रहा होगा? यह तो आगम साहित्य के इतिहास-विशेषज्ञों का विषय है किन्तु वर्तमान में उपलब्ध चन्द्रप्रज्ञप्ति तथा सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दी गई विषय-निर्देशक समान गाथाओं में प्रथम प्राभृत का प्रमुख विषय ' सूर्यमण्डलों में सूर्य की गति का गणित" सूचित किया गया है, किन्तु दोनों उपांगों का प्रथम सूत्र मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का है।

सूर्य सम्बन्धी गणित और चन्द्र सम्बन्धी गणित के सभी सूत्र यत्र-तत्र बिखरे हैं। ग्रह, नक्षत्र और ताराओं के सूत्रों का भी व्यवस्थित क्रम नहीं है। अतः आगमों के विशेषज्ञ गणितानुयोग श्रमण या मनुष्य इन उपांगों का आधुनिक सम्पादन शैली से सम्पादित करें तो गणित की आशातीत वृद्धि हो सकती है।

प्रथम प्राभृत के पाँचवें प्राभृत-प्राभृत में दो सूत्र हैं। सोलहवें सूत्र में सूर्य की गति के सम्बन्ध में अन्य मान्यताओं की पाँच प्रतिपत्तियाँ हैं और सत्रहवें में स्वमान्यता का प्रकरण है।

इस प्रकार अन्य मान्यताओं का और स्वमान्यता का दो विभिन्न सूत्रों में निरूपण सम्यक् नहीं है।

संकलनकाल

गणधर अंग आगमों को सूत्रागमों के रूप में पहले ग्रथित करते हैं और श्रुतधर स्थविर उपांगों को बाद में संकलित करते हैं। यह संकलन का कालक्रम निर्विवाद है।

अग आगमों को सकलित करने वाला गणधर एक होता है और उपाग आगमों को सकलित करने वाले श्रुतधर विभिन्न काल मे विभिन्न होते हैं अत उनकी धारणाएँ तथा सकलन पद्धति समान सभव नही है।

स्थानाग अग आगम है। इसके दो सूत्रो मे[1] चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के नामो का निर्देश दुविधाजनक है, क्योकि स्थानाग के पूर्व चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति का सकलन होने पर ही उनका उसमे निर्देश सम्भव हो सकता है।

इस विपरीत धारणा के निवारण के लिए बहुश्रुतो को समाधान प्रस्तुत करना चाहिए, किन्तु समाधान प्रस्तुत करने से पूर्व उन्हें यह ध्यान मे रखना चाहिए—यह सक्षिप्त वाचना की सूचना नहीं है—ये दोनो अलग-अलग सूत्र हैं।

नक्षत्र गणनाक्रम मे परस्पर विरोध है

चन्द्र सूर्य प्रज्ञप्ति दशम प्राभृत के प्रथम प्राभृत-प्राभृत मे नक्षत्र-गणनाक्रम की स्वमान्यता का प्ररूपण है—तदनुसार अभिजित के उत्तराषाढा पर्यन्त २८ नक्षत्रों का गणनाक्रम है किन्तु स्थानाग अ २, उ ३, सूत्राक ९५ मे तीन गाथाएँ नक्षत्र गणनाक्रम की हैं और यही तीन गाथाएँ अनुयोगद्वार के उपक्रम विभाग म सूत्र १८५ मे हैं। इनमे कृत्तिका से भरणी पर्यन्त नक्षत्रो का गणनाक्रम है।

स्थानाग अग आगम है—इसमे कहा गया नक्षत्र-गणनाक्रम यदि स्वमान्यता के अनुसार है तो सूर्यप्रज्ञप्ति मे कहे गये नक्षत्र-गणनाक्रम को स्वमान्यता का कैसे माना जाय? क्योकि उपाग की अपेक्षा अग आगम की प्रामाणिकता स्वत सिद्ध है।

यदि स्थानाग मे निर्दिष्ट नक्षत्र-गणनाक्रम को किसी व्याख्याकार ने अन्य मान्यता का मान लिया होता तो परस्पर विरोध निरस्त हो जाता किन्तु जबूद्वीपप्रज्ञप्ति आदि के आगमपाठो से स्वमान्यता का क्रम अभिजित से उत्तराषाढा पर्यन्त का है अन्य क्रम अन्य मान्यता के हैं।

प्राभृत पद का परमार्थ

सूर्यप्रज्ञप्ति-वृत्ति के अनुसार प्राभृत शब्द के अर्थ

इष्ट पुरुष के लिए देशकाल के योग्य हितकर दुर्लभ वस्तु अर्पित करना

अथवा जिस पदार्थ से मन प्रसन्न हो ऐसा पदार्थ इष्ट पुरुष को अर्पित करना, ये दोनो शब्दार्थ हैं।

---

१ (क) स्थानाग अ २ उ २, सू १६० (ख) स्थानाग अ ४, उ १, सू २७७

२ (क) अथ प्राभृतमिति क शब्दार्थ ?

उच्यते—इह प्राभृत नाम लोके प्रसिद्ध यदभीष्टाय पुरुषाय देश-कालोचित दुर्लभ-वस्तु-परिणाम-सुन्दरमुपनीयते।

(ख) प्रकर्षेण आ-समन्तात् भ्रियते-पोष्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्यानेनेति प्राभृतम्।

(ग) विवक्षिता अपि च ग्रन्थपद्धतय परमदुर्लभा परिणाममुन्दराश्चाभीष्टेभ्यो विनयादिगुणकलितेभ्य शिष्येभ्यो देश-कालौचित्येनोपनीयन्ते। —सूर्य सू ६ वृत्ति पत्र ७ का पूर्वभाग

श्वेताम्बर परम्परा में चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति के अध्ययन आदि विभागो के लिए 'प्राभृत' शब्द प्रयुक्त है।

दिगम्बर परम्परा के कषायपाहुड आदि सिद्धान्त ग्रन्थो के लिए प्रयुक्त 'पाहुड' शब्द के विभिन्न अर्थ—

१—जिसके पद स्फुट—व्यक्त हैं वह "पाहुड" कहा जाता है।

२—जो प्रकृष्ट पुरुषोत्तम द्वारा आभृत=प्रस्थापित है वह "पाहुड" कहा जाता है।

३—जो प्रकृष्ट ज्ञानियो द्वारा आभृत—धारण किया गया है अथवा परम्परा से प्राप्त किया गया है वह "पाहुड" कहा जाता है। —जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष से उद्धृत

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति से सम्बन्धित ग्रन्थ

विनयादि गुण सम्पन्न शिष्यों के लिए दृष्ट-लाभोपयोगी सूर्यप्रज्ञप्ति दुर्लभ है व स्वाध्याय हेतु है।

यहाँ "दृष्ट-लाभोपयोगी" विशेषण विशेष ध्यान देने योग्य है।

कालिक और उत्कालिक

नन्दीसूत्र में गमिक को "उत्कालिक" और अगमिक को "कालिक" कहा है।

दृष्टिवाद गमिक है।[1] दृष्टिवाद का तृतीय विभाग पूर्वगत है।[2] उसी पूर्वगत से ज्योतिषगणराज-प्रज्ञप्ति (चन्द्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति) का निर्यूहण किया गया है, ऐसा चन्द्रप्रज्ञप्ति की उत्थानिका की तृतीय गाथा में कहा गया है।

अंग-उपांगों का एक दूसरे से सम्बन्ध है, ये सब अगमिक हैं, अतः ये सब कालिक हैं।

उसी नन्दीसूत्र के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति कालिक है[3] और सूर्यप्रज्ञप्ति उत्कालिक है।[4]

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के कतिपय गद्य-पद्य सूत्रों के अतिरिक्त सभी सूत्र अक्षरशः समान हैं। फिर एक कालिक और एक उत्कालिक किस आधार पर माने गये हैं?

यदि इन भिन्न उपांगों में से एक कालिक और एक उत्कालिक निश्चित है तो "इनके सभी सूत्र समान नहीं थे" यह मानना ही उचित प्रतीत होता है, काल के विकराल अन्तराल में इन उपांगों के कुछ सूत्र विच्छिन्न हो गये और कुछ विलीन हो गये हैं।

मूल अभिन्न और अर्थ भिन्न

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रों में कितना साम्य है? यह तो दोनों के आद्योपान्त अवलोकन से स्वतः ज्ञात हो जाता है किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की चन्द्रपरक व्याख्या और सूर्यप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की सूर्यपरक व्याख्या अतीत में उपलब्ध थी। यह कथन कितना यथार्थ है, कहा नहीं जा सकता है क्योंकि ऐसा किसी टीका, निर्युक्ति आदि में कहीं कहा नहीं है। यदि इस प्रकार का उल्लेख किसी टीका, निर्युक्ति या अन्य ग्रन्थ में देखने में आया हो तो विद्वज्जन प्रकाशित करें।

एक श्लोक या एक गाथा के अनेक अर्थ असम्भव नहीं हैं। द्विसंधान, पंचसंधान, सप्तसंधान आदि काव्य वर्तमान में उपलब्ध हैं। इनमें प्रत्येक श्लोक की विभिन्न कथापरक टीकायें देखी जा सकती हैं। किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के सम्बन्ध में बिना किसी प्रबल प्रमाण के निर्णय कहना उचित प्रतीत नहीं होता।

---

१ नन्दीसूत्र, गमिक अगमिक श्रुत सूत्र ४४

२ नन्दीसूत्र, दृष्टिवाद श्रुत सूत्र ९०

३ नन्दीसूत्र, उत्कालिक श्रुत सूत्र ४४

४ नन्दीसूत्र, कालिक श्रुत सूत्र ४४

ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इसका विशेषण शुभाशुभ जानने में सफल हो सकता है।

मानव की सर्वाधिक जिज्ञासा भविष्य जानने की होती है क्योंकि वह इष्ट का संयोग एवं कार्य की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ज्योतिष विषय के उपांग हैं—यद्यपि इनमें गणित अधिक है और फलित अत्यल्प है, फिर भी इनका परिपूर्ण ज्ञाता शुभाशुभ निमित्त का ज्ञाता माना जाता है—यह धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के द्योतक हैं अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक संबंध है।

निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की अगाध श्रद्धा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रों के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवों का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवेतर प्राणी-जगत् से चन्द्र आदि ज्योतिषी देवों का शाश्वत संबंध है। क्योंकि वे सब इसी मध्यलोक में स्वयं प्रकाशमान देव हैं और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों को प्रकाश प्रदान करते रहते हैं।

ज्योतिष लोक और मानव लोक का प्रकाश्य प्रकाशक भाव सम्बन्ध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चदि आह्लादने धातु से "चन्द्र" शब्द सिद्ध होता है।

चन्द्रमाह्लाद मिमीते निर्मिमीते इति चन्द्रमा

प्राणिजगत के आह्लाद का जनक चन्द्र है, इसलिए चन्द्रदर्शन की परम्परा प्रचलित है।

चन्द्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमें कुछ ऐसे पर्यायवाची हैं जिनसे इस पृथ्वी के समस्त पदार्थों में एवं पुरुषों से चन्द्र का प्रगाढ संबंध सिद्ध है।

कुमुदबान्धव—जलाशयों में प्रफुल्लित कुमुदिनी का बंधु चन्द्र है इसलिए "कुमुदबान्धव" कहा जाता है।

कलानिधि चन्द्र के पर्याय हिमांशु, शुभ्रांशु, सुधांशु की अमृतमयी कलाओं से कुमुदिनी का सीधा सम्बन्ध है।

इसकी साक्षी है राजस्थानी कवि की सूक्ति—

दोहा—जल में बसे कुमुदिनी, चन्दा बसे आकाश।
जो जाहू के मन बसे, सो ताहू के पास॥

औषधीश—जंगल की जडी बूटियाँ "औषधि" हैं—उनमें रोग निवारण का अद्भुत सामर्थ्य सुधांशु की सुधामयी रश्मियों से आता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है, वह औषधियों से प्राप्त होता है—इसलिए औषधीश चन्द्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा = रात्रि का पति—चन्द्र है।

चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति से सम्बन्धित अर्थ

जिनदास ... गम्भीर शिष्यों के लिए दस-कालिकयायी ... ग्रन्थ स्वाध्याय हेतु देना।

यहाँ "दस-कालोपयोगी" विशेषण विशेष ध्यान देने योग्य है।

कालिक और उत्कालिक

नन्दीसूत्र में गमिक को "उत्कालिक" और अगमिक को "कालिक" कहा है।

दृष्टिवाद गमिक है।[1] दृष्टिवाद का तृतीय विभाग पूर्वगत है,[2] उसी पूर्वगत से ... (चन्द्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति) का निर्यूहण किया गया है, ऐसा चन्द्रप्रज्ञप्ति की उत्थानिका की तृतीय गाथा से ज्ञात होता है।

अंग-उपांगों का एक दूसरे से सम्बन्ध है, ये सब अगमिक हैं अतः ये सब कालिक हैं।

उसी नन्दीसूत्र के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति कालिक है[3] और सूर्यप्रज्ञप्ति उत्कालिक है।[4]

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के कतिपय गद्य-पद्य सूत्रों के अतिरिक्त सभी सूत्र अक्षरशः समान हैं फिर एक कालिक और एक उत्कालिक किस आधार पर माने गये हैं?

यदि इन दिनों उपांगों में से एक कालिक और एक उत्कालिक निश्चित है तो "इनके सभी सूत्र समान नहीं थे" यह मानना ही उचित प्रतीत होता है काल के विकराल अन्तराल में इन उपांगों के कुछ सूत्र विच्छिन्न हो गये और कुछ विलीन हो गये हैं।

मूल अभिन्न और अर्थ भिन्न

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रों में कितना साम्य है? यह तो दोनों के आद्योपान्त अध्ययन से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है, किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की चन्द्रपरक व्याख्या और सूर्यप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की सूर्यपरक व्याख्या प्राचीन में उपलब्ध थी। यह कथन कितना यथार्थ है, कहा नहीं जा सकता है क्योंकि ऐसा किसी टीका, नियुक्ति आदि में कहीं कहा नहीं है। यदि इस प्रकार का उल्लेख किसी टीका, नियुक्ति आदि में देखा हो तो विद्वज्जन प्रकाशित करें।

एक श्लोक या एक गाथा के अनेक अर्थ असम्भव नहीं हैं। द्विसंधान, पंचसंधान, सप्तसंधान आदि काव्य ग्रन्थागार में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार श्लोक की विभिन्न कथापरक टीकाएं देखी जा सकती हैं। किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के सम्बन्ध में बिना किसी प्रबल प्रमाण के निर्णय कहना उचित प्रतीत नहीं होता।

---

१ नन्दीसूत्र, गमिक कालिक श्रुत सूत्र ४४

२ नन्दीसूत्र, दृष्टिवाद श्रुत सूत्र ९०

३ नन्दीसूत्र उत्कालिक श्रुत सूत्र ४४

४ नन्दीसूत्र, कालिक श्रुत सूत्र ४४

ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इसका विशेषज्ञ शुभाशुभ जानने में सफल हो सकता है।

मानव की सर्वाधिक जिज्ञासा भविष्य जानने की होती है क्योंकि वह इष्ट का संयोग एवं कार्य की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ज्योतिष विषय के उपांग हैं—यद्यपि इनमें गणित अधिक है और फलित अत्यल्प है, फिर भी इनका परिपूर्ण ज्ञाता शुभाशुभ निमित्त का ज्ञाता माना जाता है—यह धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के द्योतक हैं अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक संबंध है।

निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की अगाध श्रद्धा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रों के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवों का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवेतर प्राणी-जगत से चन्द्र आदि ज्योतिषी देवों का शाश्वत संबंध है। क्योंकि वे सब इसी मध्यलोक के स्वयं प्रकाशमान देव हैं और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों को प्रकाश प्रदान करते रहते हैं।

ज्योतिष लोक और मानव लोक का प्रकाश्य-प्रकाशक भाव सम्बन्ध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चदि आह्लादने धातु से "चन्द्र" शब्द सिद्ध होता है।

चन्द्रमाह्लादं मिमीते निर्मिमीते इति चन्द्रमा

प्राणिजगत् के आह्लाद का जनक चन्द्र है, इसलिए चन्द्रदर्शन की परम्परा प्रचलित है।

चन्द्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमें कुछ ऐसे पर्यायवाची हैं जिनसे इस पृथ्वी के समस्त पदार्थों से एवं पुरुषों से चन्द्र का प्रगाढ संबंध सिद्ध है।

कुमुदबान्धव—जलाशयों में प्रफुल्लित कुमुदिनी का बन्धु चन्द्र है इसलिए "कुमुदबान्धव" कहा जाता है।

कलानिधि चन्द्र के पर्याय हिमांशु शुभ्रांशु, सुधांशु की अमृतमयी कलाओं से कुमुदिनी का सीधा सम्बन्ध है।

इसकी साक्षी है राजस्थानी कवि की सूक्ति—

दोहा—जल में बसे कुमुदिनी, चन्दा बसे आकाश।
जो जाहू के मन बसे, सो ताहू के पास॥

औषधीश—जंगल की जडी बूटियाँ "औषधि" हैं—उनमें रोग निवारण का अद्भुत सामर्थ्य सुधांशु की सुधामयी रश्मियों से आता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है वह औषधियों से प्राप्त होता है—इसलिए औषधीश चन्द्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा=रात्रि का पति—चन्द्र है।

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति से सम्बन्धित प्रश्न

विनयादि गुण सम्पन्न शिष्य के लिए दस-कालानुयायी [illegible] ग्रन्थ स्वाध्याय हेतु देना।

यहाँ "दस-कालानुयायी" विशेषण विशेष ध्यान देने योग्य है।

कालिक और उत्कालिक

नन्दीसूत्र में गमिक को "उत्कालिक" और अगमिक को "कालिक" कहा है।

दृष्टिवाद गमिक है।[1] दृष्टिवाद का तृतीय विभाग पूर्वगत है,[2] उसी पूर्वगत से [illegible] (चन्द्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति) का निर्यूहण किया गया है ऐसा चन्द्रप्रज्ञप्ति की उत्थानिका की तृतीय गाथा से ज्ञात होता है।

अंग-उपांगों का एक दूसरे से सम्बन्ध है, वे सब अगमिक हैं अतः वे सब कालिक हैं।

उसी नन्दीसूत्र के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति कालिक है[3] और सूर्यप्रज्ञप्ति उत्कालिक है।[4]

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति में कतिपय गद्य पद्य सूत्रों के अतिरिक्त सभी सूत्र अक्षरशः समान हैं अतः एक कालिक और एक उत्कालिक किस आधार पर माने गये हैं?

यदि इन दोनों उपांगों में से एक कालिक और एक उत्कालिक निश्चित है तो इनके सभी सूत्र समान नहीं थे यह मानना ही उचित प्रतीत होता है, काल के विकराल अन्तराल में इन उपांगों के कुछ सूत्र विच्छिन्न हो गये और कुछ विकीर्ण हो गये हैं।

मूल अभिन्न और अर्थ भिन्न

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रों में कितना साम्य है? यह तो दोनों के आद्योपान्त अवलोकन से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की चन्द्रपरक व्याख्या और सूर्यप्रज्ञप्ति के सभी सूत्रों की सूर्यपरक व्याख्या प्राचीन [illegible] में उपलब्ध थी। यह कथन कितना यथार्थ है, कहा नहीं जा सकता है, क्योंकि ऐसा किसी टीका, नियुक्ति आदि में कहीं कहा नहीं है। यदि इस प्रकार का उल्लेख किसी टीका, नियुक्ति आदि में देखने में आया हो तो विज्ञजन प्रकाशित करें।

एक श्लोक या एक गाथा के अनेक अर्थ असम्भव नहीं हैं। द्विसंधान, पंचसंधान, सप्तसंधान आदि काव्य वर्तमान में उपलब्ध हैं। इनमें प्रत्येक श्लोक की विभिन्न कथापरक टीकाएँ देखी जा सकती हैं। किन्तु चन्द्र और सूर्यप्रज्ञप्ति के संबंध में बिना किसी प्रबल प्रमाण के विश्वास कर लेना उचित प्रतीत नहीं होगा।

---

१ नन्दीसूत्र कालिक [illegible] सूत्र ४४
२ नन्दीसूत्र, दृष्टिवाद [illegible] सूत्र ९०
३ नन्दीसूत्र उत्कालिक [illegible] सूत्र ४४
४ नन्दीसूत्र, कालिक श्रुत सूत्र ४५

ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इसका विशेषज्ञ शुभाशुभ जानने मे सफल हो सकता है।

मानव की सर्वाधिक जिज्ञासा भविष्य जानने की होती है क्योकि वह इष्ट का सयोग एव कार्य की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति ज्योतिष विषय के उपाग हैं—यद्यपि इनमे गणित अधिक है और फलित अत्यल्प है, फिर भी इनका परिपूर्ण ज्ञाता शुभाशुभ निमित्त का ज्ञाता माना जाता है—यह धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के द्योतक हैं अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक सबध है।

निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की अगाध श्रद्धा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रो के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवो का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवेत्तर प्राणी-जगत से चन्द्र आदि ज्योतिषी देवो का शाश्वत सबध है। क्योकि वे सब इसी मध्यलोक के स्वय प्रकाशमान देव हैं और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों को प्रकाश प्रदान करते रहते हैं।

ज्योतिष लोक और मानव लोक का प्रकाश्य-प्रकाशक भाव सम्बन्ध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चदि आह्लादने धातु से "चन्द्र" शब्द सिद्ध होता है।

चन्द्रमाह्लाद मिमीते निर्मिमीत इति चन्द्रमा

प्राणिजगत के आह्लाद का जनक चन्द्र है, इसलिए चन्द्रदर्शन की परम्परा प्रचलित है।

चन्द्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमे कुछ ऐसे पर्यायवाची हैं जिनसे इस पृथ्वी के समस्त पदार्थों मे एव पुरुषो से चन्द्र का प्रगाढ सबध सिद्ध है।

कुमुदबान्धव—जलाशयो मे प्रफुल्लित कुमुदिनी का बन्धु चन्द्र है इसलिए "कुमुदबान्धव" कहा जाता है।

कलानिधि चन्द्र के पर्याय हिमाशु, शुभ्राशु, सुधाशु की अमृतमयी कलाओ से कुमुदिनी का सीधा सम्बन्ध है।

इसकी साक्षी है राजस्थानी कवि की सूक्ति—

दोहा—जल मे बसे कुमुदिनी, चन्दा बसे आकाश।
जो जाहु के मन बसे, सो ताहु के पास॥

औषधीश—जगल की जडी बूटिया "औषधि" हैं—उनमे रोग-निवारण का अद्भुत सामर्थ्य सुधाशु की सुधामयी रश्मियो से आता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है, वह औषधियो से प्राप्त होता है—इसलिए औषधीश चन्द्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा = रात्रि का पति—चन्द्र है।

श्रमजीवी दिन में "श्रम" करते हैं और रात्रि में विश्राम करते हैं। आह्लादजनक चन्द्र की [illegible] से विश्रान्ति लेकर मानव स्वस्थ हो जाता है इसलिए मानव का शशांक से अति निकट का सम्बन्ध सिद्ध होता है। जैनागमों में चन्द्र के एक "शशि" पर्याय की ही व्याख्या है।[1]

(२) सूर्य शब्द की रचना

षू प्रेरणे धातु से "सूर्य" शब्द सिद्ध होता है।

सुवति प्रेरयति कर्मणि लोकान् इति सूर्यः—जो प्राणिमात्र को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है वह सूर्य है।

सूरज—ग्रामीण जन "सूर्य" को "सूरज" कहते हैं।

सु+ऊर्ज से सूर्य या सूरज उच्चारण होता है।

सु श्रेष्ठ—ऊर्ज = ऊर्जा = शक्ति।

सूर्य से श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है।

सूर्य के पर्याय अनेक हैं। इनमें कुछ ऐसे पर्याय हैं, जिनसे सूर्य का मानव के साथ सहज सम्बन्ध सिद्ध होता है।

सहस्रांशु—सूर्य की सहस्र रश्मियों से प्राणियों को जो "ऊष्मा" प्राप्त होती है, वही जगत् के जीवों का जीवन है।

प्रत्येक मानव शरीर में जब तक ऊष्मा = गर्मी रहती है, तब तक जीवन है। ऊष्मा समाप्त होने के साथ ही जीवन समाप्त हो जाता है।

भास्कर, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, द्युमणि, अहर्पति, भानु आदि पर्यायों से "सूर्य" प्रकाश देने वाला देव है।

मानव की सभी प्रवृत्तियाँ प्रकाश में ही होती हैं। प्रकाश के बिना यह [illegible] है।

---

१ ससी सद्दस्स विसिट्ठत्थो

प्र. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—चंदे ससी, चंदे ससी?

उ. गोयमा! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे, कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभए पियदंसणे सुरूवे,

से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—"चंदे ससी, चंदे ससी"। —भग. श. १२, उ. ६, सू. ४

शशि शब्द का विशिष्टार्थ

प्र. भगवन्! चन्द्र को "शशि" किस अभिप्राय से कहा जाता है?

उ. हे गौतम! ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिषराज चन्द्र के मृगांक विमान में मनोहर देव, मनोहर देवियाँ तथा मनोहर आसन शयन-स्तम्भ भाण्ड-पात्र आदि उपकरण हैं और ज्योतिष्केन्द्र ज्योतिषराज चन्द्र स्वयं भी सौम्य, कान्त, सुभग, प्रियदर्शन एवं सुरूप है।

हे गौतम! इस कारण से चन्द्र को "शशि" (सश्री) कहा जाता है।

सूय के ताप से अनेक रोगो की चिकित्सा होती है।

सौर ऊर्जा से अनेक यत्र शक्तियो का विकास हो रहा है।

इस प्रकार मानव का सूय से शाश्वत सम्बन्ध है।

जैनागमों मे सूय के एक "आदित्य"[1] पर्याय की व्याख्या द्वारा सभी कालविभागो का आदि सूय कहा गया है।

(३) गृह–ग्रह की रचना

ग्रह उपादाने धातु से यह ग्रह शब्द सिद्ध होता है।

जनागमो मे छह ग्रह और आठ ग्रह का उल्लेख है।[2]

चन्द्र-सूय को ग्रहपति माना है, शेष छ को ग्रह माना है, राहु-केतु को भिन्न न मानकर एक केतु को ही माना है।

अट्ठासी ग्रह भी माने हैं।

अन्य ग्रन्थो मे नौ ग्रह माने हैं।

ग्रहो के प्रभाव के सम्बन्ध मे वशिष्ठ और बृहस्पति नाम के ज्योतिर्विदाचाय ने इस प्रकार कहा है—

वशिष्ठ—ग्रहा राज्य प्रयच्छति, ग्रहा राज्य हरन्ति च।
प्रहैस्तु व्यापित सर्वं, त्रैलोक्य सचराचरम्॥

बहस्पति—ग्रहाधीन जगत्सव, ग्रहाधीना नरामरा।
काल ज्ञान ग्रहाधीन, ग्रहा कमफलप्रदा॥

(३२वा गोचर प्रकरण—बृहद्दैवज्ञरजन, पृ ८४)

(४) नक्षत्र और नरसमूह

नक्षत्र शब्द की रचना

१ न क्षदते हिनस्ति "क्षद" इति सौत्रो धातु हिंसाय आत्मनेपदी। ष्टन (उ ४/१५९) नभ्राण्नपाद् (६/३/७५) इति नञ प्रकृतिभाव।

---

१ सूर सहस्स निसिट्ठट्ठयो—
प्र से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—"सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे"?
उ गोयमा! सूरादीया ण समयाइ वा, आवलियाइ वा, जाव ओसप्पिणीइ वा, उस्सप्पिणीइ वा।
से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—"सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे।"—भग स १२, उ ६, सु ५

सूय शब्द का विशिष्टार्थ
प्र हे भगवन! सूय को "आदित्य" किस अभिप्राय से कहा जाता है?
उ हे गौतम! समय, आवलिका यावत् अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी काल का आदि कारण सूय है।
हे गौतम! इस कारण से सूय "आदित्य" कहा जाता है।

२ छ तारग्गहा पण्णत्ता, तजहा—
१ सुक्को, २ बुहे, ३ बहस्पति, ४ अगारके, ५ सणिच्छरे, ६ केतू। —ठाणं अ ६, सु ४८
अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता तजहा—
१ चद, २ सूरे, ३ सुक्के, ४ बुहे, ५ बहस्सति, ६ अगारके, ७ सणिच्छरे, ८ केतू। —ठाण ८, सू ६/३

२ णक्ष गतौ (भ्वा० प० स०) नक्षति।
अमि-नक्षि-यजि-वधि-पतिभ्योऽत्रन् (उ० ३/१०५) प्रत्यय हुवे।

३ न क्षरतीति क्षरु हिंसायाम् (त० उ० स०) (ष्ट्रन्) (उ० ४/१५९) क्षत्रं।

४ न क्षत्र दयस्वात् नक्षत्र मित्याहुः।

जो क्षत=घाव से रक्षा करे वह "क्षत्र" कहा जाता है। उस "क्षत्र" का जो "रक्षा करना" रूप है वह "क्षात्र धर्म" कहा जाता है। क्षत्र की सन्तान "क्षत्रिय" कही जाती है।

इस भूतल के रक्षक नर "क्षत्र" हैं और नभ—आकाश में रहने वाले रक्षक देव "नक्षत्र" हैं। इन नक्षत्रों का नर क्षत्रों से सम्बन्ध जगत्प्रसिद्ध है।

अट्ठाईस नक्षत्रों में से "अभिजित्" नक्षत्र का व्यवहार न कर सत्ताईस नक्षत्रों से व्यवहार किया है।

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण हैं अर्थात् चार प्रकार हैं। इस प्रकार सत्ताईस नक्षत्रों के १०८ प्रकार होते हैं।

इन १०८ प्रकारों को बारह राशियों में विभक्त करने पर प्रत्येक राशि के ९ प्रकार होते हैं।

इस प्रकार सत्ताईस नक्षत्रों एवं बारह राशियों के १०८ प्रकारों से प्रत्येक प्राणी एवं पदार्थों के "नाम" निर्धारित किये जाते हैं।

यह नक्षत्र और नर समूह का वैज्ञानिक सम्बन्ध है।

चर स्थिर आदि सात, ध्रुव चल आदि चार इन ग्यारह संज्ञाओं से अभिहित ये नक्षत्र प्रत्येक कार्य की सिद्धि प्राप्ति में निमित्त होते हैं।

(५) तारामण्डल

तारा शब्द की रचना

तारा शब्द स्त्रीलिंग है।

तृ प्लवन तरणयोः धातु से "तारा" शब्द की सिद्धि होती है। तरन्ति अनया इति तारा।

सांयात्रिक—जलयात्री व्यापारियों को अन्धकार रात्रि में समुद्रयात्रा तारामण्डल के दिशाबोध से करते थे।

ध्रुव तारा सदा स्थिर रहकर उत्तरदिशा का बोध कराता है। शेष दिशाओं का बोध ग्रह, नक्षत्र और राशियों की नियमित गति से होता रहता है। इसलिए नौका आदि के तिरने में जो सहायक होते हैं, वे तारा कहे जाते हैं।

रेगिस्तान की यात्रा रात्रि में सुखपूर्वक होती है इसलिए यात्री अन्धकार रात्रि में तारों से दिग्दर्शन करते हुए यात्रा करते हैं।

तारामण्डल के विभिन्न प्रकार का, देश का शुभाशुभ ज्ञान होता है इसलिए तारों का दृष्टिपात से प्राणियों से परिस्थिति का सम्बन्ध सिद्ध है।

इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा मण्डल के शुभाशुभ के निमित्त हैं।

गणितानुयोग का गणित सम्यक्‌श्रुत है

मिथ्याश्रुतों की नामावली मे गणित को मिथ्याश्रुत माना है[1], इसका यह अभिप्राय नही है कि—"सभी प्रकार के गणित मिथ्याश्रुत हैं।"

आत्मशुद्धि की साधना मे जो गणित उपयोगी या सहयोगी नहीं है, केवल वही गणित 'मिथ्याश्रुत" है, ऐसा समझना चाहिए। यहाँ "मिथ्या" का अभिप्राय "अनुपयोगी" है, झूठा नहीं।

वैराग्य की उत्पत्ति के निमित्तो मे लोकभावना अर्थात् लोकस्वरूप का विस्तृत ज्ञान भी एक निमित्त है[2], अत अधो और ऊर्ध्व लोक से सम्बन्धित सारा गणित "सम्यक श्रुत है, क्योंकि यह गणित आजीविका या अन्याय सावद्य क्रियाओं का हेतु नहीं हो सकता है।

स्थानाग, समवायाग और व्याख्याप्रज्ञप्ति—इन तीनो अगों मे तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति—इन तीनो उपागो मे गणित सम्बन्धी जितने सूत्र हैं वे सब सम्यक्श्रुत हैं। क्योंकि अग, उपाग सम्यक्-श्रुत हैं।

अन्य मान्यताओ के उद्धरण—स्वमान्यताओ का प्ररूपण

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति मे अनेक मान्यताओं के उद्धरण दिये गये हैं, साथ ही स्वमान्यताओ के प्ररूपण भी किये गये हैं।

अन्य मान्यताओ का सूचक "प्रतिपत्ति" शब्द है।

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति मे जितनी प्रतिपत्तियाँ हैं, उनकी सूची इस प्रकार है—

सूर्यप्रज्ञप्ति मे प्रतिपत्तियो की सख्या

प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या	प्राभृत	प्राभृत प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या
१	४	१५	६ प्रतिपत्तियाँ	१	८	२०	३ प्रतिपत्तियाँ
१	५	१६	५ प्रतिपत्तियाँ	२	१	२१	८ प्रतिपत्तियाँ
०	०	१७	स्वमत कथन	२	२	२२	२ प्रतिपत्तियाँ
१	६	१८	७ प्रतिपत्तियाँ	२	३	२३	४ प्रतिपत्तियाँ
१	७	१९	८ प्रतिपत्तियाँ	३	०	२४	१२ प्रतिपत्तियाँ
		"एक के समान स्वमान्यता'		४	०	२५	१६ प्रतिपत्तियाँ

प्राभृत	प्राभृत प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या	प्राभृत	प्राभृत-प्राभृत	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या
५	०	२६	२० प्रतिपत्तियाँ	१०	१	३२	५ प्रतिपत्तियाँ
६	०	२७	२५ प्रतिपत्तियाँ	१०	२१	५९	५ प्रतिपत्तियाँ
७	०	२८	२० प्रतिपत्तियाँ	१७	०	८८	२५ प्रतिपत्तियाँ
८	०	२९	३ प्रतिपत्तियाँ	१८	०	८९	२५ प्रतिपत्तियाँ
९	०	३०	३ प्रतिपत्तियाँ	१९	०	१००	१२ प्रतिपत्तियाँ

---

१ नन्दीसूत्र

२ जगत्कायस्वभावौ च संवेग वैराग्यार्थम्। —तत्त्वार्थसूत्र अ ७

०	०	३१	२५ प्रतिलिपियाँ	२०	०	१०२	२ प्रतिलिपियाँ
०	०	०	२ प्रतिलिपियाँ[1]	२०	०	१०१	२ प्रतिलिपियाँ
०	०	०	९९ प्रतिलिपियाँ				

बहुश्रुतों का कर्तव्य

उपांगद्वय में उपलब्ध प्रतिलिपियों के स्वयं निर्देश करना, प्रमाणयुक्त ग्रन्थ से प्रतिलिपि की हुई आदर्श देकर भ्रम मान्यता का निरसन करना और स्वमान्यताओं का युक्तिसंगत प्रतिपादन करना इत्यादि आधुनिक पद्धति का सम्पादन प्रक्रिया से सम्पन्न करके उपांगद्वय को प्रस्तुत करना।

अथवा—किसी शोधसंस्थान के माध्यम से चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति पर विस्तृत शोधनिबन्ध लिखवाना।

किसी योग्य श्रमण-श्रमणी या विद्वान् को शोधनिबन्ध लिखने के लिए उत्साहित करना।

शोधनिबन्ध-लेखन के लिए आवश्यक ग्रन्थादि की व्यवस्था करना। शोधनिबन्ध लेखक का सम्मान करना। ये सब बहुश्रुतों के महान् कार्य हैं।

एक व्यापक भ्रान्ति

दोनों उपांगों के दसवें प्राभृत के सतरहवें प्राभृत-प्राभृत में प्रत्येक नक्षत्र का पृथक्-पृथक् भोजन विधान है।

इनमें मांसभोजन के विधान भी हैं।

इन्हें देखकर सामान्य स्वाध्यायी के मन में एक आशंका उत्पन्न होती है।

ये दोनों उपांग आगम हैं—इनमें ये मांसभोजन के विधान कैसे हैं?

यह आशंका अज्ञात काल से चली आ रही है।

सूर्यप्रज्ञप्ति के वृत्तिकार मलयगिरि ने भी इन मांसभोजनविधानों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का ऊहापोह या स्पष्टीकरण नहीं किया है।

उन टीका स्थान में भोजनविधान की व्याख्या करके जैन आगमों के भोजन भूमिका के समान इनकी भी सूचना दी है।

जैन आगमों के भोजनविधानों की व्याख्याएँ न करने के सम्बन्ध में यह कहना है कि—मांसाहारी इनकी व्याख्या क्या की जाय?

अथवा मांसाहारी भोजनों को वनस्पतिपरक सिद्ध करने की कल्पना करना उन्हें उचित नहीं लगा होगा? या उस समय ऐसी कोई परम्परागत धारणा न रही होगी?

---

१ (क) इन प्रतियों के पूर्व के प्रकरण विच्छिन्न हैं।
(ख) इन प्रतिलिपियों के अन्त स्वतन्त्र प्रतिपादन सूत्रों की विच्छिन्न हैं।
उपलब्ध के संकलनकर्ता ने प्रतिलिपियों के जितने उद्धरण दिये हैं, उनके प्रमाणयुक्त मूल ग्रन्थों के नाम, ग्रन्थकारों के नाम, अध्याय, श्लोक, सूत्रांक आदि नहीं दिये हैं।

स्व. पूज्य श्री घासीलालजी म. ने इस भोजन सूत्र को प्रक्षिप्त सिद्ध किया है और कतिपय मासनिष्पन्न भोजनों को वनस्पतिनिष्पन्न भोजन भी सिद्ध किया है। ये दोनों परस्पर विरोधी कार्य हैं।

नक्षत्रभोजन का यह सूत्र यदि प्रक्षिप्त है तो मासनिष्पन्न भोजनों को वनस्पत्यादि निष्पन्न भोजन सिद्ध करने से लाभ ही क्या है ? क्योंकि सूर्यप्रज्ञप्ति के प्ररूपक लौकिक कार्यों की सिद्धि के लिए सावद्य विधि का प्ररूपण ही नहीं कर सकते और सूत्रागमों का गुम्फन करने वाले गणधर ऐसे भ्रामक शब्दों का प्रयोग भी नहीं करते, यह निश्चित है। इसलिए हमारे बहुश्रुतों को इस सूत्र के सम्बन्ध में सर्वसम्मत निर्णय घोषित करना ही चाहिए।

जैनागमों में नक्षत्र गणना का क्रम अभिजित से प्रारम्भ होकर उत्तराषाढा पर्यन्त का है। प्रस्तुत प्राभृत के इस सूत्र में नक्षत्रों का क्रम कृत्तिका से प्रारम्भ होकर भरणी पर्यन्त का है।[1] उपलब्ध अनेक ज्योतिष ग्रन्थों में भी यह नक्षत्र गणना का क्रम विद्यमान है—अतः यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत नक्षत्रभोजनविधान का क्रम अन्य किसी ज्योतिष ग्रन्थ से उद्धृत है।[2]

---

१ चन्द्र-सूर्य-प्रज्ञप्ति के संकलनकर्त्ता श्रुतधर स्थविर ने नक्षत्र गणना क्रम की पाँच विभिन्न मान्यताओं का निरूपण करके स्वमान्यता का प्ररूपण किया है।

पाँच अन्य मान्यताओं का निरूपण—

अट्ठाईस नक्षत्रों का गणना क्रम —

१—कृत्तिका नक्षत्र से भरणी नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

२—मघा नक्षत्र से अश्लेषा नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

३—धनिष्ठा नक्षत्र से श्रवण नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

४—अश्विनी नक्षत्र से रेवती नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

५—भरणी नक्षत्र से अश्विनी नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र

स्वमान्यता का प्ररूपण—

अभिजित नक्षत्र से उत्तराषाढा नक्षत्र पर्यन्त २८ नक्षत्र।

—चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति, दशम प्राभृत, प्रथम प्राभृत प्राभृत, सूत्रांक ३२

नक्षत्र गणना के इस क्रम के विधान से यह स्पष्ट है कि दशम प्राभृत के सप्तदशम प्राभृत प्राभृत में निरूपित नक्षत्रभोजनविधान सूर्यप्रज्ञप्ति के संकलनकर्त्ता की स्वमान्यता का नहीं है। आश्चर्य यह है कि अब तक सम्पादित एवं प्रकाशित चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्तियों के अनुवादकों आदि ने इस सम्बन्ध में स्पष्टीकरण लिखकर व्यापक भ्रान्ति के निराकरण के लिए सत्साहस नहीं किया।

२ कुल्माषास्तिलतण्डुलानपि तथा माषाश्च गव्यं दधि ।
त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ॥
तद्वत्पायसमेव चापपललं मार्गं च शाशं तथा ।
षाष्टिक्यं च प्रियङ्गवपूपमथवा चित्राण्डजान् सत्फलम् ॥
कौर्मं सारिकगोधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हया ।
घ्रक्षे स्यात्कृसरान्नमुद्गमपिवा पिष्टं यवानां तथा ॥
मत्स्यान्नं खलु चित्रितमथवा दध्यन्नमेवं क्रमात् ।
भक्ष्याऽभक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान् भक्षेत्तथाऽऽलोकयत् ॥

इस उपांगद्वय की वर्तमान शैली के अनुसार अन्य आगमों के साथ संकलना का सूत्र रहा होगा, जो विषम काल के प्रभाव से विच्छिन्न हो गया है—ऐसा अनुमान है।

आगमज्ञ मनीषियों ने इस ज्योतिषगणितविधान को और नक्षत्रभोजनाधिकार को स्वमान्य मानने की कुछ कड़ी आलोचना की है।

इसी एक सूत्र के कारण उपांगद्वय के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की बातें बढ़कर चलाई गई हैं।

इन आशंकाओं के निराकरण के लिए आज तक किसी भी बहुश्रुत ने सकल उपांगद्वय का स्पष्टतर समाधान करने का प्रयत्न नहीं किया है।

इसका परिणाम यह हुआ कि इन उपांगों का स्वाध्याय होना भी बन्द हो गया।

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति और अन्य ज्योतिषग्रन्थों का तुलनात्मक चिन्तन

दशम प्राभृत के अष्टम प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र संस्थान
नवम प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र, तारा संख्या

नक्षत्रस्वामी-देवता

चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति में दशम प्राभृत के बारहवें प्राभृत-प्राभृत के सूत्र ४६ में नक्षत्र देवताओं के नाम हैं।
मुहूर्त चिन्तामणि के नक्षत्र प्रकरण में नक्षत्र देवताओं के नाम हैं।
इन दोनों के नक्षत्र देवता निरूपण में सर्वथा साम्य है। केवल नक्षत्र गणना क्रम का अन्तर है।
इसी प्रकार दशम प्राभृत के तेरहवें प्राभृत-प्राभृत में तीस मुहूर्तों के नाम,
चौदहवें प्राभृत-प्राभृत में पन्द्रह दिनों के और रात्रियों के नाम,
पन्द्रहवें प्राभृत-प्राभृत में दिवस तिथियों और रात्रि तिथियों के नाम,
सोलहवें प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र गोत्रों के नाम,
सत्रहवें प्राभृत-प्राभृत में नक्षत्र भोजनों का विधान।
बृहद् दैवज्ञरंजनम् मुहूर्तमार्तण्ड आदि ग्रन्थों में ऊपर अंकित सभी विषय उपलब्ध हैं।

आत्मतोषानुभूति

अनुयोग के इस महायज्ञ में श्री विनयमुनिजी आदि के सविनय सविवेक विविध सहयोगों से अतिशय आत्मानुभव कर रहा हूँ और सभी सहयोगियों की संयमयात्रा सफल हो यह कामना कर रहा हूँ।

आत्मालोचन—सूर्यप्रज्ञप्ति के सम्पादन में जहाँ कहीं अनाभोगवश कुछ भी विपरीत या अन्यथा हुआ हो तो आगमज्ञ बहुश्रुत सुधार कर स्वाध्याय करें और आगामी प्रकाशन के लिए उपयोगी सुझाव प्रेषित करें।

सहयोग साभार स्वीकार

सूर्यप्रज्ञप्ति के कतिपय सूत्रों से सम्बन्धित गणित विभाग का सांगोपांग विवेचन आगम दर्शन के प्रज्ञावान्तर श्री कार्यनिष्ठो म सा के शिष्य रत्न श्री महेन्द्रमुनिजी ज्ञान-साहित्य-अनुसन्धानकर्ता ने लिखकर पूर्ण सहयोग किया है।

पण्डित साहब श्री शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने समय-समय पर अनेक उपयोगी सुझाव देकर प्रस्तुत संस्करण के सम्पादन में सक्रिय सहयोग किया है।

श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी ने सूर्यप्रज्ञप्ति की प्रस्तावना लिखकर जिज्ञासु ज्योतिर्विदों को सूर्यप्रज्ञप्ति के स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया है।

आगम समिति के सूत्रधार सज्जन श्रावकों ने मेरे श्रम की सफलता के लिए जिज्ञासु जनों में इस संस्करण को वितरित किया है।

११ जनवरी' ८९

—अ. प्र. मुनि कन्हैयालाल 'कमल'

—श्री वर्धमान महावीर केन्द्र,

आबू पर्वत—३०७ ५०१

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)
डॉ० [illegible]
साहित्य-सांख्य-न्यायाचार्य
एम० ए० (संस्कृत एवं हिन्दी), पी-एच० डी०, डी० लिट्
निदेशक
ब्रजमोहन बिड़ला शोध केन्द्र, उज्जैन (म० प्र०)

१. धर्मनिरपेक्षी और उनका सर्वमान्य साहित्य

भारत के सिद्ध तपस्वी, मन्त्रद्रष्टा महर्षि और महान् त्यागी-विरागियों द्वारा प्रदत्त शान्तिसूत्र के ज्ञान को सुरक्षित रखते हुए उसकी अमृत बिन्दुओं को प्राणिमात्र के कल्याण के लिए वितरित करने वाले जैन, ब्राह्मण एवं बौद्धाचार्यों ने जिस धार्मिक/सर्वमान्य साहित्य को पुरस्कृत किया, उसकी तुलना विश्व के समस्त किसी धर्म साहित्य में उपलब्ध नहीं होती है। 'जैन आगम, ब्राह्मण वेद तथा बौद्ध पिटक' के रूप में व्याप्त चिन्तन-प्रवाह की दिशाओं से जन-जन के अन्तर को उज्ज्वल बनाने वाले इस सर्वमान्य साहित्य का हमारे पूर्वाचार्यों ने विशुद्धभाव से लोक कल्याण की भावना से ही प्रणयन किया था, यही कारण है कि यह सुदीर्घ काल से पूर्ण श्रद्धा के साथ समाज में सम्मानित हुआ है, हो रहा है और चिरकाल तक होता रहेगा। धर्म के सनातन मार्गों की समष्टि को लिए हुए यह साहित्य मानव को गौरव प्रदान करता है, मानव मात्र को मार्ग दर्शन देता है, समुचित मार्ग का निर्देश करता है, कल्याणाभिमुख का विशेष निर्माता है और सांसारिक-बन्धनों से मुक्त होकर मोक्ष का अधिकारी बनने के लक्ष्य तक पहुँचाता है।

२. एक लक्ष्य 'मोक्ष प्राप्ति' और उसके धार्मिक सन्दर्भ

भाषा, भाव, कथन की विविधता, वक्ता की और द्रष्टा की भिन्नता एवं अनेक सम्प्रदायों की अनेकता के रहते हुए भी आगम, वेद अथवा पिटकों के आन्तरिक उद्देश्य में एक विशेष समता है। भारतीय सिद्धान्तों के दृष्टिकोण—१. कर्म विपाक, २. संसार-बन्धन और ३. मुक्ति, मुख्यतः एक ही ध्येय की पूर्ति करते हैं, वह है—सब कर्मों का क्षय करके मोक्ष की प्राप्ति[1]। मोक्ष किसका अभीष्ट है? यह प्रश्न मोक्ष प्राप्ति के प्रसंग में सहज उठता है, तो इसका सभी दार्शनिकों का एक ही उत्तर होता है 'आत्मा का'। पर आत्मा क्या है? यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक हो गया, तब सभी दर्शनकारों ने इस सम्बन्ध में अपनी-अपनी दृष्टि से 'आत्म चिन्तन' की प्रक्रियाएँ प्रस्तुत कीं। इन प्रक्रियाओं के आधार पर की गई व्याख्याओं से पृथक्-पृथक् परम्पराएँ प्रवर्तित हुईं और जैन, बौद्ध एवं वैदिक तथा इनके अवान्तर अनेक सिद्धान्तों ने अपनी-अपनी दार्शनिकता प्रवर्तित की। आस्तिक और नास्तिक जैसे परम्परा-बोधक शब्दों की बहुलता के कारण

१. [illegible] —[illegible] अ० १, गा० ११

चार्वाक ने जहाँ प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानकर 'भूतात्मवाद और देहात्मवाद' को जन्म दिया वहीं उनके सूक्ष्मरूप से 'मन आत्मवाद, इन्द्रियात्मवाद (एकेन्द्रियात्मवाद तथा समूहात्मवाद), प्राणात्मवाद, पुत्रात्मवाद, अर्थात्मवाद' के सिद्धान्त भी उभर आये। इसी प्रकार वैदिक-विचारकों ने वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, न्याय वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त के द्वारा भी विभिन्न ऊहापोह-पूर्वक आत्मा की खोज में 'धर्म, चेतन, कर्म, देव, माया, ब्रह्म, जीव, जड़, पुरुष, प्रकृति' आदि अनेक तत्त्वों की साङ्गोपाङ्ग मीमांसा की गई।

जैन-दर्शन में 'अतति/गच्छति इति आत्मा' इस व्युत्पत्ति को लक्ष्य में रखकर, गमनार्थक धातु को ज्ञानार्थक भी मानने की व्याकरण-सम्मत व्यवस्था को स्वीकृत करते हुए यह व्याख्या प्रस्तुत की कि जो 'ज्ञान आदि गुणों में आ-सामन्तात रहता है, अथवा उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यरूप त्रिक के साथ समग्ररूप में रहता है, वह 'आत्मा' है।[1]

जैनदर्शनकारों ने आत्मा के सम्बन्ध में अनेक दृष्टियों से विचार किया है, इसीलिये जैनदर्शन का अपर-नाम 'अनेकान्तदर्शन' भी प्रसिद्ध है। 'चैतन्यस्वरूप' यह आत्मा का मुख्य विशेषण है। जैनमतानुसार अन्य विशेषण इस प्रकार है—

'चैतन्यस्वरूप परिणामी कर्ता साक्षाद् भोक्ता देहपरिमाण प्रतिक्षेत्र भिन्न पौद्गलिकादृष्टवांश्चायम्'[2]

३ आत्मा का पर्याय 'जीव' तथा उसका मौलिक विश्लेषण

जैनदर्शन का 'आत्मशास्त्र' अत्यन्त सूक्ष्म है। इसकी विचारणा सम्पूर्ण वैज्ञानिक है। विभिन्न दर्शनकार आत्मा का अस्तित्व तो मानते हैं किन्तु उनमें से कुछ आत्मा का 'अनेकत्व, नित्यत्व अथवा कर्तृत्व मोक्षादि' नहीं मानते हैं किन्तु जैनदर्शन में आत्मा को नित्य और अविनाशी माना है। आत्मा के अस्तित्व के बारे में 'जीवो उवओगलक्खणो'[3] सूत्र द्वारा वर्धमान महावीर ने उसकी पहचान का मार्ग दिखलाया है।

जैन शास्त्रकार आत्मा के पर्याय रूप में 'जीव' शब्द का प्रयोग करते हैं और वह जीवन, प्राणशक्ति एवं चेतना का द्योतक है। त्रैकालिक जीवन-गुण से युक्त होने के कारण आत्मा की 'जीव' संज्ञा सार्थक है। 'जीवन' के आधार दशविध 'प्राण' बतलाये गये हैं। यह व्यवहारदृष्टि है। निश्चयदृष्टि से जिसमें चेतना' पायी जाए वह 'जीव' है।[4] जीव का लक्षण जैनदर्शन के अनुसार 'उपयोग' है। उपयोग, चेतना का अनुविधायी परिणाम होता है। इसके 'ज्ञान' और 'दर्शन' नाम से दो भेद हैं तथा इन दोनों के धारक को 'जीव' कहते हैं। जीव में अचेतन पदार्थों की तरह 'प्रदेश' और 'अवयव' भी माने गये हैं उसे इसी कारण 'अस्तिकाय' कहा गया है।[5] इसमें प्रतिक्षण परिणमन क्रिया होती रहती है फिर भी वह अपने मूलरूप/गुण को नहीं छोड़ता। ये 'उत्पाद, व्यय और

---

१ [क] नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं॥ —उत्त अ २८, गा ११
[ख] बृहद् द्रव्यसंग्रह-५७

२ प्रमाणनय-तत्त्वालोक, ७-५६

३ क उत्त अ २८, गा १०
ख उपयोगो लक्षणम् —तत्त्वार्थसूत्र अ २, सू ८

४ तत्त्वार्थराजवार्त्तिक, १४७

५ तत्त्वार्थराजवार्तिक, २८१

[illegible] पर्याय सहित सत्ता रूप माना गया है। इन कारणों से जीव को भी एक 'द्रव्य' स्वीकार किया है। जीव द्रव्य अनन्त हैं। ये सभी चेतना और चैतन्य गुण वाले हैं, ये न किसी द्वारा बनाये गये हैं [illegible] परिणमनों के [illegible] सकते हैं तथा [illegible] परिणमनों के [illegible] भी हैं। जीवद्रव्य से विपरीत [illegible] अजीव द्रव्य भी हैं जो मूलतः पाँच [illegible] से युक्त हैं। इनमें १. 'धर्मास्तिकाय' द्रव्य है जो 'जीवों' और 'पुद्गलों' को गति-सहायक गुण वाला है। २. 'अधर्मास्तिकाय' द्रव्य भी उन्हीं को स्थिति सहायक गुण वाला है। ३. [illegible] 'आकाशास्तिकाय' द्रव्य भी सभी द्रव्यों को अवकाश देने के गुण वाला है। ४. 'पुद्गलास्तिकाय' द्रव्य स्कन्ध, देश, प्रदेश और परमाणु स्वरूप में पूरण-गलन-स्वभाव वाला और वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श आदि गुणों से युक्त मूर्त द्रव्य है।[१]

६. जीव तथा अजीव द्रव्य रूप 'जगत्' और उसके ज्ञान की आवश्यकता

सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी श्री वीतराग जिनेश्वर ने समस्त जगत् को जीव और अजीव द्रव्यों का संगठित रूप माना है और यह भी प्रतिपादित किया है कि यह जगत् अनादि अनन्त तथा 'पंचास्तिकायमय' है।[२] इस जगत् में जो-जो रूप दिखाई देते हैं और विविध स्वरूप में जीव द्रव्यों के भोग उपभोग में आते हैं वे सभी पुद्गल द्रव्य हैं तथा इन पुद्गल द्रव्यों के विविध परिणामों के स्वभाव संयोगादि से जिन जिन को भिन्न भिन्न स्वरूप से सुख दुःखादि का अनुभव होता है वे भिन्न भिन्न जीव-द्रव्य हैं। क्योंकि जड़ द्रव्यों में सुख दुःखादि की अनुभव रूप ज्ञान-चेतना

---

१. उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्। —तत्त्वार्थसूत्र अ. ५, सू. २९

२. कइ णं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?
   गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता,
   तं जहा — १. धम्मत्थिकाए, २. अधम्मत्थिकाए,
   ३. आगासत्थिकाए, ४. जीवत्थिकाए,
   ५. पोग्गलत्थिकाए। —विया. श. २, उ. १०, सू. १

यद्यपि जैन आगम में द्रव्य पांच ही हैं 'पंचास्तिकायो लोक' यह सूत्र स्पष्ट प्रमाण है तथापि कहीं-कहीं 'काल' को स्वतन्त्र द्रव्य मानकर 'षड्द्रव्य' भी बतलाये गये हैं।

उदाहरण स्वरूप —
   से किं तं दव्वणामे ?
   दव्वणामे छव्विहे पण्णत्ते,
   तं जहा — १. धम्मत्थिकाए, २. अधम्मत्थिकाए,
   ३. आगासत्थिकाए, ४. जीवत्थिकाए,
   ५. पोग्गलत्थिकाए, ६. अद्धासमए य।
   से तं दव्व-णामे।

—अनु. सू. २१८

[illegible] के भी [illegible] स्पष्ट किया है कि [illegible] 'काल' [illegible] द्रव्य को भी स्वतन्त्र द्रव्य मानते हैं। [illegible] 'काल' को जीव और अजीव का पर्याय-स्वरूप माना है।

नही होती। इसीलिए जैन दृष्टि से समस्त जगत् जीव और अजीव ऐसे दो पदार्थों मे विभक्त है[1] और अजीव मे विविध परिणमनरूप मे प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला यह समस्त जगत् नवतत्त्वात्मक स्वरूप से सत् है।[2] जिसकी किसी भी काल मे किसी से उत्पत्ति नही हुई और जिसका किसी भी काल मे आमूल-सर्वथा विनाश भी नहीं है, ऐसे अनादि-अनन्त, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य परिणामी पाचो अस्तिकाय द्रव्यो मे कालादि भेद से जो-जो चित्र-विचित्र पर्याय परिणमन होते हैं, वे सभी 'स्वत और परत' सहेतुक होते हैं। अत उनसे सम्बद्ध कार्य-कारणभाव का यथार्थ स्वरूप जानना आवश्यक है।

धर्मास्तिकायादि पदार्थ लोकाकाश रूप जगत मे ही व्याप्त हैं। इसी जगत् मे जीवो की स्थिति है और जगत के समस्त जीवो को अनादिकाल से सुख और शान्ति की अपेक्षा रहती ही आयी है। सुख और शान्ति के लिए तड़पते हुए जीवो को सुख शान्ति का वास्तविक मार्ग बतलाने की दृष्टि से ही परम करुणामूर्ति अरिहन्त तीर्थकर धर्मतीर्थ की प्ररूपणा करते हुए कहते हैं कि जिन आत्माओ को सुख एव शांति की अभिलाषा हो, उन्हें अपनी आत्मा मे मोक्षाभिलाषरूप सवेगभाव तथा सासारिक सुख के प्रति अनासक्त भाव रूप 'निर्वेद' प्रकट करना चाहिए तभी वे सुख शान्ति का अनुभव कर सकते हैं। इसीलिए वाचकप्रवर श्री उमास्वाति ने भी सवेग-निर्वेद की उत्पत्ति का उपाय बतलाते हुए कहा है कि—'जगत कायस्वभावौ च सवेग वैराग्यार्थम्' और उसी 'तत्त्वार्थसूत्र' म तथा नवतत्त्व मे आत्मा म सवरभाव प्रकट करने के लिये बारह भावनाओ के भावने की बात कही गई है। उसम 'लोक-स्वभाव भावना भी एक है। यह 'लोक-स्वभाव-भावना तभी भावित कर सकता है, जबकि उसे लोक का स्वरूप ज्ञात हो।

'जगत का अपर-पर्याय 'लोक' है। लोक का अर्थ दृश्यादृश्य "क्षेत्र" भी होता है। अत धर्मास्ति-कायादि द्रव्य जिस आकाश मे विलसित हो रहे हैं, उस क्षेत्र को भी 'लोक" कहते हैं। इसी लोक स्वरूप-परिज्ञान करने की आज्ञा जैनागम तथा अन्य शास्त्रों में दी गई है। "आचाराङ्ग-सूत्र" मे कहा गया है

'विदित्ता लोग वता लोगसण्ण से मइम परिक्कमेज्जासि'।[3] इसके अनुसार लोकविषयक ज्ञान के अनन्तर ही विषयासक्ति मे त्याग के पराक्रम निर्दिष्ट है। इस प्रकार—

'द्वीप समुद्र पर्वत क्षेत्र-सरित प्रभति विशेष सम्यक सकल-नगमादि-नयेन ज्योतिषा प्रवचन-मूलसूत्रजन्य-मानेन कथमपि भावविद्भि सद्भि स्वय पूर्वापरशास्त्राथ पर्यालोचनेन प्रवचन पदार्थविदुपासनेन चाभियोगादि विशेषविशेषेण वा प्रपचेन परिवेद्य इति।[4] कथन द्वारा श्लोकवार्तिककार ने भी लोक-विषयक सभी पदार्थों के

---

१ (क) दुवे रासी पण्णत्ता
त जहा—१ जीवरासी य, २ अजीवरासी य। —सम सू १४८
(ख) अत्थि जीवा अत्थि अजीवा, —उव सु ५६
(ग) के अय लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। के अणता लोग ? जीवच्चेव अजीवच्चेव। क सासया लोगे ? जीवच्चेव अजीवच्चेव। —ठाण अ २, उ ४, सू ११४

२ जीवाजीवा य बधो य पुण्ण-पावासवा तहा।
सवरो निज्जरा मोक्खो सतेए तहिया नव ॥१४॥ उत्त अ २८, गा १४

३ आचारागसूत्र—श्रुत १, अ ३, उ १, सू २८

४ तत्त्वार्थसूत्र ३/७० पर श्लोकवार्तिक

"एयंसि णं एमहालयंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा न मए वा वि।" —विया स १२, उ ७, सु ३/१२

अर्थात् इस लोक का ऐसा कोई प्रदेश नही है, जहाँ अनंत बार जीव उत्पन्न हुआ और मरा नही। जिस लोक मे मानव उत्पन्न हुआ है, उसके स्वरूप परिज्ञान से वह सोचने लगता है कि 'इस लोक के प्रत्येक प्रदेश म मेरे अनन्तबार जन्म और मरण हुए हैं, अत इस पुन पुन जन्म-मरण के चक्र से मुझे मुक्त होना चाहिये।" उसकी यह जागरूकता उसे विभिन्न पुण्य-पाप, सत्कर्म दुष्कर्म आदि से परिचित कराती है और उनके स्वरूपो से परिचित होकर असतकर्मों से निवृत्ति एव सतकर्मप्रवृत्तिपूर्वक अपने निरापद गन्तव्य का निर्धारण करने म तत्पर हो जाता है। यदि समस्त लोक तथा पृथ्वी पर स्थित द्वीपादि का निरूपण शास्त्रो मे नहीं होता तो जीव अपने स्वरूप के परिचय से अपरिचित ही रह जाता और वैसी स्थिति मे आत्मज्ञान के प्रति श्रद्धान तथा ज्ञानादि की सम्भावनाएँ भी विलुप्त हो जाती।

जो जीवे वि न याणाति अजीवे वि न याणति।
जीवाऽजीवे अयाणतो कह सो नाहीइ सजम ॥ ३५ ॥
जो जीवे वि वियाणाति अजीवे वि वियाणति।
जीवाऽजीवे वियाणतो सो हु नाहीइ सजम ॥ ३६ ॥
जया जीवमजीवे य दो वि एए वियाणई।
तया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणई ॥ ३७ ॥
तया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणई।
तया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणई ॥ ३८ ॥
जया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणई।
तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ ३९ ॥
जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ सजोग सऽब्भितरबाहिर ॥ ४० ॥
जया चयइ सजोग सऽब्भितर-बाहिर।
तया मुडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिय ॥ ४१ ॥
जया मुडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिय।
तया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे अणुत्तर ॥ ४२ ॥
जया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे अणुत्तर।
तया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ॥ ४३ ॥
जया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड।
तया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छई ॥ ४४ ॥
जया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छई।
तया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ॥ ४५ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] है ।

५ लोक और उसके "सूत्र"—

[illegible] है । [illegible] है । ऐसे साहित्य [illegible]

लोक परिचय के लिए

१ आचारांग सूत्र [illegible] ।
२ स्थानांग सूत्र, [illegible] ।
३ समवायांग सूत्र—[illegible] ।
४ भगवतीसूत्र ११ शतक, १० उद्देशक[illegible] ।

---

१ [illegible] ।
— [illegible]
२ [illegible]
३ [illegible]
४ [illegible]
५ [illegible]
[illegible] ।
६ [illegible]
७ [illegible]
[illegible] ।
८ [illegible]
९ [illegible]
१० [illegible] ।
[illegible] [illegible]

५ १३ शतक, ४ उद्देशक।[1] तथा अन्य सूत्रों में प्रासंगिक रूप से चर्चित विषयों का अध्ययन किया जाये तथा—

२ लोक के आकार-ज्ञान के लिये—

१ आचारांगसूत्र श्रुत १ अ ८, उ ।२। द्रष्टव्य हैं।

लोक विषयक विचारणा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। जैन आगमों में लोक का अभिप्रेतार्थ "रज्जुलोक" है, क्योंकि यह चौदह विभागों में विभाजित है, अतः इसे "चौदह रज्जुलोक" के नाम से भी पहचाना जाता है। वैसे वैदिक धर्मग्रन्थों में भी "चौदह रज्जुलोक" की मान्यता एवं वर्णन मिलते हैं।

एक रज्जुलोक का प्रमाण— कोई देव एक हजार भार वाले लोहे के गोले को अपनी समग्र शक्तिपूर्वक आकाश से फेंके और वह लोहगोलक ६ माह ६ दिन, ६ घड़ी, ६ पल में जितना क्षेत्र लांघ जाए, उतना क्षेत्र

उ गोयमा! असंखेज्जइविहे पण्णत्ते,
तं जहा—जंबुद्दीवतिरियलोयखेत्तलोए जाव सयंभुरमणसमुद्दतिरियलोयखेत्तलोए।
प्र उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते! कइविहे पण्णत्ते?
उ गोयमा! पण्णरसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुयउड्ढलोयखेत्तलोए।
गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्त लोए अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए
इसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए। —वियाः स ११, उ १०, सु २६

१ प कहि णं भंते! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते?
उ गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स असंखेज्जइभागं ओगाहित्ता एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।
प कहि णं भंते! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते?
उ गोयमा! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स साइरेगं अद्धं ओगाहित्ता, एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।
प कहि णं भंते! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते?
उ गोयमा! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे, एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।
प कहि णं भंते! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते?
उ गोयमा! जम्बुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ णं तिरियलोयमज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति,
तं जहा-पुरत्थिमा पुरत्थिमदाहिणा एवं जहा दसमसते जाव नामधेज्ज त्ति।
—वियाः स १३, उ ४, सु १० १५

२ अत्थि लोए, णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, सादिए लोए, अणादिए लोए, सपज्जवसिए लोए, अपज्जवसिए लोए, सुकडे ति वा दुक्कडे ति वा कल्लाणे ति वा पावए ति वा साधू ति वा असाधू ति वा सिद्धी ति वा असिद्धी ति वा निरए ति वा अनिरए ति वा।
—आचा श्रु १, अ ८, उ १, सु २००

[illegible] है। [illegible] का आकार [illegible]
[illegible] है। [illegible]
([illegible]) [illegible] है।

[illegible] है, [illegible] "[illegible]" कहते हैं। [illegible] है।

[illegible], "[illegible]" और "[illegible]" [illegible] है। [illegible] "[illegible]" [illegible] और [illegible] "[illegible]" है और "[illegible]" [illegible] है।

[illegible] है। [illegible] है।

६ [illegible] का आलोक और उसका स्वरूप

[illegible] है। मनुष्यलोक [illegible] और [illegible] है और [illegible] है। [illegible] ज्योतिष्क [illegible] है — [illegible] है।

[illegible] ११० योजन [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। मनुष्यलोक [illegible] है। [illegible] ज्योतिष्क [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है।

[illegible] है। [illegible] है। [illegible] ([illegible]) [illegible] होता है।

[illegible] है। [illegible] है। [illegible]

सक्रियता की समयमर्यादा निश्चित करने का एक मात्र आधार काल-द्रव्य है। सामान्यतः जगत में "काल" नामक कोई स्वतन्त्र पदार्थ नहीं है तथापि उपर्युक्त जड़ और चेतन पदार्थ के सम्बन्ध में अत्यन्त उपकारक होने से शास्त्रकारों ने इसको औपचारिक द्रव्य भी कहा है। काल का अर्थ यहाँ समय (सैकण्ड, मिनिट, घण्टे, दिन पक्ष, मास और वर्ष आदि) का सूचक है। इस समय को यदि कोई भी निश्चित कर देने वाले साधन हैं, तो वे हैं "सूर्य-चन्द्र"।

अनन्तज्ञानी तीर्थंकर परमात्मा ने सूर्य-चन्द्र दोनों ही असंख्य कहे हैं और इनमें परस्पर तनिक भी न्यूनाधिकता नहीं है। वस्तुतः ये चार प्रकार के देवों में "ज्योतिषी देव" हैं। इनके विमानों में जटित विशिष्ट रत्नों के प्रकाश से जगत् के सब पदार्थ प्रकाशित होते हैं। सूर्यविमान के रत्नों में वर्तमान एकेन्द्रिय जीवों को आतप नामकर्म से उष्ण प्रकाश का अनुभव होता है और चन्द्र विमान के रत्नों में वर्तमान एकेन्द्रिय जीवों को उद्योत नामकर्म से शीत प्रकाश का अनुभव होता है।

असंख्य सूर्य ज्योतिषी-निकाय के इन्द्र हैं और इन असंख्य सूर्य इन्द्रों के रहने के विमान भिन्न-भिन्न होते हैं। उसी प्रकार चन्द्रों के भी विमान भिन्न भिन्न हैं। सूर्य का प्रत्येक विमान पूर्वदिशा में ४००० सिंह रूप, दक्षिण में ४००० हस्ति रूप, पश्चिम में ४००० वृषभ रूप तथा उत्तर में ४००० अश्व रूप इस प्रकार कुल १६००० आभियोगिक (सेवकादि) देव इन विमानों का वहन करते हैं। सूर्य के विमान पृथ्वी से ८०० योजन ऊँचे हैं तथा वे शाश्वत हैं। शाश्वत पदार्थों का १ योजन ३६०० मील जितना होता है। जम्बूद्वीप और उसके बाद वाले असंख्य द्वीप समुद्रों में सूर्य-चन्द्र सदा हर समय प्रकाश फैला रहे हैं। यथा—

जम्बूद्वीप में	२ सूर्य	—	२ चन्द्र
लवणसमुद्र में	४ सूर्य	—	४ चन्द्र
धातकीखण्ड में	१२ सूर्य	—	१२ चन्द्र
कालोदधिसमुद्र में	४२ सूर्य	—	४२ चन्द्र
अर्ध पुष्करद्वीप में	७२ सूर्य	—	७२ चन्द्र
	१३२ सूर्य	—	१३२ चन्द्र

इन सूर्य-चन्द्रों के सम्बन्ध में अन्य ज्ञातव्य इस प्रकार है—

मनुष्यलोक के सूर्य-चन्द्र

१ अस्थिर (परिभ्रमणशील)
२ इनके विमान की पीठिका अर्ध कोष्ठकाकार
३ चन्द्र विमान ५६/६१ योजन (लम्बाई-चौड़ाई)
४ चन्द्र विमान की ऊँचाई २८/६१ योजन
५ सूर्य विमान ४८/६१ योजन (लम्बाई चौड़ाई)
६ सूर्य विमान की ऊँचाई २४/६१ योजन।

मनुष्यलोक से बाहर के सूर्य-चन्द्र

१ स्थिर (परिभ्रमणरहित)

२ चतुरस्र इष्टकाकार
३ चन्द्र विमान ५६/६१ योजन (लम्बाई चौड़ाई)
४ चन्द्र विमान की ऊँचाई २८/६१ योजन
५ सूर्य विमान ४८/६१ योजन (लम्बाई-चौड़ाई)
६ सूर्य विमान की ऊँचाई २४/६१ योजन।

जम्बूद्वीप में एक चन्द्र, एक सूर्य ४८ घण्टे में प्रत्येक मण्डल को पूर्ण करता है। जम्बूद्वीप में एक सूर्य दक्षिणदिशा में भरतक्षेत्र में होता है तब दूसरा सूर्य उत्तरदिशा में—ऐरवत क्षेत्र में रहता है। उसी समय एक चन्द्र पूर्व महाविदेह में होता है तब दूसरा चन्द्र पश्चिम महाविदेह में रहता है। जहाँ सूर्य होता है वहाँ दिन और जहाँ चन्द्र होता है वहाँ रात्रि होती है। अतः प्रत्येक क्षेत्र में जो सूर्य-चन्द्र आज दिखाई देते हैं, वे दूसरे दिन नहीं दिखाई देते। इस प्रकार सूर्य चन्द्र का परिभ्रमण सतत चालू है। अढाई द्वीपवर्ती सभी सूर्य-चन्द्र द्वीपवर्ती मेरुपर्वत के चारों ओर सतत परिभ्रमण कर रहे हैं। इस प्रकार कुल १३२ सूर्य-चन्द्र अढाई द्वीपों में मध्यस्थ मेरु की परिक्रमा कर रहे हैं, वे भी विभाग में विभक्त ६६-६६ संख्या में रहते हैं और इनकी पंक्ति सदा एक साथ ही परिक्रमा करती है। सूर्य परिभ्रमण करते हुए जैसे-जैसे आगे बढ़ता है वैसे उस क्षेत्र में सूर्योदय कहलाता है और वह गति करता हुआ पिछले क्षेत्र में अन्तिम दिखाई देता है तब सूर्यास्त कहलाता है।

वस्तुतः जैन आगमों में वर्णित सूर्य-चन्द्रादि ज्योतिष्क देवों की विचारणा इतनी महत्त्वपूर्ण एवं सूक्ष्मता से परिपूर्ण है कि उसका वर्णन करना यहाँ सम्भव नहीं है। भगवतीसूत्र, जीवाभिगम, सूर्य-प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, ज्योतिष्करण्डक, क्षेत्रलोकप्रकाश, बृहत्संग्रहणी, क्षेत्रसमास (लघु एवं बृहत्) तथा त्रिलोकसारादि में यह विषय विस्तार से समझाया गया है।

इतना ही नहीं, अन्य धर्मों के प्रमुख ग्रन्थों में भी सूर्य की सर्वोपरि सत्ता को बहुत ही आदर के साथ सराहा गया है। वेदों में सूर्य को "प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः, विभ्राट्, बृहत्, विश्वस्य दृशे सूर्यम्, सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" और "आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्" इत्यादि अनेक मन्त्रों में विविधरूप से व्यक्त किया है। सर्वाराध्य गायत्री मन्त्र में भी सवितृ देवता की ही महिमा और प्रार्थना है। सूर्य के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अनेक विवेचन वैदिक मन्त्रों में अभिव्यक्त हैं, जिनके भाष्यों में आचार्यों ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म परीक्षणात्मक प्रयोगों के निर्देश भी दिये हैं।

सूर्य सप्ताश्वरथ में स्थित होकर जगत् को प्रकाशित करता है। ऋग्वेद में "सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रं" कहते हुए जगत् को सप्तवर्गी ही बतलाया है। ये सात वर्ग—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, दिक् और काल हैं। और परिवार के नौ सदस्य नवग्रह हैं। सूर्य आदि ग्रहों के बिम्बों का व्यास, गति, युति, ग्रहण आदि के वर्णन पुराणों तथा ज्योतिष के ग्रन्थों में व्यापकरूप से प्राप्त हैं। "वृद्ध गर्गसंहिता" में "महासलिलाध्याय" के उत्तरार्ध में "ग्रहकोषाध्याय, नक्षत्रकर्मगुणाध्याय" आदि में वैज्ञानिक विषयों का विस्तृत वर्णन भी दर्शनीय है। इस प्रकार सूर्य की अखण्ड सत्ता सनातन धर्मग्रन्थों में भी विस्तार से स्वीकृत है।

ऐसी ही सूर्य की सार्वत्रिक महिमा का वैज्ञानिक दृष्टि से समन्वित चिन्तन-प्रधान असाधारण विवेचना के द्वारा व्यक्त करने वाला एक महान् ग्रन्थ 'सूर्य-प्रज्ञप्ति' है। जिसका परिचय इस प्रकार है—

७ सूर्य प्रज्ञप्ति का आगम साहित्य में स्थान

जैन आगम साहित्य प्राचीनतम वर्गीकरण के अनुसार 'पूर्व' और 'अंग' के रूप में वर्गीकृत हुआ था जिसे श्रमण भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती बतलाया है। इसके पश्चात् 'पूर्वश्रुत' को सरल रूप में ग्रथित कर उसका 'दृष्टिवाद'

...लित करने से आचारादि ग्यारह अगो को 'द्वादशागी' कहा गया। आचाराग आदि के प्ररूपक महावीर की श्रुतराशि 'चौदह पूर्व' अथवा 'दृष्टिवाद' के नाम से पहचानी जाती थी। इसका वर्गीकरण 'अगप्रविष्ट' और 'अगबाह्य' ऐसे दो भागो मे किया गया। इनमे प्रथम 'गणधर द्वारा सूत्र मे निर्मित' और द्वितीय 'स्थविरकृत' समाविष्ट हैं। इनके अतिरिक्त एक और सूक्ष्म विवेचन करते हुए नन्दीसूत्र मे "आवश्यक, आवश्यक-व्यतिरिक्त, कालिक और उत्कालिक" रूप मे आगम की सम्पूर्ण शाखाओ का परिचय दिया है। इनके अतिरिक्त दिगम्बर मान्यता के अनुसार "अगप्रविष्ट" आगमों का एक वर्गीकरण दृष्टिवाद के १ परिकर्म, २ सूत्र, ३ प्रथमानुयोग, ४ पूर्वगत एव ५ चूलिका के रूप मे हुआ है। श्री आर्यरक्षित ने आगमो को अनुयोगो के अनुसार चार भागों मे विभाजित किया जिनके "१ चरण-करणानुयोग, २ धर्मकथानुयोग, ३ गणितानुयोग तथा ४ द्रव्यानुयोग" ये नाम दिये हैं। इन्ही ने व्याख्याक्रम की दृष्टि से १ अपृथक्त्वानुयोग और २ पृथक्त्वानुयोग के रूप मे आगमो के दो रूप भी बतलाये। इन सबके अतिरिक्त नन्दीसूत्र की चूर्णि मे एक दृष्टि और उद्घाटित हुई जिसमे द्वादशागी को "श्रुत पुरुष" के अगो की सज्ञा से अभिहित किया गया। साथ ही द्वादश उपागो का भी विनियोग हुआ और प्रत्येक अग के साथ एक एक उपाग (अगों मे कहे गये अर्थों का स्पष्ट बोध कराने वाले सूत्र) भी निर्धारित हुए।

इन और ऐसे ही अन्य भेदो मे श्रुतस्थविर-विरचित "सूर्य प्रज्ञप्ति" सूत्र क्रमश अग, दृष्टिवाद, अगबाह्य, आवश्यक व्यतिरिक्त में उत्कालिक, दृष्टिवाद का प्रथम भेद परिकर्म गणितानुयोग, पृथक्त्वानुयोग और श्रुतपुरुष के ज्ञाताधर्मकथाग के उपाग में अपना स्थान रखती है। बत्तीस आगमो के क्रम मे यह उपागगत २२वीं सख्या पर है। कुछ ग्रन्थो मे इसे पाचवा और कहीं छठा उपाग बतलाया गया है।

८ सूर्य प्रज्ञप्ति का स्वरूपात्मक परिचय

जैन आगम वाङ्मय मे "सूर्य और ज्योतिष्कचक्र" का व्यवस्थित दिग्दर्शन कराने वाला यह उपाग ग्रन्थ मुख्यत ज्ञान एव विज्ञान की सश्लिष्ट पद्धति से विचारों को व्यक्त करता है। गणित और ज्योतिष की महत्त्वपूर्ण विवेचना इसमे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इसकी रचना मे १०८ गद्य-सूत्र और १०३ पद्य-गाथाएँ प्रयुक्त हैं। इसमें एक अध्ययन, २० प्राभृत और उपलब्ध मूलपाठ २२०० श्लोक परिमाण है।

"सूर्य प्रज्ञप्ति" अति प्राचीन ग्रन्थ है, क्योंकि इसका उल्लेख श्वेताम्बर, दिगम्बर और स्थानकवासी—तीनो में मान्य रहा है। इसी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि इसकी स्थिति तीनो के विभाजन से पूर्व थी। इसका समय विक्रम पूर्व का होना चाहिए।

विषय विस्तार की दृष्टि से इसके २० प्राभृतों मे खगोलशास्त्र की जितनी सूक्ष्म विचारणाएँ प्रस्तुत हुई हैं, उतनी अन्यत्र कहीं एक साथ प्रस्तुत नहीं हुई हैं। इसका उपक्रम मिथिला नगरी मे जितशत्रु के राज्य मे नगर के बाहर मणिभद्र चैत्य मे वर्धमान महावीर के पधारने पर, धर्मोपदेश के पश्चात् गणधर गौतम की जिज्ञासा के समाधान हेतु हुआ है। इसमे—"मण्डलगतिसख्या, सूर्य का तिर्यक् परिभ्रमण, प्रकाश्य क्षेत्र परिमाण, प्रकाश सस्थान, लेश्या प्रतिघात, ओज सस्थिति, सूर्यावरक उदयसस्थिति, पौरुषी छायाप्रमाण, योगस्वरूप, सवत्सरो के आदि और अन्त, सवत्सर के भेद, चन्द्र की वृद्धि अपवृद्धि, ज्योत्स्नाप्रमाण, शीघ्रगति निर्णय, ज्योत्स्ना लक्षण, च्यवन और उपपात, चन्द्र सूर्य आदि की ऊँचाई, उनका परिमाण एवं चन्द्रादि के अनुभाव आदि" विषयों की विस्तृत चर्चा है। अत यह ग्रन्थ खगोलशास्त्र के चिन्तको के लिये पर्याप्त उपयोगी तथ्य उपस्थापित करता है।

उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री ने अपने महनीय ग्रन्थ "जैन आगम साहित्य मनन और मीमासा" में सूर्यप्रज्ञप्ति का विस्तृत परिचय देते हुए लिखा है। साराश इस प्रकार है—

प्रथम प्राभृत में—"दिन व रात्रि में ३० मुहूर्त, नक्षत्रमास, सूर्यमास, चन्द्रमास और ऋतुमास में मुहूर्तों की वृद्धि, प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल पर्यन्त सूर्य की गति के काल का प्रतिपादन एवं अन्तिम मंडल में सूर्य की एक बार तथा शेष मण्डलों में सूर्य की दो बार गति होना, आदित्य संवत्सर में दक्षिणायन और उत्तरायन में अहोरात्र के जघन्य तथा उत्कृष्ट मुहूर्त एवं अहोरात्र के मुहूर्तों की हानिवृद्धि के कारण भरत और ऐरावत क्षेत्र के सूर्य का उद्योत क्षेत्र, आदित्यसंवत्सर में दोनों अयनों में प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम पर्यन्त एक सूर्य की गति का अन्तर, अन्तर के सम्बन्ध में छह अन्य मान्यताएँ, सूर्य द्वारा द्वीपसमुद्रों के अवगाहन सम्बन्ध में एक अहोरात्र में सूर्य के परिभ्रमण का परिमाण एवं मण्डलों की रचना तथा विस्तार वर्णित हैं।"

द्वितीय प्राभृत में—"सूर्य के उदय और अस्त का वर्णन करके अन्यतीर्थिकों के मतों का उल्लेख किया है, जिसमें—

१ सूर्य का पूर्वदिशा में उदित होकर आकाश में चला जाना,

२ सूर्य को गोलाकार किरणों का समूह बतलाकर सन्ध्या में नष्ट होना,

३ सूर्य को देवता बतलाकर उसका स्वभाव से उदयास्त होना

४ सूर्य के देव होने से उसकी सनातन स्थिति रहना,

५ प्रातः पूर्वदिशा में उदित होकर सायं पश्चिम में पहुँचना तथा वहाँ से अधोलोक को प्रकाशित करते हुए नीचे की ओर लौट जाना आदि प्रमुख हैं। अन्त में 'सूर्य के एक मण्डल से दूसरे मण्डल में गमन का और वह एक मुहूर्त में कितने क्षेत्र में परिभ्रमण करता है? इसका विचार व्यक्त करते हुए स्वमत का भी प्रतिपादन हुआ है। अन्यधर्मावलम्बी पृथ्वी का आकार गोल मानते हैं किन्तु जैनधर्म की मान्यता उससे भिन्न है, यह भी इससे संकेतित है।"

तृतीय प्राभृत में—चन्द्र, सूर्य द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले द्वीप एवं समुद्रों का वर्णन है। इसी प्रसंग में बारह मतान्तरों का भी निर्देश हुआ है।

चतुर्थ प्राभृत में—चन्द्र और सूर्य के १ विमान संस्थान तथा २ प्रकाशित क्षेत्र के संस्थान और उनके सम्बन्ध में १६ मतान्तरों का उल्लेख है। यहीं स्वमत से प्रत्येक मण्डल में उद्योत तथा ताप क्षेत्र का संस्थान बतलाकर अन्धकार के क्षेत्र का निरूपण किया गया है। सूर्य के ऊर्ध्व, अधः एवं तिर्यक् ताप-क्षेत्र के परिमाण भी यहीं वर्णित है।

पांचवें प्राभृत में—सूर्य की लेश्याओं का वर्णन है।

छठे प्राभृत में—सूर्य का ओज वर्णित है अर्थात् सूर्य सदा एक रूप में अवस्थित रहता है अथवा प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहता है? इस सम्बन्ध में २५ प्रतिपत्तियाँ हैं। जम्बूद्वीप में प्रतिवर्ष केवल ३० मुहूर्त तक सूर्य अवस्थित रहता है तथा शेष समय में अनवस्थित रहता है। क्योंकि प्रत्येक मण्डल पर एक सूर्य ३० मुहूर्त रहता है। इसमें जिस-जिस मण्डल पर वह रहता है, उस दृष्टि से वह अवस्थित है और दूसरे मण्डल की दृष्टि से वह अनवस्थित है, यह स्पष्ट किया है।

सातवें प्राभृत में—सूर्य अपने प्रकाश से मेरुपर्वतादि को और अन्य प्रदेशों को प्रकाशित करता है, यह बतलाया है।

आठवें प्राभृत में—जो सूर्य पूर्व दक्षिण में उदित होता है, वह मेरु के दक्षिण में स्थित भरतादि क्षेत्रों को प्रकाशित करता है और जो मेरु के पश्चिम-उत्तर में उदित होता है, वह मेरु के उत्तर में स्थित ऐरावतादि क्षेत्रों

को प्रकाशित किया है। इस प्रकार दो सूर्यों की सत्ता प्रतिपादित हुई है और इसी से दिन-रात्रि की व्यवस्था स्पष्ट की गई है। साथ ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल का कथन भी इसी प्राभृत में वर्णित है।

नौवें प्राभृत में—पौरुषी छाया का प्रमाण बतलाते हुए सूर्य के उदयास्त के समय ५९ पुरुष-प्रमाण छाया होती है यह बतलाया है और इस सम्बन्ध में अनेक मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमतानुसार पौरुषी-छाया के सम्बन्ध में स्थापना की है।

दसवें प्राभृत में—नक्षत्रों में आवलिका क्रम, मुहूर्त की संख्या, पूर्व पश्चिम भाग तथा उभयभागों से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, युगारम्भ में योग करने वाले नक्षत्रों का पूर्वादि विभाग, नक्षत्रों के कुल उपकुल तथा कुलोपकुल, १२ पूर्णिमा और अमावस्याओं में नक्षत्रों के योग, समान नक्षत्रों के योग वाली पूर्णिमा तथा अमावस्या, नक्षत्रों के संस्थान, उनके तारे, वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म ऋतुओं में मासक्रम के नक्षत्रों का योग तथा पौरुषी प्रमाण, दक्षिण-उत्तर एवं उभयभाग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, नक्षत्र रहित चन्द्रमण्डल, सूर्यरहित चन्द्रमण्डल, नक्षत्रों के देवता, ३० मुहूर्तों के नाम, १५ दिन, रात्रि और तिथियों के नाम, नक्षत्रों के गोत्र, नक्षत्रों में भोजन का विधान, एक युग में चन्द्र व सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग, एक संवत्सर के महीने और उनके लौकिक तथा लोकोत्तर नाम, पाँच प्रकार के संवत्सर, उनके ५-५ भेद और अन्तिम शनैश्चर-संवत्सर के २८ भेद, दो चन्द्र, नक्षत्रों के द्वार, दो सूर्य और उनके साथ योग करने वाले नक्षत्रों के मुहूर्त परिमाण, नक्षत्रों की सीमा तथा विष्कम्भ आदि का प्रतिपादन विस्तार के साथ इसके २२ उप-अध्यायों में हुआ है।

ग्यारहवें प्राभृत में—संवत्सरों के आदि, अन्त और नक्षत्रों के योग का वर्णन है।

बारहवें प्राभृत में—नक्षत्र, चन्द्र, ऋतु, आदित्य और अभिवर्धित ५ संवत्सरों का वर्णन, छह ऋतुओं का प्रमाण, ६-६ क्षयाधिक तिथियाँ, एक युग में सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ और उस समय नक्षत्रों के योग और योगकाल आदि का वर्णन है।

तेरहवें प्राभृत में—कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की हानि-वृद्धि, ६२ पूर्णिमा तथा ६२ अमावस्याओं में चन्द्र-सूर्यों के साथ राहु का योग, प्रत्येक अयन में चन्द्र की मण्डल-गति आदि का वर्णन किया गया है।

चौदहवें प्राभृत में—कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ज्योत्स्ना और अन्धकार का प्रमाण वर्णित है।

पन्द्रहवें प्राभृत में—चन्द्रादि ज्योतिष्क देवों की एक मुहूर्त की गति है, यह बतलाकर नक्षत्रमास में चन्द्र, सूर्य, ग्रहादि की मण्डल गति और ऋतुमास तथा आदित्यमास में भी मण्डल गति का निरूपण किया है।

सोलहवें प्राभृत में—चन्द्रिका, आतप और अन्धकार के पर्यायों का वर्णन है।

सत्रहवें प्राभृत में—सूर्य के च्यवन तथा उपपात के सम्बन्ध में अन्य २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करने के पश्चात् स्वमत का संस्थापन किया है।

अठारहवें प्राभृत में—भूमि से सूर्य-चन्द्रादि की ऊँचाई का परिमाण बताते हुए अन्य २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करके स्वमत का प्रतिपादन किया है। चन्द्र-सूर्य के विमानों के नीचे ऊपर तथा सम विभाग में ताराओं के विमान होने के कारण एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार, मेरुपर्वत से ज्योतिष्चक्र का अन्तर, जम्बूद्वीप में सर्व बाह्य-आभ्यन्तर, ऊपर-नीचे चलने वाले नक्षत्र, चन्द्र-सूर्यादि के संस्थान, आयाम, विष्कम्भ और

प्रथम प्राभृत में—"दिन व रात्रि में ३० मुहूर्त, नक्षत्रमास, सूर्यमास, चन्द्रमास और ऋतुमास के मुहूर्तों की वृद्धि, प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल पर्यन्त सूर्य की गति के काल का प्रतिपादन एवं अन्तिम मडल में सूर्य की एक बार तथा शेष मण्डलों में सूर्य की दो बार गति होना, आदित्य संवत्सर के दक्षिणायन और उत्तरायन में अहोरात्र के जघन्य तथा उत्कृष्ट मुहूर्त एवं अहोरात्र के मुहूर्तों की हानिवृद्धि के कारण भरत और एरावत क्षेत्र के सूर्य का उद्योत क्षेत्र, आदित्यसंवत्सर के दोनों अयनों में प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम पर्यन्त एक सूर्य की गति का अन्तर, अन्तर के सम्बन्ध में छह अन्य मान्यताएँ, सूर्य द्वारा द्वीपसमुद्रों के अवगाहन सम्बन्ध में एक अहोरात्र में सूर्य के परिभ्रमण का परिमाण एवं मण्डलों की रचना तथा विस्तार वर्णित है।"

द्वितीय प्राभृत में—"सूर्य के उदय और अस्त का वर्णन करके अन्यतीर्थिकों के मतों का उल्लेख किया है, जिसमें—

१ सूर्य का पूर्वदिशा में उदित होकर आकाश में चला जाना,
२ सूर्य को गोलाकार किरणों का समूह बतलाकर सन्ध्या में नष्ट होना,
३ सूर्य को देवता बतलाकर उसका स्वभाव में उदयास्त होना,
४ सूर्य के देव होने से उसकी सनातन स्थिति रहना,

५ प्रात पूर्वदिशा में उदित होकर सांय पश्चिम में पहुँचना तथा वहाँ से अधोलोक को प्रकाशित करते हुए नीचे की ओर लौट जाना आदि प्रमुख हैं। अन्त में "सूर्य के एक मण्डल से दूसरे मण्डल में गमन का और वह एक मुहूर्त में कितने क्षेत्र में परिभ्रमण करता है? इसका विचार व्यक्त करते हुए स्वमत का भी प्रतिपादन हुआ है। अन्यधर्मावलम्बी पृथ्वी का आकार गोल मानते हैं किन्तु जैनधर्म की मान्यता उससे भिन्न है, यह भी इसमें संकेतित है।"

तृतीय प्राभृत में—चन्द्र, सूर्य द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले द्वीप एवं समुद्रों का वर्णन है। इसी प्रसंग में बारह मतान्तरों का भी निर्देश हुआ है।

चतुर्थ प्राभृत में—चन्द्र और सूर्य के १ विमान संस्थान तथा २ प्रकाशित क्षेत्र के संस्थान और उनके सम्बन्ध में १६ मतान्तरों का उल्लेख है। यहीं स्वमत से प्रत्येक मण्डल में उद्योत तथा ताप क्षेत्र का संस्थान बतलाकर अन्धकार के क्षेत्र का निरूपण किया गया है। सूर्य के ऊर्ध्व, अधः एवं तिर्यक् ताप-क्षेत्र के परिमाण भी यहीं वर्णित है।

पाँचवें प्राभृत में—सूर्य की लेश्याओं का वर्णन है।

छठे प्राभृत में—सूर्य का ओज वर्णित है अर्थात् सूर्य सदा एक रूप में अवस्थित रहता है अथवा प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहता है? इस सम्बन्ध में २५ प्रतिपत्तियाँ हैं। जैनदृष्टि से व्यक्त किया है कि जम्बूद्वीप में प्रतिवर्ष केवल ३० मुहूर्त तक सूर्य अवस्थित रहता है तथा शेष समय में अनवस्थित रहता है। क्योंकि प्रत्येक मण्डल पर एक सूर्य ३० मुहूर्त रहता है। इसमें जिस जिस मण्डल पर वह रहता है, उस दृष्टि से वह अवस्थित है और दूसरे मण्डल की दृष्टि से वह अनवस्थित है, यह स्पष्ट किया है।

सातवें प्राभृत में—सूर्य अपने प्रकाश से मेरुपर्वतादि को और अन्य प्रदेशों को प्रकाशित करता है, यह बतलाया है।

आठवें प्राभृत में—जो सूर्य पूर्व-दक्षिण में उदित होता है, वह मेरु के दक्षिण में स्थित भरतादि क्षेत्रों को प्रकाशित करता है और जो मेरु के पश्चिम-उत्तर में उदित होता है, वह मेरु के उत्तर में स्थित एरावतादि क्षेत्रों

को प्रकाशित किया है। इस प्रकार दो सूर्यों की सत्ता प्रतिपादित हुई है और इसी से दिन-रात्रि की व्यवस्था स्पष्ट की गई है। साथ ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रो की अपेक्षा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल का कथन भी इसी प्राभृत मे वर्णित है।

नौवें प्राभृत मे—पौरुषी छाया का प्रमाण बतलाते हुए सूर्य के उदयास्त के समय ५९ पुरुष-प्रमाण छाया होती है, यह बतलाया है और इस सम्बन्ध में अनेक मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमतानुसार पौरुषी-छाया के सम्बन्ध मे स्थापना की है।

दसवें प्राभृत मे—नक्षत्रों मे आवलिका क्रम, मुहूर्त की संख्या, पूर्व-पश्चिम भाग तथा उभयभागो से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, युगारम्भ में योग करने वाले नक्षत्रो का पूर्वादि विभाग, नक्षत्रो के कुल, उपकुल तथा कुलोपकुल १२ पूर्णिमा और अमावस्याओं में नक्षत्रो के योग, समान नक्षत्रो के योग वाली पूर्णिमा तथा अमावस्या, नक्षत्रों के संस्थान, उनके तारे, वर्षा, हेमन्त और ग्रीष्म ऋतुओं म मासक्रम के नक्षत्रो का योग तथा पौरुषी प्रमाण, दक्षिण-उत्तर एव उभयभाग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, नक्षत्र रहित चन्द्रमण्डल, सूर्यरहित चन्द्रमण्डल, नक्षत्रो के देवता, ३० मुहूर्तों के नाम, १५ दिन, रात्रि और तिथियो के नाम, नक्षत्रो के गोत्र, नक्षत्रो मे भोजन का विधान, एक युग मे चन्द्र व सूर्य के साथ नक्षत्रो का योग, एक संवत्सर के महीने और उनके लौकिक तथा लोकोत्तर नाम, पाँच प्रकार के संवत्सर, उनके ५-५ भेद और अन्तिम शनैश्चर-संवत्सर के २८ भेद, दो चन्द्र, नक्षत्रो के द्वार, दो सूर्य और उनके साथ योग करने वाले नक्षत्रो के मुहूर्त परिमाण, नक्षत्रो की सीमा तथा विष्कम्भ आदि का प्रतिपादन विस्तार के साथ इसके २२ उप अध्यायों मे हुआ है।

ग्यारहवें प्राभृत मे—संवत्सरों के आदि, अन्त और नक्षत्रों के योग का वर्णन है।

बारहवें प्राभृत मे—नक्षत्र, चन्द्र, ऋतु, आदित्य और अभिवर्धित ५ संवत्सरो का वर्णन, छह ऋतुओं का प्रमाण ६-६ क्षयाधिक तिथियाँ, एक युग मे सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ और उस समय नक्षत्रो के योग और योगकाल आदि का वर्णन है।

तेरहवें प्राभृत मे—कृष्ण और शुक्ल पक्ष म चन्द्र की हानि-वृद्धि, ६२ पूर्णिमा तथा ६२ अमावस्याओं मे चन्द्र-सूर्यों के साथ राहु का योग, प्रत्येक अयन मे चन्द्र की मण्डल-गति आदि का वर्णन किया गया है।

चौदहवें प्राभृत मे—कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ज्योत्स्ना और अन्धकार का प्रमाण वर्णित है।

पन्द्रहवें प्राभृत मे—चन्द्रादि ज्योतिष्क देवो की एक मुहूर्त की गति है, यह बतलाकर नक्षत्रमास मे चन्द्र सूर्य ग्रहादि की मण्डल गति और ऋतुमास तथा आदित्यमास में भी मण्डल गति का निरूपण किया है।

सोलहवें प्राभृत मे—चन्द्रिका, आतप और अन्धकार के पर्यायो का वर्णन है।

सत्रहवें प्राभृत मे—सूर्य के च्यवन तथा उपपात के सम्बन्ध मे अन्य २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करने के पश्चात् स्वमत का संस्थापन किया है।

अठारहवें प्राभृत मे—भूमि से सूर्य-चन्द्रादि की ऊँचाई का परिमाण बताते हुए अन्य २५ मत-मतान्तरो का उल्लेख करके स्वमत का प्रतिपादन किया है। चन्द्र-सूर्य के विमानो के नीचे, ऊपर तथा सम विभाग में ताराओं के विमान होने के कारण एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार, मेरुपर्वत से ज्योतिष्कचक्र का अन्तर, जम्बूद्वीप मे सर्व बाह्य-आभ्यन्तर, ऊपर-नीचे चलने वाले नक्षत्र, चन्द्र-सूर्यादि के संस्थान, आयाम, विष्कम्भ और

बाहुल्य, उनको वहन करने वाले देवों की संख्या और उनके निवासक्रम से रूप, शीघ्र मन्द गति, अल्पबहुत्व, चन्द्र-सूर्य की अग्रमहिषियों का परिवार, विकुर्वणा, शक्ति एवं देव-देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति आदि विषयों पर विस्तार से विचार हुआ है।

उन्नीसवें प्राभृत में—चन्द्र और सूर्य सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करते हैं अथवा लोक के एक विभाग को ? यह प्रश्न उठाकर इस सम्बन्ध में बारह मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमत का निरूपण किया है। साथ ही लवणसमुद्र का आयाम, विष्कम्भ और चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र एवं ताराओं का वर्णन है। उसी प्रकार धातकीखण्ड का संस्थान, कालोदधिसमुद्र और पुष्करार्धद्वीप तथा मनुष्य क्षेत्र आदि का विवरण प्रस्तुत हुआ है। इसी प्राभृत में यह भी बतलाया गया है कि—इन्द्र के अभाव में व्यवस्था, इन्द्र का जघन्य और उत्कृष्ट विरहकाल, मनुष्य क्षेत्र के बाहर चन्द्र की उत्पत्ति और गति तथा अन्त में स्वयम्भूरमण समुद्र तक द्वीपसमुद्रों के आयाम, विष्कम्भ, परिधि आदि का वर्णन है।

बीसवें प्राभृत में—चन्द्रादि का स्वरूप, राहु का वर्णन, राहु के दो प्रकार तथा जघन्य-उत्कृष्ट काल का वर्णन है। यहीं चन्द्र को शशि और सूर्य को आदित्य कहने का कारण बतलाते हुए स्पष्ट किया है कि ज्योतिष्कों के इन्द्र—चन्द्र का मृग (शश) के चिह्नवाला 'मृगाङ्क-विमान' है और सूर्य समय, आवलिका आदि से लेकर अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल का आदि-कर्ता है। चन्द्र और सूर्य की अग्रमहिषियों और चन्द्र सूर्य के कामभोगों की मानवीय कामभोगों के साथ तुलना भी यहाँ प्रस्तुत हुई है तथा अन्त में ८८ ग्रहों के नाम बताये गये हैं। इन प्राभृतों का भी अन्य लघु प्राभृतों के रूप में विभाजन है।

उपर्युक्त विषयों के अवलोकन से सहज ही यह अनुमान किया जा सकता है कि सूर्य प्रज्ञप्ति के आयाम में न केवल सूर्य और उससे सम्बद्ध विषयों का ही इसमें विमर्श हुआ है, अपितु समग्र ज्योतिष्क-परिवार का प्रसंगानुसार सूक्ष्म एवं स्थूल विमर्श समाविष्ट हो गया है। इतना ही नहीं, यहाँ प्राचीन ज्योतिष-सम्बन्धी मूल मान्यताओं का भी सद्भाव आ गया है। इसमें चर्चित विषय अन्यान्य धर्मों के मान्य ग्रन्थों में चर्चित विषयों से भी कुछ अंशों में साम्य रखते हैं।

९ सूर्य प्रज्ञप्ति की निर्युक्ति एवं अन्य विवेचनाएँ

सूर्य-प्रज्ञप्ति के व्यापक विषय-विवेचन से प्रभावित होकर निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहु ने दस आगमों पर निर्युक्तियों की रचना की थी, उनमें सूर्य-प्रज्ञप्ति भी थी। किन्तु दुर्भाग्य से अब वह अनुपलब्ध है। किन्तु आचार्य मलयगिरि की वृत्ति में इसका निर्देश हुआ है। उन्होंने वहाँ लिखा है—"भद्रबाहुसूरि कृत निर्युक्ति का नाश हो जाने से मैं केवल मूल सूत्र का ही व्याख्यान करूँगा।" इसके बीच के काल में भाष्य और चूर्णियाँ भी लिखी गईं किन्तु सूर्य प्रज्ञप्ति पर किसी ने लिखा हो, ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता।

आचार्य मलयगिरि का स्थितिकाल १२वीं शती माना जाता है। इनके द्वारा लिखे गए ग्रन्थों में "सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग टीका" ९५०० श्लोक प्रमाण उपलब्ध होती है। इसी का अपरनाम "सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति" प्रसिद्ध है। आचार्य ने यहाँ प्रारम्भ में मिथिला नगरी, मणिभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी देवी और भगवान् महावीर का साहित्यिक वर्णन किया है। तदनन्तर गणधर इन्द्रभूति गौतम का वर्णन है। यों सूर्यप्रज्ञप्ति के बीसों प्राभृतों का विवेचन मननीय है और उसमें यत्र-तत्र विशिष्ट चिन्तन, आलोचना एवं स्वमत-निरूपण को भी स्थान दिया है।

यद्यपि अधिकांश आचार्य, जिन्होंने आगम-ग्रन्थो पर भाष्य, नियुक्ति, चूर्णि या टीकाएँ लिखने मे पर्याप्त उदारता व्यक्त की है, परन्तु सूर्य-चन्द्र सम्बन्धी प्रज्ञप्तियो पर प्राय नही लिखा है। इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि सीधे अध्यात्म एव आचार उपासना जैसे विषयो के प्रति उनकी रुचि विशेष रही होगी। अथवा यह भी कहा जा सकता है कि इन प्रज्ञप्तियो के विषय विज्ञान के अतिनिकट होने से क्लिष्ट जानकर छोड दिये हो।

उत्तरकाल मे कुछ आचार्यों ने इस कमी को समझा और पुन इस पर टीका लिखने का उपक्रम किया। इनमें स्थानकवासी आचार्य मुनि धर्मसिहजी (१८वी शती) ने "सूर्य प्रज्ञप्ति के यन्त्र" निर्मित किये और इसी परम्परा के अन्य आचार्य श्री घासीलालजी महाराज ने ३२ आगमो पर जो सस्कृत भाषा मे टीकाएँ लिखी हैं उनमे सूर्य-प्रज्ञप्ति पर "प्रमेयबोधिनी" /सूर्य प्रज्ञप्ति-प्रकाशिका नामक टीका/व्याख्या महत्त्वपूर्ण है। इसमे आचार्य श्री ने मूलसूत्र की सस्कृत छाया और सस्कृत व्याख्या की है। इसका हिन्दी और गुजराती भाषा मे अनुवाद दो भागो मे प्रकाशित भी हुआ है, जिसका नियोजन पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी ने किया है। हिन्दी और गुजराती अनुवादकर्ताओ का नामोल्लेख नही हुआ है। आचार्य श्री अमोलकऋषिजी ने भी प्रज्ञप्ति का हिन्दी अनुवाद किया है इसका प्रकाशन हैदराबाद मे हुआ है तथा और भी कुछ विद्वान् आचार्यों ने इस पर विवेचन किये हैं।

सूर्य-प्रज्ञप्ति के सम्बन्ध मे देश-विदेश के विचारक मनीषियो ने भी बहुत से अभिमत भिन्न-भिन्न लेखो मे व्यक्त किये हैं। भारतीय ज्योतिष के क्षेत्र मे बहुमान्य वराहमिहिर[1] नियुक्तिकार भद्रबाहु के भ्राता थे, उन्होंने अपने ग्रन्थ "वराहसहिता" मे सूर्य-प्रज्ञप्ति के कतिपय विषयो को आधार बनाकर उन पर लिखा है। इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कर ने सूर्य-प्रज्ञप्ति की कुछ मान्यताओं को लेकर अपने खण्डनात्मक विचार व्यक्त किये हैं जो "सिद्धान्तशिरोमणि" ग्रन्थ मे द्रष्टव्य हैं। इसी प्रकार ब्रह्मगुप्त ने "स्फुट सिद्धान्त" ग्रन्थ मे भी खण्डन का आधार बनाया है। किन्तु इस युग में वदेशिक विद्वानो ने सूर्य-प्रज्ञप्ति के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इस विज्ञान का ग्रन्थ माना है, डॉ. विन्टरनित्ज उनमे प्रथम हैं। डा. शुब्रिंग ने तो यहाँ तक कहा है कि "सूर्य प्रज्ञप्ति के अध्ययन के बिना भारतीय ज्योतिष के इतिहास को सही रूप से नहीं समझा जा सकता।" वेबर ने सन् १८६८ मे "उबेर डी सूर्य प्रज्ञप्ति" नामक निबन्ध प्रकाशित किया था। डॉ. सिबो ने "ऑन द सूर्य प्रज्ञप्ति" नामक अपने शोधपूर्ण लेख मे ग्रीक लोगों के भारतवर्ष मे आगमन से पूर्व वहाँ "दो सूर्य और दो चन्द्र" का सिद्धान्त सर्वमान्य था, ऐसा प्रतिपादित किया है तथा उन्होंने अतिप्राचीन ज्योतिष के वेदाग ग्रन्थ की मान्यताओं के साथ सूर्य-प्रज्ञप्ति के सिद्धान्तो की समानता भी बतलाई है।

१० प्रस्तुत प्रकाशन और कुछ प्रश्न कुछ समाधान

उपर्युक्त "सूर्य प्रज्ञप्ति" की गरिमा से स्वत सिद्ध हो जाता है कि ऐसे ग्रन्थ का सर्वाधिक स्वाध्याय हो, मनन हो और गम्भीरता-पूर्वक इसमे वर्णित विषयो का स्व-पर कल्याण की दृष्टि से पुन पुन विचार हो। सम्भवत इसी कल्याणमयी भावना से इसका प्रकाशन किया गया है, जो कि अभिनन्दनीय है।

यद्यपि यह ग्रन्थ मूल रूप में ही प्रकाशित है किन्तु इसके सम्पादनकर्ता मुनि श्री कन्हैयालालजी "कमल" ने परिश्रमपूर्वक इसके पाठो को विशुद्धरूप मे प्रकाशित करने का प्रयास किया है। साथ ही पाद टिप्पणियो मे अनेक प्रश्नों को भी उठाया है तथा उनके समुचित समाधानों की कामना भी की है। मैंने जब इसका अवलोकन किया

---

१ द्रष्टव्य, गच्छाचार की वृत्ति

बाहुल्य, उनको वहन करने वाले देवों की संख्या और उनके दिशाक्रम से रूप, शीघ्र मन्द गति, अल्पबहुत्व, चन्द्र सूर्य की अग्रमहिषियों का परिवार, विकुर्वणा, शक्ति एवं देव-देवियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति आदि विषयों पर विस्तार से विचार हुआ है।

उन्नीसवें प्राभृत में—चन्द्र और सूर्य सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करते हैं अथवा लोक के एक विभाग को? यह प्रश्न उठाकर इस सम्बन्ध में बारह मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमत का निरूपण किया है। साथ ही लवणसमुद्र का आयाम, विष्कम्भ और चन्द्र सूर्य, नक्षत्र एवं तारामों का वर्णन है। उसी प्रकार धातकीखण्ड का संस्थान, कालोदधिसमुद्र और पुष्करार्धद्वीप तथा मनुष्य क्षेत्र आदि का विवरण प्रस्तुत हुआ है। इसी प्राभृत में यह भी बतलाया गया है कि—इन्द्र के अभाव में व्यवस्था, इन्द्र का जघन्य और उत्कृष्ट विरहकाल, मनुष्य क्षेत्र के बाहर चन्द्र की उत्पत्ति और गति तथा अन्त में स्वयम्भूरमण समुद्र तक द्वीपसमुद्रों के आयाम, विष्कम्भ परिधि आदि का वर्णन है।

बीसवें प्राभृत में—चन्द्रादि का स्वरूप, राहु का वर्णन, राहु के दो प्रकार तथा जघन्य उत्कृष्ट काल का वर्णन है। यहाँ चन्द्र को शशि और सूर्य को आदित्य कहने का कारण बतलाते हुए स्पष्ट किया है कि ज्योतिष्कों में इन्द्र—चन्द्र का मृग (शश) के चिह्नवाला 'मृगाङ्क-विमान' है और सूर्य समय, आवलिका आदि से लेकर अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल का आदि-कर्ता है। चन्द्र और सूर्य की अग्रमहिषियों और चन्द्र-सूर्य के कामभोगों की मानवीय कामभोगों के साथ तुलना भी यहाँ प्रस्तुत हुई है तथा अन्त में ८८ ग्रहों के नाम बताये गये हैं। इन प्राभृतों के भी अन्य लघु प्राभृतों के रूप में विभाजन हैं।

उपर्युक्त विषयों के अवलोकन से सहज ही यह अनुमान किया जा सकता है कि सूर्य-प्रज्ञप्ति के आयाम में न केवल सूर्य और उससे सम्बद्ध विषयों का ही इसमें विमर्श हुआ है, अपितु समग्र ज्योतिष्क-परिवार का प्रसंगानुसार सूक्ष्म एवं स्थूल विमर्श समावृत हो गया है। इतना ही नहीं, यहाँ प्राचीन ज्योतिष-सम्बन्धी मूल मान्यताओं का भी संकलन आ गया है। इसमें चर्चित विषय अन्यान्य धर्मों के मान्य-ग्रन्थों में चर्चित विषयों से भी कुछ अंशों में साम्य रखते हैं।

९ सूर्य प्रज्ञप्ति की निर्युक्ति एवं अन्य विवेचनाएँ

सूर्य-प्रज्ञप्ति के व्यापक विषय-विवेचन से प्रभावित होकर निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहु ने दस आगमों पर निर्युक्तियों की रचना की थी, उनमें सूर्य-प्रज्ञप्ति भी थी। किन्तु दुर्भाग्य से अब वह अनुपलब्ध है। किन्तु आचार्य मलयगिरि की वृत्ति में इसका निर्देश हुआ है। उन्होंने वहाँ लिखा है—"भद्रबाहुसूरि कृत निर्युक्ति का नाश हो जाने से मैं केवल मूल सूत्र का ही व्याख्यान करूँगा।" इसके बीच के काल में भाष्य और चूर्णियाँ भी लिखी गईं किन्तु सूर्य-प्रज्ञप्ति पर किसी ने लिखा हो, ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता।

आचार्य मलयगिरि का स्थितिकाल १२वीं सदी माना जाता है। इनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थों में "सूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्ग टीका' ९५०० श्लोक प्रमाण उपलब्ध होती है। इसी का अपरनाम "सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति" प्रचलित है। आचार्य ने यहाँ प्रारम्भ में मिथिला नगरी, मणिभद्र चैत्य, जितशत्रु राजा, धारिणी देवी और भगवान् महावीर का संक्षिप्त वर्णन किया है। तदनन्तर गणधर इन्द्रभूति गौतम का वर्णन है। बाद सूर्यप्रज्ञप्ति के बीसों प्राभृतों का विवेचन मननीय है और उसमें यत्र-तत्र विशिष्ट चिन्तन, आलोचना एवं स्वमत-निरूपण को भी स्थान दिया है।

यद्यपि अधिकांश आचार्य, जिन्होंने आगम-ग्रन्थों पर भाष्य, निर्युक्ति, चूर्णि या टीकाएँ लिखने में पर्याप्त उदारता व्यक्त की है, परन्तु सूर्य-चन्द्र सम्बन्धी प्रज्ञप्तियों पर प्रायः नहीं लिखा है। इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि सीधे अध्यात्म एवं आचार-उपासना जैसे विषयों के प्रति उनकी रुचि विशेष रही होगी। अथवा यह भी कहा जा सकता है कि इन प्रज्ञप्तियों के विषय विज्ञान के अतिनिकट होने से क्लिष्ट जानकर छोड़ दिये हों।

उत्तरकाल में कुछ आचार्यों ने इस कमी को समझा और पुनः इस पर टीका लिखने का उपक्रम किया। इनमें स्थानकवासी आचार्य मुनि धर्मसिंहजी (१८वीं शती) ने "सूर्य प्रज्ञप्ति के यन्त्र" निर्मित किये और इसी परम्परा के अन्य आचार्य श्री घासीलालजी महाराज ने ३२ आगमों पर जो संस्कृत भाषा में टीकाएँ लिखी हैं उनमें सूर्य प्रज्ञप्ति पर "प्रमेयबोधिनी" /सूर्य प्रज्ञप्ति-प्रकाशिका नामक टीका/व्याख्या महत्त्वपूर्ण है। इसमें आचार्य श्री ने मूलसूत्र की संस्कृत छाया और संस्कृत व्याख्या की है। इसका हिन्दी और गुजराती भाषा में अनुवाद दो भाषा में प्रकाशित भी हुआ है, जिसका नियोजन पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी ने किया है। हिन्दी और गुजराती अनुवादकर्ताओं का नामोल्लेख नहीं हुआ है। आचार्य श्री अमोलकऋषिजी ने भी प्रज्ञप्ति का हिन्दी अनुवाद किया है इसका प्रकाशन हैदराबाद से हुआ है तथा और भी कुछ विद्वान् आचार्यों ने इस पर विवेचन किये हैं।

सूर्य-प्रज्ञप्ति के सम्बन्ध में देश विदेश के विचारक मनीषियों ने भी बहुत से अभिमत भिन्न-भिन्न लेखों में व्यक्त किये हैं। भारतीय ज्योतिष के क्षेत्र में बहुमान्य वराहमिहिर[1] निर्युक्तिकार भद्रबाहु के भ्राता थे, उन्होंने अपने ग्रन्थ "वराहसंहिता" में सूर्य-प्रज्ञप्ति के कतिपय विषयों को आधार बनाकर उन पर लिखा है। इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कर ने सूर्य-प्रज्ञप्ति की कुछ मान्यताओं को लेकर अपने खण्डनात्मक विचार व्यक्त किये हैं जो "सिद्धान्तशिरोमणि" ग्रन्थ में द्रष्टव्य हैं। इसी प्रकार ब्रह्मगुप्त ने "स्फुट सिद्धान्त" ग्रन्थ में भी खण्डन का आधार बनाया है। किन्तु इस युग में वैदेशिक विद्वानों ने सूर्य प्रज्ञप्ति के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसे विज्ञान का ग्रन्थ माना है, डॉ. विण्टरनित्ज उनमें प्रथम हैं। डा. शुब्रिंग ने तो यहां तक कहा है कि "सूर्य प्रज्ञप्ति के अध्ययन के बिना भारतीय ज्योतिष के इतिहास को सही रूप से नहीं समझा जा सकता।" वेबर ने सन् १८६८ में "उबेर डी सूर्य प्रज्ञप्ति" नामक निबन्ध प्रकाशित किया था। डॉ. तिबो ने "ऑन द सूर्य प्रज्ञप्ति" नामक अपने शोधपूर्ण लेख में ग्रीक लोगों के भारतवर्ष में आगमन से पूर्व यहाँ "दो सूर्य और दो चन्द्र" का सिद्धान्त सर्वमान्य था, ऐसा प्रतिपादित किया है तथा उन्होंने अतिप्राचीन ज्योतिष के वेदांग ग्रन्थ की मान्यताओं के साथ सूर्य-प्रज्ञप्ति के सिद्धान्तों की समानता भी बतलाई है।

१० प्रस्तुत प्रकाशन और कुछ प्रश्न : कुछ समाधान

उपर्युक्त "सूर्य प्रज्ञप्ति" की गरिमा से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि ऐसे ग्रन्थ का सर्वाधिक स्वाध्याय हो, मनन हो और गम्भीरता-पूर्वक इसमें वर्णित विषयों का स्व-पर कल्याण की दृष्टि से पुनः पुनः विचार हो। सम्भवतः इसी कल्याणमयी भावना से इसका प्रकाशन किया गया है, जो कि अभिनन्दनीय है।

यद्यपि यह ग्रन्थ मूल रूप में ही प्रकाशित है किन्तु इसके सम्पादनकर्ता मुनि श्री कन्हैयालालजी "कमल" ने परिश्रमपूर्वक इसके पाठों को विशुद्धरूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। साथ ही पाद-टिप्पणियों में अनेक प्रश्नों को भी उठाया है तथा उनके समुचित समाधानों की कामना भी की है। मैंने जब इसका अवलोकन किया

---

१ द्रष्टव्य, गच्छाचार की वृत्ति

तो मेरे मन में भी कुछ प्रश्न उभर आये। उन सबका क्रमिक विचार भी यहाँ प्रस्तुत करना अनुचित न होगा। यहाँ उन प्रश्नों की उपस्थापना के साथ ही उनके यथोपलब्ध समाधान भी प्रस्तुत हैं—

प्रश्न १ सूर्यप्रज्ञप्ति ग्रन्थ वस्तुतः खण्डित है फिर यह ग्रन्थ कैसे पूर्ण हुआ ?

समाधान ऐसा कहा जाता है कि इसके पाठों में और चन्द्रप्रज्ञप्ति के पाठों में प्रायः साम्य है। अतः पूर्वाचार्यों ने ही इसे परस्पर पाठानुसंधान द्वारा वर्तमान रूप दिया है।

प्रश्न २ वर्तमान सूर्यप्रज्ञप्ति के मूलपाठों में अब भी पाठान्तर क्या हैं ? यह स्थिति इस संस्करण से पूर्व प्रकाशित "सूर्यप्रज्ञप्ति" ग्रन्थों से मिलाने से स्पष्टतः प्रतीत हो जाती है। जैसे प्रारम्भ में "वीरस्तुति" नहीं दी है। कहीं गद्यपाठ में कुछ अंश त्याग दिये हैं तो यत्र-तत्र पाठगत शब्दों में व्यत्यय भी हुआ है, आदि।

समाधान सम्भवतः यह इसलिए किया गया होगा कि सम्पादक-वर्ग को ऐसी अन्य पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हुई हों। साथ ही उपाध्याय श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री के शब्दों में यह भी सम्भव है कि जैन आगम "शब्द" की अपेक्षा "अर्थ" को अधिक महत्त्व देते हैं। वेदों की तरह शब्दवादी नहीं हैं। अतः ऐसा पाठभेद हुआ होगा। एक यह भी कारण हो सकता है कि स्थविरों के द्वारा संग्रह होने के पश्चात् इनकी जो भिन्न भिन्न वाचनाएँ हुई हैं उनमें वैसी व्यवस्था हुई हो।

प्रश्न ३ इस ग्रन्थ में एक और महत्त्वपूर्ण प्रश्न है नक्षत्र-भोजन में मांसादि के भोजन का ? यह जैनधर्म के सर्वथा प्रतिकूल कथन इसमें कैसे आया ?

समाधान इस सम्बन्ध में भिन्न भिन्न समाधान प्राप्त होते हैं। यथा—

१ यह पाठ प्रक्षिप्त है। २ इस पाठ से पूर्व और भी कुछ पाठ था, जो विच्छिन्न हो गया है। ३ इस सम्बन्ध में आगमप्रभाकर पुण्यविजयजी का अभिमत था कि 'इसके पहले के कुछ वाक्य खण्डित हो गये हैं, जिनमें यह भगवान् महावीर के द्वारा कथित न होकर किसी प्रश्न के उत्तर में उद्धरण के रूप में अन्य मतों का प्रदर्शन किया गया है।'[1] ४ अन्य आचार्यों का कथन है कि यहाँ प्रयुक्त "मांस" शब्द का अर्थ प्राण्यङ्ग मांस नहीं है, अपितु यह अत्यन्त प्राचीनकाल में प्रयुक्त होने वाले अर्थ "वनस्पतिजनित फल, मेवा" आदि के अर्थ में व्यवहृत है। इसी प्रकार मांस के पर्यायवाची अन्य शब्द 'पिशित, तरस, पलल, क्रव्य और आमिष" शब्द भी प्राण्यङ्गजन्य मांस के सूचक न होकर अन्य अर्थों के ही सूचक हैं। अमरकोष के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने जो प्राणुत्पन्न वणित शब्दों की व्युत्पत्ति दी है, उससे "पिशित = अवयववान्, तरस = बलवान्, मांस = मानकारक, पलल = गमनकारक, क्रव्य = भक्षकारक अथवा गतिकारक और आमिष = किंचित् स्पर्शकारक अथवा सेवन अर्थ का ही प्रतिपादन होता है। कोशकारों के अतिरिक्त आयुर्वेद के ग्रन्थों में भी ऐसे अनेक शब्दों को वनस्पतियों के अर्थों में ही प्रयुक्त किया है। ५ वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् और अन्य संहिता-ग्रन्थों में भी ऐसे मांसादि शब्दों के प्रयोग निर्विवादरूप से प्राण्यङ्गजनित मांस के लिए कदापि प्रयुक्त नहीं हैं। ६ तन्त्रग्रन्थों में भी यही स्थिति है। वहाँ ऐसे शब्दों को वस्तुतः आध्यात्मिक अर्थों में ही सूचित किया है किन्तु वामाचार के नाम पर जिह्वालोलुपवर्ग अपनी लिप्साओं के अनुसार अर्थ करके विकृतमार्ग का अनुसरण करते हैं। प्राचीन महर्षियों की कथन-पद्धति का वास्तविक तथ्य एवं प्रक्रिया का पारम्परिक बोध न होने से मनमाना अर्थ लगाकर समाज में दूषण फैलाने वाले अथवा स्वार्थसिद्धि के लिये कुवृत्ति के लोग ऐसा करते हैं।

---

१ यह बात उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्रीजी ने कही थी, जबकि उन्होंने इसके लिये स्वयं आगमप्रभाकरजी से पूछा था।

"जन-साहित्य मे प्रयुक्त मास-मत्स्यादि शब्दो के वास्तविक ग्रथ" आधुनिक व्यवहार मे प्रचलित ग्रर्थ कथमपि नही हैं, यह निश्चित है। इस तथ्य को "मानव-भोज्य मीमासा" ग्र थ के द्वितीय प्रकरण में अत्यन्त विस्तार से पन्यास श्री कल्याणविजयजी गणी ने स्पष्ट किया है। प्रसिद्धार्थ और अप्रसिद्धार्थ का विवेक नहीं रखने से ही अल्पज्ञ वग ऐसी दुर्भावनाएँ फैलाते हैं। सूय-प्रज्ञप्ति मे "नक्षत्र-भोजन" की बात नक्षत्रो के दोष से मुक्त होने के लिये उनकी तुष्टि करने वाले पदार्थों क भोजन से सम्बन्ध है। ज्योतिषशास्त्र मे वारदोष, तिथिदोष, ग्रहदोष, शकुनदोष, दुर्योग आदि की निवृत्ति के लिये ऐसे उपाय बहुधा दिखाये गये हैं, उन्ही को यहाँ भी उदाहरण के रूप मे प्रसङ्गपूवक सक्षेप मे दिया होगा। यह धारण अवश्य ही स्वीकरणीय है।

"मुहूत चिन्तामणि" मे भी ऐसे नक्षत्रो के दोष स छुटकारा पाने के लिये खाद्य-वस्तुओ का कथन हुआ है। उनमे भी "मांस" शब्द प्रयुक्त है। किन्तु उसके प्रसिद्ध टीकाकार गोविन्द ज्योतिर्वित् ने अपनी "पीयूषधारा" टीका मे स्पष्ट लिखा है कि —"नक्षत्रदोहद कुल्माषतिल्यादिकमिद भक्ष्याभक्ष्य वर्णभेदेन देशभेदेन वा भक्ष्यमेतदभक्ष्यमिति विचाय भक्ष्यसम्भवे भक्षयेत अभक्ष्यसम्भवे आलोकयेत् पश्येत् स्पृशेद वेत्यपि ध्येयम्। (पृ० ३९०, निर्णयसागर बम्बई प्रकाशन)। इसका सारांश यह है कि— 'नक्षत्रदोहद के पालन म वर्णभेद और देशभेद के आधार पर भक्ष्याभक्ष्य का विचार करके जैसा उचित हो वह करे। यदि भक्ष्य न हो तो उसको देखे अथवा स्पश करे"—वही नारद के किसी ग्रन्थ का तथा वसिष्ठ, कश्यप, श्रीपति और भट्ट उत्पल द्वारा भी नक्षत्र-दोहद कथन का सकेत दिया है। अपने कथन के प्रमाण म टीकाकार ने "गुरु' के वचनों को उद्धृत करते हुए बतलाया है कि —"अत्र यदभक्ष्य तत्प्राप वा तत स्मृत्वा दृष्ट्वा दत्वा गन्तव्यमित्याह गुरु।" इससे स्पष्ट है कि ये दोहद-भक्ष्य जनसाधारण को लक्ष्य मे रखकर सूचित किये थे और उनमे विवेक को प्रधानता दी थी।

आचाय श्रीमलयगिरि ने इस प्रसग की व्याख्या म सामान्य अथ के रूप मे "कृत्तिका मे प्रारब्ध काय निर्विघ्न सिद्ध हो, तदथ दधिमिश्रित ओदन का भोजन किया जाता है" इतना कहकर 'शेष सूत्रो मे देखें" कह दिया है।

आचाय श्री घासीलालजी महाराज ने अपनी व्याख्या प्रमेय-बोधिनी मे (दशम प्राभृत के सत्रहवें प्राभृत-प्राभृत मे) नामकदेशग्रहणेन नामग्रहण भवतीति नियमात' कहकर "वृषभमास म धतूरे का सार अथवा चूण ग्राह्य है" एसा बतलाया है तथा मृगमास का अथ इन्द्रावरुणी वनस्पति, दीपकमास=अजवाइन का चूण, मण्डूकमास =मण्डूकपर्णी का चूण नखीमास=वाघनखी का चूण वराहमास=वाराहीकन्द का चूण, जलचरमास=जलचर कुम्भिका का चूण तिन्तिणीकमास=इमली का चूण—ऐसे अथ स्पष्ट किये हैं।[1]

आचाय श्री अमोलकऋषिजी ने भी अपनी व्याख्या मे ऐसे ही अर्थों को व्यक्त किया है जिसकी तालिका इस प्रकार है—

नक्षत्र भोजन-तालिका

१ कृत्तिका	दही	दधि
२ रोहिणी	वसहमस	धृत
३ मिगसिर	मिगमस	कस्तूरी
४ आर्द्रा	णवणीय	नवनीत (मक्खन)

१ द्रष्टव्य, टीका ग्रन्थ, पृ १०४८ से १०५२ तक। श्री सूयप्रज्ञप्तिसूत्रम् (प्रथम भाग), अ भा श्वे स्था जन शास्त्रोद्धार समिति, अहमदाबाद से प्रकाशित।

५ पुनर्वसु	घय	घृत
६ पुष्य	खीर	–
७ अश्लेषा	दीवगमंस	अवर्चासिक अथवा अगत
८ मघा	कसारि	कसार (?) अथवा केशार
९ पूर्वाफाल्गुनी	मेढगमंस	एलायची अथवा आलू
१० उत्तराफाल्गुनी	णक्खिमंस	लसुणकंद अथवा आलू
११ हस्त	वत्थाणिएण	सिंघाड़ा
१२ चित्रा	मुग्गसूप	मूंग की दाल
१३ स्वाति	फल	
१४ विशाखा	आसित्तियाए	आठली अथवा शाक
१५ अनुराधा	मिस्सा कूरेण	मिश्र कूरो धान्य
१६ ज्येष्ठा	कोलट्ठिएण	कोला-बदूर
१७ मूल	मूलग	मूली अथवा मोगर का शाक
१८ पूर्वाषाढ़ा	आमलग	आंवला
१९ उत्तराषाढ़ा	बिल्ल	बिल्व फल अथवा बड़ा नींबू
२० अभिजित	पुप्फ	पुष्प
२१ श्रवण	खीर	
२२ धनिष्ठा	जूस	करेला अथवा सकर कोला
२३ शतभिषा	तुम्बराउ	तूंबा
२४ पूर्वाभाद्रपदा	कारियए	करेला
२५ उत्तराभाद्रपदा	वराहमंस	कपूर
२६ रेवती	जलयरमंस	जलचर फूलन अथवा पानी
२७ अश्विनी	तित्तरमंस	सीताफल
२८ भरणी	तिल तंदुल	तिल्ली या तल अथवा चावल

इस तरह अट्ठाईस नक्षत्रों में भोजन का विषय जैसा अन्य स्थान में देखने में आया है वैसा ही लिया है। टीकाकार श्री मलयगिरि आचार्य ने इसकी टीका नहीं की है। तत्त्व केवलिगम्य।

—आचार्य अमोलकऋषि जी म.

आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज द्वारा सम्पादित—सूर्यप्रज्ञप्ति पा. १० अन्तरपाहुड-१७ पृ. २२०-२२१

११ उपसंहार एवं वक्तव्य-बोध

इन सब विमर्शों के द्वारा हम एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि "विश्व को सर्वज्ञ ही सम्यक् जानते हैं। बुद्धिजीवी जगत् इसकी गम्भीरता को पहचानने में सतत प्रयत्नशील ही रहा है। दुर्विज्ञेय आधिभौतिक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आधिदैविक और आध्यात्मिक भूमिकारूढ़ हुए बिना जीव-जगत् की जिज्ञासा पूर्ण नहीं हो सकती। अलौकिक तत्त्वोपलब्धि अथवा सत्य का साक्षात्कार आगमों के द्वारा ही सम्भव है। यही कारण है कि विश्व विद्याओं के निधान आगमों का प्रावचनिक प्रसार सभी के लिए बहुमान्य है। सर्वज्ञ की वाणी होने से उनका प्रामाण्य सर्व सम्मत है, अखंड है और अकाट्य है और साथ ही यह भी ध्यातव्य है कि "आगम-साहित्य के वास्तविक मर्मों को समझने के लिए सम्यक् मनोवृत्ति से पारम्परिक सम्प्रदायों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, तभी हम कुछ जान सकते हैं। सूर्य-प्रज्ञप्ति भी एक ऐसा ही आगम ग्रन्थ है, जिसके रहस्यों का परिज्ञान आधुनिक परिभाषाओं

की अपेक्षा प्राचीन गाणितिक एव खगोलीय परिभाषाओं को समझे बिना तुष-कुट्टन के समान ही निष्फल हो सकता है।

अन्त मे मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि भारतीय सस्कृति के इन अपूर्व ग्रन्थ-रत्नो के चिरन्तन सत्य के परिचायक तत्त्वो की खोज म विद्वान् गवेषको एव चिन्तको को जैन, वदिक और बौद्ध परम्परा के ग्रन्थो का सयुक्त रूप से परिशीलन करना चाहिये, क्योकि ये तीनो धाराएँ प्रारम्भ से ही एक ही लक्ष्य से बही हैं किन्तु बीच के साम्पातिक काल में कुछ तो स्वय के दुराग्रहो से और कुछ पराये लोगो के बहकावे के कारण विशृ खलित हो गई हैं। जब तक परस्पर मिलकर एक-दूसरे की न्यूनताओ को पूर्ण नही किया जाएगा तब तक पूर्णता की प्राप्ति आकाश-पुष्प ही बनी रहेगी। अत —

यूय यूय वयमिह वय सर्वदैव कुर्वद्भि-
र्हन्ता हन्ताग्रह-निपतितभ्र शित नैव कि किम्।
सञ्चिन्त्यात पुनरपि निज स्वत्वमुद्धतु मार्या,
यूय ये ते वयमिति मिथ स्वात्मना सवदन्तु॥

यही निवेदन है, कामना है और प्रार्थना है॥३७॥



५ पुनर्वसु	घय	घृत
६ पुष्य	खीर	
७ अश्लेषा	दीवगमस	वर्षालिंग अथवा कमल
८ मघा	कसारि	केसर (?) अथवा कसार
९ पूर्वाफाल्गुनी	मेढगमस	एलायची अथवा आलू
१० उत्तराफाल्गुनी	णक्खिगमस	सगुणकन्द अथवा आलू
११ हस्त	वत्थाणिएण	सिंघाड़ा
१२ चित्रा	मुग्गसूए	मूंग की दाल
१३ स्वाति	फल	
१४ विशाखा	आसित्तिया	आठली अथवा साग
१५ अनुराधा	मासा करंब	मिश्र कुरी धान्य
१६ ज्येष्ठा	कोलठ्ठिय	कोला-बद्दू
१७ मूल	मूलक	मूली अथवा मोगरे का साग
१८ पूर्वाषाढा	आमलग	आंवला
१९ उत्तराषाढा	बिल्व	बिल्व फल अथवा पक्का नींबू
२० अभिजित	पुप्फ	पुष्प
२१ श्रवण	खीर	
२२ धनिष्ठा	जूस	करेला अथवा तक्कर कोला
२३ शतभिषा	तुम्बरस	तू बा
२४ पूर्वाभाद्रपद	कारियए	करेला
२५ उत्तराभाद्रपद	वराहमस	कपूर
२६ रेवती	जलयरमस	जलचर फूलन अथवा पानी
२७ अश्विनी	तित्तिरमस	सीताफल
२८ भरणी	तिल तंदुल	तिल्ली का तेल अथवा चावल

इस तरह अट्ठाईस नक्षत्रों के भोजन का विषय जैसा अन्य स्थान में देखने में आया है वैसा ही लिया है। टीकाकार श्री मलयगिरि आचार्य ने इसकी टीका नहीं की है। तत्त्व केवलिगम्य।

—आचार्य अमोलकऋषि जी म

आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज द्वारा सम्पादित—सूर्यप्रज्ञप्ति पा १०, प्राभृतप्राभृत-१७ पृ. २२०-२३१

११ उपसंहार एवं कर्तव्य-बोध

इन सब विवेचनों के द्वारा हम एक ही निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि 'विश्व को समग्र में सर्वज्ञ ही जानते हैं। बुद्धिजीवी जगत् इसकी समग्रता को पहचानने में सतत प्रयत्न ही रहा है। दुर्विज्ञेय आधिभौतिक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आधिदैविक और आध्यात्मिक भूमिकारूढ़ हुए बिना जीव-जगत् की जिज्ञासा पूर्ण नहीं हो सकती। क्योंकि तत्त्वोपलब्धि अथवा सत्य का साक्षात्कार आगमों के द्वारा ही सम्भव है। यही कारण है कि विश्व-विद्याओं के निधान आगमों का प्रारम्भ अपार सभी के लिए अनुपात है। सर्वज्ञ की वाणी होने से उसका प्रत्येक वचन सत्य है अखंड है और सर्वेश है और साथ ही यह भी ज्ञातव्य है कि "आधिभौतिक के वास्तविक तत्त्वों को समझने के लिए समस्त मनीषियों से पारम्परिक सम्प्रदायों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, तभी हम कुछ जान सकते हैं। सूर्य प्रज्ञप्ति भी एक ऐसा ही आगम ग्रन्थ है, जिसके रहस्यों का परिज्ञान आधुनिक परिभाषाओं

की अपेक्षा प्राचीन गाणितिक एव खगोलीय परिभाषाओ को समझे बिना तुष-कुट्टन के समान ही निष्फल हो सकता है।

अन्त मे मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि भारतीय सस्कृति के इन अपूर्व ग्रन्थ-रत्नो के चिरन्तन सत्य के परिचायक तत्त्वो की खोज मे विद्वान् गवेषकों एव चिन्तको को जैन, वैदिक और बौद्ध परम्परा के ग्रन्थो का सयुक्त रूप से परिशीलन करना चाहिये, क्योकि ये तीनो धाराएँ प्रारम्भ से ही एक ही लक्ष्य से बही हैं किन्तु बीच के साम्प्रतिक काल मे कुछ तो स्वय के दुराग्रहो से और कुछ पराये लोगों के बहकावे के कारण विश्रृंखलित हो गई हैं। जब तक परस्पर मिलकर एक-दूसरे की न्यूनताओं को पूर्ण नही किया जाएगा तब तक पूर्णता की प्राप्ति आकाश-पुष्प ही बनी रहेगी। अत —

यूय यूय वयमिह वय सर्वदैव बुवदिभ-
हन्ता हन्ताग्रह-निपतितप्र शित नैव किं किम।
सञ्चिन्त्यात पुनरपि निज स्वत्वमुद्धतु मार्या,
यूय ये ते वयमिति मिथ स्वात्मना सवदन्तु ॥

यही निवेदन है, कामना है और प्रार्थना है ॥ॐ॥



विषयानुक्रम

प्रथम प्राभृत

प्रथम प्राभृतप्राभृत

वीरथुई १
गंथपबंधो वीसइपाहुडपण्णत्तिपरूवणपइण्णा य ३
पाहुडाण विसयपरूवणं ३
पढमपाहुडगय अट्ठपाहुडपाहुडसुत्ताण विसयपरूवणं ३
पढमपाहुडस्स पडिवत्तिसंखा ४
बिइयपाहुडस्स विसयपरूवणं ४
,, पडिवत्तिसंखा ४
दसमे पाहुडे बावीसं पाहुडपाहुडाण विसयपरूवणं ५
मासस्स मुहुत्ताणं वड्ढीअवड्ढी ५
सव्वसूरमंडलमग्गे सूरस्स गमणागमणे राइंदियप्पमाणं ६
सूरमंडलेसु सूरस्स सइं दुक्खुत्तो वा चारं ६
आइच्चसंवच्छरे अहोरत्तप्पमाणं ७
उवसंहारसुत्तं ८

द्वितीय प्राभृतप्राभृत

सूरस्स दाहिणा अद्धमंडलसंठिई ९
सूरस्स उत्तरा अद्धमंडलसंठिई १०

तृतीय प्राभृतप्राभृत

सूरियाणं संचरण-खेत्तं ११

चतुर्थ प्राभृतप्राभृत

सूरियाणं अन्नमन्नस्स अंतरचारं १५

पंचम प्राभृतप्राभृत

सूरस्स दीवसमुद्द-अवगाहणान्तर चारं १८

षष्ठ प्राभृतप्राभृत

सूरस्स एगमेगे राइंदिए मंडलाओ मंडलसंकमणखेत्तचारं २१

सप्तम प्राभृतप्राभृत

चंद-सूरमंडल-संठिई २४

अष्टम प्राभृतप्राभृत

सूरस्स सव्वमंडलाणं बाहल्लं आयाम विक्खंभ-परिक्खेवे य २५
सव्वसूरमंडलाणं बाहल्लं अंतरं अद्धापमाणं च २८

द्वितीय प्राभृत

प्रथम प्राभृतप्राभृत
सूराण तेरिच्छगई ३०
द्वितीय प्राभृतप्राभृत
सूरस्स मंडलाओ मंडलान्तरसंकमण ३२
तृतीय प्राभृतप्राभृत
सूरस्स मुहुत्तगइपमाण ३३

तृतीय प्राभृत

चंदिम-सूरियाण ओभासखेत्त उज्जोयखेत्त पगासखेत्त च ३८

चतुर्थ प्राभृत

सेयाते संठिई ४१
चंदिम-सूरियसंठिई ४१
सूरियस्स तावक्खेत्तसंठिती ४३
तावक्खेत्तसंठिइए बाहाओ ४४

पंचम प्राभृत

सूरियस्स लेस्सापडिघायगा पन्नत्ता ४८

षष्ठ प्राभृत

सूरियस्स ओयसंठिई ५१

सप्तम प्राभृत

सूरिएण पगासिया पव्वया ५६

अष्टम प्राभृत

सूरस्स उदयसंठिई ५७
वासा उऊ ६३
हेमंत उऊ ६३
गिम्ह उऊ ६४
अयणाइ ६४
उस्सप्पिणी-ओसप्पिणी ६५
लवणसमुद्दो ६५
धायइसंडो ६५
अब्भंतरपुक्खरद्धो ६६

नवम प्राभृत

पोरिसिच्छायनिव्वत्तण ६७
पोरिसिनिवत्तण ६७
पोरिसिपमाण ७१

दशम प्राभृत

प्रथम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं आवलिया-णिवायजोगो य ७४

द्वितीय प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं चंदेण जोगकालो ७५

णक्खत्ताणं सूरेण जोगकालो ७६

तृतीय प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं पुव्वाइभागा खेत्त-कालप्पमाणं च ७७

चतुर्थ प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं चंदेण जोगारंभकालो ७८

पंचम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं कुलोवकुलाइं ८५

षष्ठ प्राभृतप्राभृत

दुवालससु पुण्णमासिणीसु कुलाइ-णक्खत्त-जोगसंखा ८७

दुवालससु अमावासासु णक्खत्तजोगसंखा ९०

दुवालससु अमावासासु कुलाइ-णक्खत्त-जोगसंखा ९१

सप्तम प्राभृतप्राभृत

दुवालस पुण्णिमासु अमावासासु य चंद-णक्खत्तसंजोगो ९४

अष्टम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताणं संठाणं ९५

नवम प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताण तारग्गसंखा ९८

दशम प्राभृतप्राभृत

वास-हेमंत गिम्ह-राइंदियमाणं १०१

ग्यारहवां प्राभृतप्राभृत

चंदमग्गो णक्खत्तजोगसंखा १०७

रवि ससि-णक्खत्तेहिं अविरहियाणं, विरहियाण सामण्णाण य चंदमंडलाण संखा १०८

बारहवां प्राभृतप्राभृत

णक्खत्ताण देवया ११०

तेरहवां प्राभृतप्राभृत

मुहुत्ताण णामाइं १११

चौदहवां प्राभृतप्राभृत

दिवसराईण णामाइं ११४

पन्द्रहवां प्राभृतप्राभृत
तिहीण णामाइं १११५
सोलहवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताण गोत्ता ११६
सत्तरहवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताण भोयण कज्जसिद्धी य ११९
अठारहवां प्राभृतप्राभृत
एगे जुगे आदिच्च-चंदचारसंखा १२१
उन्नीसवां प्राभृतप्राभृत
एगसवच्छरस्स मासा १२२
बीसवां प्राभृतप्राभृत
सवच्छराण संखा लक्खण च १२३
लक्खणसवच्छरस्स भेया १२४
इक्कीसवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताण दाराइं १२५
बाईसवां प्राभृतप्राभृत
णक्खत्ताण सल्वलक्खण १२८
णक्खत्तमंडलाण सीमाविक्खंभो १३०
णक्खत्ताण चंदेण जोगो १३१
चंदस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो १३२
सूरस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो १३३
चंदस्स अमावासासु जोगो १३४
सूरस्स अमावासासु जोगो १३५
पुण्णिमासिणीसु चंदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताण जोगो १३६
अमावासासु चंदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताण जोगो १३७
चंदेण य सूरेण य णक्खत्ताण जोगकालो १३८
चंद-सूर-गह-णक्खत्ताण गइसमावण्णत्त १३९
चंद-सूर-गह-णक्खत्ताण जोगो १३९

ग्यारहवां प्राभृत

पचण्हं सवच्छराण आरभ-पज्जवसाणकाल, चंद-सूराण-णक्खत्तसजोगकालो य १४१
पढम चंदसवच्छर १४१
बितिय चंदसवच्छर १४१
ततिय अभिवड्ढिय सवच्छर १४२
चउत्थ चंदसवच्छर १४२
पचम अभिवड्ढिय सवच्छर १४३

बीसवां प्राभृत

चन्दिम-सूरियाणं अणुभावो	१९७
राहु-सरूवपरूवणा	१९८
राहुस्स णव णामाइं	१९९
राहुस्स विमाणा पंचवण्णा	१९९
राहुस्स दुविहत्त	२००
चंदस्स ससी-अभिहाण	२०१
सूरस्स आइच्चाभिहाणं	२०१
चंद-सूराइं णं काम-भोगपरूवणं	२०१
अट्ठासीई महग्गहा	२०४
संगहणीगाहाओ	२०५
उवसंहारो	२०६
सुयधम्मविरयणीय पण्णत्तिगुत्तं	२०७
परिशिष्ट	
श्री सूर्य-चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र का गणितविभाग	२१०
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र २० व २४ का परिशिष्ट	२१९

सुयथेरविरइय उवंग

सूरियपण्णत्तिसुत्तं
चंदपण्णत्तिसुत्तं

श्रुतस्थविरविरचित उपांग

सूर्यप्रज्ञाप्तिसूत्र
चन्द्रप्रज्ञाप्तिसूत्र

प्रथम प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

वीरत्थुई

जयइ नव-नलिण-कुवलय, वियसिय-सयवत्त पत्तल-दलच्छो ॥
वीरो गइंद-मयगल, सललिय-गयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥

पच-पय-वयण जोइसगणराय-पण्णत्ति-परूवण-पइण्णा य

नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयग-परिवंदिए गयकिलेसे ॥
अरिहे सिद्धायरिय-उवज्झाए सव्वसाहू य ॥ २ ॥

फुड-वियड पागडत्थं, वुच्छं पुव्व-सुय-सार-णिस्संदं ॥
सुहुमं गणिणोवइट्ठं, जोइसगणराय पण्णत्तिं ॥ ३ ॥

नामेण "इंदभूइ" त्ति, गोयमो वंदिऊण तिविहेण ॥
पुच्छइ जिणवरवसहं, जोइसरायस्स पण्णत्तिं ॥ ४ ॥

१-२ तेणं कालेणं तेणं समएणं "मिहिला" णामं णयरी होत्था, वण्णओ ।

तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं "माणिभद्दे" णामं चेइए होत्था, वण्णओ ।

तीसे णं मिहिलाए "जिअसत्तू" राया परिवसइ, वण्णओ ।

तस्स णं जियसत्तुस्स रण्णो "धारिणी" णामं देवी होत्था, वण्णओ ।

तेणं कालेणं, तेणं समएणं तंमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, वण्णओ ।

[क] परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ ।

[ख] परिसा पडिगया ।

[ग] राया जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए ।

तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी "इंदभूई" णामं अणगारे जाव पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

वीस पाहुडाण विसयपरूवण

३ गाहाओ—१ कइ मंडलाइं वच्चइ, २ तिरिच्छा किं व गच्छइ ॥
३ ओभासइ केवइयं, ४ सेयाइं किं ते संठिई ॥ १ ॥
५ कहिं पडिहया लेसा, ६ कहं ते ओयसंठिई ॥
७ के सूरियं वरयंति, ८ कहं ते उदयसंठिई ॥ २ ॥
९ कइ कट्ठा पोरिसिच्छाया, १० जोगे किं ते व आहिए ॥
११ किं ते संवच्छरेणाई, १२ कइ संवच्छराइ य ॥ ३ ॥
१३ कहं चंदमसो वुड्ढी, १४ कया ते दोसिणा बहू ॥
१५ के सिग्घगई वुत्ते, १६ कहं दोसिण-लक्खणं ॥ ४ ॥
१७ चयणोववाय, १८ उच्चत्ते, १९ सूरिया कइ आहिया ॥
२० अणुभावे के व संवुत्ते, एवमेयाइं वीसइं ॥ ५ ॥

पढमपाहुडगय अट्ठपाहुडपाहुडसुत्ताण विसयपरूवण

४ गाहाओ—१ वड्ढोवुड्ढी मुहुत्ताण, २ अद्धमंडल-संठिई ॥
३ के ते चिण्णं परियरइ, ४ अंतरं किं चरंति य ॥ १ ॥
५ ओगाहइ केवइयं, ६ केवइयं च विक्खंभे ॥
७ मंडलाण य संठाणे, ८ विक्खंभो अट्ठ पाहुडा ॥ २ ॥

पढमपाहुडस्स पडिवत्तिसंखा

५ गाहा — ४ छ, ५ पंच य, ६ सत्तेव य, ७, अट्ठ, ८ तिण्णि य हवंति पडिवत्ती ॥
पढमस्स पाहुडस्स, हवंति एयाउ पडिवत्ती ॥ १ ॥

बितियपाहुडस्स विसय-परूवण

६ गाहाओ–पडिवत्तीओ उदए, तह अत्थमणेसु य ॥
२ भेयघाए कण्णकला, ३ मुहुत्ताण गती ति य ॥ १ ॥
निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगई इय ॥
चुलसीइ सयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥ २ ॥

पडिवत्तिसंखा

गाहा—१ उदयंमि अट्ठ भणिया, २ भेयघाए दुवे य पडिवत्ती ॥
३ चत्तारि मुहुत्तगईए, हुंति तइयंमि पडिवत्ती ॥ १ ॥

दसमे पाहुडे बावीस पाहुड-पाहुडाण विसयपरूवणं

७ गाहाओ--१ आवलिय, २ मुहुत्तग्गो, ३ एव भागा य, ४ जोगस्स ॥
५ कुलाइ, ६ पुण्णमासी य, ७ सन्निवाए य ८ सठिई ॥ १ ॥
९ तारग्ग, च, १० नेता य, ११ चदमग्गत्ति, यावरे ॥
देवता य अज्झयणे, १३ मुहुत्ताण नामाइ य ॥ २ ॥
१४ दिवसा राइवुत्ता य, १५ तिहि, १६ गोत्ता, १७ भोयणाणि य ॥
१९ आइच्चचार, १९ मासा य, २० पच सवच्छराइ य ॥ ३ ॥
२१ जोइस्स य, दाराइ, २२ नक्खत्ता विजये वि य ॥
दसमे पाहुडे एए, बावीस पाहुड-पाहुडा ॥ ४ ॥

"मासस्स" मुहुत्ताण वद्धोऽवद्धी

८ ता कह ते वद्धोऽवद्धी मुहुत्ताण आहिए त्ति, वदेज्जा ?

ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसए सत्तावीस च सट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वदेज्जा ।[1]

---

१ (क) मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का यह सूत्र यहा कैसे दिया गया है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है ।

सूर्यप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ मे उत्थानिका के बाद बीस प्राभृतो के प्राथमिक विषयों की प्ररूपक पाच गाथाएँ हैं । उनमे से प्रथम गाथा म प्रथम प्राभृत के प्रथम प्राभृतप्राभृत की प्राथमिक विषयसूचक गाथा का "कइ मडलाइ वच्चइ" यह प्रथम पद है । इसके अनुसार "एक वर्ष मे सूर्य कितने मडलों मे एक बार और कितने मण्डलो मे दो बार गति करता है ।" यह विषय है ।

वृत्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करते हैं— 'प्रथमे प्राभृते—सूर्यो वर्षमध्ये कति मण्डलान्येकवार, कति वा मण्डलानि द्वि कृत्वा व्रजतीत्यतन्निरूपणीयम् । किमुक्त भवति ? एव गौतमेन प्रश्ने कृते तदनन्तर सव तद्विषय निर्वचन प्रथमे प्राभृते वक्तव्यमिति ।' किन्तु प्रथम प्राभृत क आठ प्राभृतप्राभृतो की विषयप्ररूपक दो गाथाओ मे से प्रथम गाथा के प्रथम पद म ' वड्ढोऽवड्ढी मुहुत्ताण" यह पद है । इसके अनुसार प्रथम प्राभत के प्रथम प्राभतप्राभृत मे प्रथम सूत्र में वृत्तिकार के अनुसार चार प्रकार के मासो के मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का प्ररूपण है ।

वृत्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करते हैं— 'प्रथमस्य प्राभृतस्य सत्के प्रथमे प्राभृतप्राभृत मुहूर्तानां दिवस-रात्रिगताना वृद्धयपवद्धी वक्तव्ये ।"

विषयप्ररूपक सग्रहणी गाथाओ की रचना के पूर्व एव वृत्तिकार के पूर्व यह व्युत्क्रम हो गया है ।

वृत्तिकार स्वय उक्त व्युत्क्रम की उपेक्षा कर गए तो अन्य सामान्य श्रुतधरो का तो कहना ही क्या ?

यह सूत्र क्रमानुसार कहाँ होना चाहिए, इस सम्बन्ध मे आगे यथास्थान लिखने का सकल्प है ।

(ख) मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का यह सूत्र भी खण्डित प्रतीत होता है, क्योंकि प्रस्तुत सूत्र के प्रश्नसूत्र में मुहूर्तों की हानि-वृद्धि का प्रश्न है किन्तु उत्तरसूत्र मे केवल नक्षत्रमास के मुहूर्तों का ही कथन है ।

सव्वसूरमंडलमग्गे सूरस्स गमणागमण-राइंदियप्पमाण

९ ता जया णं सूरिए सव्वब्भतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
एस णं अद्धा केवइयं राइंदियग्गेणं आहिते त्ति वदेज्जा ?
ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहिते त्ति वदेज्जा।

सूरमंडलेसु सूरस्स सइं दुक्खुत्तो वा चारं

१० ता एताए अद्धाए सूरिए कति मंडलाइं चरइ ?
ता चुलसीयं मंडलसयं चरइ।
बासीइं मंडलसयं दुक्खुत्तो चरइ, तं जहा—णिक्खममाणे चेव, पवेसमाणे चेव।
दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरइ, तं जहा—सव्वब्भतरं चेव मंडलं, सव्वबाहिरं चेव मंडलं।

आइच्चसंवच्छरे अहोरत्तप्पमाण

११ जइ खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,
सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,
पढमे छम्मासे-अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,
नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे,
अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।
दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,
नत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई,
अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।
पढमे छम्मासे वा दोच्चे छम्मासे वा नत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, नत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ।

तत्थ णं के हेउ वदेज्जा ?

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम विक्खंभे णं, तिण्णि जोयण-सयसहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं, च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवे णं पण्णत्ते।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भतर-मण्डलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया ण सूरिए अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगसट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएण उवाएण णिक्खममाणे सूरिए तयाणतराणतर मडलाम्रो तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे दो दो एगट्ठिभाग मुहुत्ते एगमेगे मडले दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वबाहिरमडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतराम्रो मडलाम्रो सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण सव्वब्भतर मडल पणिहाय एगे ण तेसीए ण राइदियसए ण तिण्णि छावट्ठे एगसट्ठि भागमुहुत्तसए दिवस खेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणि-खेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराम्रो मडलाम्रो तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे दो दो एगसट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मडले रयणिखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिराम्रो मडलाम्रो सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण सव्वबाहिर मडल पणिहाय एगे ण तेसीए ण राइदियसए ण तिन्नि छावट्ठे एगसट्ठिभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

उपसंहारसुत्त

एवं खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइ अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइ अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, सइ दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइ दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

पढमे छम्मासे—अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे,

अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई ।

दोच्चे वा छम्मासे—अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

नत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई ।

अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे—णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, णत्थि राइंदियाणं वड्ढोवड्ढीए, मुहुत्ताण वा चयोवचएणं अण्णत्थ वा अणुवायगईए,

गाहाओ भाणियव्वाओ ।[1]

❀❀

---

1 [illegible] —सूर्य टीका

प्रथम प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दाहिणा अद्धमंडलसंठिई

१२ ता कह ते अद्धमंडलसंठिई आहितात्ति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे दुवे अद्धमंडलसंठिई पण्णत्ता, तं जहा—

१ दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिई, २ उत्तरा चेव अद्धमंडलसंठिई ।

ता कह ते दाहिणा अद्धमंडलसंठिई आहितात्ति वदेज्जा ?

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम—विक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिंतिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

से निक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडल संठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्तेहिं दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिंतिं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिंतिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरमंडलस्स तंसि

तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिति संकममाणे संकममाणे दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वबाहिर उत्तर अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिर उत्तर अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणअद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरंसि तंसि तंसि देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे संकममाणे उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

सूरस्स उत्तरा अद्धमंडलसंठिई

१३ ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिई आहिएति वएज्जा ?

ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे जाव जोयण-सयसहस्समायाम विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

से निक्खममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भतराणतर दाहिण अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए अब्भतराणतर दाहिण दाहिण अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भितराणतर तच्च उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरई।

ता जया ण सूरिए अब्भितराणतर तच्च उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएण उवाएण णिक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे तसि तसि देससि त त अद्धमडलसठिइ सकममाणे सकममाणे उत्तराए अतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वबाहिर दाहिण अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर दाहिण अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिराणतर उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिर तच्च दाहिण अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च दाहिण अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे तसि तसि देससि त त अद्धमडलसठिइ सकममाणे सकममाणे दाहिणाए अतरभागाए तस्साइपएसाए सव्वब्भतर उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



प्रथम प्राभृत
[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरियाण सचरण-खेत्त

१४ ता किं ते चिण्ण पडिचरति आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, त जहा—भारहे चेव सूरिए। एरवए चेव सूरिए।

ता एए ण दुवे सूरिया पत्तेय पत्तेय—

तीसाए तीसाए मुहुत्तेहि एगमेग अद्धमडल चरइ,

सट्ठीए सट्ठीए मुहुत्तेहि एगमेग मडल सघातयति।

ता निक्खममाणे खलु एते दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरति,

पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरति त सयमेग चोयाल,

प —तत्थ ण को हेतु, त्ति वदेज्जा ?

उ —ता अयण्ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय, तेरस य अगुलाइ, अद्धगुल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते।

तत्थ ण अय भारहए चेव सूरिए जबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउवीसएण सएण छेत्ता दाहिण-पुरत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलसि बाणउतिय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

उत्तर-पच्चत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

तत्थ ण अय भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउवीसएण सएण छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलसि बाणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

दाहिण-पच्चत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

तत्थ ण अय एरवए चेव सूरिए जबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउवीसएण सएण छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलसि बाणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

दाहिण-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

तत्थ णं अयं एरवए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिण-पच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भाग मंडलंसि बाणउइय सूरियमयाए जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

उत्तर-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

ता निक्खममाणा खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति।

पविसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति सयमेगं चोयालं।



प्रथम प्राभृत

[चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

सूरियाण अण्णमण्णस्स अतर-चार

१५ ता केवइय एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति, आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ तत्थ एगे एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु ।

२ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च चोत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

३ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च पणतीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

४ १ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग दीव, एग समुद्द अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

५-२ एगे पुण एवमाहसु—

ता दो दीवे, दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

६-३ एगे पुण एवमाहसु—

ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—

ता पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर अभिवड्ढेमाणा वा, निवड्ढेमाणा वा सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

दाहिण-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एयकाणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

तत्थ णं अयं एरवए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडीणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिण-पच्चत्थिमिल्लंसि चउब्भाग मंडलंसि बाणउइय सूरियमयाए जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

उत्तर-पुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एयकाणउइय सूरियमयाइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ,

ता निक्खममाणा खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति।

पविसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति सयमेगं चोयालं।



प्राथम प्राभृत
[चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

सूरियाण अण्णमण्णस्स अतर-चार

१५ ता केवइय एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति, आहितेति वएज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ तत्थ एगे एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु ।

२ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च चोत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

३ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च पणतीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

४-१ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग दीव, एग समुद्द अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

५-२ एगे पुण एवमाहसु—

ता दो दीवे, दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

६-३ एगे पुण एवमाहसु—

ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—

ता पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर अभिवड्ढेमाणा वा, निवड्ढेमाणा वा सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

तत्थ ण को हेउ ? आहितेति वदेज्जा,

ता अय ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डाए वट्टे जाव जोयणसय सहस्समायाम विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरसय-अगुलाइ अद्धगुलस्स च किचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते,

१ ता जया ण एते दुवे सूरिया सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ, छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

२ ते निक्खममाणा सूरिया णव सवच्छर अयमाणा पढमसि अहोरत्तसि अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ छच्च पणयाले जोयणसए पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

३ ते निक्खममाणा सूरिया दोच्चसि अहोरत्तसि अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च इक्कावण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएण उवाएण निक्खममाणा एते दुवे सूरिया तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणा सकममाणा पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर अभिवड्ढेमाणा अभिवड्ढेमाणा, सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चरं चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता ण एग जोयणसयसहस्स छच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चारं चरति,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

२ ते पविसमाणा सूरिया दोच्च छम्मास अयमाणा पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण एग जोयणसयसहस्स छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छत्तीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

३ ते पविसमाणा सूरिया दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया बाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण एग जोयणसयसहस्स छच्च अडयाले जोयणसए बावण्ण च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणा एते दुवे सूरिया तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणा सकममाणा पच पच जोयणाइ पणतीसे च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर निवड्ढेमाणा निवड्ढेमाणा सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता जया ण दुवे सूरिया सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते, उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस ण दोच्चे छम्मासे एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



तत्थ ण को हेउ ? आहितेति वदेज्जा,

ता अय ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय सहस्समायाम विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरसय-अगुलाइ अद्धगुलल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते,

१ ता जया ण एते दुवे सूरिया सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण णवणउइ जोयणसहस्साइ, छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

२ ते निक्खममाणा सूरिया णव सवच्छर अयमाणा पढमसि अहोरत्तसि अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च पणयाले जोयणसए पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

३ ते निक्खममाणा सूरिया दोच्चसि अहोरत्तसि अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरति,

तया ण णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च इक्कावण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएण उवाएण निक्खममाणा एते दुवे सूरिया तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणा सकममाणा पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर अभिवड्ढेमाणा अभिवड्ढेमाणा, सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चारं चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरति,

ता ण एग जोयणसयसहस्स छच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

तया ण जबुद्दीव दीव एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख—ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण लवणसमुद्द एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहित्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

२ एव चउत्तीसेऽवि जोयणसय,

३ पणतीसेऽवि एव चेव भाणियव्व,

४ तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

ता अवड्ढ दीव वा, समुद्द वा, ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण अवड्ढ जबुद्दीव दीव ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एव सव्वबाहिरे मडलेऽवि, णवर—"अवड्ढ लवणसमुद्द" तया ण "राइदिय" तहेव,[१]

५ तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

ता नो किंचि दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता चार चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण नो किंचि दीवं वा, समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एव सव्वबाहिरे मडले वि, णवर—'नो किंचि लवणसमुद्द ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, राइदिय तहेव'[२],

---

१ ऊपर अकित सूत्र के समान है।

२ ऊपर अकित सूत्र के समान है।

प्रथम प्राभृत

[पचम प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दीव-समुद्द-ओगाहणाणतर चार

१६ १७ ता केवइय ते दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ पच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता एग जोयण-सहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय, दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार, चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता एग जोयण-सहस्स, एग च चउत्तीस जोयणसय, दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता एग जोयण-सहस्स, एग च पणतीस जोयणसय दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता अवड्ढ दीव वा, समुद्द वा, ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ एगे एवमाहसु,

५ एगे पुण एवमाहसु—

ता नो किंचि एग जोयणसहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय दीव वा, समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

तत्थ जे ते एवमाहसु—

१ ता एग जोयणसहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय, दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

ते एवमाहसु—

ज ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण जबुद्दीव दीव एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख—ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण लवणसमुद्द एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहित्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

२ एव चउत्तीसेऽवि जोयणसय,

३ पणतीसेऽवि एव चेव भाणियव्व,

४ तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

ता अवड्ढ दीव वा, समुद्द वा, ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण अवड्ढ जबुद्दीव दीव ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एव सव्वबाहिरे मडलेऽवि, णवर—"अवड्ढ लवणसमुद्द" तया ण-"राइदिय" तहेव,[1]

५ तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

ता नो किचि दीव वा समुद्द वा ओगाहित्ता चार चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण नो किचि दीव वा, समुद्द वा ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एव सव्वबाहिरे मडले वि, णवर—'नो किचि लवणसमुद्द ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ, राइदिय तहेव'[2],

---

१ ऊपर अंकित सूत्र के समान है।

२ ऊपर अंकित सूत्र के समान है।

वय पुण एव वयामो—

क—ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण जबुद्दीव दीव असीय जोयणसय ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख -ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ;

तया ण लवणसमुद्द तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणियव्वाओ ।



प्रथम प्राभृत

[छठा प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स एगमेगे राइदिए मडलाओ मडलसकमणखेत्तचार

१८ ता केवइय ते एगमेगे ण राइदिए ण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता दो जोयणाइ अद्धदुचत्तालीसे तेसीइ सयभागे जोयणस्स एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता अड्ढाइज्जाइ जोयणाइ एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता तिभागूणाइ तिण्णि जोयणाइ एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता तिण्णि जोयणाइ अद्धसीतालीस च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता अद्धुट्ठाइ जोयणाइ एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

६ ता चउब्भागूणाइ चत्तारि जोयणाइ एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता चत्तारि जोयणाइ अद्धबावण्ण च तेसीइसयभागे जोयणस्स एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—

ता दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेग मडल एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ,

तत्थ ण को हेऊ ? इति वदेज्जा।

ता अय ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय सहस्सामायामविक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ, अद्धगुल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते।

१ ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ—

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

२ से निक्खममाणे सूरिए नव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अभितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए अभितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

३ से निक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अभितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया णं सूरिए अभितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइदिएहिं विकंपइत्ता विकंपइत्ता चार चरइ,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएण उवाएण निक्खममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे दो दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेग मडल एगमेगेण राइदिएण विकपमाणे विकपमाणे सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतराओ मडलाओ सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया णं सव्वब्भतर मडल पणिहाय एगेण तेसीएण राइदियसएण पचदसुत्तरजोयणसए विकपइत्ता विकंपइत्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१ से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण दो दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेण राइदिएण विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

२ से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण पचजोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइदिएहिं विकपइत्ता विकपइत्ता चार चरई,

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाऽणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेग मडल एगेमेगेण राइदिएण विकपमाणे विकपमाणे सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिराओ मडलाओ सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ,

तया ण सव्वबाहिर मडल पणिहाय एगे ण तेसीए ण राइदियसएण पचदसुत्तरे जोयणसए विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



प्रथम प्राभृत

[सप्तम प्राभृतप्राभृत]

चंद-सूर-मंडल-संठिई

१९ – ता कहं ते मंडल-संठिई आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता सव्वा वि णं मंडलावता समचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता सव्वा वि णं मंडलावता विसमचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता सव्वा वि णं मंडलावता समचउक्कोणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता सव्वा वि णं मंडलावता विसमचउक्कोणसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु—

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता सव्वा वि णं मंडलावता समचक्कवालसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता सव्वा वि णं मंडलावता विसमचक्कवाल-संठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु—

एगे पुण एवमाहंसु—

७ ता सव्वा वि णं मंडलावता चक्कद्धचक्कवालसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता सव्वा वि णं मंडलावता छत्तागारसंठिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु —

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

ता सव्वा वि णं मंडलावता छत्तागारसंठिया पण्णत्ता,

एएणं णएणं णायव्वं, णो चेव णं इयरेहिं । पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ।



प्रथम प्राभृत

[अष्टम प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स सव्वमडलाण बाहल्ल आयाम-विक्खभ-परिक्खेव च

२० ता सव्वा वि ण मडलवया—
केवइय बाहल्लेण ?
केवइय आयाम-विक्खभेण ?
केवइय परिक्खेवेण ? आहितेति वदेज्जा।

तत्थ खलु इमा तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु —

१—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण,
एग जोयणसहस्स एग तेत्तीस जोयणसय आयाम-विक्खभेण,
तिण्णि जोयणसहस्साइ तिण्णि य णवणउई जोयणसए परिक्खेवेण पण्णत्ता एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

२—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण
एग जोयणसहस्स एग च चउत्तीस जोयणसय आयाम विक्खभेण,
तिण्णि जोयणसहस्साइ चत्तारि विउत्तराइ जोयणसयाइ परिक्खेवेण पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु —

३—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण
एग जोयणसहस्स एग च पणतीस जोयणसय आयाम विक्खभेण,
तिण्णि जोयणसहस्साइ चत्तारि पचुत्तराइ जोयणसयाइ परिक्खेवेण पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो —
ता सव्वा वि ण मडलवया अडयालीस एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,
अणियया आयाम विक्खभ-परिक्खेवेण, आहितेति वदेज्जा,
तत्थ ण को हेऊ ? त्ति वदेज्जा।

ता अय ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयण-

सहस्समायाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

१ ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसयाइं आयाम विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगूणणउइं जोयणाइं किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं,[1]

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

२ से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगं चउत्तरं जोयणसयं किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं,

---

१ सूर्यप्रज्ञप्ति तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सूत्रों में सूर्यमण्डल का आयाम-विष्कम्भ कहा गया है किन्तु प्रस्तुत सूत्र में केवल विष्कम्भ ही कहा गया है। इसका समाधान यह है कि वृत्ताकार का आयाम विष्कम्भ सम होता है, सूर्यमण्डल वृत्ताकार है, अतः केवल विष्कम्भ कहने से आयाम और विष्कम्भ दोनों समझ लेने चाहिए।

सूर्यप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का बाहल्य एक योजन के इकसठ भागों में से अड़तालीस भाग जितना कहा गया है।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का बाहल्य एक योजन के इकसठ भागों में से चौबीस भाग जितना कहा गया है।

इन दो प्रकार के बाहल्य प्रमाणों में से कौन सा वास्तविक है यह शोध का विषय है।

सूर्यप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि बाह्याभ्यन्तर मण्डलों की अपेक्षा वर्णित है तथा लिखा है किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का आयाम, विष्कम्भ और परिधि वर्णित नहीं किये हैं।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में सूर्यमण्डल का आयाम विष्कम्भ और परिधि जो कही है वह आकाशगत या बाह्य मण्डलों की है? क्योंकि सूर्यप्रज्ञप्ति में वर्णित बाह्याभ्यन्तर मण्डलों के आयाम विष्कम्भ प्रमाणों से जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति-निरूपित आयाम विष्कम्भादि का प्रमाण मिलता नहीं है।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

३ से निक्खम्ममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च एकावन्ने जोयणसए णव य एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

४ एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खम्ममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे अट्ठारस अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

एगं च जोयणसयसहस्साइं छच्चसट्ठे जोयणसए आयामविक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१ से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,

एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,
दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

२ से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,
एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं,

तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोण्णि य एगूणासीए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,
दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे पंच पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ,
तया णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,
णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं,
तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरससहस्साइं एगूणणउइं च जोयणाइं किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,
एस णं आइच्चे संवच्छरे एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

सव्वसूरमंडलाणं बाहल्लं अंतरं अद्धा पमाणं च

ता सव्वा वि णं मंडलवया अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं,
सव्वा वि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं,
एस णं अद्धा तेसीयसयपडुप्पण्णे पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वएज्जा,

ता अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिर मंडलवयं बाहिराओ वा मंडलवयाओ अब्भितर मंडलवयं, एस णं श्रद्धा केवइयं आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वएज्जा,

अब्भिंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलवया—एस णं श्रद्धा केवइयं आहिए त्ति वएज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिया,

ता अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिरमंडलवया बाहिराओ मंडलवयाओ अब्भितर-मंडलवया – एस णं श्रद्धा केवइयं आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचनवुत्तरे जोयणसए तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिए त्ति वदेज्जा,

अब्भिंतराओ मंडलवयाओ बाहिरा मंडलवया, बाहिराए मंडलवयाए अब्भितर-मंडलवया—एस णं श्रद्धा केवइया आहिए त्ति वदेज्जा ?

ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिए त्ति वदेज्जा ।



द्वितीय प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

सूराणं तेरिच्छगई

२१ ता कहं ते तेरिच्छगई आहिए ? ति वएज्जा।

तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ मरीची आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं मरीची आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उट्ठेइ, से णं इमं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढवीकायंसि विद्धंसइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए, पुढवीओ उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ, करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढवीकायं अणुपविसइ अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उट्ठेइ एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उट्ठेइ, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ करित्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि विद्धंसइ एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

७ ता पुरत्थिमाओ लोयताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, से ण इम लोय तिरिय करेइ करित्ता पच्चत्थिमसि लोयतसि साय सूरिए आउकायसि पविसइ, पविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू पुरत्थिमाओ लोयताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता पुरत्थिमाओ लोयताओ बहूइ जोयणाइ बहूइ जोयणसयाइ बहूइ जोयणसहस्साइ उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थ ण पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेई, से ण इम दाहिणड्ढ लोय तिरिय करेइ, करित्ता उत्तरड्ढलोय तमेव राओ, से ण इम उत्तरड्ढलोय तिरिय करेइ, करित्ता दाहिणड्ढलोय तमेव राओ, से ण इमाइ दाहिण-उत्तरड्ढलोयाइ तिरिय करेइ, करित्ता पुरत्थिमाओ लोयताओ बहूइ जोयणाइ बहूइ जोयणसयाइ, बहूइ जोयणसहस्साइ उड्ढ दूर उप्पइत्ता, एत्थ ण पाओ सूरिए आगासंसि उट्ठेइ, एगे एवमाहंसु ।

वय पुण एव वयामो—

ता जबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण पडीणायय उदीण दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता दाहिण पुरत्थिमंसि उत्तर पच्चत्थिमंसि य चउब्भाग मडलसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसयाइ उड्ढ उप्पइत्ता एत्थ ण पाओ दुवे सूरिया आगासाओ उत्तिट्ठंति,

ते ण इमाइ दाहिणुत्तराइ जबुद्दीव भागाइ तिरिय करेंति, करेंतित्ता पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइ जबुद्दीव भागाइ तामेव राओ,

ते ण इमाइ पुरत्थिम पच्चत्थिमाइ जबुद्दीवभागाइ तिरिय करेंति, करेंतित्ता दाहिणुत्तराइ जबुद्दीवभागाइ तामेव राओ,

ते ण इमाइ दाहिणुत्तराइ पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइ जबुद्दीवभागाइ तिरिय करेंति, करेंतित्ता जबुद्दीवस्स दीवस्स पाईण पडीणायय-उदीण दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसे ण सएण छेत्ता दाहिण पुरत्थिमसि उत्तर पच्चत्थिमसि य चउब्भाग-मडलसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमर-मणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइ उड्ढ उप्पइत्ता एत्थ ण पाओ दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठंति ।



द्वितीय प्राभृत
[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मंडलाओ मंडलांतर-संकमण

२२ ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए चारं चरइ आहिए ? ति वएज्जा,

तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकामइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ, एगे एवमाहंसु,

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

१ ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे सूरिए भेयघाएणं[1] संकामइ, तेसि णं अयं दोसे,

"ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे संकममाणे भेयघाएणं संकमइ एवइयं च णं अद्धं पुरओ न गच्छइ, पुरओ पुरओ अगच्छमाणे मंडलकालं परिहवेइ ' तेसि णं अयं दोसे ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

२ ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ, तेसि णं अयं विसेसे,

ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं[2] निव्वेढेइ, एवइयं च णं अद्धं पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मंडलकालं न परिहवेइ, तेसि णं अयं विसेसे,

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु —

मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेइ एएणं णएणं णेयव्वं, णो चेव णं इयरेणं

---

१ [illegible]

२ [illegible]

द्वितीय प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मुहुत्त-गइ-पमाण

२३ ता केवइय ते खेत्त सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु —

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु —

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु –

(४) ता छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण, मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि एग जोयणसयसहस्स अट्ठ य जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च दिवससि बावत्तरि जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया ण छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

द्वितीय प्राभृत
[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मडलाओ मडलातर-सकमण

२२ *ता कह ते मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए चार चरइ आहिए ? ति* वएज्जा,

तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयधाएण सकामइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए कण्णकल निव्वेढेइ, एगे एवमाहसु,

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

१ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयधाएण[1] सकामइ, तेसि ण अय दोसे,

"ता जेणतरेण मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे भेयधाएण सकमइ एवइय च ण अद्ध पुरओ न गच्छइ, पुरओ पुरओ अगच्छमाणे मडलकाल परिहवेइ" तेसि ण अय दोसे ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

२ ता मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कण्णकल निव्वेढेइ, तेसि ण अय विसेसे,

ता जेणतरेण मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कण्णकल[2] निव्वेढेइ, एवइय च ण अद्ध पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मडलकाल न परिहवेइ, तेसि ण अय विसेसे,

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कण्णकल निव्वेढेइ एएण णएण णेयव्व, णो चेव ण इयरेण,

---

१ मण्डलादपरमण्डल सक्रामन् सक्रमितुमिच्छन् सूर्यो भेदघातेन सक्रामति, भेदो मण्डलस्य मण्डलस्यापान्तराल तत्र घातो—गमन, एतच्च प्राग्वाक्ये, तेन सक्रामति
किमुक्त भवति ? विवक्षिते मण्डले सूर्येणापूरिते सति तदनन्तरमपान्तरालगमनेन द्वितीय मण्डल सक्रामति सक्रम्य च तस्मिन मण्डले चार चरति ।

२ मण्डलान्मण्डल सक्रमान् सक्रमितुमिच्छन सूर्यस्तदधिकृत मण्डल प्रथमक्षणादूर्ध्वमारभ्य कर्ण कल निर्वेष्टयति मुञ्चति
इयमत्र भावना- भारत ऐरावतौ वा सूर्य स्व-स्वस्थाने उद्गत
सन् अपरमण्डलगत कर्ण प्रथमकोटिभागरूप लक्ष्यीकृत्य शनैः शनैरधिकृत
मण्डल तथा कयाचनापि कलया मुञ्चन चार चरति' यथा तस्मिन्नहोरात्रेऽनिक्रान्त सति अपरानन्तरमण्डलस्यारम्भ वर्तत इति ।
कर्णकलमिति च क्रियाविशेषण द्रष्टव्य तच्चैव भावनीय—कर्ण-अपरमण्डलगतप्रथमकोटिभागरूप लक्ष्यीकृत्याधिकृतमण्डल प्रथमक्षणादूर्ध्व क्षणे क्षण कलयाऽनिक्रान्त यथा भवति तथा निर्वेष्टयतीति । —सूर्य टीका

द्वितीय प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मुहुत्त-गइ-पमाण

२३ ता केवइय ते खेत्त सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ? आहिए त्ति वएज्जा।

तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु।

एगे पुण एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु।

एगे पुण एवमाहसु—

(४) ता छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण, मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

तसि च ण दिवससि एग जोयणसयसहस्स अट्ठ य जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते।

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

तसि च दिवससि बावत्तरिं जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया ण छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्को— अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

तंसि च णं दिवसंसि नउइं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि सट्ठिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु—

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि अडयालीसं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

तत्थ णं जे ते एवमाहंसु—

(४) ता छ वि, पंच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु—

ता सूरिए णं उग्गमणमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सिग्घगई भवइ, तया णं छ छ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

मज्झिमं तावक्खेत्तं समासाएमाणे समासाएमाणे सूरिए मज्झिमगई भवइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

मज्झिमं तावक्खेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगई भवइ, तया णं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ ।

ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तंसि च दिवसंसि एक्काणउइं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तंसि च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते तया णं छ वि, पंच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, एगे एवमाहंसु ।

वय पुण एव वयामो—

ता साइरेगाइ पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

प्र —तत्थ को हेऊ ? त्ति वएज्जा ।

उ —ता अयण्ण जवुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण मव्वब्भतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खभेण, तिन्नि जोयणसयसहस्साइ दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि कोसे, अट्ठावीस च धणुसय, तेरस य अगुलाई, अद्धगुल च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण पच पच जोयण-सहस्साइ दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसयाइ एगूणतीस च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

से निक्खममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अब्भितराणतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण पच पच जोयणसहस्साइ दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए सीयालीस च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता एगूणवीसाए चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अब्भितर तच्च मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण पच पच जोयणसहस्साइ दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पच य सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीओलीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णिआभागेहिं सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया।

एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ मंडलाओ तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे अट्ठारस अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे चुलसीइं चुलसीइं सीयाइं जोयणाइं पुरिसच्छायं निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं तिन्नि य पंचुत्तरे जोयणसए पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसए सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहिं य सोलसुत्तरेहिं जोयणसएहिं एगूणचत्तालीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता सट्ठीए चुण्णिया भागेहिं, सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ।

ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं पंच पंच जोयणसहस्साइं तिन्नि य चउरुत्तरे जोयणसए एगूणचत्तालीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ।

तया णं इहगयस्स मणूसस्स एगाहिएहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए।

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे अट्ठारस अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले मुहुत्तगइ निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे साइरेगाइ पचासीइ पचासीइ जोयणाइ पुरिसच्छाय अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण पच पच जोयणसहस्साइ दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अट्ठतीस च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे ण मुहुत्ते ण गच्छइ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य दोवट्ठेहिं जोयणसएहिं य एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे।



तृतीय प्राभृत

चंदिम-सूरियाण ओभासखेत्त उज्जोयखेत्त तावखेत्त पगासखेत्त च

२४ प -ता केवइय खेत्त चंदिम-सूरिया ओभासंति, उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति ? आहिएत्ति वएज्जा,

उ तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिम-सूरिया ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति, पगासेंति[1] एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता अद्धचउत्थे दीवे, अद्धचउत्थे समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता सत्तदीवे, सत्तसमुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति, जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता दसदीवे, दससमुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता बारसदीवे, बारससमुद्दे चंदिम-सूरया ओभासेंति, जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

७ ता बायालीसं दीवे, बायालीसं समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति एगे एवमाहंसु,

---

१ अवभासयन्ति, तत्रावभासो ज्ञानस्यापि व्यवह्रियते अतस्तद्व्यवच्छेदायमाह-उद्योतयन्ति, स चोद्योतो यद्यपि लोके भेदेन प्रसिद्धो यथा सूर्यगत आतप इति चन्द्रगत प्रकाश इति तथाप्यातपशब्दश्चन्द्रप्रभायामपि वर्तते, यदुक्तम् 'चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना, तथा चन्द्रगत स्मृत इति' प्रकाशशब्द सूर्यप्रभायामपि, एतच्च प्रायो बहूना सुप्रतीतं तत एतदर्थप्रतिपत्त्यर्थमुभयसाधारण भूयोऽप्येकार्थद्वयमाह तापयन्ति प्रकाशयन्ति आख्याता इति ।

—सस्कृतटीका

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता बावत्तरिं दीवे, बावत्तरिं समुद्दे चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु,

९ ता बायालीसं दीवसयं बायालीसं समुद्दसयं चंदिम-सूरिया ओभासंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु—

एगे पुण एवमाहंसु—

१० ता बावत्तरिं दीवसयं बावत्तरिं समुद्दसयं चंदिम-सूरिया ओभासेंति, जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

११ ता बायालीसं दीवसहस्सं, बायालीसं समुद्दसहस्सं चंदिम-सूरिया ओभासेंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

१२ ता बावत्तरं दीवसहस्सं, बावत्तरं समुद्दसहस्सं चंदिम-सूरिया ओभासंति जाव पगासेंति, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम—विक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते,

से णं एगाए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते सा णं जगई अट्ठ-जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता,

एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव,[1]

एवामेव सपुव्वावरे णं जंबुद्दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीति-मक्खायं,

जंबुद्दीवे णं दीवे पंच चक्कभागसंठिए ? आहिएत्ति वएज्जा,

प—ता कहं जंबुद्दीवे दीवे पंच चक्कभागसंठिए ? आहिए त्ति वएज्जा,

१ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के प्रथम वक्षस्कार सूत्रांक ४ से षष्ठ वक्षस्कार सूत्रांक १२५ पर्यन्त के सभी सूत्रों के पाठ यहाँ समझने की सूचना है।

उ—ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स तिण्णि पंच चक्कभागे ओभासेंति जाव पगासेंति, तं जहा—

ता एगे वि सूरिए एगं दिवड्ढं पंच चक्कभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एगं दिवड्ढं पंच चक्कभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ता जया णं एए दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स दोण्णि पंच चक्कभागे ओभासेंति जाव पगासेंति,

ता एगे वि सूरिए एगं पंच चक्कवालभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एगं पंच चक्कवालभागं ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।



चतुर्थ प्राभृत

सेयाते सठिई

प —ता कह ते सेम्राते[1] सठिई[2] आहितात्ति वदेज्जा ?

उ —तत्थ खलु इमा दुविहा सठिती पण्णत्ता, त जहा—

१ —चदिम-सूरियसठिती य ।

२ —तावक्खेत्तसठिती य ।

चदिम-सूरियसठिई

प —ता कह ते चदिम सूरियसठिती आहितात्ति वदेज्जा ?

उ —तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ ।

१ —तत्थेगे एवमाहसु—

ता समचउरससठिया चदिम सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

२ —एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचउरससठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

३ — एगे पुण एवमाहसु—

ता समचउक्कोणसठिया चदिम सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

४ —एगे पुण एवमाहसु —

ता विसमचउक्कोणसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

५ —एगे पुण एवमाहसु—

ता समचक्कवालसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

६ —एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचक्कवालसठिया चदिम-सूरियसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

---

१ वत्तिकार ने श्वेतता' की व्याख्या इस प्रकार की है—
इह श्वेतता चन्द्र-सूर्यविमानानामपि विद्यते तत्कृनतापक्षेत्रस्य च तत श्वेततायोगादुभयमपि श्वेतताशब्देनोच्यते ।

२ चन्द्र-सूर्य विमानो के सस्थान प्रपञ्च कहे गये हैं । अत चन्द्र-सूर्य विमानों की सस्थिति के सम्बन्ध में प्रश्नकर्ता के अभिप्राय का स्पष्टीकरण वत्तिकार ने इस प्रकार किया है —
'इह चन्द्र-सूर्यविमानाना सस्थानरूपा सस्थिति प्रागवाभिहिता तत इह चन्द्र-सूर्यविमान-सस्थितिश्चतुर्णामपि अवस्थानरूपा पृष्टा द्रष्टव्या ।'

७ —एगे पुण एवमाहसु—
ता चक्कद्धचक्कवालसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

८ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता छत्तागारसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

९ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता गेहसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१० —एगे पुण एवमाहंसु—
ता गेहावणसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

११ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता पासायसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१२ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता गोपुरसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१३ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता पेच्छाघरसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१४ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता वलभीसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१५ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता हम्मियतलसंठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

१६ —एगे पुण एवमाहंसु—
ता वालग्गपोतियासंठिया[1] चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

तत्थ जे ते एवमाहंसु—
ता समचउरंस-संठिया चंदिम-सूरियसंठिती पण्णत्ता,
एएणं णएणं णेयव्वं णो चेव णं इयरेहिं[2]।

---

१ वालाग्रपोतिकाशब्दो देशीशब्दत्वात्तडागमध्य व्यवस्थित क्रीडा-स्नान लघुप्रासादम। —सूर्य वृत्ति

२ परतीर्थिकों की इन सोलह प्रतिपत्तियों में से केवल एक प्रतिपत्ति सूत्रकार की मान्यतानुसार है—इस विषय में वृत्तिकार का कथन यह है—
'तत्थेत्यादि—तत्र तेषां षोडशानां परतीर्थिकानां मध्ये ये ते वादिन एवमाहु'—समचतुरस्रसंस्थिता चन्द्रसूर्यसंस्थिति प्रज्ञप्ता इति,
एतेन नयेन नेतव्यं एतन्नाभिप्रायेणास्मन्मतेऽपि चन्द्र-सूर्यसंस्थितिरवधार्येति भाव, तथाहि—'इह सर्वेऽपि कालविशेषा सुषमसुषमादयो युगमूला। (शेष अगले पृष्ठ पर)

सूरियस्स तावक्खेत्तसठिती

प —ता कह ते तावक्खेत्तसठिती ? आहिएत्ति वएज्जा ।

उ —तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, [redacted] जहा—तत्थ ण –

१ —एगे एवमाहसु—
ता गेहसठिता तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

२ —एगे पुण एवमाहसु—
गेहावणसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

३ —एगे पुण एवमाहसु—
पासायसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

४ –एगे पुण एवमाहसु—
गोपुरसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

५ —एगे पुण एवमाहसु—
पिच्छाघरसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

६ —एगे पुण एवमाहसु—
वलभीसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

७ —एगे पुण एवमाहसु—
हम्मियतलसठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

८ —एगे पुण एवमाहसु—
वालग्गपोतियासठिया तावक्खेत्तसठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।

युगस्य चादौ श्रावणे मास बहुलपक्षप्रतिपदि प्रातरुदयसमय एकसूर्यो दक्षिणपूर्वस्या दिशि वर्तते, तद्द्वितीयस्त्व-परोत्तरस्या,

चन्द्रमा अपि तत्समये एको दक्षिणापरस्या दिशि वर्तत, द्वितीय उत्तरपूर्वस्यामत एतेय युगस्यादौ चन्द्र सूर्या समचतुरस्रसस्थिता वर्तन्ते ।

यत्वत्र मण्डलकृत वपम्य यथा सूर्या सर्वाभ्यन्तरमण्डले वर्तते, चन्द्रमसौ सर्वबाह्ये इति तदल्पमितिकृत्वा न विवक्ष्यते ।

तदेव मत सकलकालविशेषाणा सुषमासुषमादिरूपाणामादिभूतस्य युगस्यादौ समचतुरस्रसस्थिता सूर्य-चन्द्रमसौ भवन्ति, तत्तस्तपा सस्थिति समचतुरस्रसस्थानेनोपवर्णिता, अन्यथा वा यथासम्प्रदाय समचतुरस्रसस्थिति परिभावनीयति ।

नो चेव ण इयरेहि ति—नो चैव नव इतरै —शेषैनयैश्चन्द्र-सूर्यसस्थितिर्गतिव्या

तेषा मिथ्यारूपत्वात् तदेवमुक्ता चन्द्र सूर्यसस्थिति ।

९ —एगे पुण एवमाहंसु—

जस्संठिए जंबुद्दीवे तस्संठिए तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१० —एगे पुण एवमाहंसु।

जस्संठिए भारहे वासे तस्संठिए तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

११ —एगे पुण एवामाहंसु—

उज्जाणसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१२ —एगे पुण एवमाहंसु—

निज्जाणसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१३ —एगे पुण एवमाहंसु—

एगओ णिसधसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१४ —एगे पुण एवमाहंसु—

दुहओ णिसधसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१५ —एगे पुण एवमाहंसु—

सेयणगसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१६ —एगे पुण एवमाहंसु—

सेयणगपट्ठसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वदामो—

ता उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिया तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता।

अंतो संकुचिया, बाहिं वित्थडा।

अंतो वट्टा, बाहिं पिधुला।

अंतो अंकमुहसंठिया,[1] बाहिं सत्थियमुहसंठिया।[2]

तावक्खेत्तसंठिइए दुवे बाहाओ

उभओ पासेण तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ[3] भवंति, पणयालीसं पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेण।

---

१ अन्तर्मेरुदिशि अंक पद्मासनोपविष्टस्योत्सङ्गरूप आसनबन्ध तस्य मुख अग्रभागोद्धवलयाकाररतस्येव संस्थितं संस्थानं यस्य सा।

२ तथा बहिर्लवणदिशि स्वस्तिकमुखसंस्थिता, स्वस्तिक सुप्रतीत तस्य मुखम् अग्रभाग तस्येवातिविस्तीर्णतया संस्थित-संस्थानं यस्या सा।

३ 'ये द्वे बाहे ते आयामेन-जम्बूद्वीपगतमायाममाश्रित्यावस्थिते भवत। सूरिय वत्ति

तीसे दुवे बाहाओ अणवट्ठिआओ[1] भवंति, त जहा—

१ —सव्वब्भतरिया चेव बाहा ।

२ —सव्वबाहिरिया चेव बाहा ।

प —तत्थ को हेउ त्ति ? वएज्जा ।

उ ता अयण्ण जंबुद्दीवे दीवे—

सव्वदीव समुद्दाण सव्वब्भतराए, सव्वखुड्डाए ।

वट्टे तेल्लापूय-सठाण-सठिए ।

वट्टे रहचक्कवाल सठाण सठिए ।

वट्टे पुक्खरकण्णिया-सठाण सठिए ।

वट्टे पडिपुण्णचंद-सठाण-सठिए ।

एग जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण ।

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे, अट्ठावीस च धणुसय, तेरस अगुलाइ अद्ध गुल च किंचि विसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णत्ते ।

तावक्खेत्तसठिइए परिक्खेवो

ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरति, तया ण उद्धीमुहकलबुआ पुप्फसठिया तावक्खेत्तसठिई आहिताति वएज्जा, अतो सकुडा, बाहिं वित्थडा, अतो वट्टा, बाहिं विपुला, अतो अकमुहसठिया, बाहिं सत्थियमुहसठिया, दुहओ पासेण तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया चेव बाहा ।

(क) तीसे ण सव्वब्भतरिया बाहा=मदरपव्वय तेण णव जोयणसहस्साइ चत्तारि य छलसीए जोयणसए णव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प —ता से ण परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ —ता जे ण मदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे त परिक्खेव, तिहिं गुणित्ता, दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे=एस ण परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।

---

१ 'द्वे च बाहे अनवस्थिते भवत
तद्यथा सर्वाभ्यन्तरा सर्वबाह्या च ।
(क) तत्र या मेरुसमीपे विष्कम्भमधिकृत्य बाहा सा सर्वाभ्यन्तरा ।
(ख) या तु लवणदिशि जम्बूद्वीपपर्यन्ते विष्कम्भमधिकृत्य बाहा सा सर्वबाह्यबाहा ।
(ग) आयामश्च-दक्षिणायततया प्रतिपत्तव्यो,
विष्कम्भ पूर्वापरायततया ।

(ख) तीसे ण सव्वबाहिरिया बाहा=लवणसमुद्द तेण, चउणउइ जोयणसहस्साइ, अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए, चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण, आहिए त्ति वएज्जा ।[1]

प —ता से ण परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ – ता जे ण जबुद्दीव-दीवस्स परिक्खेवे त परिक्खेव तिहि गुणित्ता, दसहि छेत्ता, दसहि भागे हीरमाणे=एस ण परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।[2]

तावखेत्तस्स अधकारखेत्तस्स य आयामाईण परूवण

प ता तीसे ण तावक्खेत्ते केवइय आयामेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता अट्ठत्तरि जोयणसहस्साइ, तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे च आयामेण, आहिए त्ति वएज्जा ।

प तया ण किसठिया अधकारसठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ उद्धीमुह-कलबुआपुप्फसठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा ।

तीसे ण सव्वब्भतरिया बाहा मदरपव्वयतेण छज्जोयणसहस्साइ तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेण, आहिय त्ति वएज्जा ।

प ता तीसे ण परिक्खेवविसेसे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ —ता जे ण मदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे ण त परिक्खेव दोहि गुणेत्ता, दसहि छित्ता दसहि भागे हीरमाणे, एस ण परिक्खेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।

तीसे ण सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्द तेण तेवट्ठि जोयणसहस्साइ दोण्णि य पणयाले जोयसए छच्च दस भागे जोयणस्स परिक्खेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प —ता से ण परिक्खेवविसेसे कओ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण जबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, त परिक्खेव दोहि गुणेत्ता दसहि छेत्ता दसहि भागेहि हीरमाणे एस ण परिक्खेवविसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।

प —ता से ण अधकारे केवइय आयामेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ —ता अट्ठत्तरि जोयणसहस्साइ तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभाग च आयामेण, आहिए त्ति वएज्जा ।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति ।

---

१ मेरु की परिधि ३१,६२३ योजन की है, इसे तीन से गुणा करने पर ९४,८,७९ योजन हुए इन के दस का भाग देने पर ९ ८ ८६$\frac{9}{10}$ लब्ध होते हैं—यह सर्व आभ्यन्तर बाहा की परिधि है ।

२ जबूद्वीप की परिधि ३,१६,२२७ योजन तीन कोस २८ धनुष १३ अगुल तथा आधे अगुल से कुछ अधिक है ।
इसमे दस का भाग देने पर ९४ ८, ६८ योजन और एक योजन के दस भागो मे से चार भाग जितनी सर्व-बाह्य बाहा की परिधि विशेष है ।

जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

प –ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण किसठिया तावखेत्तसठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ –ता उद्धमुह-कलबुयापुप्फसठिया तावक्खेत्तसठिई आहिय त्ति वएज्जा, एव ज अब्भितर-मडले अधकारसठिईए पमाण त बाहिरमडले तावक्खेत्तसठिईए, ज र्ताह तावक्खेत्तसठिईए त बाहिर-मडले अधकारसठिईए भाणियव्व, जाव

तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

सूरियाण तावखेत्तपमाण-परूवण

प – ता जबुद्दीवे दीवे सूरिया केवइय खेत्त उड्ढ तवति, केवइय खेत्त अहे तवति, केवइय खेत्त तिरिय तवति ?

उ –ता जबुद्दीवे ण दीवे सूरिया एग जोयणसय उड्ढ तवति ।

अट्ठारस जोयणसयाइ अहे पतवन्ति ।

सीयालीस जोयणसहस्साइ दुन्नि य तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीस च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरिय तवति ।



पंचम प्राभृत

सूरियस्स लेस्सा पडिघायगा पव्वया

२६ ता कंसि णं सूरियस्स लेस्सा पडिहया ? आहिय त्ति वएज्जा ।

तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता मंदरंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता मेरु सि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता मणोरमंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता सुदंसणंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता सयंपभंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता गिरिरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

७ ता रयणुच्चयंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता सिलुच्चयंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु

९ ता लोयमज्झंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१० ता लोगनाभिंसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

११ ता अच्छसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१२ ता सूरियावत्तंसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१३ ता सूरियावरणसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१४ ता उत्तमसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१५ ता दिसादिसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१६ ता अवयससि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१७ ता धरणिखीलसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१८ ता धरणिसिंगसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१९ ता पव्वइदसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२० ता पव्वयरायसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

वयं पुण एवं वयामो,

जंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, से ता मंदरे वि पवुच्चइ जाव पव्वयराया वि पवुच्चइ,[1]

[क] ता जे णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति ते णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति,

[ख] अदिट्ठा वि णं पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति,

चरिमलेस्संतरगया वि पुग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति।



---

१ मन्दरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा गाहाओ—

१ मंदर २ मेरू ३ मणोरम ४ सुदंसण ५ सयंपभे य ६ गिरिराया।
७ रयणुच्चय ८ पियदंसण ९-१९, मज्झे लोगस्स, नाभी य ॥ १ ॥
११ अच्छे य १२ सूरियावत्ते १३ सूरियावरणे त्ति य।
१४ उत्तमे य १५ दिसादी य १६ वडेंसेइ य सोलस ॥ २ ॥

क—सम स १६, सु ३
ख—जंबू वक्ष ४, सु १०९

इन दोनों गाथाओं में 'मंदर पर्वत' के सोलह नाम गिनाये हैं यहाँ इनके अतिरिक्त चार यौगिक नाम और भी हैं।

मन्दर पर्वत के इन बीस पर्यायवाची नामों को अन्यान्य मान्यतावाले भिन्न भिन्न पर्वत मानते हैं। किन्तु सूर्यप्रज्ञप्ति के संकलनकर्ता ने समवायांग और जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के अनुसार मन्दर पर्वत के ये बीस पर्यायवाची नाम मानकर सभी अन्य मान्यताओं का समन्वय किया है।

छठा प्राभृत

सूरियस्स ओयसंठिई

प —ता कह ते ओयसंठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ —तत्थ खलु इमाओ पणवीस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता अणुसमयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु —

२ ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता अणुराइदियमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु —

४ ता अणुपक्खमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु —

५ ता अणुमासमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु —

६ ता अणुउउमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता अणुअयणमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

८ ता अणुसवच्छरमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

९ ता अणुजुगमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१० ता अणुवाससयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु —

११ ता अणुवाससहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१२ ता अणुवास सय-सहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१३ ता अणुपुव्वमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१४ ता अणुपुव्व-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१५ ता अणुपुव्वसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१६ ता अणुपुव्वसयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१७ ता अणुपलिओवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे, एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१८ ता अणुपलिओवमसयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

१९ ता अणुपलिओवमसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२० ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२१ ता अणुसागरोवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२२ ता अणुसागरोवम-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२३ ता अणुसागरोवम सहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२४ ता अणुसागरोवम सयसहस्समेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२५ ता अणुउस्सप्पिणि-ओसप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहंसु।[1]

वय पुण एव वयामो—

(क) ता तीस तीस मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिया भवइ तेण पर सूरियस्स ओया अणवट्ठिया भवइ।

(ख) छम्मासे सूरिए ओय णिव्वुड्ढेइ।
छम्मासे सूरिए ओय अभिवुड्ढेइ।

(ग) निक्खममाणे सूरिए देस णिव्वुड्ढेइ।
पविसमाणे सूरिए देस अभिवुड्ढेइ।

प—तत्थ को हेऊ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ—ता अय ण जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्व खुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विक्खभे ण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीस च धणुसय, तेरस य अगुलाइ अद्धगुल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवे ण पण्णत्ते।

१ ता जया ण सूरिए सव्वब्भंतर मडल उवसकमित्ता चारं चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

२ से निक्खममाणे सूरिए णवं सवच्छरं अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अब्भितराणंतरं मंडल उवसकमित्ता चार चरइ।

ता जया ण सूरिए अब्भितराणंतरं मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया णं एगे-ण राइदिएण एग भाग ओयाए दिवसखित्तस्स निव्वुड्ढित्ता रयणि खित्तस्स अभिवुड्ढित्ता चार चरइ, मडल अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमहुत्तेहिं ऊणे।

---

१ इन प्रतिपत्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि जैनागमों के अतिरिक्त अन्य दार्शनिक पुराणादि ग्रन्थों में भी औपमिककालवाचक 'पल्योपम-सागरोपम, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी आदि शब्दों का प्रयोग था। वर्तमान मे भी यदि पुराणादि ग्रन्थो में इन औपमिककाल वाचक शब्दों का कहीं प्रयोग हो तो अन्वेषणशील विद्वान् प्रयत्न करके प्रकाशित करें।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ-दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ग्रहिया ।

३ से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि ग्रहोरत्तंसि ग्रब्भितराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए ग्रब्भितराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ग्रोयाए दिवस खेत्तस्स निव्वुड्ढित्ता, रयणि-खेत्तस्स ग्रभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं ग्रट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं ग्रट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ग्रहिया ।

४ एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराग्रो मंडलाग्रो तयाणंतरं मंडलं संकममाणे संकममाणे एगमेगे मंडले, एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं एगमेगं भागं ग्रोयाए दिवस खेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे रयणि खेत्तस्स ग्रभिवड्ढेमाणे ग्रभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

५ ता जया णं सूरिए सव्वब्भतराग्रो मंडलाग्रो सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसिएणं राइंदियसएणं एगं तेसीयं भागसयं ग्रोयाए दिवस खेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता रयणि-खेत्तस्स ग्रभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं ग्रट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया ग्रट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

१ से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं ग्रयमाणे पढमंसि ग्रहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ग्रोयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस खेत्तस्स ग्रभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं ग्रट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया णं ग्रट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा ।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ग्रहिए ।

२ से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि ग्रहोरत्तंसि बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।

ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ग्रोयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस-खेत्तस्स ग्रभिवुड्ढेत्ता चारं चरइ, मंडलं ग्रट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया ण अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, चर्ऊहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा ।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चर्ऊहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए ।

३ एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे एगमेगे मडले एगमेगेण राइदिएण एगमेग भाग ओयाए रयणि-खेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे दिवस खेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भतर मडल उवस-कमित्ता चार चरइ ।

४ ता जया ण सूरिए सव्वबाहिराओ मडलाओ सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण सव्वबाहिर मडल पणिहाय एगेण तेसीएण राइदियसएण एग तेसीय भागसय ओयाए रयणिखेत्तस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस खेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चार चरइ, मडल अट्ठारसेहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता ।

तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



सप्तम प्राभृत

सूरियेण पगासिया पव्वया

प०—ता किं ते सूरियं वरइ ? आहिएत्ति वएज्जा ।

उ०—तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तं जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता मेरु णं पव्वए सूरियं वरइ एगे एवमाहंसु ।

३-१९ एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं तहेव जाव ।[1]

एगे पुण एवमाहंसु—

२० ता पव्वयरायं णं पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहंसु ।

वयं पुण एवं वदामो—

ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरइ, एवं पि पवुच्चइ तहेव जाव (१-२० सूरिय० पा० ५, सु० २६ को देखें) ।[2]

ता पव्वयरायं णं पव्वए सूरियं वरइ, एवं पि पवुच्चइ ।

(क) ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति, ते णं पुग्गला सूरियं वरयंति ।

(ख) अदिट्ठा वि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ।

(ग) चरिमलेसंतरगया वि णं पोग्गला सूरियं वरयंति ।



---

१ 'सूरियस्स लेस्सा पडिहयगा पव्वया' इस शीर्षक के अन्तर्गत सूर्य० प्रा० ५, सू० २६ में बीस प्रतिपत्तियों के अनुसार सूर्य की लेश्या को प्रतिहत करने वाले बीस पर्वतों के नाम गिनाये हैं । यहां भी उन्हीं के अनुसार मूल-पाठ में सभी नामों को ग्रहण करना चाहिए ।

२ ऊपर के टिप्पण में सूचित शीर्षक के अन्तर्गत सूर्य० प्रा० ५, सू० २६ के अनुसार सूर्यप्रज्ञप्ति के सम्पादकों ने यहां भी मंदर पर्वत के बीस नामों को पर्यायवाची मानकर समन्वय कर लिया है ।

अष्टम प्राभृत

सूरस्स उदय-सठिई

प —ता कहं ते उदयसठिई आहिया ? ति वएज्जा ।

उ —तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा —

१ तत्थेगे एवमाहंसु—

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ग) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ङ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(च) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ते दिवसे, भवइ ।

(छ) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ज) तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण सया पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अवट्ठिया ण तत्थ राइंदिया पण्णत्ता, समणाउसो ! एगे एवमाहंसु ।

२ एगे पुण एवमाहंसु—

(क) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(ख) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(ग) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(ङ) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

(च) ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ।

[छ] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढेऽवि बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ।

[ज] तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमे ण णो सया पण्णरस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, णो सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अणवट्ठिया ण तत्थ राइदिया पण्णत्ता, समणाउसो! एगे एवमाहसु।

३ एगे पुण एवमाहसु—

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारस मुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ग] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[घ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारस मुहुत्ता राई भवइ।

[ङ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[च] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[छ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ज] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[झ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ञ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे ण णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ।

वोच्छिण्णा ण तत्थ राइदिया पण्णत्ता, समणाउसो! एगे एवमाहसु।

वय पुण एव वयामो

ता जबुद्दीवे दीवे सूरिया।

उदीण पाईणमुग्गच्छति, पाईण-दाहिणमागच्छति।

पाईण दाहिणमुग्गच्छति, दाहिण-पडीणमागच्छति।

दाहिण-पडीणमुग्गच्छति, पडीण उदीणमागच्छति।

पडीण-उदीणमुग्गच्छति, उदीण-पाईणमागच्छति।[१]

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चित्थिमे ण राई भवइ।

[ख] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि दिवसे भवइ।

जया ण पच्चत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्यमस्स उत्तरदाहिणे ण राई भवइ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवई, तया ण उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण जंबद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमे ण जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

---

१ प जम्बुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिआ? उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छति?
पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छति?
दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छति?
पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छति?

उ हता गोयमा! जहा पचमसए पढमे उद्देसे जाव णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए ण तत्थ काले प समणाउसो! —भग स ५, उ १ सु २

(ख) जबु वक्ख ७, सु १५०

[ग] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[घ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ङ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारस मुहुत्ता राई भवइ।

[च] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[छ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ज] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[झ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ञ] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

[ट] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ।

तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे ण णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ।

वोच्छिण्णा ण तत्थ राइदिया पण्णत्ता, समणाउसो! एगे एवमाहसु।

वय पुण एव वयामो

ता जबुद्दीवे दीवे सूरिया।

उवीण-पाईणमुग्गच्छति, पाईण-दाहिणमागच्छति।

पाईण-दाहिणमुग्गच्छति, दाहिण पडीणमागच्छति।

दाहिण पडीणमुग्गच्छति, पडीण उदीणमागच्छति।

पडीण उदीणमुग्गच्छति, उदीण पाईणमागच्छति।[1]

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चित्थिमे ण राई भवइ।

[ख] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि दिवसे भवइ।

जया ण पच्चत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे ण राई भवइ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवई, तया ण उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

जया ण उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण जंबद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमे ण जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ।

---

१ प जम्बुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिया? उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छति?
पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छति?
दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छति?
पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छति?

उ हता गोयमा! जहा पचमसए पढम उद्देसे जाव णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए ण तत्थ काले प समणाउसो! —भग स ५, उ १ सु ५

(ख) जबु वक्ख ७, सु १२०

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमेऽवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण पच्चत्थिमे ण उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे ण जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एवं एएणं गमेणं णेयव्वं

अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-दुवालस-मुहुत्ता राई ।
सत्तरस-मुहुत्ते दिवसे—
तेरस-मुहुत्ता राई ।
सत्तरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-तेरस मुहुत्ता राई ।
सोलस-मुहुत्ते दिवसे—
चोद्दस-मुहुत्ता राई ।
सोलस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-चोद्दस मुहुत्ता राई ।
पण्णरस मुहुत्ते दिवसे—
पण्णरस मुहुत्ता राई ।
पण्णरस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-पण्णरस-मुहुत्ता राई ।
चोद्दस-मुहुत्ते दिवसे—
सोलस-मुहुत्ता राई ।
चोद्दस मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग-सोलस मुहुत्ता राई ।
तेरस मुहुत्ते दिवसे—
सत्तरस-मुहुत्ता राई ।
तेरस मुहुत्ताणंतरे दिवसे—
साइरेग सत्तरस-मुहुत्ता राई ।
जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ—
उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ एवं भाणियव्वं ।[1]

१ भग. स. ५, उ. १ सु. ४-१३

वासाउउ

[क] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमे णं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

[ख] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं पच्चत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणंतरपच्छाकय-काल-समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवन्ने भवइ।

जहा समओ तहा १ आवलिया, २ आणापाणू, ३ थेवे, ४ लवे, ५ मुहुत्ते, ६ अहोरत्ते, ७ पक्खे, ८ मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा वासाणं तहा भाणियव्वा।[1]

हेमंत उउ

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमे णं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं पच्चत्थिमे णं हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणंतर पच्छाकड-काल-समयंसि हेमंताणं पढमे समए[2] पडिवज्जइ।

जहा समओ तहा १ आवलिया, २ आणापाणू, ३ थोवे, ४ लवे, ५ मुहुत्ते, ६ अहोरत्ते, ७ पक्खे, ८ मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा हेमंताणं तहा भाणियव्वा।

---

१ ऊपर सूत्र में 'पढमे समए' आठ स्थानों पर है उन स्थानों में नीचे लिखे आलापक कहें, और प्रत्येक आलापक के दो दो सूत्र ऊपर के समान कहें—

१ पढमा आवलिया २ पढमो आणापाणू ३ पढमे थोवे, ४ पढमे लवे, ५ पढमे मुहुत्ते, ६ पढमे अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८ पढमे मासे।

२ ऊपर सूत्र में पढमे समए' आठ स्थानों पर हैं उन स्थानों पर नीचे लिखे आलापक कहें, और प्रत्येक आलापक के ऊपर के समान दो दो सूत्र कहें—

१ पढमा आवलिया, २ पढमो आणापाणू, ३ पढमे थोवे ४ पढमे लवे, ५ पढमे मुहुत्ते, ६ पढमे अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८ पढमे मासे।

गिम्ह उउ

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ,

जया णं पच्चत्थिमेणं गिम्हाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं अणंतर-पच्छाकड-काल-समयंसि गिम्हाण पढमे समए[1] पडिवज्जइ।

जहा समओ तहा १ आवलिया, २ आणापाणू, ३ थोवे, ४ लवे, ५ मुहुत्ते, ६ अहोरत्ते, ७ पक्खे, ८ मासे, एए अट्ठ आलावगा, जहा गिम्हाण तहा भाणियव्वा।

अयणाइ

(क) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं दाहिणड्ढेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं अणंतर-पुरक्खड-काल-समयंसि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

(ख) ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमेऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया णं पच्चत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं पुरत्थिमेणऽवि पढमे अयणे पडिवज्जइ।

जया णं पच्चत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं अणंतर-पच्छाकड-काल-समयंसि पढमे अयणे[2] पडिवज्जइ।

जहा पढमस्स अयणस्स आलावगो तहा दोच्चस्स अयणस्स भाणियव्वो।

जहा अयणे तहा संवच्छरे, जुगे, वाससए, वाससहस्से, वाससयसहस्से, पुव्वंगे, पुव्वे, जाव सीसपहेलिया पलिओवमे सागरोवमे य।

१ ऊपर सूत्र में 'पढमे समए' आठ स्थानों पर है उन स्थानों पर नीचे लिखे आलापक कहें और इनके आलापक भी ऊपर के समान दो दो सूत्र कहें।
१ पढमा आवलिया २ पढमो आणापाणू ३ पढमे थोवे ४, पढमे लवे, ५ पढमे मुहुत्ते, ६ पढमे अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८ पढमे मासे।

२ जहाँ जहाँ 'पढमे अयणे' है वहाँ वहाँ 'दोच्चे अयणे' कहें।

उस्सप्पिणी

ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि उस्सप्पिणी पडिवज्जइ ।

जया णं उत्तरड्ढे उस्सप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं णेवत्थि उस्सप्पिणी णेवत्थि ओसप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

एवं ओसप्पिणी ।[1]

लवणसमुद्दो

ता जया णं लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं लवणे समुद्दे उत्तररड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया णं लवणे समुद्दे उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं लवणे समुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ।

सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी ।[2]

धायइखंडो

ता धायइखंडे णं दीवे सूरिया—

उदीण पाईणमुग्गच्छंति, पाईण दाहिणमागच्छंति,

---

१ (क) ऊपर जहां जहां उस्सप्पिणी" है वहां वहां "ओसप्पिणी" कहें ।

२ "जच्चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वता भणिता, सच्चेव सव्वा अपरिसेसिता लवणसमुद्दस्स वि भाणितव्वा" ।
नवरं—इमेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भाणितव्वा ।

प (क) लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया—
उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छंति ?
(ख) पादीण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पादीणमागच्छंति ?
(ग) दाहिण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-उदीणमागच्छंति ?
(घ) पादीण उदीणमुग्गच्छ उदीण-पादीणमागच्छंति ?

उ (क-घ) हंता गोयमा ! लवणे णं समुद्दे सूरिया—
उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छंति जाव
पादीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण पादीणमागच्छंति ।
एतेणं अभिलावेण णेतव्वं—जाव

प (क) जदा णं भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति
तदा णं उत्तरड्ढे वि पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति ?
(ख) जदा णं उत्तरड्ढे पढमा उस्सप्पिणी पडिवज्जति, तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी ? अवट्ठिते णं तत्थ काले पण्णत्ते ?

उ हंता गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो ! —भग स ५ उ १, सु २२

जाव पडीण-उदीणमुग्गच्छंति, उदीण-पाईणमागच्छंति,

ता जया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं राई भवति,

सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी,

कालोए णं समुद्दे जहा लवणे समुद्दे ।

अब्भंतरपुक्खरद्धो

ता अब्भंतर-पुक्खरद्धे णं दीवे सूरिया —

उदीण-पाईणमुग्गच्छंति, पाईण-दाहिणमागच्छंति,

जाव पडीण-उदीणमुग्गच्छंति, उदीण-पाईणमागच्छंति,

ता जया णं अब्भंतर-पुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेऽवि दिवसे भवइ,

जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ, तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम पच्चत्थिमे णं राई भवइ,

सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी ।



नवम प्राभृत

पोरिसिच्छाय-निव्वत्तण

३० प ता कइकट्ठ ते सूरिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता जे ण पोग्गला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोग्गला सतप्पति, ते ण पोग्गला सतप्पमाणा तदणतराइ बाहिराइ पोग्गलाइ सतावेंतीति,

एस ण से समिए तावक्खेत्ते एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता जे ण पोग्गला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोग्गला नो सतप्पति, ते ण पोग्गला असतप्पमाणा तदणराइ बाहिराइ पोग्गलाइ णो सतावेंतीति,

एस ण से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता जे ण पोग्गला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोग्गला अत्थेगइया सतप्पति, अत्थेगइया नो सतप्पति,

तत्थ अत्थेगइया सतप्पमाणा तदणतराइ बाहिराइ पोग्गलाइ अत्थेगयाइ सतावेंति, अत्थेगयाइ नो सतावेंतीति,

एस ण से समिए तावक्खेत्ते, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—

ता जाओ इमाओ चदिम-सूरियाण देवाण विमाणेहितो लेसाओ बहित्ता उच्छूढा अभिणिसट्ठाओ पतावेंति,

एयासि ण लेसाण अतरेसु अण्णयरीओ छिण्णलेसाओ समुच्छति, तए ण ताओ छिण्णलेस्साओ समुच्छियाओ समाणीओ तदणतराइ बाहिराइ पोग्गलाइ सतावेंतीति,

एस ण से समिए तावक्खेत्ते ।

पोरिसिच्छाय-निवत्तण—

३१ प ता कइकट्ठे ते सूरिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमाओ पणवीस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ, आहिए त्ति वएज्जा,

जाओ चेव ओयसंठिईए पडिवत्तीओ एएणं अभिलावेणं णेयव्वाओ, जाव[1] [३-२४]

एगे पुण एवमाहंसु—

२५ ता अणुउस्सप्पिणि-ओसप्पिणिमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो—

ता सूरियस्स णं—

१ उच्चत्तं च लेसं च पडुच्च छायुद्देसे,

२ उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्देसे,

३ लेसं च छायं च पडुच्च उच्चत्तोद्देसे

प [2]

उ तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

(क) १ ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

(क) २ ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दु-पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ,

---

१ सूरिए पा ६ सु २७

२ सूर्यप्रज्ञप्ति की संकलनशैली के अनुसार यहाँ प्रश्नसूत्र होना चाहिए था, किन्तु यहाँ प्रश्नसूत्र था ए सी किसी प्रति में नहीं है अतः यहाँ का प्रश्नसूत्र विच्छिन्न हो गया है, ऐसा मान लेना ही उचित है।
सूर्यप्रज्ञप्ति के टीकाकार भी यहाँ प्रश्न-सूत्र के होने न होने के सम्बन्ध में सर्वथा मौन हैं अतः यहाँ प्रश्न-सूत्र का स्थान रिक्त रखा है।
यदि कहीं किसी प्रति में प्रश्न सूत्र हो तो स्वाध्यायशील आगमज्ञ सूचित करने की कृपा करें, जिससे अगले संस्करण में परिवर्धन किया जा सके।

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

(क) १ ता अत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए चउ-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ,

(ख) अत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए दु-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु,

(क) ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालस मुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि सूरिए चउ-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अत्थमण- मुहुत्तसि य,

लेस अभिवड्ढेमाणे नो चेव ण निव्वुड्ढेमाणे ।

[ख] ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तसि च ण दिवससि सूरिए दु-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अत्थमणमुहुत्तसि य,

लेस अभिवड्ढेमाणे नो चेव ण निव्वड्ढेमाणे ।

तत्थ ण जे ते एवमाहंसु—

२ ता अत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए दु पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ,

अत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, ते एवमाहंसु,

[क] ता जया ण सूरिए सव्वब्भतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसिए अट्ठारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ,

तसि च ण दिवससि सूरिए दु-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अत्थमण-मुहुत्तसि य,

लेस अभिवड्ढेमाणे, नो चेव ण निव्वुड्ढेमाणे,

[ख] ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारस मुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तसि च ण दिवससि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अत्थमण-मुहुत्तसि य,

नो चेव ण लेस अभिवड्ढेमाणे वा, निव्वुड्ढेमाणे वा ।[1]

---

१ इसके अनन्तर यहाँ स्वमतसूचक 'वय पुण एव वयामो' यह वाक्य नहीं है और न स्वमत का कथन ही है।
'तदेव परतीर्थिक प्रतिपत्तिद्वय श्रुत्वा भगवान् गौतम
स्वमत पृच्छति, ता कहइ कमित्यादि' —सूर्य टीका
टीकाकार का यह कथन सूर्यप्रज्ञप्ति की कथनशैली में अनुरूप नहीं है—क्योंकि प्रतिपत्तियों के कथन के अनन्तर 'वयं पुण एव वयामो' इस वाक्य से ही सर्वत्र स्वमत का प्रतिपादन किया गया है।

प ता कइकट्ठ ते सूरिए पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ तत्थ इमाओ छण्णउइ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए एगपोरिसीय छाय निव्वत्तेइ,[1] एगे एवमाहसु

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए दु पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ, एगे एवमाहसु,

एव एएण अभिलावेण णेयव्व, जाव (३-९५)

एगे पुण एवमाहसु—

९६—ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ, एगे एवमाहसु,

तत्थ जे ते एवमाहसु—

१ ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए एग-पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहसु,

ता सूरियस्स ण सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहोओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहि लेसाहि ताडिज्जमाणीहि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइय सूरिए उड्ढ उच्चत्तेण, एवइयाए एगाए अद्धाए, एगेण छायाणुमाणप्पमाणेण उमाए, तत्थ से सूरिए एगपोरिसीय छाय निव्वत्तेइ त्ति,

तत्थ जे ते एवमाहसु—

२ ता अत्थि ण से देसे, जसि ण देससि सूरिए दु-पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहसु,

ता सूरियस्स ण सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहोओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहि लेसाहि ताडिज्जमाणीहि, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइय सूरिए उड्ढ उच्चत्तेण, एवइयाइ दोहि अद्धाहि दोहि छायाणुमाणप्पमाणेहि उमाए, एत्थ ण से सूरिए दुपोरिसीय छाय निव्वत्तेइ त्ति,

३-९५—एव एएण अभिलावेण णेयव्व, जाव

तत्थ जे ते एवमाहसु—

९६—'ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ त्ति' ते एवमाहसु,

---

१ तत्र-यथा गन्धवर्त्ते परतीर्थिकानां मध्ये, एके एवमाहुः
'ता' इति पूर्ववत् अस्ति स देशो, यस्मिन् देशे सूर्य आगत सन् एकपौरुषी छायामुत्पादयति। (पुरुषप्रमाणं शङ्कुप्रमाणं सर्वस्यापि प्रकाश्यवस्तुन इव प्रमाणां) छायां निर्वर्तयति। —सूर्य टीका

ता सूरियस्स ण सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइय सूरिए उड्ढे उच्चत्तेण, एवइयाइ छण्णउईए छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए, एत्थ ण से सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ त्ति,

अय पुण एव वयामो—

ता साइरेग-अउणट्ठि-पोरिसीण सूरिए पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ त्ति ।

पोरिसिच्छाय-प्पमाण

प ता अवड्ढ-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता ति-भागे गए वा सेसे वा ।

प ता अउणसट्ठिपोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता बावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा ।

प ता पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता चउब्भागे गए वा सेसे वा,[1]

प ता दिवड्ढ-पोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता पचभागे गए वा, सेसे वा ।

प ता वि पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता छब्भागगए वा, सेसे वा ।

प ता अड्ढाइज्ज-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता सत्तभागगए वा, सेसे वा ।

एय अवड्ढपोरिसि छोढु छोढु पुच्छा,[2]

दिवसभाग छोढु छोढु वागरण[3] जाव

---

१ पौरुषी की परिभाषा—

"पुरिस त्ति, संकु, पुरिस-सरीर वा, तता पुरिसे निप्फन्ना पोरिसी, एव सव्वस्स वत्थुणो यन्न स्वप्रमाणा छाया भवति, तदा हवइ,

एय पोरिसि-प्रमाण उत्तरायणस्स अंते, दक्खिणायणस्स आईए इक्क दिण भवइ, अतो पर अद्ध-एगसट्ठिभागा अगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढति उत्तरायणे हसति, एव मडले मडले अन्ना पोरिसी '

'यह पौरुषी की परिभाषा सूर्य-प्रज्ञप्ति की टीका में नन्दीचूर्णि से उद्धत है । चूर्णि की भाषा सस्कृत मिश्रित प्राकृत होती है, अत ऊपर अंकित चूर्णि-पाठ अशुद्ध नहीं है ।

२ एवमित्यादि-एवमुक्तेन प्रकारेण 'अर्द्धपौरुषी' अर्द्धपुरुषप्रमाणा छाया क्षिप्त्वा, क्षिप्त्वा पृच्छा पृच्छासूत्र द्रष्टव्य । —सूर्य टीका

३ "दिवसभाग ' ति, पूर्व-पूर्वसूत्रापेक्षया एकमधिक दिवसभाग क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा व्याकरण, उत्तरसूत्र ज्ञातव्यम् । —सूर्य टीका

प ता कइकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं निव्वत्तेइ ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ तत्थ इमाओ छण्णउइ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए एगपोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ,[1] एगे एवमाहंसु

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए दु पोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु

एव एएण अभिलावेण णेयव्व, जाव (३-९५)

एगे पुण एवमाहंसु—

९६—ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ, एगे एवमाहंसु,

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

१ ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए एग-पोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहंसु,

ता सूरियस्स ण सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहीओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवइयाए एगाए अद्धाए, एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेणं उमाए, तत्थ से सूरिए एगपोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति,

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

२ ता अत्थि ण से देसे, जसि ण देससि सूरिए दु-पोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहंसु,

ता सूरियस्स ण सव्वहेट्ठिमाओ सूर-प्पडिहीओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइयं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं, एवइयाइ दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए, एत्थ ण से सूरिए दुपोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ त्ति,

३ ९५—एव एएण अभिलावेण णेयव्व, जाव

तत्थ जे ते एवमाहंसु—

९६—'ता अत्थि ण से देसे जसि ण देससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीयं छाय निव्वत्तेइ त्ति' ते एवमाहंसु,

---

१ तत्र-तथा षण्णवतेः प्रतिपत्तीनां मध्ये एके एवमाहुः
'ता इति पूर्ववत् अस्ति स देशो, यस्मिन् देशे सूर्य आगत सन् एकपौरुषी तत्पुरुषप्रमाणां (पुरुषग्रहणमुपलक्षणं सर्वेषामपि प्रकाश्यवस्तुनां स्व प्रमाणां) छायां निर्वर्तयति। —सूर्य टीका

ता सूरियस्स ण सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहित्ता अभिणिसट्ठाहि लेसाहि ताडिज्जमाणीहि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइय सूरिए उड्ढं उच्चत्तेण, एवइयाइ छण्णउईए छायाणुमाणप्पमाणेहि उमाए, एत्थ ण से सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ त्ति,

वय पुण एव वयामो—

ता साइरेग-अउणट्ठि-पोरिसीण सूरिए पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ त्ति ।

पोरिसिच्छाय-प्पमाण

प ता अवड्ढ-पोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता ति-भागे गए वा सेसे वा ।

प ता अउणसट्ठिपोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता बावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा ।

प ता पोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता चउब्भागे गए वा सेसे वा,[1]

प ता दिवड्ढ-पोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता पचभागे गए वा, सेसे वा ।

प ता बि-पोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता छब्भागगए वा, सेसे वा ।

प ता अड्ढाइज्ज-पोरिसी ण छाया दिवसस्स कि गए वा सेसे वा ?

उ ता सत्तभागगए वा, सेसे वा ।

एव अवड्ढपोरिसि छोढु छोढु पुच्छा,[2]

दिवसभाग छोढु छोढु वागरण[3] जाव

---

१ पौरुषी की परिभाषा—

"पुरिस त्ति, सकु पुरिस-सरीर वा ततो पुरिसे निप्फन्ना पोरिसी, एव सव्वस्स वत्थुणो यदा स्वप्रमाणा छाया भवति, तदा हवइ,

एय पोरिसि-प्रमाण उत्तरायणस्स अते, दक्खिणायणस्स आईए इक्क दिण भवइ, अतो पर अद्ध-एगसट्ठिभागा अगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढति, उत्तरायणे हस्सति, एव मडले मडले अन्ना पोरिसी

'यह पौरुषी की परिभाषा सूय-प्रज्ञप्ति की टीका म नदिचूणि से उद्धत है ।' चूर्णि की भाषा सस्कृत मिश्रित प्राकृत होती है, अत ऊपर अकित चूर्णि-पाठ अशुद्ध नही है ।

२ एवमित्यादि-एवमुक्तेन प्रकारेण 'अद्धपौरुषी' अद्धपुरुषप्रमाणा छाया क्षिप्त्वा, क्षिप्त्वा पृच्छा पृच्छासूत्र द्रष्टव्य ।
—सूय टीका

३ 'दिवसभाग'' ति, पूर्व-पूर्वसूत्रापेक्षया एकैकमधिक दिवसभाग क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा व्याकरण, उत्तरसूत्र वाच्यम ।
—सूय टीका

प ता अउणसट्ठि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता एगूणवीसं-सय भागे गए वा, सेसे वा।

प ता अउणसट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता बावीसंसहस्सभागे गए वा सेसे वा।

प ता साइरेग अउणसट्ठि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता नत्थि किंचि गए वा, सेसे वा।[1]

तत्थ खलु इमा पणवीसविहा छाया पण्णत्ता, तंजहा—

१ खंभ-छाया २ रज्जु छाया ३ पागार-छाया ४ पासाय-छाया ५ उग्गम छाया ६ उच्चत्त छाया ७ अणुलोम-छाया ८ पडिलोम-छाया ९ आरभिया छाया १० उवहया-छाया ११ समा छाया १२ पडिहया-छाया १३ खील छाया १४ पक्ख-छाया १५ पुरओउदया छाया १६ पुरिम कंठ भागुवगया-छाया १७ पच्छिम-कंठ-भागुवगया छाया १८ छायाणुवाइणी छाया १९ किट्ठाणुवाइणी-छाया २० छाय-छाया २१ विकप्प छाया २२ वेहास छाया २३ कड छाया २४ गोल छाया २५ पिट्ठओदग्गा-छाया।

१ यहाँ अंकित प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई संक्षिप्त वाचना की सूचनानुसार संशोधित हैं। सूर्यप्रज्ञप्ति की '१ ला स। २ ला द। ३ प सु। ४ हू स' इन चारों प्रतियों में दिए गये प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई संक्षिप्त वाचना की सूचना से कितने विपरीत हैं? यह निर्णय पाठक स्वयं करें।

प 'ता अउणसट्ठि पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता एगूणवीससयभागे गए वा, सेसे वा।

प ता अउणसट्ठि पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता बावीस-सहस्स भागे गए वा सेसे वा।

प ता साइरेग अउणसट्ठि-पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गए वा, सेसे वा ?

उ ता नत्थि किंचि गए वा, सेसे वा।

(क) यहाँ इन प्रश्नोत्तरों में व्यतिक्रम हो गया प्रतीत होता है। सर्वप्रथम साढे गुनसठ पौरुषी छाया का प्रश्नोत्तर है। द्वितीय प्रश्नोत्तर गुनसठ पौरुषी छाया का है। तृतीय प्रश्नोत्तर कुछ अधिक गुनसठ पौरुषी छाया का है।

(ख) यहाँ प्रश्नों के अनुरूप उत्तर भी नहीं हैं। प्रथम प्रश्नोत्तर में—'साढे गुनसठ पौरुषी छाया, एक सौ उन्नीस दिवस भाग में निष्पन्न होती है' ऐसा माना है किन्तु संक्षिप्तवाचना पाठ के सूचनानुसार एक सौ बीस दिवस भाग में निष्पन्न होती है।

द्वितीय प्रश्नोत्तर में—गुनसठ पौरुषी छाया की निष्पत्ति बावीस हजार दिवस भाग से होती है—ऐसा माना है किन्तु यह मानना सर्वथा असंगत है क्योंकि संक्षिप्त वाचना के सूचनापाठ की टीका में एक एक दिवस भाग बढ़ाने का ही सूचन है।

तृतीय प्रश्नोत्तर में—प्रश्न ही असंगत है, क्योंकि संक्षिप्त वाचना के सूचनापाठ में साढे पौरुषी छाया से अधिक का प्रश्न हो तो यहाँ कहा गया उत्तरसूत्र यथार्थ है।

तत्थ ण गोल-छाया अट्ठविहा पण्णत्ता, त जहा—

१ गोल-छाया २ अवड्ढ-गोल-छाया ३ गाढ गोल-छाया ४ अवड्ढ गाढ-गोल छाया ५ गोलवलि-छाया ६ अवड्ढ-गोलावलि छाया ७ गोलपु ज छाया ८ अवड्ढ गोल-पु ज छाया ।[1]



१ प्रस्तुत सूत्र में छाया क पच्चीस प्रकार तथा गोल छाया के आठ प्रकार का कथन है। 'तत्येत्यादि, तत्र = तासा पर्चविशति-छायाना मध्ये खल्विय गोल-छाया अष्टविधा प्रज्ञप्ता।

सूर्य-प्रज्ञप्ति की टीका के इस कथन से प्रतीत होता है कि छाया के पच्चीस प्रकारों म 'गोल-छाया' का नाम था और उसके आठ प्रकार भिन्न थे, किन्तु सूयप्रज्ञप्ति की '१ आ स । २ आ स । ३ म सु, ।' इन तीन प्रतियो मे छाया के केवल सत्तरह नाम हैं और गोल छाया के आठ नाम हैं। इस प्रकार पच्चीस पूर नाम लिय गये हैं। सत्तरह नामा में गोल-छाया का नाम नही है, फिर भी 'तत्येत्यादि' पाठ से सगति करके पच्चीस नाम पूरे मानना आश्चर्यजनक है।

एक 'ह प्र' प्रति म छाया के पच्चीस नाम तथा गोल-छाया के आठ नाम हैं, जो मूल पाठ के अनुसार हैं।

दशम प्राभृत

[प्रथम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं आवलिया-णिवायजोगो य

३२ प. ता कहं ते जोगे ति वत्थुस्स आवलिया णिवाए ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ. तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, महादिया अस्सेस-पज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, धणिट्ठादिया सवणपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, अस्सिणी-आदिया रेवईपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, भरणीआदिया अस्सिणीपज्जवसाणा पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वयामो—

ता सव्वे वि णं णक्खत्ता, अभिई आदिया, उत्तरासाढा पज्जवसाणा पण्णत्ता, तंजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा।[1]



१ जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति। —सम २७ सु २

दशम प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताण चंदेण जोगकालो

३३ प ता कह ते मुहुत्तग्गे आहिए ? ति वएज्जा,

उ ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

[क] अत्थि णक्खत्ते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोय जोएइ ।

[ख] अत्थि णक्खत्ता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ।

[ग] अत्थि णक्खत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ।

[घ] अत्थि णक्खत्ता जे ण पणयालीसे मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ।

[क] प ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[ख] कयरे णक्खत्ता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[ग] कयरे णक्खत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[घ] कयरे णक्खत्ता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[क] उ ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ते, जे ण णव मुहुत्ते, सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोय जोएति, से ण एगे, अभीयी ।[1]

[ख] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ता ण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति, ते ण छ, त जहा—
१ सतभिसया, २ भरणी, ३ अद्दा, ४ अस्सेसा, ५ साति, ६ जेट्ठा ।

[ग] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति, ते ण पण्णरस त जहा—
१ सवणो, २ धणिट्ठा, ३ पुव्वाभद्दवया, ४ रेवई, ५ अस्सिणी, ६ कत्तिया, ७ मग्गसिरा, ८ पुस्सो, ९ महा, १० पुव्वाफग्गुणी, ११ हत्थो, १२ चित्ता, १३ अणुराहा, १४ मूलो, १५ पुव्वासाढा ।

[घ] ता एएसि ण अट्ठावीसाए, णक्खत्ताण,

---

१ अभिजिणक्खत्ते साइरेगे णव मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोएइ सम ९ सु ५

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण पणयालीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएंति, ते ण छ, तजहा—
१ उत्तराभद्दवया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू, ४ उत्तराफग्गुणी, ५ विसाहा, ६ उत्तरासाढा।

सूरिय पा १०, पाहु २, सु ११

णक्खत्ताण सूरेण जोगकालो

३४—ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

[क] अत्थि णक्खत्ते जे ण चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति।

[ख] अत्थि णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एक्कवीस च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति।

[ग] अत्थि णक्खत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति।

[घ] अत्थि णक्खत्ता जे ण वीस अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति।

प [क] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ते जे ण चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति ?

[ख] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ते जे ण छ अहोरत्ते, एक्कवीस च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति ?

[ग] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति ?

[घ] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ताण जे ण वीस अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति ?

उ [क] ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ते जे ण चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएति से ण एगे अभीयी।

(ख) ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एक्कवीस च मुहुत्ते, सूरेण सद्धि जोय जोएंति ते ण छ, तजहा—१. सतभिसया, २ भरणी, ३ अद्दा, ४ असेसा, ५ साती, ६ जेट्ठा।

(ग) ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण तेरस अहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोय जोएंति, ते ण पण्णरस तजहा—१ सवणो, २ धणिट्ठा, ३ पुव्वाभद्दवया, ४ रेवई, ५ अस्सिणी, ६ कत्तिया, ७ मग्गसिर, ८ पुस्सो, ९ महा, १० पुव्वाफग्गुणी, ११ हत्थो, १२ चित्ता, १३ अणुराहा, १४ मूलो, १५ पुव्वासाढा।

(घ) ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं,

तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते, सूरेण सद्धि जोय जोएंति ते ण छ, तजहा—१ उत्तराभद्दवया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू, ४ उत्तराफग्गुणी ५ विसाहा, ६ उत्तरासाढा।

दशम प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताण पुव्वाइभागा खेत्त-कालप्पमाण च

३५ प ता कह ते एवभागा णक्खत्ता ? आहिया ति वएज्जा,

उ ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

(क) अत्थि णक्खत्ता पुव्वभागा, समखेत्ता तीसइ मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ख) अत्थि णक्खत्ता पच्छभागा, समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ग) अत्थि णक्खत्ता णत्तभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(घ) अत्थि णक्खत्ता उभय भागा विड्ढखेत्ता, पणयालीस मुहुत्ता पण्णत्ता ।

प (क) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता पुव्वभागा, समखेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ख) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता पच्छभागा समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ग) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता णत्त भागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(घ) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

कयरे णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता, पणयालीस-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

उ (क) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता पुव्वभागा, समक्खेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता, पण्णत्ता, ते ण छ तजहा— १ पुव्वापोट्ठवया, २ कत्तिया, ३ महा, ४ पुव्वाफग्गुणी, ५ मूलो, ६ पुव्वासाढा ।

(ख) ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता पच्छभागा समक्खेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ते ण दस, तजहा— १ अभिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ रेवई, ५ अस्सिणी, ६ मिगसिर, ७ पूसो, ८ हत्थो, ९ चित्ता, १० अणुराहा ।

(ग) ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता णत्तभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता, ते ण छ, तजहा— १ सयभिसया, २ भरणी, ३ अद्दा, ४ असलेसा, ५ साती, ६ जेट्ठा ।

(घ) ता एएसि ण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण,

तत्थ जे ते णक्खत्ता उभयभागा दिवड्ढखेत्ता, पणयालीस मुहुत्ता पण्णत्ता, ते ण छ, तजहा— १ उत्तरापोट्ठवया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू, ४ उत्तराफग्गुणी, ५ विसाहा, ६ उत्तरासाढा ।

दशम प्राभृत

[चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

नक्खत्ताणं चंदेण जोगारंभकालो

३६. प. ता कहं ते जोगस्स आई ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता अभियी-सवणा खलु दुवे नक्खत्ता, पच्छाभागा समखित्ता[1], साइरेगएगूणचत्तालीसइ मुहुत्ता[2] तप्पढमयाए सायं[3] चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति[4], तओ पच्छा अवरं साइरेगं दिवसं।

एवं खलु अभियी-सवणा दुवे नक्खत्ता एगराइं एगं च साइरेगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टंति,[5]

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पेंति,

२. ता धणिट्ठा खलु नक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते[6] तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा राइं अवरं च दिवसं।

एवं खलु धणिट्ठा नक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं सयभिसयाणं समप्पेइ,

---

१ "इह अभिजिन्नक्षत्रं न समक्षेत्रं, नाप्यर्धक्षेत्रं, नापि द्व्यर्धक्षेत्रं, केवलं श्रवणनक्षत्रेण सह सम्बद्धमुपात्तमित्यभिजिच्छ्रवणात्मकं भवति समक्षेत्रमनुपत्य समक्षेत्रमित्युक्तम्।"

२ "सातिरेका नवमुहूर्ता अभिजित् त्रिंशन्मुहूर्ताः श्रवणस्येत्युभयमीलने यथोक्तं मुहूर्तपरिमाणं भवति।"

३ "सायं विकालवेलायां, इह दिवसस्य कतिपयभागपर्यन्तात् आरभ्य यावद्रजन्या भागो यावत्प्रायोऽपि परिस्फुटं नक्षत्रमण्डलं नावलोक्यते तावान् कालविशेषः सायमिति विवक्षितो द्रष्टव्यः।"

४ "इहाभिजिन्नक्षत्रं यद्यपि युगस्यादौ प्रातश्चन्द्रेण सह योगमुपैति, तथापि श्रवणेन सह सम्बद्धमिह विवक्षितं, श्रवणनक्षत्रं च पश्चाद्भागं समक्षेत्रमिति चन्द्रेण सह योगमुपादत्ते, ततस्तदपेक्षया तदपि सायं समये चन्द्रेण युज्यमानं विवक्षितम्, सायं चन्द्रेण "सद्धिं जोयं जोएंति" इत्युक्तम्।
अथवा युगस्यादिमतिरिच्यान्यदा बाहुल्यमधिकृत्येदमुक्तं ततो न कश्चिद्दोषः।" —टीका

५ "एतावन्तं कालं यावत् युक्त्वा तदनन्तरं योगमनुपरिवर्तयतः, आत्मनः अतिक्रामतः इत्यर्थः।"
— सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका से उद्धृत।

६ "समक्षेत्र त्रिंशन्मुहूर्तम्" चन्द्र के साथ किसी भी नक्षत्र का योग यदि तीस मुहूर्त पर्यन्त रहता है तो वह "समक्षेत्र योग" कहा जाता है।

३ ता सयभिसया खलु णक्खत्ते णत्तभागे अवड्ढखेत्ते[1] पण्णरस-मुहुत्ते, तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु सयभिसया णक्खत्ते, एग राइ च चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद पुव्वपोट्ठवयाण समप्पेइ,

४ ता पुव्वा पोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्व भागे[2] समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर राइ,

एव खलु पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते एग च दिवस एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद उत्तरापोट्ठवयाण समप्पेइ,

ता उत्तरापोट्ठवया खलु णक्खत्ते उभय भागे[3] दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते[4], तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राइ तओ पच्छा अवर च दिवस।

एव खलु उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद रेवईण समप्पेइ,

ता रेवई खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर दिवस,

एव खलु रेवई णक्खत्ते एग च राइ, एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद अस्सिणीण समप्पेइ,

७ ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर दिवस,

एय खलु अस्सिणी णक्खत्ते, एग च राइ, एग च दिवस, चदेण सद्धि जोय जोएइ,

---

१ "अपार्ध-क्षेत्र पचदशमुहूर्तम्" चन्द्र के साथ किसी भी नक्षत्र का योग, यदि पन्द्रह मुहूर्त पर्यन्त रहता है, तो वह "अपार्ध-क्षेत्र-योग" अर्थात् "आधा क्षेत्र योग" कहा जाता है।

२ "इह पूर्वप्रोष्ठपदानक्षत्र स्य प्रातश्चन्द्रेण सह प्रथमतया योग प्रवृत्त इतीदं पूर्वभागमुच्यते।"

३ "इद किलोत्तराभद्रपदाख्य नक्षत्रमुक्तप्रकारेण प्रातश्चन्द्रेण सहयोगमधिगच्छति। केवलं प्रथमान् पचदश-मुहूर्तान् अधिकानपनीय समक्षेत्र कल्पयित्वा यदा योगश्चिन्त्यते तदा नक्तमपि योगोऽस्तीत्युभयभागमवसेयम्।

४ 'उत्तरप्रोष्ठपदानक्षत्र खलूभयभाग द्व्यर्धक्षेत्र पचचत्वारिंश-मुहूर्त तत्प्रथमतया-योगप्रथमतया प्रातश्चन्द्रेण सार्ध योग युनक्ति, तच्च, तथायुक्तं सत् त सकलमपि दिवसमपर च रात्रि तत पश्चादपर दिवसं यावद्वर्तते।

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता, सायं चंदं भरणीए समप्पेइ।

८ ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तं भागे,[1] अवड्ढखेत्ते, पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, णो लभइ अवरं दिवसं,

एवं खलु भरणी णक्खत्ते एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं कत्तियाए समप्पेइ।

९ ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वं भागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा राइं,

एवं खलु कत्तिया णक्खत्ते, एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं रोहिणीए समप्पेइ।[2]

---

1 "भागमनुपरिवर्त्य सायं परिस्फुटनक्षत्रमण्डलालोकसमये भरण्या समर्पयति, इयं च भरणी नक्तंभुगनक्षत्रत्वात् रात्रौ चन्द्रेण सह योगमुपैति, ततो नक्तं भागमवसेयम्"

2 इसके आगे मूल प्रति में—"संक्षिप्तवाचना" का पाठ इस प्रकार है—

१० "रोहिणी जहा उत्तराभद्दवया",

११ मगसिर जहा धणिट्ठा,

१२ अद्दा जह सतभिसया,

१३ पुणव्वसू जहा उत्तराभद्दवया,

१४ पुस्सो जहा धणिट्ठा,

१५ असलेसा जहा सतभिसया,

१६ महा जहा पुव्वाफग्गुणी,

१७ पुव्वाफग्गुणी जहा पुव्वाभद्दवया,

१८ उत्तराफग्गुणी जहा उत्तराभद्दवया,

१९-२० हत्थो, चित्ता य जहा धणिट्ठा,

२१ साती जहा सतभिसया,

२२ विसाहा जहा उत्तराभद्दवया,

२३ अणुराहा जहा धणिट्ठा,

२४ जिट्ठा जहा सतभिसया,

२५ मूलो जहा पुव्वाभद्दवया,

२६ पुव्वासाढा जहा पुव्वाभद्दवया

२७ उत्तरासाढा जहा उत्तराभद्दवया

१० ता रोहिणी खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए, पाम्रो चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राई तम्रो पच्छा अवर दिवस,

एव खलु रोहिणी णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद मिगसर समप्पेइ ।

११ ता मिगसिरे खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ तम्रो पच्छाराइ अवर च दिवस,

एव खलु मिगसिरे णक्खत्ते एग च राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद अद्दाए समप्पेइ ।

१२ ता अद्दा खलु णक्खत्ते नत्तभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु अद्दा णक्खत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद पुणव्वसूण समप्पेइ ।

१३ ता पुणव्वसू खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस मुहुत्ते तप्पढमयाए पाम्रो चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राइ तम्रो पच्छा अवर च दिवस,

एव खलु पुणव्वसू णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद पुस्सस्स समप्पेइ ।

१४ ता पुस्से खलु णक्खत्ते पच्छभागे समखेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोयइ, तम्रो पच्छाराइ अवर च दिवस,

एव खलु पुस्से णक्खत्ते एग च राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद असिलेसाए समप्पेइ ।

१५ ता असिलेसा खलु णक्खत्ते नत्तभागे अवड्ढखेत्ते पन्नरसमुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु असिलेसा णक्खत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टेइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं मघाए समप्पेइ ।

१६ ता मघा खलु णक्खत्ते पुव्वभागे समक्खेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं राइं,

एवं खलु मघा णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं पुव्वाफग्गुणीणं समप्पेइ ।

१७ ता पुव्वाफग्गुणी खलु णक्खत्ते पुव्वभागे समक्खेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छा अवरं राइं,

एवं खलु पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाओ चंदं उत्तराफग्गुणीणं समप्पेइ ।

१८ ता उत्तरा-फग्गुणी खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं च दिवसं,

एवं खलु उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं हत्थं समप्पेइ ।

१९ ता हत्थे खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं,

एवं खलु हत्थणक्खत्ते एगं च राइं, एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं चित्ताए समप्पेइ ।

२० ता चित्ता खलु णक्खत्ते पच्छभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, तओ पच्छाराइं अवरं च दिवसं,

एवं खलु चित्ता णक्खत्ते एगं च राइं, एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं साईए समप्पेइ ।

२१ ता साई खलु णक्खत्ते नत्तभागे अवड्ढखेत्ते पन्नरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, नो लभइ अवरं दिवसं,

एव खलु साई णक्खत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद विसाहाण, समप्पेइ ।

२२ ता विसाहा खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ-अवर च राइ तओ पच्छा अवर दिवस,

एव खलु विसाहा णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद अणुराहाए समप्पेइ ।

२३ ता अणुराहा खलु णक्खत्ते पच्छभाग समक्खेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छाराइ अवर च दिवस,

एव खलु अणुराहा णक्खत्ते एग राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद जिट्ठाए समप्पेइ ।

२४ ता जेट्ठा खलु णक्खत्ते नत्तभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरस मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु जिट्ठा णक्खत्ते एग दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद मूलस्स समप्पेइ ।

२५ ता मूले खलु णक्खत्ते पुव्वभागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर च राइ,

एव खलु मूल णक्खत्त एग च दिवस च राइ च चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद पुव्वासाढाण समप्पेइ ।

२६ ता पुव्वासाढा खलु णक्खत्ते पुव्व भागे समक्खेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पढमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ तओ पच्छा अवर च राइ,

एव खलु पुव्वासाढा णक्खत्ते एग च दिवस एग च राइ चंदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद उत्तरासाढाण समप्पेइ ।

२७ ता उत्तरासाढा णं खलु णक्खत्ते उभयभागे दिवड्ढखेत्ते पणयालीसं मुहुत्ते तप्पढमयाए पातो चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ, अवरं च राइं तओ पच्छा अवरं च दिवसं,

एवं खलु उत्तरासाढा णक्खत्ते दो दिवसे एगं च राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएइ,

जोयं जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं अभिई सवणाणं समप्पेइ ।[1]



१ सूत्रांक १० से २० [illegible] सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका । यहाँ [illegible] किया है ।

दशम प्राभृत

[पचम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताण कुलोवकुलाइ—

३७ ता कह ते कुला (उवकुला, कुलोवकुला) ? आहिए त्ति वएज्जा ।[1]

तत्थ खलु इमे बारस कुला, बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता ।

बारसकुला पण्णत्ता त जहा—

१ धणिट्ठा कुल २ उत्तराभद्दवया कुल ३ अस्सिणी कुल ४ कत्तियाकुल ५ मिगसिरकुल ६ पुस्सकुल ७ महाकुल ८ उत्तराफग्गुणी कुल ९ चित्ताकुल १० विसाहाकुल ११ मूलकुल १२ उत्तरासाढाकुल ।

बारस उवकुला पण्णत्ता त जहा—

१ सवणो उवकुल २ पुव्वापोट्ठवयाउवकुल ३ रेवई उवकुल ४ भरणी उवकुल ५ रोहिणी उवकुल ६ पुणव्वसु उवकुल ७ अस्सेसा उवकुल ८ पुव्वाफग्गुणी उवकुल ९ हत्थो उवकुल १० साती उवकुल ११ जेट्ठा उवकुल १२ पुव्वासाढा उवकुल ।

चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता त जहा—

१ अभियी कुलोवकुल २ सतभिसया कुलोवकुल ३ अद्दा कुलोवकुल ४ अणुराहा कुलोवकुल ।

---

१ सूर्यप्रज्ञप्ति मे प्रस्तुत प्रश्नसूत्र खण्डित है अत कोष्ठक के अन्तगत 'उवकुला, कुलोवकुला' अकित करके उसे पूरा किया है, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्ष० ७ सूत्र १६१ म यह प्रश्नसूत्र इस प्रकार है—

प्र० कति ण भते ! कुला ? कति उवकुला ? कति कुलोवकुला पण्णत्ता ?

उ० गोयमा ! बारस कुला बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता ।

शेष पाठ सूर्यप्रज्ञप्ति के समान है किन्तु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति म इस प्रश्नोत्तर सूत्र म बारह कुल नक्षत्रों के नामों के बाद कुलादि के लक्षणों की सूचक एक गाथा दी गई है जो सूर्यप्रज्ञप्ति की टीका मे भी उद्धृत है और यह गाथा प्रस्तुत सकलन म भी उद्धृत है । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सकलनकर्ता यदि यह गाथा प्रस्तुत सूत्र के प्रारम्भ मे या अत म देते तो अधिक उपयुक्त रहती ।

गाहा—मासाण परिणामा, होति कुला उवकुला उ हेट्ठिमगा ॥

होति पुण कुलोवकुला अभियी-सयभिसय अद्द अणुराहा । —जम्बु वक्ष ७, सु १६१

"किं कुलादीनां लक्षणम् ?

उच्यते मासाना परिणामानि-परिसमापकानि भवन्ति कुलानि कोऽर्थ ? इह यन्नक्षत्रैः प्रायो मासानां परिसमाप्तय उपजायन्ते मासंसदृशनामानि च तानि नक्षत्राणि कुलानीति प्रसिद्धानि ।'

'कुलानामधस्तनानि नक्षत्राणि श्रवणादीनि उपकुलानि कुलानां समीपमुपकुलं तत्र वर्तन्ते यानि नक्षत्राणि तान्युपचारादुपकुलानि ।

' यानि कुलानामुपकुलानां चाधस्तनानि तानि कुलोपकुलानि । —जम्बू टीका

आसोइण्ण पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता आसोइण्ण पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया।

४ प ता कत्तिइण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे कत्तिया नक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे भरणी नक्खत्ते जोएइ,
कत्तिइण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिइण्ण पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया।

५ प ता मागसिरी पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे मागसिर नक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे रोहिणी नक्खत्ते जोएइ,
मागसिरी पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता मागसिरी पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्वं सिया।

६ प ता पोसिण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
१ कुल जोएमाणे पुस्से नक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे पुणव्वसू नक्खत्ते जोएइ,
३ कुलोवकुल जोएमाणे अद्दा नक्खत्ते जोएइ,
पोसिण्ण पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोसिण्ण पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया।

७ प ता माहिण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे महा नक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे असलेसा नक्खत्ते जोएइ,
माहिण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,
कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता माहिण्णं पुण्णिमं जुत्ते ति वत्तव्वं सिया।

८ प ता फग्गुणीण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ नो लभइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ,
फग्गुणीण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकलेण वा जोएइ,
कलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता फग्गुणीण पुण्णिम जुत्ते त्ति वत्तव्व सिया,

९ प ता चित्तिण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,
१ कुल जोयमाणे चित्ता णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोयमाणे हत्थ णक्खत्ते जोएइ,
चित्तिण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता चित्तिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया।

१० प ता विसाहिण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे विसाहा णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे साती णक्खत्ते जोएइ,
विसाहिण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता विसाहिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया।

११ प ता जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
१ कुल जोएमाणे मूले णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे जेट्ठा णक्खत्ते जोएइ,
३ कुलोवकुल जोएमाणे अणुराहा णक्खत्ते जोएइ,
जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम जुत्तेत्ति वत्तव्व सिया,

१२ प ता आसाढिण्ण पुण्णिम किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे उत्तरासाढा णक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोएमाणे पुव्वासाढा णक्खत्ते जोएइ,
आसाढिण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता आसाढिण्णं पुण्णिमं जुत्तेत्ति वत्तव्वं सिया,

दुवालससु अमावासासु णक्खत्तजोग-संखा

१ प ता साविट्ठि णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा अस्सेसा य महा य,
२ प ता पोट्ठवइ णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी,
३ प ता आसोइ णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा हत्थो, चित्ता य,
४ प ता कत्तिइ णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा साती, विसाहा य,
५ प ता मग्गसिरि णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ तिण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा अणुराधा जेट्ठा मूलो य,
६ प ता पोसिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा-पुव्वासाढा, उत्तरासाढा,
७ प ता माहिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा १ अभीयी, २ सवणो, ३ धणिट्ठा,
८ प ता फग्गुणी णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा १ सतभिसया, २ पुव्वापोट्ठवया ।
९ प ता चेति णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा रेवई, अस्सिणी य,
१० प ता विसाहिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति तंजहा भरणी, कत्तिया य,
११ प ता जेट्ठा मूलि णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा रोहिणी, मग्गसिर य,
१२ प ता आसाढि णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?
उ तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तंजहा १ अद्दा, २ पुणव्वसू, ३ पुस्सो,

दुवालसासु अमावासासु कुलाइ-णक्खत्त-जोग-सखा—

१ प ता साविट्ठि ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ , उवकुल वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे असिलेसा जोएइ,
ता साविट्ठि ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी अमावासा जुत्ता ति वत्तव्व सिया ।

२ प ता पोट्ठवइ ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे उत्तराफग्गुणी जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी जोएइ,
पुट्ठवइ ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता पोट्ठवया अमावासा जुत्ताति वत्तव्व सिया ।

३ प ता आसोइ ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे चित्ता णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे हत्थ णक्खत्ते जोएइ,
ता आसोइ ण अमावास कुल जोएइ, उवकुल जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता आसोई अमावासा जुत्ता त्ति वत्तव्वं सिया ।

४ प कत्तिइ ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे विसाहा णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे साई णक्खत्ते जोएइ,
ता कत्तिइ ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिइ ण अमावास जुत्तत्तिवत्तव्व सिया ।

५ प ता मग्गसिरि ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
१ कुल जोएमाणे मूलणक्खत्ते जोएइ,

२ उवकुलं जोएमाणे जेट्ठा णक्खत्ते जोएइ,
३ कुलोवकुलं जोएमाणे अणुराहा णक्खत्ते जोएइ,
ता मग्गसिरिं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता, मग्गसिरी णं अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया।

६ प. ता पोसिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुलं,
१ कुलं जोएमाणे पुव्वासाढा णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुलं जोएमाणे, उत्तरासाढा णक्खत्ते जोएइ,
ता पोसिं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता पोसी णं अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया।

७ प. ता माहिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,
१ कुलं जोएमाणे अभीयी णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुलं जोएमाणे सवणे णक्खत्ते जोएइ,
३ कुलोवकुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ,
ता माहिं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता, कुलोवकुलेण वा जुत्ता माही णं अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया।

८ प. ता फग्गुणिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ, उवकुलं जोएइ, कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, नो लब्भइ कुलोवकुलं,
१ कुलं जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएइ,
ता फग्गुणिं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता फग्गुणी णं अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया।

९ प. ता चेत्तिं णं अमावासं किं कुलं जोएइ उवकुलं जोएइ कुलोवकुलं जोएइ ?
उ. कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुलं,
१ कुलं जोएमाणे रेवती णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ,
ता चेत्तिं णं अमावासं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता चेत्ती णं अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्वं सिया।

१० प ता वेसाहिं अमावास किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे भरणि णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे कत्तिया णक्खत्ते जोएइ,
ता वेसाहिं अमावास कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता वेसाहिं अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।

११ प ता जेट्ठामूली अमावास किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुल,
१ कुल जोएमाणे रोहिणी णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे मग्गसिरे णक्खत्ते जोएइ,
ता जेट्ठामूली अमावास कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता जेट्ठामूली अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।

१२ प ता आसाढि अमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
१ कुल जोएमाण अद्दा णक्खत्ते जोएइ,
२ उवकुल जोएमाणे पुणव्वसु णक्खत्ते जोएइ,
३ कुलोवकुल जोएमाणे पुस्से णक्खत्ते जोएइ,
ता आसाढि अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता, कुलोवकुलेण वा जुत्ता, आसाढि अमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।



दशम प्राभृत

[सप्तम प्राभृतप्राभृत]

दुवालस पुण्णिमासु अमावासासु य चंदेण-णक्खत्तसजोगो

४० १ प्र ता कहं ते सण्णिवाए आहिए त्ति वएज्जा ?

उ [क] ता जया णं साविट्ठी पुण्णिमा भवइ,
तया णं माही अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं माही पुण्णिमा भवइ,
तया णं साविट्ठी अमावासा भवइ ।

२ [क] ता जया णं पुट्ठवई पुण्णिमा भवइ,
तया णं फग्गुणी अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवइ,
तया णं पुट्ठवई अमावासा भवइ ।

३ [क] ता जया णं आसोई पुण्णिमा भवइ,
तया णं चेत्ती अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं चेत्ती पुण्णिमा भवइ,
तया णं आसोई अमावासा भवइ ।

४ [क] ता जया णं कत्तियी पुण्णिमा भवइ,
तया णं वेसाही अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं वेसाही पुण्णिमा भवइ,
तया णं कत्तियी अमावासा भवइ ।

५ [क] ता जया णं मग्गसिरी पुण्णिमा भवइ,
तया णं जेट्ठामूली अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं जेट्ठामूली पुण्णिमा भवइ
तया णं मग्गसिरी अमावासा भवइ ।

६ [क] ता जया णं पोसी पुण्णिमा भवइ
तया णं आसाढी अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं आसाढी पुण्णिमा भवइ,
तया णं पोसी अमावासा भवइ ।

दशम प्राभृत

[अष्टम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताण सठाण

४१ १ प ता कह ते णक्खत्तसठिई ग्राहिए त्ति वएज्जा ?
ता एएसि ण ग्रट्ठावीसाए णक्खत्ताण ग्रभीयी णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ गोसीसावलि-सठिए पण्णत्ते,

२ प ता सवणे णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ काहार-सठिए पण्णत्ते,

३ प ता धणिट्ठा णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ सउणीपलीणग सठिए पण्णत्ते,

४ प ता सयभिसया णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ पुप्फोवयारसठिए पण्णत्ते,

५ प ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ ग्रवड्ढवाविसठिए पण्णत्ते ?

६ प ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ ग्रवड्ढवावि-सठिए पण्णत्ते,

७ प ता रेवई णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ णावासठिए पण्णत्ते,

८ प ता ग्रस्सिणी णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ ग्रासक्खध-सठिए पण्णत्ते,

९ प ता भरणी णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ भग-सठिए पण्णत्ते,

१० प ता कत्तिया णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ छुरघरग-सठिए पण्णत्ते,

११ प ता रोहिणी णक्खत्ते किसठिए पण्णत्ते ?
उ सगडुद्धि-सठिए पण्णत्ते,

१२ प ता मिगसिरे णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ मिगसीसावलि-संठिए पण्णत्ते,

१३ प ता अद्दा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ रुहिरबिंदु-संठिए पण्णत्ते,

१४ प ता पुणव्वसूणक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते,
उ तुला-संठिए पण्णत्ते,

१५ प ता पुस्से णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ वद्धमाण-संठिए पण्णत्ते,

१६ प ता अस्सेसा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ पडाग-संठिए पण्णत्ते,

१७ प ता महा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ पागार-संठिए पण्णत्ते,

१८. प ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ अद्धपलियंक-संठिए पण्णत्ते,

१९ प ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ अद्धपलियंक-संठिए पण्णत्ते,

२० प ता हत्थे णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ हत्थ-संठिए पण्णत्ते,

२१ प ता चित्ता णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ मुहफुल्ल-संठिए पण्णत्ते,

२२ प ता साई णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ खीलग-संठिए पण्णत्ते,

२३ प ता विसाहा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ दामणि संठिए पण्णत्ते

२४ प ता अणुराहा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ एगावलि-संठिए पण्णत्ते,

२५ प ता जेट्ठा णक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ?
उ गयदंत संठिए पण्णत्ते

२६ प ता मूले णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ विच्छुयलगोलसठिए पण्णत्ते,

२७ प ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ गयविक्कम-संठिए पण्णत्ते,

२८ प ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ सीहनिसाइयसठिए पण्णत्ते ।[1]



---

१ प एएसि ण भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताण अभीई णक्खत्ते किंसठिए पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! गोसीसावलिसठिए पण्णत्ते,
गाहाओ—
१ गोसीसावलि, २ काहार, ३ सउणी, ४ पुप्फोवयार, ५-६ वावी य ।
७ णावा, ८ आसक्खधग, ९ भग, १० छुरघरए ११ अ सगडुद्धी ॥
१२ मिगसीसावली, १३ रुहिरबिंदु, १४ तुला, १५ वद्धमाणग, १६ पडागा ।
१७ पागारे, १८-१९ पलिअके, २० हत्थे, २१ मुहफुल्लए चेव ॥
२२ खीलग, २३ दामणी, २४ एगावली य, २५ गयदत, २६ विच्छुयलगुले य ।
२७ गयविक्कमे य तत्तो, २८ सीहनिसीही य सठाणा ॥ —जंबु वक्ख ७, सु १६०
सूयप्रज्ञप्ति की वृत्ति में ये गाथाएं उद्धृत हैं—
पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद के सस्थान तथा पूर्वाफाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी के सस्थान समान माने गए हैं किन्तु पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा के सस्थान भिन्न भिन्न माने गए हैं ।
संस्थानों की इस विभिन्नता का हेतु इस प्रकार है —
पूर्वभद्रपदाया अर्द्धवापीसस्थानं, उत्तरभद्रपदाया अप्यर्धवापी सस्थानं, एतद्द्वयाद्वयमीलनेन परिपूर्णा वापी भवति, तेन सूत्रे वापीत्युक्तम् ।
पूर्वफल्गुन्या अर्द्धपल्यकसंस्थान, उत्तरफल्गुन्या अप्यर्धपल्यक संस्थान, अत्रापि अर्द्धपल्यकद्वयमीलनेन परिपूर्णपल्यको भवति, तेन संख्यान्यूनता न । —जंबु वक्ख ६, सु १६० वृत्ति

दशम प्राभृत

[नवम प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं तारग्गसंखा

सूत्र ४२ १ प ता कहं ते तारग्गे आहिए त्ति वएज्जा ?

ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ तितारे पण्णत्ते,[1]

२ प सवणे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ तितारे पण्णत्ते,[2]

३ प धणिट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ पणतारे पण्णत्ते,[3]

४ प सतभिसया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ सततारे पण्णत्ते,[4]

---

१ क-जम्बु० कति णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! तितारे पण्णत्ते,
एवं णेयव्वा जस्स जइयाओ ताराओ,
इमं च तं तारग्गं
गाहाओ —
तिग तिग-पंचग-सय-दुग-दुग-बत्तीसग तिगं तह तिगं च ।
छ पंचग तिग-एक्कग-पंचग तिग छक्कगं चेव ॥१॥
सत्तग दुग-दुग-पंचग-एक्केक्कग-पंच-चउ-तिगं चेव ।
एक्कारसग चउक्कं चउक्कगं चेव तारग्गं ॥२॥ जम्बु वक्ष ७ सु १[illegible]
ख अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते
एवं [illegible], पुव्वे [illegible] -ठाणं अ ३, उ ३ सु २१[illegible]
अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते, —सम स ३, सु [illegible]
२ क ठाणं अ ३ उ ३, सु २२[illegible]
ख सम स ३ सु [illegible]
३ क [illegible] स ५ [illegible] १ धणिट्ठा, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू ४ हत्थो ५ विसाहा,
ठाणं अ ५ उ ३ सु ४[illegible]
ख सम स ५ सु ११
४ सयभिसयाणक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते, —सम स १००, सु ५

५ प पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ दुतारे पण्णत्ते,[१]

६ प उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ दुतारे पण्णत्ते,[२]

७ प रेवई णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ बत्तीसइतारे पण्णत्ते,[३]

८ प अस्सिणी, णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ तितारे पण्णत्ते,[४]

९ प भरणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ तितारे पण्णत्ते,[५]

१० प कत्तिया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ छतारे पण्णत्ते,[६]

११ प रोहिणीणक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ पचतारे पण्णत्ते,[७]

१२ प मिगसिरे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ तितारे पण्णत्ते,[८]

---

१ क-पुव्वाभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते, —ठाणं अ २ उ ४, सु ११०
ख-सम स २, सु ९

२ क- उत्तराभद्दवयाणक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते —ठाण अ २ उ ४ सु ११०
ख सम स २ सु ६

३ रेवईणक्खत्ते बत्तीसइ तारे पण्णत्ते —सम स ३२ सु ५

४ क ठाणं, अ ३, उ ३ सु २२७
ख-सम स ३ सु ९

५ क-ठाण, अ ३ उ ३, सु २२७
ख- सम स ३, सु ९

६ कत्तिया णक्खत्ते छतारे पण्णत्ते
क-ठाण अ ६ सु ५३९
ख-सम स ६ सु ७

७ क-ठाण अ ५ उ ३, सु ४७३
ख सम स ५, सु १३

८ क-ठाण अ ३ उ ३ सु २२०
ख-सम स ३, सु ९

१३ प. अद्दा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. एगतारे पण्णत्ते,[1]

१४ प. पुणव्वसू णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. पंचतारे पण्णत्ते,[2]

१५ प. पुस्से णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. तितारे पण्णत्ते,[3]

१६ प. अस्सेसा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. छतारे पण्णत्ते,[4]

१७ प. मघा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. सत्ततारे पण्णत्ते,[5]

१८ प. पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. दुतारे पण्णत्ते,[6]

१९ प. उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ. दुतारे पण्णत्ते,[7]

---

१ क अद्दा नक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते, ठाणं, अ १ सु ५५
ख-सम स १, सु २१
२ क ठाणं अ ५ उ ३, सु ४७३
ख-सम स ५, सु ११
३ क-ठाणं अ ३ उ ३ सु २२७
ख-सम स ३, सु ९
४ क-ठाणं अ ६, सु ५३०
ख-सम स ६, सु ७
५ क-महा नक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते ठाणं अ ७, सु ५८९
ख-सम स ७ सु ७
६ क ठाणं अ २, उ ४, सु ११०
ख-सम स २, सु ६
७ क-ठाणं अ २ उ ४ सु ११०
ख-सम स २ सु ६

२० प हत्थ णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ पचतारे पण्णत्ते,[1]

२१ प चित्ता णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ एकतारे पण्णत्ते,[2]

२२ प साती णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ एकतारे पण्णत्ते,[3]

२३ प विसाहा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ पचतारे पण्णत्ते,[4]

२४ प अणुराहा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ पचतारे पण्णत्ते,[5]

२५ प जेट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,[6]

२६ प मूले णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
उ एगतारे पण्णत्ते,[7]

---

१ क-ठाणं, ठा ५, उ ३, सु ४७३
ख-सम स ५, सु १३

२ क- ठाणं, ठा १, सु ५५
ख-सम स १, सु ५५

३ क-ठाणं, ठा १, सु ५५
ख-सम १, सु २३

४ क ठाणं, ठा ५, उ ३, सु ४७३
ख-सम स ५, सु १२

५ क अणुराहा णक्खत्ते चउतारे पण्णत्ते—ठाण ठा ४ उ ४ सु ३८६
ख-सम ४ सु ७

६ क-ठाण, ठा ३, उ ३ सु २२७
ख-सम स ३, सु ९

७ मूलनक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते —सम ११ सु ५

२७ प पुव्वासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ चउतारे पण्णत्ते,[1]

२८ प उत्तरासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ चउतारे पण्णत्ते ।[2]



दशम प्राभृत

[दशम प्राभृतप्राभृत]

वास-हेमत-गिम्ह-राइदियाण

४३ प १ क ता कह ते णेता आहिए ति वएज्जा ?

ख ता वासाण पढम मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, त जहा—१ उत्तरासाढा, २ अभिई, ३ सवणा, ४ धणिट्ठा।

१ उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ अभिई सत्त अहोरत्ते णेइ,
३ सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ,
४ धणिट्ठा एग अहोरत्त णेइ,
तसि ण मासंसि चउरगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ चत्तारि य अगुलाणि पोरिसी भवइ।

प २ ता वासाण वितिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, त जहा—१ धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वपोट्ठवया, ४ उत्तरपोट्ठवया,

१ धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ सतभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ,
३ पुव्वपोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ,
४ उत्तरपोट्ठवया एग अहोरत्त णेइ,
तसि ण मासंसि अट्ठगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ अट्ठ अगुलाइ पोरिसी भवइ।

प ३ ता वासाण ततिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, त जहा १ उत्तरपोट्ठवया, २ रेवई, ३ अस्सिणी,

१ उत्तरपोट्ठवया चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ रेवई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३ अस्सिणी एग अहोरत्त णेइ,
तसि च ण मासंसि दुवालसगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइ तिण्णि पयाइ पोरिसी भवइ।

२७ प पुव्वासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ चउतारे पण्णत्ते,[१]

२८ प उत्तरासाढा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ?

उ चउतारे पण्णत्ते ।[२]



दशम प्राभृत
[दशम प्राभृतप्राभृत]

वास-हेमत-गिम्ह-राइंदियाण

४३ प १ क ता कह् ते णेता आहिए ति वएज्जा ?

ख ता वासाण पढम मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, त जहा—१ उत्तरासाढा, २ अभिई, ३ सवणा, ४ धणिट्ठा।

१ उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ अभिई सत्त अहोरत्ते णेइ,
३ सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ,
४ धणिट्ठा एग अहोरत्त णेइ,

तसि ण माससि चउरगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ चत्तारि य अगुलाणि पोरिसी भवइ।

प २ ता वासाण बितिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, त जहा—१ धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वपोट्ठवया, ४ उत्तरपोट्ठवया,

१ धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ सतभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ,
३ पुव्वपोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ,
४ उत्तरपोट्ठवया एग अहोरत्त णेइ,

तसि ण माससि अट्ठगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ अट्ठ अगुलाइ पोरिसी भवइ।

प ३ ता वासाण ततिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, त जहा १ उत्तरपोट्ठवया, २ रेवई, ३ अस्सिणी,

१ उत्तरपोट्ठवया चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ रेवई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३ अस्सिणी एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण मासंसि दुवालसगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइ तिण्णि पयाइ पोरिसी भवइ।

प ४ ता वासाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा— १ अस्सिणी, २ भरणी, ३ कत्तिया,

१ अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ कत्तिया एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प १ ता हेमंताणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा— १ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ संठाणा,

१ कत्तिया चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ रोहिणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ संठाणा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प २ ता हेमंताणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तंजहा— १ संठाणा, २ अद्दा, ३ पुणव्वसू, ४ पुस्सो,

१ संठाणा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ अद्दा सत्त अहोरत्ते णेइ,

३ पुणव्वसू अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४ पुस्से एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि चउवीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं चत्तारि पयाइं पोरिसी भवइ ।

प ३ ता हेमंताणं तइयं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा— १ पुस्सो, २ अस्सेसा, ३ महा

१ पुस्सो चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेइ,

३ महा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि वीसंगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ ।

प ४ ता हेमताण चउत्थ मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति त जहा— १ मघा, २ पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी,

१ मघा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ पुव्वाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३ उत्तराफग्गुणी एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण मासमि सोलस अगुलाइ पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प १ ता गिम्हाण पढम मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तजहा-१ उत्तराफग्गुणी, २ हत्थो, ३ चित्ता,

१ उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३ चित्ता एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण मासंसि दुवालसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइ य तिण्णि पयाइ पोरिसी भवइ ।

प २ ता गिम्हाण बितिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तजहा-१ चित्ता, २ साई, ३ विसाहा

१ चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ साई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३ विसाहा एग अहोरत्ते णेइ,

तसि च ण मासंसि अट्ठ गुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइ अट्ठ अगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प ३ गिम्हाण ततिय मास कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति त जहा १ विसाहा, २ अणुराहा, ३ जेट्ठामूला,

१ विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,
२ अणुराहा पण्णरस अहोरत्ते णेइ,
३ जेट्ठामूलो एग अहोरत्ते णेइ,

तसि च ण मासंसि चउरगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ
तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि य चत्तारि अगुलाणि पोरिसी भवइ ।

प ४ ता गिम्हाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?

उ ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तंजहा—१ मूलो, २ पुव्वासाढा, ३. उत्तरासाढा,

१ मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ पुव्वासाढा पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेइ,

तंसि च णं मासंसि वट्टाए समचउरंससंठियाए णग्गोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ ।

तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दो पयाइं पोरिसीए भवइ ।



दशम प्राभृत

[ग्यारहवां प्राभृतप्राभृत]

चंदमग्गे णक्खत्तजोगसंखा

४४ प ता कहं ते चंदमग्गा आहिए त्ति वएज्जा ?

उ १ ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति,

२ अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति,

३ अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं पि जोगं जोएंति,

४ अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं पि जोगं जोएंति,

५ अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स सया पमद्दं जोगं जोएंति।

प १ ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति ?

२ कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति ?

३ कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति ?

४ कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति ?

५ कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स सया पमद्दं जोगं जोएंति ?

उ १ ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
तत्थ जे णं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति, ते णं छ, तंजहा—१ संठाणा, २ अद्दा, ३ पुस्सो, ४ असेसा, ५ हत्थो, ६ मूलो,

२ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा—१ अभिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वभद्दवया, ५ उत्तरभद्दवया, ७ रेवई, ८ अस्सिणी, ९ भरणी, १० पुव्वफग्गुणी, ११ उत्तरफग्गुणी, १२ साती,

३ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि उत्तरेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति, ते णं सत्त, तंजहा—१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू, ४ महा, ५ चित्ता, ६ विसाहा, ७ अणुराहा,

४ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं पि जोगं जोएंति,
ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा जोएस्संति वा।
५ तत्थ जे ते णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोगं जोएइ, सा णं एगा, जेट्ठा।[1]

रवि-ससि नक्खत्तेहिं अविरहियाण, विरहियाण सामण्णाण य चंदमंडलाण संखा–

४५ क ता एएसि णं पन्नरसण्हं चंदमंडलाणं–
अत्थि चंदमंडला जे णं सया नक्खत्तेहिं अविरहिया,
ख अत्थि चंदमंडला जे णं सया नक्खत्तेहिं विरहिया
ग अत्थि चंदमंडला जे णं रवि-ससि-नक्खत्ताणं सामण्णा भवंति
घ अत्थि चंदमंडला जे णं सया आइच्चेहिं विरहिया।

प्र क ता एएसि णं पन्नरसण्हं चंदमंडलाणं–
कयरे चंदमंडला जे णं सया नक्खत्तेहिं अविरहिया?
ख कयरे चंदमंडला जे णं सया नक्खत्तेहिं विरहिया?
ग कयरे चंदमंडला जे णं रवि-ससि-नक्खत्ताणं सामण्णा भवंति?
घ कयरे चंदमंडला जे णं सया आइच्चेहिं विरहिया?

१ प १ एएसि णं भंते! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति?
२ कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति?
३ कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेण वि उत्तरेण वि पमद्दं पि जोगं जोएंति?
४ कयरे णक्खत्ता जे णं सया दाहिणेणं पमद्दं जोगं जोएंति?
५ कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स जोगं जोएंति?
उ १ गोयमा! एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं–
तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति, ते णं छ, तं जहा–१ संठाणे
२ अद्दा, ३ पुस्सो ४ अस्सेसा ५ हत्थो ६ मूलो य बाहिरओ बाहिरमंडलस्स छप्पेते
णक्खत्ता,

उ क ता एएसि ण पण्णरसण्ह चदमडलाण—
तत्थ जे ते चदमडला जे ण सया णक्खत्तेहि अविरहिया,
ते ण अट्ठ, तजहा—
१ पढमे चदमडले, २ ततिए चदमडले, ३ छटठे चदमडले, ४ सत्तमे चदमडले,
५ अट्ठमे चदमडले, ६ दसमे चदमडले, ७ एकादसे चदमडले, ८ पण्णरसमे चदमडले,
ख तत्थ जे ते चदमडला जे ण सया णक्खत्तेहि विरहिया,
ते ण सत्त तजहा—
१ बितिए चदमडले, २ चउत्थे चदमडले, ३ पचमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,
५ बारसमे चदमडले, ६ तेरसमे चदमडले, ७ चउद्दसमे चदमडले,
ग तत्थ जे ते चदमडला जे ण रवि-ससि णक्खत्ताण सामण्णा भवति, ते ण चत्तारि, त जहा—
१ पढमे चदमडले, २ बीए चदमडले, ३ इक्कारसमे चदमडले, ४ पन्नरसमे चदमडले,
घ तत्थ जे ते चदमडला जे ण सया आदिच्चेहि विरहिया ते ण पच तजहा—
१ छट्ठे चदमडले, २ सत्तमे चदमडले, ३ अट्ठमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,
५ दसमे चदमडले।



४ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणऽवि पमद्दं जोगं जोएंति,
ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा जोएस्संति वा,
५ तत्थ जे ते णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोगं जोएइ, सा णं एगा, जेट्ठा ।[1]

रवि-ससि-णक्खत्तेहिं अविरहियाण, विरहियाण सामण्णाण य चंदमंडलाण संखा–

४५ क ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं—
अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया,
ख अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया,
ग अत्थि चंदमंडला जे णं रवि ससि-णक्खत्ताणं सामण्णा भवंति,
घ अत्थि चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया ।

प क ता एएसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं—
कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया ?
ख कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया ?
ग कयरे चंदमंडला जे णं रवि ससि णक्खत्ताणं सामण्णा भवंति ?
घ कयरे चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया ?

---

१ प १ एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति ?
२ कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति ?
३ कयरे णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दं जोगं जोएंति ?
४ कयरे णक्खत्ता जे णं सया दाहिणेणं पमद्दं जोगं जोएंति ?
५ कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स जोगं जोएंति ?

उ १ गोयमा ! एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोगं जोएंति, ते णं छ, तंजहा—१ संठाणे २ अद्दा, ३ पुस्सो, ४ असिलेस, ५ हत्थो, ६ तहेव मूलो य बाहिरओ बाहिर मंडलस्स छप्पेते णक्खत्ता,
२ तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, ते णं बारस, तंजहा—१ अभिई २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सयभिसया, ५ पुव्वभद्दवया ६ उत्तरभद्दवया, ७ रेवई ८ अस्सिणी ९ भरणी, १० पुव्वफग्गुणी, ११ उत्तरफग्गुणी, १२ साती,
३ तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणओवि, उत्तरओवि पमद्दं जोगं जोएंति, ते णं सत्त, तंजहा—१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ पुणव्वसू ४ मघा, ५ चित्ता ६ विसाहा, ७ अणुराहा
४ तत्थ णं जे ते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणओ पमद्दं जोगं जोएंति ताओ णं दुवे आसाढाओ सव्वबाहिरए मंडले जोगं जोएंसु वा जोएंति वा, जोएस्संति वा,
५ तत्थ णं जे से णक्खत्ते, जे णं सया चंदस्स जोगं जोएइ सा णं एगा जेट्ठा, —जंबु. वक्ख. ७, सु. १५७

उ क ता एएसि ण पण्णरसण्ह चदमडलाण—

तत्थ जे ते चदमडला जे ण सया णक्खत्तेहि अविरहिया,

ते ण अट्ठ, तजहा—

१ पढमे चदमडले, २ ततिए चदमडले, ३ छट्ठे चदमडले, ४ सत्तमे चदमडले,

५ अट्ठमे चदमडले, ६ दसमे चदमडले, ७ एकादसे चदमडले, ८ पण्णरसमे चदमडले,

ख तत्थ जे ते चदमडला जे ण सया णक्खत्तेहि विरहिया,

ते ण सत्त तजहा—

१ बितिए चदमडले, २ चउत्थे चदमडले, ३ पचमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,

५ बारसमे चदमडले, ६ तेरसमे चदमडले, ७ चउद्दसमे चदमडले,

ग तत्थ जे ते चदमडला जे ण रवि-ससि णक्खत्ताण सामण्णा भवति, ते ण चत्तारि, त जहा—

१ पढमे चदमडले, २ बीए चदमडले, ३ इक्कारसमे चदमडले, ४ पन्नरसमे चदमडले,

घ तत्थ जे ते चदमडला जे ण सया आदिच्चेहि विरहिया ते ण पच तजहा—

१ छट्ठे चदमडले, २ सत्तमे चदमडले, ३ अट्ठमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,

५ दसमे चदमडले।



दशम प्राभृत

[बारहवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताण देवया

४६ प ता कहं ते णक्खत्ताणं देवया आहिए त्ति वएज्जा ?
ता एएणं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं—
अभीई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ बमदेवयाए पण्णत्ते,
२ प ता सवणे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ विण्हुदेवयाए पण्णत्ते,
३ प ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ वसुदेवयाए पण्णत्ते,
४ प ता सयभिसया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ वरुणदेवयाए पण्णत्ते,
५ प ता पुव्वपोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अजदेवयाए पण्णत्ते,
६ प ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अहिवड्ढि देवयाए[1] पण्णत्ते,
७ प ता रेवई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ पुस्सदेवयाए[2] पण्णत्ते,
८ प ता अस्सिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अस्सदेवयाए[3] पण्णत्ते,
९ प ता भरिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ जमदेवयाए पण्णत्ते,

---

१ अभिवृद्धि अपरनाम-अहिर्बुध्न इति ।
२ पूषा – पूषनामको देवो, न तु सूर्यपर्यायस्तत्र रेवत्येव पौष्णमिति प्रसिद्धम् ।
३ अश्वनामको देवः ।

१० प ता कत्तिया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अग्गिदेवयाए पण्णत्ते,

११ प ता रोहिणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ पयावइदेवयाए[1] पण्णत्ते,

१२ प ता सठाणा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ सोमदेवयाए[2] पण्णत्ते,

१३ प ता अद्दा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ रुद्ददेवयाए[3] पण्णत्ते,

१४ प ता पुणव्वसू णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अदितिदेवयाए पण्णत्ते,

१५ प पुस्से णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ बहस्सइदेवयाए पण्णत्ते,

१६ प ता अस्सेसा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ सप्पदेवयाए पण्णत्ते,

१७ प ता महा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ पितिदेवयाए[4] पण्णत्ते,

१८ प ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ भगदेवयाए पण्णत्ते,

१९ प ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ अज्जम[5] देवयाए पण्णत्ते,

२० प ता हत्थे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ सविया देवयाए[6] पण्णत्ते,

२१ प ता चित्ता णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ तट्ठदेवयाए[7] पण्णत्ते,

---

१ प्रजापतिरिति ब्रह्मनामको देव, अथ च ब्रह्मण पर्यायान् सहस्र तत ब्राह्ममित्यपि प्रसिद्धम्।
२ सोम —चन्द्रस्तेन सौम्य चान्द्रमसमित्यादि प्रसिद्धम्।
३ रुद्र —शिवस्तेन रौद्र कालिनीति प्रसिद्धम्।
४ पितृनामा देव,
५ अयमा —अयमनामको देवविशेष,
६ सविता —सूर्य
७ त्वष्टा—त्वष्टृनामको देवस्तेन त्वाष्ट्रा चित्रा इति प्रसिद्धम्।

२२ प ता साती णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ वाउदेवयाए पण्णत्ते,

२३ प ता विसाहा णक्खत्ते[1] किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ इंदग्गीदेवयाए पण्णत्ते,

२४ प ता अणुराहा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ मित्तदेवयाए पण्णत्ते,

२५ प ता जेट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ इंददेवयाए पण्णत्ते,

२६ प ता मूले णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ णिरइदेवयाए[2] पण्णत्ते,

२७ प ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ आउदेवयाए[3] पण्णत्ते,

२८ प ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ विस्सदेवयाए पण्णत्ते,[4]

---

१ क—विशाखा—द्विदवतमिति प्रसिद्धम।
२ नैऋत – राक्षसस्तेन।
३ आपो—जलनामा दवस्तेन पूर्वाषाढा तोयमिति प्रसिद्धम।
४ विश्वदेवास्तमीदण।

क प एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! बम्हदेवया पण्णत्ता,
गाहाओ —
१ बम्हा २ विण्हू ३ वसू, ४ वरुण ५ अय, ६ अभिवड्ढी, ७ पूस,
८ आस, ९ जम, १० अग्गी ११ पयावई १२ सोम, १३ रुद्दे, १४ अदिई ॥१॥
१५ बहस्सई १६ सप्प, १७ पिऊ १८ भगे, १९ अज्जम, २० सविया, २१ तट्ठा
२२ वाउ, २३ इंदग्गी, २४ मित्तो २५ इंदे, २६ निरई, २७ आउ, २८ विस्सा य ॥२॥
एवं णक्खत्ताणं एसा परिवाडी णेयव्वा, जाव
प उत्तरासाढा णक्खत्ते णं भंते किंदेवयाए पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! विस्सादेवया पण्णत्ता, —जम्बू वक्ष ७, सु १५८

दशम प्राभृत

[तेरहवा प्राभृतप्राभृत]

मुहुत्ताण णामाइ—

४७ प ता कह ते मुहुत्ताण णामधेज्जा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ एगमेगस्स ण अहोरत्तस्स तीस मुहुत्ता पण्णत्ता तजहा —

गाहाओ —

१ रोद्दे, २ सेते, ३ मित्ते, ४ वायु, ५ सुगीए, ६ अभिचदे ।
७ माहिद, ८ बलव, ९ बभो, १० बहुसच्चे, ११ चेव ईसाणे ॥१॥
१२ तट्ठे य, १३ भावियप्पा, १४ वेसमणे, १५ वरुणे य, १६ आणदे ।
१७ विजए य, १८ वीससेणे, १९ पायावच्चे चेय, २० उवसमे य ॥२॥
२१ गधव्व, २२ अग्गिवेसे, २३ सयरिसहे, २४ आयव च, २५ अममे य ।
२६ अणव, २७ च भोम, २८ रिसहे, २९ सव्वट्ठे, ३० रक्खसे चेव ॥३॥

प एतया-ब्रह्म विष्णु वरुणादिरूपया परिपाट्या, न तु परतीर्थिकप्रयुक्त-अश्व-यम-
दहन पमलजादिरूपया नेतव्या परिसमाप्ति प्रापणीया ।

गाहाओ —

१ बम्हा, २ विण्हु, ३ अवसू, ४ वरुणे, ५ अय, ६ वुड्ढी ७ पूस, ८ आस, ९ जम ।
१० अग्गि, ११ पयावइ, १२ सोम, १३ रुद्द, १४ अदिति, १५ बहस्सई, १६ सप्प, ॥१॥
१७ पिउ, १८ भग, १९ अज्जम २० सविया २१ तट्ठा २२ वाउ, २३ तहेव, इदग्गी ।
२४ मित्ते २५ इदे २६ निरूई, २७ आउ २८ विस्सा या बोद्धव्वे ॥२॥ —जबु वक्ष ४७, सू १७८

एक ही आगम में अट्ठाईस नक्षत्र देवताओं के नामों की गाथाएं भिन्न-भिन्न रचनाओं में दो बार आना विचारणीय प्रश्न है। इसका समाधान बहुश्रुत करें तो जिज्ञासुओं के ज्ञान की वृद्धि हो ।

१ एगमेगे ण अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तग्गेण पण्णत्ता
एएसि ण तीसाए मुहुत्ताण तीसं नामधेज्जा पण्णत्ता,
त जहा—
१ रोद्दे, २ सत्त, ३ मित्ते, ४ वाऊ, ५ सुगीए, ६ अभिचदे ७ माहिदे ८ बलव, ९ बभ १० सच्चे ११ आणदे, १२ विजए १३ विस्ससेण १४ पायावच्चे, १५ उवसम १६ ईसाणे १७ तट्ठे १८ भावियप्पा, १९ वेसमण, २० वरुण २१ सतरिसभ २२ गधव्वे २३ अग्गिवेसायणे २४ आतव, २५ आवत्ते, २६ तट्ठवे, २७ भूमहे २८ रिसभ २९ सव्वट्ठसिद्ध ३० रक्खसे ।

दशम प्राभृत

[चौदहवा प्राभृतप्राभृत]

दिवसराईण णामाइ—

४८ प ता कहं ते दिवसा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तंजहा पडिवया दिवसे, बितिया दिवसे, तइया दिवसे, चउत्थी दिवसे, पंचमी दिवसे, छट्ठी दिवसे, सत्तमी दिवसे, अट्ठमी दिवसे, नवमी दिवसे, दसमी दिवसे, एक्कारसी दिवसे, बारसी दिवसे, तेरसी दिवसे, चउद्दसी दिवसे, पण्णरसे दिवसे,

ता एएसि णं पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—

गाहाओ —

१ पुव्वंगे, २ सिद्धमणोरमे, य तत्तो, ३ मणोहरो चेव ।
४ जसभद्दे, ५ जसोधर, ६ सव्वकामसमिद्धे ति य ॥१॥
७ इंदे मुद्धाभिसित्ते य, ८ सोमणस, ९ धणंजए य बोद्धव्वे ।
१० अत्थसिद्धे, ११ अभिजाए, १२ अच्चासणे, १३ सतंजए ॥२॥
१४ अग्गिवेसे, १५ उवसमे, दिवसाणं णामधेज्जाइं ॥

प ता कहं ते राईओ पण्णत्ताओ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस पण्णरस राईओ पण्णत्ताओ, तंजहा— पडियाराई, बितियाराई, ततीयाराई, चउत्थीराई, पंचमीराई, छट्ठीराई, सत्तमीराई, अट्ठमीराई, नवमीराई, दसमीराई, एक्कारसीराई, बारसीराई, तेरसीराई, चउद्दसीराई, पण्णरसीराई,

ता एयासिणं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—

गाहाओ —

१ उत्तमा य, २ सुणक्खत्ता, ३ एलावच्चा, ४ जसोधरा ॥
५ सोमणसा चेव तहा, ६ सिरिसंभूता य बोद्धव्वा ॥१॥
७ विजया य, ८ वेजयंती, ९ जयंति, १० अपराजिया य, ११ गच्छा य ।
१२ समाहारा चेव तहा, १३ तेया य तहा य, १४ अतितेया ॥२॥
१५ देवाणंदाणिरती, रयणीणं णामधेज्जाइं ॥



दशम प्राभृत

[पन्द्रहवां प्राभृतप्राभृत]

तिहीण णामाइ

४९ प ता कह ते तिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमा दुविहा तिही पण्णत्ता, त जहा—१ दिवसतिही, २ राईतिही य,

प ता कह ते दिवसतिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगमेगस्स ण पक्खस्स पण्णरस पण्णरस दिवसतिही पण्णत्ता त जहा—

१ णदे, २ भद्दे, ३ जए, ४ तुच्छे, ५ पुण्णे

पक्खस्स पचमी,

पुणरवि—६ णदे, ७ भद्दे, ८ जए, ९ तुच्छे, १० पुण्णे

पक्खस्स दसमी,

पुणरवि—११ णदे, १२ भद्दे, १३ जए, १४ तुच्छे, १५ पुण्णे

पक्खस्स पण्णरस,

एव ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसि दिवसाण ।

प ता कह ते राईतिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगमेगस्स ण पक्खस्स पण्णरस राईतिही पण्णत्ता त जहा—

१ उग्गवई, २ भोगवई, ३ जसवई, ४ सव्वसिद्धा, ५ सुहणामा,

पुणरवि—६ उग्गवई, ७ भोगवई, ८ जसवई, ९ सव्वसिद्धा, १० सुहणामा,

पुणरवि—११ उग्गवई, १२ भोगवई, १३ जसवई, १४ सव्वसिद्धा, १५ सुहणामा,

एए तिगुणा तिहीओ सव्वेसि राईण ॥



दशम प्राभृत

[सोलहवा प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताण गोत्ता

५० प ता कह ते गोत्ता ? आहिए ति वएज्जा ।

प १ ता एएसिण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण—
अभियी णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ ता मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते ।

प २ सवणे णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ सखायणसगोत्ते पण्णत्ते ।

प ३ धणिट्ठा णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ अग्गितावसगोत्ते पण्णत्ते,

प ४ सतभिसया णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ कण्णलोयणसगोत्ते पण्णत्ते,

प ५ पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ जोउकण्णियसगोत्ते पण्णत्ते,

प ६ उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ धनजयसगोत्ते पण्णत्ते,

प ७ रेयई णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ पुस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प ८ अस्सिणी णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ अस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प ९ भरणी णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ भग्गवेससगोत्ते पण्णत्ते,

प १० कत्तिया णक्खत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?

उ अग्गिवेससगोत्ते पण्णत्ते,

प १९ रोहिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ गोतमसगोत्ते पण्णत्ते,

प १२ सठाणा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ भारद्दायसगोत्ते पण्णत्ते,

प १३ अद्दा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ लोहिच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १४ पुणव्वसु णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ वासिट्ठसगोत्ते पण्णत्ते,

प १५ पुस्से णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ उज्जायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १६ अस्सेसा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ मडव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १७ मघा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ पिंगायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १८ पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ गोवल्लायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प १९ उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ कासवगोत्ते पण्णत्ते,

प २० हत्थे णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ कोसियगोत्ते पण्णत्ते,

प २१ चित्ता णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ दब्भियायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २२ साई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ चामरच्छसगोत्ते पण्णत्ते,

प २३ विसाहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ सुंगायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २४ अणुराहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ गोलव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २५ जेट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ तिगिच्छायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २६ मूले णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ कच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २७ पुव्वासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ वज्झियायणसगोत्ते पण्णत्ते,

प २८ उत्तरासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ वग्घावच्चसगोत्ते पण्णत्ते,[1]



---

१ प एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिइणक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते,
गहाओ—
१ मोग्गलायण २ संखायणे अतह, ३ अग्गभाव, ४ कण्णिल्ले ।
तत्तो य ५ जाउकण्णे, ६ धणंजए चेव बोद्धव्वे ॥१॥
७ पुस्सायणे य, ८ अस्सायणे य, ९ भग्गवेसे य, १० अग्गिवेसे य ।
११ गोयम, १२ भारद्दाए १३ लोहिच्चे चेव, १४ वासिट्ठे ॥२॥
१५ ओमज्जायण, १६ मंडव्वायणे य, १७ पिंगायण य, १८ गोवल्ले ॥
१९ कासव, २० कोसिय, २१ दब्भिय, २२ वामरच्छा य २३ सुंगा य ॥३॥
२४ गोलव्वायण, २५ तेगिच्छायणे य २६ कच्चायण हवइ मूले ॥
२७ तत्तो य वज्झियायण, २८ वग्घावच्चे य गोत्ताइं ॥ ४॥ —जंबु वक्ष ७, सु १६०

दशम प्राभृत

[सत्तरहवा प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं भोयणं कज्जसिद्धी य

५१ प. ता कहं ते भोयणा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं मज्झे -

१ कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधेंति,

२ रोहिणीहिं वसभ मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

३ मिगसिरे णं (सठाणाहि) मिग मंसं[1] भोच्चा कज्जं साधेंति

४ अद्दाहिं णवणीएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

५ पुणव्वसुणाऽथ घएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

६ पुस्से णं खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

७ अस्सेसाए दीवग मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

८ महाहिं कसोंति भोच्चा कज्जं साधेंति,

९ पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेढक मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१० उत्तराहिं फग्गुणीहिं णक्खी-मंसं भोच्चा कज्जं साधेंति,

११ हत्थेणं वत्थाणीएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१२ चित्ताहिं मुग्ग सूवेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१३ साइणा फलाइं भोच्चा कज्जं साधेंति ।

१४ विसाहाहिं आसितियाओ भोच्चा कज्जं साधेंति,

१५ अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१६ जेट्ठाहिं कोलट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

१७ मूलेणं मूलापन्नेणं भोच्चा कज्जं साधेंति,

---

१ रोहिणीहिं वसभ मंस (वभगमंस) भोच्चा कज्जं साधेंति
आ. स. समिति से प्रकाशित प्रति के पृष्ठ १५१ पर (पाठान्तर) है ।

१८ पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलग-सरीर भोच्चा कज्ज साधेंति,

१९ उत्तराहिं आसाढाहिं विल्लेहिं भोच्चा कज्ज साधेंति,

२० अभीयिणा पुप्फेहिं भोच्चा कज्ज साधेंति,

२१ सवणेण खीरेण भोच्चा कज्ज साधेंति,

२२ धणिट्ठाहिं जूसेण भोच्चा कज्ज साधेंति,

२३ सतभिसयाए तुवरीओ भोच्चा कज्ज साधेंति,

२४ पुव्वाहिं पुट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भोच्चा कज्ज साधेंति,

२५ उत्तराहिं पुट्ठवयाहिं वराहमस भोच्चा कज्ज साधेंति,

२६ रेवतीहिं जलयर-मस भोच्चा कज्ज साधेंति,

२७ अस्सिणीहिं तित्तिर मस वट्टकमस वा भोच्चा कज्ज साधेंति,

२८ भरणीहिं तल (तिल) तदुलक भोच्चा कज्ज साधेंति ।[1] 

---

१ कुल्माषास्तिलतण्डुलानपि तथा माषाश्च गव्य दधि त्वाज्य दुग्धमयैणमांसमपर तस्यैव रक्तं तथा ।
तद्वत्पायसमेव चापपलल मार्गं च शाण तथा षाष्टिक्य च प्रियङ्ग्वपूपमथवा चित्राण्डजान् सत्फलम् ॥८४॥
कौर्म सारिसगोधिक च पलल शाल्य हविष्य हयात्ते स्यात्कृसरान्नमुद्गमपि वा पिष्ट यवानां तथा ।
मत्स्यान्न खलु चित्रिताम्नमथवा दध्यन्नमेव क्रमाद्भुक्त्वाऽभ्यमिदं विधाय मतिमान् भक्षत्यथ नौरयद् ॥८५॥
— मुहूर्तचिन्तामणि यात्राप्रकरण

वस्तुत इदं सप्तदश प्राभृतप्राभृत न भगवता प्रतिपादित किन्तु केनाप्यत्र प्रक्षिप्तमिति प्रतिभाति, यत भाषाशैली भगवता सम्यते, यतोऽत्र सूत्रे कुत्रचित् 'कत्तियाहिं रोहिणीहिं, महाहिं' इत्यादि तृतीयाबहुवचनं लभ्यते कुत्रचिच्च 'पुणव्वसुणा, पूसेण, महाए' इत्यादि तृतीयैकवचनं लभ्यते। अन्यच्च 'भोच्चाकज्जं' इति कुत्रचित्तृतीया कुत्रचित् द्वितीया च। यथा — दहिणा भोच्चा, णवणीएण भोच्चा, खीरेण भोच्चा' इति तृतीया कुत्रचिच्च यत्र मांसविषयकथन तत्र द्वितीया, यथा —' वसभमसं भोच्चा, मिगमसं भोच्चा, दीवगमसं भोच्चा' इत्यादि एवमव्यवस्थितकल्पनेन भाषितं नैतद् भगवता प्रज्ञप्तमिति। अन्यच्च कत्तियादिनक्षत्रेषु स्थलचर-जलचर खेचर-प्राणिनां मांसभक्षण कार्यसिद्धौ कारणत्वेन प्रतिपादितं तत्तु नितान्तमसङ्गतमेव, यत षट्कायप्रति-पालकस्य षट्कायरक्षणोपदेशतत्परस्य च भगवतो मुखान्नैव मांसभक्षणविधिमर्हितुमर्हति, शास्त्रेषु कुत्रापि नैतादृशी वाणी भगवत समुपलभ्यतेऽतो निश्चीयते-नैतद् भगवदुपदेशविषयकमिति। अस्तु, अन्यदपि एतद्विषये कारणं श्रूयताम्—शास्त्रेषु सर्वत्र नक्षत्राणां गणना अभिजिन्नक्षत्रादारभ्यैव कृता युगस्यादावभिजित स्थितत्व सद्भावात्। अत्रैव शास्त्रे पूर्व दशमप्राभृतस्य प्रथमे प्राभृतप्राभृते प्रारम्भेऽपि सूत्रमिदम्—

"ता कह ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाए आहिएति वएज्जा, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु ता सव्वेवि णं णक्खत्ता, कत्तियादिया भरणीपज्जवसाणा एगे एवमाहंसु ॥१॥ इयमन्यतीर्थिकानां प्रथमा प्रतिपत्ति एते कृत्तिकादीनि भरणीपर्यवसानानि नक्षत्राणि मन्यन्ते, एवमन्यतीर्थिकानां पञ्च प्रतिपत्तय सन्ति। तत्र द्वितीया — मघादिकानि अश्लेषापर्यवसानानि सर्वाणि नक्षत्राणि इति

दशम प्राभृत

[अठारहवां प्राभृतप्राभृत]

एगे जुगे आदिच्च-चंदचारसंखा–

५२ प. क–ता कहं ते चारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. तत्थ खलु इमा दुविहा चारा पण्णत्ता, तं जहा— १ आदिच्चचारा य, २ चंदचारा य।

प. क–ता कहं ते चंदचारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पंच संवच्छरिए णं जुगे,

१ अभीइ णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ,

२ सवणे णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ, एवं जाव,

३-२८ उत्तरासाढा णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ,

प. ख–ता कहं ते आइच्चचारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पंचसंवच्छरिए णं जुगे,

१ अभीई णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ, एवं जाव,

२-२८ उत्तरासाढा णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ।



---

२ तृतीया—धनिष्ठादीनि श्रवणपर्यवसानानि इति ३, चतुर्थी अश्विन्यादीनि रेवतीपर्यवसानानि सर्वाणि नक्षत्राणि ४, एके भरण्यादिकानि अश्विनी पर्यवसानानि इति कथयन्ति। ५। एता पञ्चापि प्रतिपत्तयो मिथ्यारूपा इति कथयित्वा भगवान् स्वमतं प्रदर्शयति—

"वयं पुण एवं वयामो—सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिई आइया उत्तरासाढापज्जवसाणा पण्णत्ता, तंजहा—अभिई सवणो जाव उत्तरासाढा॥" इति।

अस्य मलयगिरिसूरिणा कृता टीका यथा—

"युगस्य चादि प्रवर्तते श्रावणमासि बहुलपक्षे प्रतिपदि तिथौ बालवकरणे अभिजिन्नक्षत्रे चन्द्रेण सह योगमुपागच्छति (इति)। तथा चोक्तम्-ज्योतिष्करण्डके—

सावण बहुलपडिवए बालवकरणे अभिईनक्खत्ते।

सव्वत्थ पढमसमये जुगस्स आइं वियाणाहि॥ १॥ इति

'सव्वत्थ' सर्वत्रेति भरतैरवत महाविदेहे च। इत्थं सर्वेषामपि कालविशेषाणामादौ चन्द्रयोगमधिकृत्याभिजिन्नक्षत्रस्य वर्तमानत्वादभिजिदादीनि नक्षत्राणि प्रज्ञप्तानि। इति टीका।

अत्र कृत्तिकातो भरणीपर्यवसानानि नक्षत्राणि प्रथमाध्ययनेऽपि — — — — प्राभृतप्राभृते दृश्यते। नेदं अन्यथो मतभिन्नस्य — — — — — — प्राभृतप्राभृते — — प्ररूपणा न भवितुमर्हतीत्यलं विस्तरेणेति।

—चन्द्रप्रज्ञप्तिप्रकाशिका टीका

दशम प्राभृत

[उन्नीसवा प्राभृतप्राभृत]

एगसवच्छरस्स मासा–

५३ प ता कह ते मासा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता एगमेगस्स ण सवच्छरस्स बारस मासा पण्णत्ता,

तेसि च दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता, तजहा - १ लोइया, २ लोउत्तरिया य ।

तत्थ लोइया णामा —

१ सावणे, २ भद्दवए, ३ आसोए, ४ कत्तिए, ५ मग्गसिरे, ६ पोसे, ७ माहे, ८ फग्गुणे, ९ चेत्ते, १० वेसाहे, ११ जेट्ठे, १२ आसाढे ।

लोउत्तरिया णामा —

गाहाओ –

१ अभिणदणे, २ सुपइट्ठे य, ३ विजए, ४ पीइवद्धणे ।

५ सेज्जसे य, ६ सिवेया वि, ७ सिसिरे वि य, ८ हेमव ॥१॥

९ नवमे वसतमासे, १० दसमे कुसुमसभवे ।

११ एकादसमे णिदाहो, १२ वणविरोही य बारसे[1] ॥२॥



१ जब दशा ७, सु १५३

दशम प्राभृत
[बीसवां प्राभृतप्राभृत]

संवच्छराणं संखा लक्खणं च—

५४ प. ता कइ णं संवच्छरे ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ. ता पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तंजहा—१ णक्खत्त-संवच्छरे, २ जुग संवच्छरे, ३ पमाण-संवच्छरे ४ लक्खण-संवच्छरे, ५ सणिच्छर संवच्छरे।[1]

णक्खत्तसंवच्छरस्स भेया तस्स कालपमाणं च—

५५ १ फ. ता णक्खत्तसंवच्छरे णं दुवालसविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ सावणे, २ भद्दवए, ३ आसोए, ४ कत्तिए, ५ मग्गसिरे, ६ पोसे, ७ माहे, ८ फग्गुणीए, ९ चित्ते, १० वइसाहे, ११ जेट्ठे, १२ आसाढे।

२ ख.—जं वा बहस्सई महग्गहे दुवालसेहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ।

जुगसंवच्छरस्स भेया कालपमाणं च—

५६ २ ता जुगसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ चंदे, २ चंदे, ३ अभिवड्ढिए, ४ चंदे, ५ अभिवड्ढिए[2]।

१ ता पढमस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

२ दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

३ तच्चस्स णं अभिवड्ढिय संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता,

४ चउत्थस्स णं चंद संवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पण्णत्ता,

५ पंचमस्स णं अभिवड्ढिय संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता,
एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसए भवतीतिमक्खायं।

३ पमाणसंवच्छरस्स भेया—

५७ ५८ ता पमाणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ णक्खत्ते, २ चंदे, ३ उडू, ४ आइच्चे, ५ अभिवड्ढिए,[3]

---

१ ठाणं ५ उ ३ सु ४६०
२ ठाणं ५ उ ३ सु ४६०
३ " " "

४ लक्खणसंवच्छरस्स भेया—

ता लक्खणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—१ णक्खत्ते, २ चंदे, ३ उडू, ४ आइच्चे, ५ अभिवड्ढिए।

५ सणिच्छरसंवच्छर भेया—

क ता सणिच्छरसंवच्छरे णं अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तंजहा—१ अभियी, २ सवणे, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वापोट्ठवया, ६ उत्तरापोट्ठवया, ७ रेवइ, ८ अस्सिणी, ९ भरणी, १० कत्तिय, ११ रोहिणी, १२ संठाणा, १३ अद्दा, १४ पुणव्वसू, १५ पुस्से, १६ अस्सेसा, १७ महा, १८ पुव्वाफग्गुणी, १९ उत्तराफग्गुणी, २० हत्थे, २१ चित्ता, २२ साई, २३ विसाहा, २४ अणुराहा, २५ जेट्ठा, २६ मूले, २७ पुव्वासाढा, २८ उत्तरासाढा।

ख जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ।

गाहाओ —

१ णक्खत्तसंवच्छरलक्खणं —

समगं णक्खत्ता जोयं जोएंति, समगं उडू परिणमंति॥
णच्चुण्हं णाइसीए, बहु उदए होइ णक्खत्ते॥ १॥

२ चंदसंवच्छरलक्खणं —

ससि समग पुण्णमासिं, जोइ ता विसमचारि णक्खत्ता॥
कडुओ बहु उदगओ, तमाहु संवच्छरं चंदं॥ २॥

३ उडु (कम्म) संवच्छरलक्खणं —

विसमं पवालिणो परिणमंति, अणउसु दिंति पुप्फफलं॥
वासं न सम्मं वासइ, तमाहु संवच्छरं कम्मं॥ ३॥

४ आइच्चसंवच्छरलक्खणं —

पुढवि-दगाणं च रसं, पुप्फ-फलाणं च देइ आइच्चे॥
अप्पेण वि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सस्सं॥ ४॥

५ अभिवुड्ढियसंवच्छरलक्खणं —

आइच्चतेयतविया, खण-लव दिवसा उऊ परिणमंति॥
पूरेइ रेणु-थलयाइं, तमाहु अभिवड्ढियं जाण[2]॥ ५॥

---

१ ठाणं ५, उ ३, सु ४६०
२ ठाणं ५, उ ३, सु ४६०

दशम प्राभृत

[इक्कीसवां प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताणं दाराइं—

५९ प ता कहं ते जोइसस्स दारा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता अस्सिणीयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता भरणीयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहंसु।

१ तत्थ णं जे ते एवमाहंसु —

(क) ता कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—

१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३, संठाणा, ४ अद्दा, ५ पुणव्वसू, ६ पुस्सो, ७ अस्सिलेसा।

(ख) महादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—

१ महा, २ पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी, ४ हत्थो, ५ चित्ता, ६ साई, ७ विसाहा,

(ग) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा —

१ अणुराधा, २ जेट्ठा, ३ मूलो, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६ अभीइ, ७ सवणो,

(घ) धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—

१ धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वापोट्ठवया, ४ उत्तरापोट्ठवया, ५ रेवई, ६

अस्सिणी, ७ भरणी।[१]

२ तत्थ ण जे ते एवमाहंसु—

(क) ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—

१ महा, २ पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी, ४ हत्थो, ५ चित्ता, ६ साती, ७ विसाहा,

(ख) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—

१ अणुराधा, २ जेट्ठा, ३ मूले, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६ अभिई ७ सवणे,

(ग) धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा -

१ धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वापोट्ठवया, ४ उत्तरापोट्ठवया, ५ रेवई, ६ अस्सिणी, ७ भरणी,

(घ) कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—

१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ संठाणा, ४ अद्दा, ५ पुणव्वसू, ६ पुस्सो, ७ अस्सेसा,

३ तत्थ ण जे ते एवमाहंसु -

(क) ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता ते एवमाहंसु, तंजहा—

१ धणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वापोट्ठवया, ४ उत्तरापोट्ठवया, ५ रेवई, ६ अस्सिणी, ७ भरणी,[१]

(ख) कत्तियादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—

१ कत्तिया, २ रोहिणी, ३ संठाणा, ४ अद्दा, ५ पुणव्वसू, ६ पुस्सो, ७ अस्सेसा,

(ग) महादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—

१ महा, २ पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी, ४ हत्थो, ५ चित्ता ६ साई, ७ विसाहा,

(घ) अणुराधादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा

१ अणुराहा, २ जेट्ठा, ३ मूलो, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६ अभीयी, ७ सवणो।

---

१ (क) कत्तियाईया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता,
(ख) महाईया सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता
(ग) अणुराहाईया सत्त नक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता,
(घ) धणिट्ठाइया सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता। —सम० ७ सु० ८, ९, १०, ११

ये समवायांग के जो सूत्र यहाँ लिए गए हैं वे अन्य मान्यता के सूचक हैं किन्तु इन सूत्रों में ऐसा कोई वाक्य नहीं है जिससे सामान्य पाठक इन सूत्रों को अन्य मान्यता के जान सके। यद्यपि जैनागमों में नक्षत्र-मण्डल का प्रथम नक्षत्र अभिजित है और अन्तिम नक्षत्र उत्तराषाढा है पर इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न कालों में परिवर्तित नक्षत्रमण्डलों के भिन्न भिन्न क्रमों का परिज्ञान ग्रन्थों के स्वाध्याय के बिना कैसे सम्भव हो?

४ तत्थ ण जे ते एवमाहंसु—

(क) ता अस्सिणी, आदीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एते एवमाहंसु, तंजहा
१ अस्सिणी, २ भरणी, ३ कत्तिया, ४ रोहिणी, ५ संठाणा, ६ अद्दा, ७ पुणव्वसू,

(ख) पुस्सादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ पुस्सा, २ अस्सेसा, ३ महा, ४ पुव्वाफग्गुणी, ५ उत्तराफग्गुणी, ६ हत्थो, ७ चित्ता,

(ग) साइयाइया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ साती, २ विसाहा, ३ अणुराहा, ४ जेट्ठा, ५ मूलो, ६ पुव्वासाढा, ७ उत्तरासाढा,

(घ) अभिइयादिया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अभिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वभद्दवया, ६ उत्तरभद्दवया, ७ रेवई,

५ तत्थ ण जे ते एवमाहंसु—

(क) ता भरणियादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तंजहा—
१ भरणी, २ कत्तिया, ३ रोहिणी, ४ संठाणा, ५ अद्दा, ६ पुणव्वसू, ७ पुस्सो,

(ख) अस्सेसादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अस्सेसा, २ महा, ३ पुव्वाफग्गुणी, ४ उत्तराफग्गुणी, ५ हत्थो, ६ चित्ता, ७ साई,

(ग) विसाहादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ विसाहा, २ अणुराहा, ३ जेट्ठा, ४ मूलो, ५ पुव्वासाढा, ६ उत्तरासाढा, ७ अभिई,

(घ) सवणादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तंजहा
१ सवणो, २ धणिट्ठा, ३ सतभिसया, ४ पुव्वापोट्ठवया, ५ उत्तरापोट्ठवया, ६ रेवई, ७ अस्सिणी।

वयं पुण एवं वयामो—

(क) ता अभीइयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अभिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वापोट्ठवया, ६ उत्तरापोट्ठवया, ७ रेवई,

(ख) अस्सिणीयादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तंजहा—
१ अस्सिणी, २ भरणी, ३ कत्तिया, ४ रोहिणी, ५ संठाणा, ६ अद्दा ७ पुणव्वसू,

दशम प्राभृत

[बावीसवां प्राभृतप्राभृत]

नक्खत्ताण सव्वपरूवणं—

६० प ता कह ते णक्खत्तविजए ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए जाव एगं जोयणसयसहस्सं आयाम विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं, सोलससहस्साइं, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे, अट्ठावीसं च धणुसयं, तेरस अंगुलाइं, अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

क ता जंबुद्दीवे णं दीवे—

दो चंदा १ पभासेंसु वा, २ पभासेंति वा, ३ पभासिस्संति वा,

ख दो सूरिया, १ तविंसु वा, २ तवेंति वा, ३ तविस्संति वा,

ग छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं १ जोएंसु वा, २ जोएंति वा, ३ जोइस्संति वा, तं जहा—

१ दो अभीई, २ दो सवणा, ३ दो धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ दो पुव्वापोट्ठवया, ६ दो उत्तरापोट्ठवया, ७ दो रेवई, ८ दो अस्सिणी, ९ दो भरणी, १० दो कत्तिया, ११ दो रोहिणी, १२ दो संठाणा, १३ दो अद्दा, १४ दो पुणव्वसू, १५ दो पुस्सा, १६ दो अस्सेसाओ, १७ दो महाओ, १८ दो पुव्वाफग्गुणी, १९ दो उत्तराफग्गुणी, २० दो हत्था, २१ दो चित्ता, २२ दो साई, २३ दो विसाहा, २४ दो अणुराधा, २५ दो जेट्ठा, २६ दो मूला, २७ दो पुव्वासाढा, २८ दो उत्तरासाढा ।

ता एएसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

क अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

ख अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

ग अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

घ अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति,

प क ता एएसि छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—

कयरे णक्खत्ता जे णं णवमुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?

ख कयरे णक्खत्ता जे ण पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धि जोय जोएंति ?

ग कयरे णक्खत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोय जोएंति ?

घ कयरे णक्खत्ता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोय जोएंति ?

उ क ता एएसि ण छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धि जोय जोएंति, ते ण दो अभीई,

ख तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धि जोग जोएंति, ते ण बारस, तजहा—
१ दो सतभिसया, २ दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४ दो असेसा, ५ दो साती, ६ दो जेट्ठा।

ग तत्थ जे ते णक्खत्ता, जे ण तीस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोग जोएंति, ते ण तीस, तजहा—
१ दो सवणा, २ दो धणिट्ठा, ३ दो पुव्वाभद्दवया, ४ दो रेवई, ५ दो अस्सिणी, ६ दो कत्तीया, ७ दो सठाणा, ८ दो पुस्सा, ९ दो महा, १० दो पुव्वाफग्गुणी, ११ दो हत्था, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराधा, १४ दो मूला, १५ दो पुव्वासाढा,

घ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोग जोएंति ते ण बारस, त जहा—
१ दो उत्तरापोट्ठवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुणव्वसू, ४ दो उत्तराफग्गुणी, ५ दो विसाहा, ६ दो उत्तरासाढा।

क ता एएसि ण छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—
अत्थि णक्खत्ता जे ण चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएंति, ते ण दो अभीयी,

ख अत्थि णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एगवीस च मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएंति,

ग अत्थि णक्खत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएंति,

घ अत्थि णक्खत्ता जे ण वीस अहोरत्ते तिन्नि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएंति।

प क ता एएसि ण णक्खत्ताण—
कयरे णक्खत्ता जे ण चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएंति ?

ख कयरे णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते एगवीस च मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएंति ?

ग कयरे णक्खत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएंति ?

घ कयरे णक्खत्ता जे ण वीस अहोरत्ते, तिन्नि य मुहुत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएंति ?

उ क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति, ते ण दो अभीई,

ख तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एगवीस च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति, ते ण बारस तजहा—

१ दो सतभिसया, २ दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४ दो अस्सेसा, ५ दो साती, ६ दो जेट्ठा,

ग तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति, ते ण तीस, तजहा—

१ दो सवणा, २ दो धणिट्ठा, ३ दो पुव्वाभद्दवया, ४ दो रेवती, ५ दो अस्सिणी, ६ दो कत्तिया, ७ दो सठाणा, ८ दो पुस्सा, ९ दो महा, १० दो पुव्वाफग्गुणी, ११ दो हत्था, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराधा, १४ दो मूला, १५ दो पुव्वासाढा,

घ तत्थ जे ते णक्खत्ता जे ण वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति, ते ण बारस, तजहा—

१ दो उत्तरापोट्ठवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुणव्वसू, ४ दो उत्तराफग्गुणी ५ दो विसाहा, ६ दो उत्तरासाढा।

णक्खत्तमडलाण सीमाविक्खभो

६१ प ता कह ते सीमाविक्खभे ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
अत्थि णक्खत्ता, जेसि ण छ सया तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-विक्खभो,

ख अत्थि णक्खत्ता, जेसि ण सहस्स पचोत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा विक्खभो

ग अत्थि णक्खत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा विक्खभो,

घ अत्थि णक्खत्ता जेसि ण तिसहस्स पचदसुत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा विक्खभो,

प क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
कयरे णक्खत्ता जेसि ण छसया, तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-विक्खभो ?

ख कयरे णक्खत्ता जेसि ण सहस्स पचोत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-विक्खभो ?

ग कयरे णक्खत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-विक्खभो ?

घ कयरे णक्खत्ता जेसि ण तिसहस्स पचदसुत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-विक्खभो ?

उ क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि ण छ सया तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण सीमा-विक्खभो, ते ण दो अभिई।

ख तत्थ जे ते णक्खत्ता, जेसि ण सहस्स पचुत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण सीमा-विक्खभो, ते ण बारस, तजहा—

१ दो सतभिसया, २ दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४ दो अस्सेसा, ५ दो साती, ६ दो जेट्ठा।

ग तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण सीमाविक्खभो, ते ण तीस, तजहा—

१ दो सवणा, २ दो धणिट्ठा, ३ दो पुव्वाभद्दवया, ४ दो रेवई, ५ दो अस्सिणी, ६ दो कत्तिया, ७ दो सठाणा, ८ दो पुस्सा, ९ दो महा, १० दो पुव्वाफग्गुणी, ११ दो हत्था, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराहा, १४ दो मूला, १५ दो पुव्वासाढा,

घ तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसि ण तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण सीमाविक्खभो, ते ण बारस, तजहा—

१ दो उत्तरापोट्ठवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुणव्वसू, ४ दो उत्तराफग्गुणी, ५ दो विसाहा, ६ दो उत्तरासाढा,

णक्खत्ताण चदेण जोगो

६२ प क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
कि सया पादो चदेण सद्धि जोग जोएति ?

ख ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
कि सया साय चदेण सद्धि जोग जोएति ?

ग ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
कि सया दुहा पविसिय पविसिय चदेण सद्धि जोग जोएति ?

उ क ता एएसिण छप्पण्णाए णक्खत्ताण—
न कि पि त ज सया पादो चदेण सद्धि जोग जोएति,
ख न सया साय चदेण सद्धि जोग जोएति,
ग न सया दुहओ पविसित्ता पविसित्ता चदेण सद्धि जोग जोएति, णण्णत्य दोहि अभिईहि ।
ता एएण दो अभिई पायचिय पायचिय चोत्तालीस चोत्तालीस अमावास जोएति, णो चेव ण पुण्णमासिणि ।

चदस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो

६३ तत्य खलु इमाओ बावट्ठि पुण्णिमासीओ बावट्ठि अमावासाओ पण्णत्ताओ,
१ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?
उ जसि ण देससि चदे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएइ ताए तेण पुण्णिमासिणिट्ठाणाए[1] मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता, एत्य ण से चदे पढम पुण्णिमासिणि जोएइ,
२ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दोच्च पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?
उ जसि ण देससि चदे पढम पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए तेण पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण से चदे दोच्च पुण्णिमासिणि जोएइ,
३ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?
उ जसि ण देससि चदे दोच्च पुण्णिमासिणि जोएइ ताए ते ण पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण से चदे तच्च पुण्णिमासिणि जोएइ,
४ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?
उ जसि ण देससि चदे तच्च पुण्णमासिणि जोएइ ता पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता दोण्णि अट्ठासीए भागसए[2] उवाइणावेत्ता, एत्य ण से चदे दुवालसम पुण्णिमासिणि जोएइ,

---

१ तस्मात्पूर्णमासीस्थानात्-चरमद्वाषष्टितम-
पौर्णमासीपरिसमाप्तिस्थानात् परतो मण्डलं,
चतुर्विंशत्यधिकेन शतेन छित्त्वा विभज्य ॥

२ "दोण्णि अट्ठासीए भागसए" त्ति,
तृतीयस्या पौर्णमास्या परतो द्वादशी किल पौर्णमासी नवमी भवति,
ततो नवभिर्द्वात्रिंशतो गुणने द्वे शते अष्टाशीत्यधिके भवत ।

एव खलु एएण उवाएण ताए ताए पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता बत्तोस भागे उवाइणावेत्ता तसि तसि देससि त त पुण्णिमासिणि चदे जोएइ ।

५ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरम बावट्ठि पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जबुदीवस्स ण दीवस्स पाईण-पडिणाययाए उदीण-दाहिणययाए जीवाए मडल चउव्वीसेण सए ण छेत्ता दाहिणसि चउब्भागमडलसि सत्तावीस भागे उवाइणावेत्ता, अट्ठावीसइ भागे वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहि भागेहि दोहि य कलाहि पच्चत्थिमिल्ल चउब्भागमडल असपत्ते एत्थण चदे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएइ ।[1]

सूरस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो

६४ १ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता चउणवइ भागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से सूरिए पढम पुण्णिमासिणि जोएइ ।

२ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे पढम पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता दो चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से सूरिए दोच्च पुण्णिमासिणि जोएइ,

३ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे दोच्च पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल

---

१ "जबुद्दीवस्स णमित्यादि"
जम्बूद्वीपस्य णमिति वाक्यालकारे द्वीपस्योपरि प्राचीना प्राचीनतया,
इह प्राचीनग्रहणेनोत्तरपूर्वा (ईशान) गह्यते, अपाचीनग्रहणेन दक्षिणापरा, (नैऋत्य) ।
ततोऽयमर्थ पूर्वोत्तर-दक्षिणापरायतया, एवमुदीचि-दक्षिणायतया, पूर्व-दक्षिणोत्तरापरायतया जीवया प्रत्यचया दवरिकया इत्यर्थ ,
मण्डल चतुर्विशेन-चतुर्विशत्यधिकेन शतेन छित्वा विभज्य भूयश्चतुर्भिर्विभज्यते,
ततो दाक्षिणात्ये चतुर्भागमण्डले एकत्रिशद्भागप्रमाणे सप्तविंशतिभागानुपादायाष्टाविंशतितम च भाग विंशतिधा छित्वा तदगतानष्टादश—
भागानुपादाय शेषैस्त्रिभिर्भागैश्चतुष्कस्य भागस्य द्वाभ्यां कलाभ्यां,
पाश्चात्य चतुर्भागमण्डलमसप्राप्त अस्मिन् प्रदेशे चन्द्रो द्वाषष्टितमां चरमां पौर्णिमासीं परिसमापयति ।
—टीका

चउव्वीसेण सएण छेत्ता चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से सूरिए तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

४ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दुवालस पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे तच्च पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता अट्ठछत्ताले भागसए[1] उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से सूरिए दुवालसम पुण्णिमासिणि जोएइ,

एव खलु एएण उवाएण ताए ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्वीसे ण सएण छेत्ता चउणवइ चउणवइ भागे उवाइणावेत्ता[2], तसि तसि ण देससि त त पुण्णिमासि ण सूरे जोएइ,

५ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जबुद्दीवस्स ण दीवस्स पाईण-पडिणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता पुरत्थिमिल्लसि चउब्भागमडलसि सत्तावीस भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभाग वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहि भागेहि दोहि य कलाहि दाहिणिल्ल चउब्भागमडल असपत्ते एत्थ ण सूरिए चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएइ ।

चदस्स अमावासासु जोगो

६५ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे चरिम बावट्ठि अमावास जोएइ ताए अमावासट्ठाए मडल चउव्वीसे ण सएण छेत्ता बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से चदे पढम अमावास जोएइ,

---

१ "अट्ठछत्ताले भागसए" त्ति,
तृतीयस्याः पौर्णमास्याः परतो द्वादशी किल पौर्णमासी नवमी,
ततश्चतुर्नवतिर्नवभिर्गुण्यते, जातान्यष्टौ शतानि षट्चत्वारिंशदधिकानि ।

२ पाश्चात्ययुगचरमद्वाषष्टितमपौर्णमासीपरिसमाप्तिनिबन्धनात्
स्थानात् परतो मण्डलस्य चतुर्विंशत्यधिक शत प्रविभक्तस्य सत्कानां
चतुर्नवतिचतुर्नवतिभागानामतिक्रमे तस्याः तस्याः पौर्णमास्याः
परिसमाप्तिः, ततश्चतुर्नवतिर्द्विषष्ट्या गुण्यते, जाता यष्टा—
पञ्चाशदूनानि अष्टाविंशत्यधिकानि, तेषां चतुर्विंशत्यधिकेन शतेन भागो ह्रियते लब्धा
षट्चत्वारिंशत्सम्पूर्णमण्डलपरावर्ताः । —टीका

एव जेणेव अभिलावेण चदस्स पुण्णिमासिणीओ भणिआओ तेणेव अभिलावेण अमावासाओ भाणियव्वाओ, तजहा—विइया, तइया, दुवालसमी ।[१]

एव खलु एएण उवाएण ताए ताए अमावासाठाणाए मडल चउव्वीसे ण सएण छेत्ता बत्तीस बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता तसि तसि देससि त त अमावास चदेण जोएइ,

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण चरिम बावट्ठि अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएति, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता सोलस भागे ओसक्कावइत्ता, एत्थ ण से चदे चरिम बावट्ठि अमावास जोएइ ।

सूरस्स अमावासासु जोगो

९६ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम अमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावट्ठि अमावास जोएइ, ताए अमावाससठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता चउणउइभागे उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से सूरे पढम अमावास जोएइ,

एव जेणव अभिलावेण सूरियस्स पुण्गिमासिणीओ तेणेव अभिलावेण अमावासाओ भणियव्वाओ, तजहा—बिइया, तइया, दुवालसमी ।[२]

---

१ 'एवमित्यादि" एवमुक्तप्रकारेण येनैवाभिलापेन चन्द्रस्य पौणमास्यो भणितास्तेनवाभिलापेनामावास्या अपि भणितव्या, तद्यथा—द्वितीया, तृतीया, द्वादशी च ताश्चवम् ।

प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च अमावास चदे कसि देसमि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे पढम अमामास जोएइ ताओ ण अमावासट्ठाणाओ मडल चउवीसेण सएण छेत्ता, बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से चदे दोच्च अमावास जोएइ

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे दोच्च अमावास जोएइ, ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता, बत्तीस भाग उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से चदे तच्च अमावास जोएइ,

प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम अमावास चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि चदे अमावास जोएइ, ताओ ण अमावासट्ठाणाओ मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता, दोण्णि अट्ठासीए भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ ण चदे दुवालसम अमावास जोएइ,

२ एवमित्यादि एवमुक्तेन प्रकारेण तेमवाभिलापेन सूर्यस्य पौणमास्य उक्तास्तेनैवाभिलापेनामावास्या अपि वक्तव्या, तद्यथा—द्वितीया तृतीया द्वादशी च ताश्चवम् ।

प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च अमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे पढम अमावास जोएइ ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउवीसेण सएण छेत्ता चउणउई भागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण सूरे दोच्च अमावास जोएइ

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च अमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण दससि दोच्च अमावास जोएइ ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउवीसेण सएण छेत्ता चउणउइ भागे उवाइणावत्ता एत्थ ण सूरे तच्च अमावास जोएइ,

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम सूरे कसि दससि जोएइ ?

उ ता जसि ण दससि सूरे तच्च अमावास जाएइ ताओ अमावासट्ठाणाओ मडल चउव्वीसण सएण छेत्ता अट्ठ छत्ताले भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ ण से सूरे दुवालसम अमावास जाएइ ।

एव खलु एएण उवाएण ताए ताए अमावासट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता, चउणउइ चउणउइ भागे उवाइणावेत्ता तसि तसि देससि स त अमावास सूरिए जोएइ।

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण चरिम बावट्ठि अमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावट्ठि अमावास जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्वीसे ण सएण छेत्ता सत्तालीस भागे ओसक्कावइत्ता, एत्थ ण से सूरिए चरिम बावट्ठि अमामास जोएइ।

पुण्णिमासिणिसु चदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताण जोगो

६७ १ क प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम पुण्णिमासिणि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता धणिट्ठाहि, धणिट्ठाण तिण्णि मुहुत्ता एगूणवीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठि चुण्णिया भागा सेसा,

ख प त समय च ण सूरिए केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुव्वफग्गुणीहि, पुव्वफग्गुणीण अट्ठावीस मुहुत्ता अट्ठतीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता बत्तीस चुण्णिया भागा सेसा।

२ क प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दोच्च पुण्णिमासिणि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहि पोट्ठवयाहि, उत्तराण पोट्ठवयाण सत्तावीस मुहुत्ता चोद्दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागासेसा,

ख प त समय च ण सूरिए केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहि फग्गुणीहि, उत्तराफग्गुणीण सत्तमुहुत्ता तेत्तीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, एक्कवीस चुण्णिया भागा सेसा।

३ क प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सिणीहि, अस्सिणीण एक्कवीस मुहुत्ता नव य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवट्ठि चुण्णिया भागा सेसा,

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता चित्ताहि, चित्ताण एक्को मुहुत्तो अट्ठावीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, तीस चुण्णियाभागा सेसा।

४ क प ता एएसिण, पचण्ह सवच्छराण दुवालसम पुण्णिमासिणि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहि आसाढाहि, उत्तराण च आसाढाण छव्वीस मुहुत्ता छव्वीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, चउप्पण्ण चुण्णिया भागा सेसा,

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणब्वसुणा पुणब्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीस चुण्णियाभागा सेसा ।

५ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरम बावट्ठि पुण्णिमासिणि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहि आसाढाहि उत्तराण आसाढाण चरमसमए ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुस्से ण पुस्सस्स एगूणवीस मुहुत्ता तेतालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेतीस चुण्णिया भागा सेसा ।

अमावासासु चदस्स य सूरस्स य णक्खत्ताण जोगो

६८ १ क प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सेसाहि चेव अस्सेसाण एक्के मुहुत्ते चत्तालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सेसाहि चेव अस्सेसाण एक्को मुहुत्तो चत्तालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

२ क प ताएएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहि चेव फग्गुणीहि उत्तराण फग्गुणीण चत्तालीस मुहुत्ता पणतीस बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, पण्णट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहि चेव फग्गुणीहि उत्तराण फग्गुणीण जहेव चदस्स ।

३ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता हत्थेण चेव हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता हत्थेण चेव हत्थस्स जहेव चदस्स ।

४ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ अद्दाहिं चेव अद्दाण चत्तारि मुहुत्ता, दस य बावट्ठि भागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्ण चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अद्दाहिं चेव अद्दाण जहा चदस्स ।

५ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरिम बावट्ठि अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा चेव पुणव्वसुस्स बावीस मुहुत्ता बायालीस च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स जहा चदस्स ।

चदेण य सूरेण य णक्खत्ताण जोगकाल

६९ १ क ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ अट्ठ एगूणवीसाइ मुहुत्तसयाइ चउवीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, बावट्ठि चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से चदे अण्णेण सरिसएण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ अण्णसि देससि ।

ख ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ, जसि देससि से ण इमाइ सोलस अट्ठतीस मुहुत्तसयाइ अउणापण्ण च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता, पण्णट्ठि चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता, पुणरवि से ण चदे तेण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ, अण्णसि देससि ।

ग ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ, जसि देससि से ण इमाइ चउपण्ण-मुहुत्त सहस्साइ णव य मुहुत्तसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से चदे अण्णेण तारिसएण णक्खत्तेण जोग जोएइ, तसि देससि,

घ ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ एगलक्ख नव य सहस्स अट्ठ य मुहुत्तसए उवाइणावेत्ता पुणरवि से चदे तेण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ, तसि देससि ।

२ क ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ तिण्णि छावट्ठाइ राइदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरिए अण्णेण तारिसएण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ त देससि ।

ख ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ तंसि देससि से ण इमाइ सत्त दुतीस राइदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे अण्णेण चेव तारिसएण णक्खत्तेण जोग जोएइ, तसि देससि ।

ग ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ, जसि देससि से ण इमाइ अट्ठारस तीसाइ राइदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि सूरे तेण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ, तसि देससि ।

घ ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ छत्तीस सट्ठाइ राइदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ तसि देससि ।

चद-सूर-गह-णक्खत्ताण गइसमावण्णत्त

७० ता जया ण इमे चदे गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इयरेऽवि चदे गइसमावण्णए भवइ ।

जया ण इयरे चदे गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इमेऽवि चदे गइसमावण्णए भवइ ।

ता जया ण इमे सूरिए गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इयरेऽवि सूरिए गइसमावण्णए भवइ ।

ता जया ण इयरे सूरिए गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इमेऽवि सूरिए गइसमावण्णए भवइ ।

एव गहे वि, णक्खत्ते वि ।

चद-सूर-गह-णक्खत्ताण जोगो

ता जया ण इमे चदे जुत्ते जोगे ण भवइ,
तया ण इयरेवि चदे जुत्ते जोगे ण भवइ ।

ता जया ण इयरे चदे जुत्ते जोगे ण भवइ,
तया ण इमेऽवि चदे जुत्ते जोगे ण भवइ ।

एव सूरेऽवि गहेऽवि णक्खत्तेऽवि ।

सया वि चदा जुत्ता जोगेहि,
सया वि सूरा जुत्ता जोगेहि,
सया वि गहा जुत्ता जोगेहि,
सया वि णक्खत्ता जुत्ता जोगेहि ।

दुहम्रोऽवि चंदा जुत्ता जोगेहिं,
दुहम्रोऽवि सूरा जुत्ता जोगेहिं,
दुहम्रोऽवि गहा जुत्ता जोगेहिं,
दुहम्रोऽवि णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं।
मंडल सयसहस्सेण अट्ठाणउईए सएहिं छेत्ता इच्चेस णक्खत्ते खेत्तपरिभागे,
णक्खत्तविजए पाहुडे, त्ति बेमि।



ग्यारहवां प्राभृत

पंचण्ह संवच्छराणं, पारम्भ-पज्जवसाणकाल चंद-सूराणं-णक्खत्तसजोगकाल च

७१ क १ प ता कहं ते संवच्छराणादी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरे पण्णत्ते तं जहा—१ चंदे, २ चंदे, ३ अभिवड्डिए, ४ चंदे, ५ अभिवड्डिए ।

पढम चंदसंवच्छर

ख १ प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं पंचमस्स अभिवड्डियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ग प ता से णं किं पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, अणंतरपच्छाकडे समए ।

घ प तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता, छ व्वीसं च बासट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छित्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा ।

ङ प तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता, अट्ठ य बासट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

बितिय चंदसंवच्छर

क २ प ता एएसिणं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ख प ता से णं किं पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं तच्चस्स अभिवड्डिय-संवच्छरस्स आदी, से णं दोच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

ग प ता समयं च णं चंदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाण आसाढाण सत्त मुहुत्ता, तेवण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता इगतालीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

घ प ता समयं च णं सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा ।

ततिय अभिवड्ढिय संवच्छर

क प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ख प ता से णं किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

ग प ता समयं च णं चंदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण तेरसमुहुत्ता, तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्तावीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

घ प ता समयं च णं सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता, छप्पण्णं बावट्ठिभागा, मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ।

चउत्थ चंदसंवच्छर

क ४ प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, अणंतरपुरक्खडे समए ।

ख प ता से णं किंपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे णं चरिमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी, से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

ग प ता समयं च णं चंदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण चत्तालीस मुहुत्ता, चत्तालीस च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउसट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ।

घ प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुस्स अउणतीस मुहुत्ता, एक्कवीस च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बासट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता सितालीस चुण्णिया भागा सेसा ।

पचम अभिवड्ढिय सवच्छर

क ५ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स के आदी ? आहिए ति वएज्जा ।

उ ता जे ण चउत्थस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से ण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स आदी, अणतरपुरक्खडे समए ।

ख प ता से ण किपज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

ता जे ण पढमस्स सवच्छरस्स आदी से ण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए ।

ग प त समय च ण चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण चरमसमए ।

घ प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुस्सेण, पुस्सस्स ण एक्कवीस मुहुत्ता तेतालीस च बावट्ठिभागा, मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीस चुण्णिया भागा सेसा ।



बारहवां प्राभृत

पचण्हं सवच्छराणं, मासाण च राइंदिय-मुहुत्तप्पमाणं

७२ क १ प ता कति ण सवच्छरा ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ तत्थ खलु इमे पच सवच्छरा पण्णत्ता त जहा—१ णक्खत्ते, २ चदे, ३ उडू, ४ आइच्चे, ५ अभिवड्ढिए।

पढम णक्खत्त-सवच्छर

ख प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढमस्स णक्खत्तसवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसइ मुहुत्तेण तीसइ मुहुत्तेण अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सत्तावीस राइंदियाइ एक्कवीस च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेण, आहिए त्ति वएज्जा।

ग प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गेण ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता अट्ठसए एगूणवीसे मुहुत्ताण, सत्तावीस च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेण, आहिए त्ति वएज्जा।

घ प ता एएसि ण अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते सवच्छरे, ता से ण केवइए राइंदियग्गे ण ? आहिएत्ति वएज्जा।

उ ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसए एक्कावन्न च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा।

ड प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता णव मुहुत्तसहस्सा अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पन्न च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा।

बितिय चदसवच्छर

२ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्चस्स चदसवच्छरस्स चदे मासे तीसइमुहुत्ते ण तीसइमुहुत्ते ण अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता एगूणतीस राइंदियाइ बत्तीस बासट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता अट्ठपचासए मुहुत्ते तेत्तीस बासट्ठिभागा मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा।

ग प ता एस ण श्रद्धा दुवालसखुत्तकडा चंदे संवच्छरे, ता से ण केवइए राइंदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तिन्नि चउप्पन्ने राइंदियसए दुवालस य बासट्ठिभागा राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता दसमुहुत्तसहस्साइ छच्च पणवीसे मुहुत्तसए पण्णास च बासट्ठिभागे मुहुत्ते ण आहिए त्ति वएज्जा ।

तृतिय उडुसवच्छर

३ क प ता एएसि ण पचण्ह संवच्छराण तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसइ मुहुत्ते ण, तीसइ मुहुत्ते ण मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तीस राइंदियाण राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता णवमुहुत्तसयाइ मुहुत्तग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता एस ण श्रद्धा दुवालसखुत्तकडा उडू संवच्छरे, ता से ण केवइए राइंदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तिण्णि सट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता दसमुहुत्तसहस्साइ अट्ठ य सयाइ मुहुत्तग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

चउत्थ आइच्चसंवच्छर

४ क प ता एएसि ण पचण्ह संवच्छराण चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसइमुहुत्ते ण, तीसइमुहुत्ते ण अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तीस राइंदियाइ अवद्धभाग च राइंदियस्स राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता एस ण श्रद्धा दुवालसखुत्तकडा आदिच्चे संवच्छरे, ता से ण केवइए राइंदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तिन्नि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता दसमुहुत्तस्स सहस्साइ णव असीए मुहुत्तसए मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा ।

पचम अभिवड्ढियसवच्छर

५ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स अभिवड्ढिए मासे तीसइमुहुत्तेण, तीसइमुहुत्ते ण अहोरत्ते ण मिज्जमाणे केवइए राइदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगतीस राइदियाइ एगूणतीस च मुहुत्ता सत्तरस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसए सत्तरस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता एस ण अद्धा दुवालसखुत्तकडा अभिवड्ढियसवच्छरे, ता से ण केवइए राइदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तिण्णि तेसीए राइदियसए एक्कतीस च मुहुत्ता अट्ठारस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एक्कारसमुहुत्तसहस्साइ पच य एक्कारसमुहुत्तसए अट्ठारस बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

एगस्स जुगस्स अहोरत्त-मुहुत्तप्पमाण

७३ क प ता केवइय ते नो जुगे राइदियग्गेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता सत्तरस एकाणउए राइदियसए, एगूणवीस च मुहुत्त, सत्तावण्णे बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपन्न चुण्णिया भागे राइदियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता तेवण्णमुहुत्तसहस्साइ, सत्त य अउणापन्ने मुहुत्तसए, सत्तावण्ण बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपण्ण चुण्णिया भागा मुहुत्ते ण, आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता केवइए ण ते जगपत्ते राइदियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता, चत्तारि य बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागे राइंदियग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

घ प ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता एक्कारस पण्णत्ते मुहुत्तसए, चत्तारि य बासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, बासट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागे मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

ङ प ता केवइयं जुगे राइंदियग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता अट्ठारस तीसे राइंदियसए राइंदियग्गे णं आहिए त्ति वएज्जा,

च प ता से णं केवइए मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता चउप्पण्णं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसयाइं मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

छ प ता से णं केवइए बासट्ठिभाग मुहुत्तग्गे णं ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता चोत्तीसं सयसहस्साइं अट्ठावीसं च बासट्ठिभागमुहुत्तसए बासट्ठिभाग मुहुत्तग्गे णं, आहिए त्ति वएज्जा।

पंचण्हं संवच्छराणं पारंभ-पज्जवसाणकालस्स समत्तपरूवणं

७४ १ क प ता कया णं एए आदिच्च चंद संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सट्ठिं एए आदिच्चमासा बासट्ठिं एए य चंदमासा।
एस णं अद्धा छखुत्तकडा दुवालसभयिता तीसं एए आदिच्चसंवच्छरा, एक्कतीसं एए चंदसंवच्छरा,

तया णं एए आदिच्च-चंद-संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिए त्ति वएज्जा।

ख प ता कया णं एए आदिच्च-उडु-चंद णक्खत्ता संवच्छरा समादीया, समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सट्ठिं एए आदिच्चा मासा, एगट्ठिं एए उडुमासा, बासट्ठिं एए चंदमासा, सत्तट्ठिं एए णक्खत्तमासा।
एस णं अद्धा दुवालस खुत्तकडा दुवालसभयिता सट्ठिं एए आइच्चा संवच्छरा, एगट्ठिं एए उडु संवच्छरा, बासट्ठिं एए चंदा संवच्छरा, सत्तट्ठिं एए णक्खत्ता संवच्छरा।

तया णं एए आइच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समादीया, समपज्जवसिया, आहिए त्ति वएज्जा।

ग प ता कया णं एए अभिवड्ढिय आदिच्च-उडु-चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता सत्तावण्णं मासा, सत्त य अहोरत्ता, एक्कारस य मुहुत्ता, तेवीसं बासट्ठि भागा मुहुत्तस्स एए अभिवड्ढिया मासा, सट्ठि एए आइच्चामासा, एगट्ठि एए उडुमासा बासट्ठि एए चंदमासा सत्तट्ठि एए णक्खत्त मासा।

एस णं अद्धा छप्पण्ण-सयखुत्तकडा दुवालस भयिता

सत्त सया चोयाला, एए णं अभिवड्ढिया संवच्छरा,

सत्तसया असीया, एए णं आइच्चा संवच्छरा,

सत्तसया तेणउया, एए णं उडु संवच्छरा,

अट्ठसत्ता छल्वुत्तरा, एए णं चंदा संवच्छरा,

एक्कसत्तरी अट्ठसया, एए णं णक्खत्ता संवच्छरा।

तया णं एए अभिवड्ढिय-आइच्च-उडु चंद-णक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया, आहिए त्ति वएज्जा।

२ ता णयट्ठयाए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए, दुवालस य बासट्ठिभागे राइंदियस्स, आहिए त्ति वएज्जा।

३ ता अहातच्चे णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसए, पंच य मुहुत्ते पण्णास च बासट्ठि भागे मुहुत्तस्स, आहिए त्ति वएज्जा।

उडूण णामाइं कालप्पमाणं च

७५ तत्थ खलु इमे छ उडू पण्णत्ता, तंजहा—१ पाउसे, २ वरिसारत्ते, ३ सरते, ४ हेमंते, ५ वसंते, ६ गिम्हे।[1]

ता सव्वे वि णं एए चंद-उडू दुवे दुवे मासा तिचउप्पण्णसएणं तिचउप्पण्णसएणं आयाणेणं गणिज्जमाणा साइरेगाइं एगूणसट्ठि एगूणसट्ठि राइंदियाइं राइंदियग्गेणं[2] आहिए त्ति वएज्जा।

अवम-अइरित्तरत्ताणं संखा तं हेउ च

तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तंजहा—१ तइए पव्वे, २ सत्तमे पव्वे, ३ एक्कारसमे पव्वे, ४ पण्णरसमे पव्वे, ५ एगूणवीसइमे पव्वे, ६ तेवीसइमे पव्वे।

---

१ ठाणं, ६, सू ५२६

१ चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठि राइन्दियाइं राइन्दियग्गेणं पण्णत्ता।

तत्थ खलु इमे छ अतिरत्ता पण्णत्ता, तंजहा —
१ चउत्थे पव्वे, २ अट्ठमे पव्वे, ३ बारसमे पव्वे, ४ सोलसमे पव्वे, ५ वीसइमे पव्वे, ६ चउवीसइमे पव्वे।[1]

गाहा—
छच्चेव य अइरत्ता, आइच्चाओ हवंति माणाइं।
छच्चेव ओमरत्ता, चंदाहिं हवंति माणाइं ॥१॥

वासिक्किकयासु आउट्टियासु चंदेण सूरेण य णक्खत्त जोगकालो

७६ तत्थ खलु इमाओ पंचवासिकीओ, पंच हेमंतीओ आउट्टीओ पण्णत्ताओ।

१ क प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?
उ ता अभिइणा अभिइस्स पढमसमएणं।

ख प तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?
उ ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिया छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा।

२ क प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?
उ ता संठाणाहिं, संठाणाणं एक्कारस मुहुत्ते, एगूणतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिया छेत्ता तेपण्णं चुण्णिया भागा सेसा।

ख प तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?
उ ता पूसे णं, पूसस्स णं तं चेव, जं पढमाए।

३ क प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?
उ ता विसाहाहिं, विसाहा णं तेरस मुहुत्ता, चउप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिया छेत्ता, चत्तालीसं चुण्णिया भागा सेसा।

ख प तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?
उ ता पूसे णं, पूसस्स णं तं चेव, जं पढमाए।

४ क प ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं च चउत्थं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएइ ?

---

१ क पवणि-पव्वे। यहाँ पव-पव्व का पर्यायवाची है।
ख ठाणं ६, सु ५२४

उ ता रेवईहिं, रेवईण पणवीस मुहुत्ता बत्तीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तीस चुण्णिया भागा सेसा ।

प्र प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पूसे ण, पुसस्स ण त चेव, ज पढमाए ।

५ प्र प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचम वासिविक आउट्टि चदे केण णक्खत्ते ण जोएइ ?

उ ता पुव्वाहिं फग्गुणीहिं पुव्वाफग्गुणीण बारसमुहुत्ता सत्तालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेरस चुण्णिया भागा सेसा ।

प्र प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पूसेण, पूसस्स त ण चेव, ज पढमाए ।

हेमतियासु आवट्टियासु चदेण सूरेण य णक्खत्तजोगकालो

७७ १ प्र प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम हेमति आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता हत्थेण, हत्थस्स ण पचमुहुत्ता पण्णास च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।

प्र प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराण आसाढाण चरिमसमए ।

२ प्र प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च हेमति आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता सतभिसयाहिं, सतभिसयाण दुन्नि मुहुत्ता अट्ठावीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तालीस च चुण्णिया भागा सेसा ।

प्र प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराण आसाढाण चरिमसमए ।

३ प्र प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च हेमति आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पूसे ण, पुसस्स एगूणवीस मुहुत्ता तेतालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीस च चुण्णिया भागा सेसा ।

प्र प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराण आसाढाण चरिमसमए ।

४ प्र प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चउत्थ हेमति आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता मूलेण, मूलस्स छ मुहुत्ता, अट्ठावन्न च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीस चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण, चरिमसमए,

५ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचम हेमति आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता कत्तियाहिं, कत्तियाण अट्ठारस मुहुत्ता, छत्तीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा छेत्ता छ चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण चरिमसमए ।

जोगाण चदेण सद्धिं जोग-परूवण

७८ तत्थ खलु इमे दसविहे जाए पण्णत्ते, तजहा

१ वसभाणु जोए, २ वेणुयाणु जोए

३ मचे जोए, ४ मचाइमचे जोए

५ छत्ते जोए, ६ छत्ताइ छत्ते जोए

७ जमणद्धे जोए, ८ घणसमद्दे जोए

९ पीणिए जोए, १० मडुकप्पुते जोए

१ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण छत्ताइच्छत्त जोय चदे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जबुद्दीवस्स दीवस्स, पाईण-पडिणीआययाए, उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसेण सएण छित्ता दाहिण-पुरत्थिमिल्लसि चउभागमडलसि सत्तावीस भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभाग वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहिं दाहिण-पुरत्थिमिल्ल चउब्भागमडल असपत्ते एत्थ ण से चदे छत्तातिच्छत्त जोय जोइए ।

उप्पि चदो, मज्झे णक्खत्ते, हेट्ठा आइच्चे ।



२ प त समय च ण चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता चित्ताहिं चरमसमए ।

तेरहवां प्राभृत

चदमसोवड्ढोऽवड्ढी

७९ प ता कह ते चदमसो वड्ढोऽवड्ढो ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता अट्ठ पचासीते मुहुत्तसते तीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स ।

क ता दोसिणापक्खाओ अधगारपक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायालसए, छत्तालीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रज्जइ, तजहा—

पढमाए पढम भाग बितियाए बितिय भाग जाव पण्णरसीए पण्णरसम भाग,

चरमिसमए चदे रत्ते भवइ,

अवसेसे समए चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्ण अमावासा, एत्थ ण पढमे पव्वे अमावासे ता अधगारपक्खो,

ख ता ण दोसिणापक्ख अयमाणे चदे चत्तारे बायाले मुहुत्तसए छत्तालीस च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइ चदे विरज्जइ, तजहा—

पढमाए पढम भाग बितियाए बितिय भाग जाव पण्णरसीए पण्णरसम भाग, चरिमसमए चदे विरत्ते भवइ, अवसेसमसमए रत्ते य, विरत्ते य भवइ,

इयण्ण पुण्णमासिणी, एत्थ ण दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी ।

एगयुगे पुण्णिमासिणीओ अमावासो

८० तत्थ खलु इमाओ बावट्ठि पुण्णिमासिणीओ बावट्ठि अमावासाओ पण्णत्ताओ,

बावट्ठि एते कसिणा रागा,

बावट्ठि एते कसिणा विरागा,

एते चउव्वीसे पव्वसए,

एते चउव्वीसे कसिण-राग विरागसए,

जावइयाण पचण्ह सवच्छराण समया एगे ण चउव्वीसेण समयसएणूणगा,

एवइया परित्ता असखेज्जा देस राग विराग समया भवतीतिमक्खाया,

ता अमावासाओ ण पुण्णिमासिणो चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ ण अमावासा चत्तारि बायाले मुहुत्तसए छत्तालीस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता अमावासाओ ण अमावासा अट्ठपचासीए मुहुत्तसए तीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ ण पुण्णिमासिणी अट्ठ पचासीए मुहुत्तसए तीस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

एस ण एवइए चदे मासे,

एस ण एवइए सगले जुगे।

चदाइच्च अद्धमासे चदाइच्चाण मडलचार

८१ क प ता चदेण अद्धमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ?

उ ता चउद्दस चउब्भागमडलाइ चरइ एग च चउवीससयभाग मडलस्स।

ख प ता आइच्चेण अद्धमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ?

उ ता सोलस मडलाइ चरइ, सोलसमडलचारी तया अवराइ खलु दुवे अट्ठकाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ।

ग प कयराइ खलु दुवे अट्ठगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ?

उ इमाइ खलु ते दुवे अट्ठगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ त जहा—

१ निक्खममाणे चेव अमावासतेण,

२ पविसमाणे चेव पुण्णिमासितेण,

एयाइ खलु दुवे अट्ठगाइ जाइ चदे केणई असामण्णगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ।

पढमे चदायणे

ता पढमा पढमायणगए चदे दाहिणगए भागाए पविसमाणे सत्त अद्धमडलाइ जाइ चदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चार चरइ,

प कयराइ खलु ताइ सत्त अद्धमडलाइ जाइ चदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे, चार चरइ?

उ इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तं जहा—

१ बिइए अद्धमंडले, २ चउत्थे अद्धमंडले,
३ छट्ठे अद्धमंडले, ४ अट्ठमे अद्धमंडले,
५ दसमे अद्धमंडले, ६ बारसमे अद्धमंडले,
७ चउदसमे अद्धमंडले ।

एयाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

ता पढमायणगए चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ।

प कयराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ ?

उ इमाइं खलु ताइं [illegible] अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ, तंजहा—

१ तईए अद्धमंडले, २ पंचमे अद्धमंडले,
३ सत्तमे अद्धमंडले, ४ नवमे अद्धमंडले,
५ एक्कारसमे अद्धमंडले, ६ तेरसमे अद्धमंडले
पण्णरसमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं,

एताइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराए भागाए पविसमाणे चारं चरइ,

एयावया च पढमे चंदायणे समत्ते भवइ ।

दोच्चे चंदायणे

ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चंदे अद्धमासे,
चंदे अद्धमासे नो णक्खत्ते अद्धमासे,

प ता णक्खत्ताओ अद्धमासाओ ते चंदे चंदेण अद्धमासेण किमधियं चरइ ?

उ ता एगं अद्धमंडलं चरइ, चत्तारि य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं एगतीसाए छेत्ता णव भागाइं,

ता दोच्चायणगए चदे पुरच्छिमाए भागाए णिक्खममाणे सत्त चउप्पणाइ जाइ चदे परस्स चिन्न पडिचरइ, सत्त तेरसगाइ जाइ चदे अप्पणा चिण्ण चरइ,

ता दोच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए णिक्खममाणे छ चउप्पण्णाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडिचरइ, छ तेरसगाइ चदे अप्पणो चिण्ण पडिचरइ,

अवरगाइ खलु दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामन्नगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ,

प कयराइ खलु ताइ दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णागयाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ ?

उ इमाइ खलु ताइ दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ,

१ सव्वब्भतरे चेव मडले,

२ सव्वबाहिरे चेव मडले,

एयाणि खलु ताणि दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगयाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ,

एयवया दोच्चे चदायणे समत्ते भवइ ।

तच्चे चदायणे

ता णक्खत्ते मासे नो चदे मासे,
चंदे मासे नो णक्खत्ते मासे,

प ता णक्खत्ताए मासाए चदे चदेण मासेण किमधिय चरइ ?

उ ता दो अद्धमडलाइ चरइ, अट्ठ य सत्तट्ठि भागाइ अद्धमडलस्स, सत्तट्ठिभाग च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइ,

ता तच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिराणतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमडलस्स इगयालीस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो, परस्स य चिन्न पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडिचरइ,

एयावया बाहिराणतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ ।

तच्चायणगए चदे पुरत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर तच्चस्स पुरत्थिमिल्लस्स अद्धमडलस्स इगयालीस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,

एयावया बाहिरतच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ,

ता तच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर चउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमडलस्स अट्ठसत्तट्ठिभागाइ, सत्तट्ठिभाग च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,

एयावया बाहिर चउत्थ पच्चत्थिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ,

एव खलु चदेण मासेण चदे तेरस चउप्पण्णगाइ दुवे तेरसगाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडियरइ,

तेरस तेरसगाइ जाइ चदे अप्पणो चिण्णाइ पडियरइ,

दुवे इगयालीसगाइ दुवे तेरसगाइ, अट्ठ सत्तट्ठिभागाइ सत्तट्ठिभाग च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,

अवराइ खलु दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ,

इच्चेसो चदमासो अभिगमण णिक्खमण-वुड्ढि णिव्वुड्ढि अणवट्ठिय-सठाण-सठिई विउव्वणगिड्ढिपत्ते चदे देवे चदे देवे, आहिए त्ति वएज्जा।



चौदहवां प्राभृत

दोसिणा अधयारस्स य बहुत्तकारण

८२ क १ प ता कता ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खे ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

२ प ता कह ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

३ प ता कह ते अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे विरज्जति, तजहा—
पढमाए पढम भाग बिदियाए बिदिय भाग जाव पण्णरसीए पण्णरस भाग ।
एव खलु अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिया ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता परित्ता असखेज्जा भागा ।

ख १ प ता कता ते अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा,

२ प ता कह ते अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

३ प ता कह ते दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खेण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रज्जति, तजहा—पढमाए पढम भाग बितियाए बितिय भाग जाव पण्णरस भाग,
एव खलु दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिए ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ परित्ते असखेज्ज भागे ।[1]



---

१ "सूयप्रज्ञप्ति प्राभृत १३, सूत्र ७९ और सूयप्रज्ञप्ति प्रा १४ सूत्र ८२" इन दोनो सूत्रो का फलिताथ समान है। अन्तर इतना ही है कि सूत्र ७९ मे 'चन्द्र की हानि-वृद्धि' का कथन है। सूत्र ८२ मे "चन्द्रिका तथा अधकार की अधिकता" का कथन है। किन्तु चन्द्र की हानि वद्धि से ही चन्द्रिका एव अधकार की अधिकता होती है।

तच्चायणगए चंदे पुरत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर तच्चस्स पुरत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स इगयालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरइ,

एयावया बाहिरतच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ,

ता तच्चायणगए चंदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिरं चउत्थस्स पच्चत्थि मिल्लस्स अद्धमंडलस्स अट्ठसत्तट्ठिभागाइं, सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरइ,

एयावया बाहिर चउत्थ पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ,

एवं खलु चंदेण मासेण चंदे तेरस चउप्पण्णगाइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडियरइ,

तेरस तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णाइं पडियरइ,

दुवे इगयालीसगाइं दुवे तेरसगाइं, अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडियरइ,

अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामन्नगाइं सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चारं चरइ,

इच्चेसो चंदमासो अभिगमण णिक्खमण-वुड्ढि णिव्वुड्ढि अणवट्ठिय-संठाण-संठिई विउव्वणगिड्ढिपत्ते चंदे देवे चंदे देवे, आहिए त्ति वएज्जा ।



चौदहवां प्राभृत

दोसिणा अधयारस्स य बहुत्तकारण

८२ क १ प ता कता ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खे ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

२ प ता कह ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

३ प ता कह ते अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे विरज्जति, तजहा—
पढमाए पढम भाग बिदियाए बिदिय भाग जाव पण्णरसीए पण्णरस भाग ।
एव खलु अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितात्ति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिया ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ?

उ ता परित्ता असखेज्जा भागा ।

ख १ प ता कता ते अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा,

२ प ता कह ते अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

३ प. ता कह ते दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खेण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीस च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रज्जति, तजहा—पढमाए पढम भाग बितियाए बितिय भाग जाव पण्णरस भाग,
एव खलु दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिए ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ परित्ते असखेज्ज भागे ।[1]



---

१ "सूयप्रज्ञप्ति प्राभृत १३, सूत्र ७९ और सूयप्रज्ञप्ति प्रा १४ सूत्र ८२' इन दोनो सूत्रों का फलितार्थ समान है। अन्तर इतना ही है कि सूत्र ७९ मे 'चन्द्र की हानि-वृद्धि" का कथन है। सूत्र ८२ म "चन्द्रिका तथा अधकार की अधिकता" का कथन है। किन्तु चन्द्र की हानि-वृद्धि से ही चन्द्रिका एव अधकार की अधिकता होती है।

पन्द्रहवाँ प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराणं गइपरूवणं

८३ प. ता कहं ते सिग्घगई ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ. ता एएसि णं चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारारूवाणं—
चंदेहिंतो सूरे सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा सव्वसिग्घगई तारा ।[1]

१ प. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ?

उ. ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अडसट्ठिं भागसए गच्छइ, मंडलं सयसहस्से णं अट्ठाणउइ सएहिं छेत्ता छेत्ता ।

२ प. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ?

उ. ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तस्स तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसए गच्छइ, मंडलं सयसहस्से णं अट्ठाणउइसएहिं छेत्ता छेत्ता ।[2]

---

१ प. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह णक्खत्त तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा मंदगई वा ?
उ. ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा ।

२ ग्रहों की गति का निरूपण मूल पाठ में नहीं है ।
ग्रहों की गति के सम्बन्ध में टीकाकार का स्पष्टीकरण—
ग्रहास्तु वक्रानुवक्रादिगतिभावतोऽनियतगतिप्रस्थानास्ततो न तेषामुक्तप्रकारेण गतिप्रमाणप्ररूपणा कृता, उक्तं च गाहाओ—
'चंदेहिं सिग्घयरा, सूरा सूरेहिं होंति णक्खत्ता ।
अणिययगइपत्थाणा, हवंति सेसा गहा सव्वे ॥ १ ॥
अट्ठारस पणतीसं, भागसए गच्छइ मुहुत्तेण ।
नक्खत्त चंदो पुण, सत्तरससए उ अडसट्ठे ॥ २ ॥
अट्ठारस भागसए, तीसे गच्छइ रवी मुहुत्तेण ।
नक्खत्तसीमछेदो, सो चेव इहं पि णायव्वो ॥ ३ ॥

३ प ता एगमेगेण मुहुत्तेण णक्खत्ते केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ ?

उ ता ज ज मडल उवसकमित्ता चार चरइ, तस्स तस्स मडल-परिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसए गच्छइ, मडल सयसहस्से ण अट्ठाणउईसएहि छेत्ता छेत्ता ।[1]

चद-सूर-णक्खत्ताण विसेसगइपरूवण

८४ १ प ता जया ण चद गइसमावण्ण सूरे गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय विसेसेइ ?

उ बावट्ठिभागे विसेसेइ ।

२ प ता जया ण चद गइसमावण्ण, णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय विसेसेइ ?

उ ता सत्तट्ठि भागे विसेसेइ ।

३ प ता जया ण सूर गइसमावण्ण णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय विसेसेइ ?

उ ता पच भागे विसेसेइ ।

चदस्स-णक्खत्ताण य जोगगइपरूवण

ता जया ण चदे गइसमावण्ण अभिई णक्खत्ते ण गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ समासाइत्ता णवमुहुत्ते सत्तावीस च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता, जोग विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ,

ता जया ण चद गइसमावण्ण सवणे णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, समासाइत्ता तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ ।

एव एएण अभिलावेण णेयव्व, पण्णरसमुहुत्ताइ, तीसइमुहुत्ताइ पणयालीसमुहुत्ताइ । भाणियव्वाइ जाव उत्तरासाढा,

चदस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवण

८५ ता जया ण चद गइसमावण्ण गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता चदेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ ।

---

१ 'ताराओ की गति सबसे अधिक है' ऐसा मूल पाठ मे कथन है किन्तु गति के प्रमाण का कथन नहीं है, टीकाकार ने भी इस सम्बन्ध मे कुछ नहीं कहा है ।

सूरस्स णक्खत्ताण य जोग-गइकालपरूवण

ता जया ण सूर गइसमावण्ण अभिइणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता, चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ,

एव छ अहोरत्ता एक्कवीस मुहुत्ता य, तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य, वीस अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भणियव्वा जाव—

ता जया ण सूर गइसमावण्ण उत्तरासाढा णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ ।

सूरस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवण

ता जया ण सूर गइसमावण्ण गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ ।

क—णक्खत्तमासे चदस्स सूरस्स, णक्खत्तस्स य मडलचार

८५ [णक्खत्ताइसु पचसु मासेसु चदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स च मडलचारसख्या]

१ प ता णक्खत्तेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता तेरस मडलाइ चरइ, तेरस य सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।

२ प ता णक्खत्तेण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता तेरस मडलाइ चरइ चोत्तालीस च सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।

३ प ता णक्खत्तेण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता तेरस मडलाइ चरइ अद्धसेतालीस च सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।

ख—चदमासे चदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मडल चार

१ प ता चदेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता चोद्दस चउभागाइ मडलाइ चरइ, एग च चउवीससय भाग मडलस्स ।

२ प ता चदेण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता पण्णरस चउभागूणाइ मडलाइ चरइ, एग च चउवीससयभाग मडलस्स ।

३ प ता चदेण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता पण्णरस चउभागूणाइ मडलाइ चरइ, छच्च चउवीससयभागे मडलस्स ।

ग–उडुमासे चदस्स सूरस्स णक्खत्तमासस्स य मडलचार

१ प ता उडुणा मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता चोद्दस मडलाइ चरइ तीस च एगट्ठिभागे मडलस्स ।

२ प ता उडुणा मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस मडलाइ चरइ ।

३ प ता उडुणा मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस मडलाइ चरइ, पच य बावीस सयभागे मडलस्स ।

घ–आइच्चमासे चदस्स, सूरस्स णक्खत्तस्स य मडलचार

१ प ता आइच्चेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता चोद्दस मडलाइ चरइ, एक्कारस पण्णरस य भागे मडलस्स ।

२ प ता आइच्चेण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ।
उ ता पण्णरस चउभागाहियाइ मडलाइ चरइ ।

३ प ता आइच्चेण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस चउभागाहियाइ मडलाइ चरइ पचतीस च चउवीससयभाग मडलाइ चरइ ।

ङ–अभिवड्ढियमासे चदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मडलचार

१ प ता अभिवड्ढिएण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस मडलाइ चरइ, तेसीइ छलसीयभागे मडलस्स ।

२ प ता अभिवड्ढिएण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता सोलस मडलाइ चरइ, तिहि भागेहि ऊणगाइ दोहि अडयालेहि सएहि मडल छित्ता ।

३ प ता अभिवड्ढिएण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता सोलस मडलाइ चरइ सेयालोसएहि भागेहि अहियाहि चोद्दसहि अट्ठासीएहि मडल छेत्ता ।

एगमेगे अहोरत्ते चद-सूर-णक्खत्ताण मडलचार

८६ १ प ता एगमेगेण अहोरत्तेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता एग अद्धमडल चरइ, एक्कतीसेहि भागेहि ऊण णवहि पण्णरसेहि सएहि अद्ध-मडल छेत्ता ।

२ प ता एगमेगेण अहोरत्तेण सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता एगं अद्धमंडलं चरइ ।

३ प ता एगमेगेण अहोरत्तेण णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता एगं अद्धमंडलं चरइ, दोहिं भागेहिं अहियं सत्तहिं बत्तीसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता ।

एगमेगे मंडले चंद-सूर-णक्खत्ताणं अहोरत्ते चार

१ प ता एगमेगं मंडलं चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ, एक्कतीसेहिं भाएहिं अहिएहिं चउहिं चोयालेहिं सएहिं राइंदिएहिं छेत्ता ।

२ प ता एगमेगं मंडलं सूरे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ ।

३ प ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कतिहिं अहोरत्तेहिं चरइ ?

उ ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरइ, दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं सएहिं राइंदिएहिं छेत्ता ।

एगमेगजुगे चंद-सूर-णक्खत्ताणं मंडलचार

१ प ता जुगे णं चंदे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता अट्ठचुल्लसीए मंडलसए चरइ ।

२ प ता जुगे णं सूरे कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता णव पण्णरसमंडलसए चरइ ।

३ प ता जुगे णं णक्खत्ते कइ मंडलाइं चरइ ?

उ ता अट्ठारस पणतीसे दुभागमंडलसए चरइ ।

इच्चेसा मुहुत्तगई रिक्ख-उडुमास राइंदिय जुगमंडल पविभत्ता सिग्घगई वत्थु आहिए त्ति बेमि ।



सोलहवाँ प्राभृत

दोसिणाइयाण लक्खणा

८७ १ प ता कह ते दोसिणालक्खणा ? आहिए त्ति वएज्जा ?
उ ता चदलेसाइ य दोसिणाइ य ।

२ प दोसिणाइ य चदलेसाइ य के अट्ठे, किलक्खणे ?
उ ता एगट्ठे एगलक्खणे ।

१ प ता कह ते सूरलेस्सालक्खणो ? आहिए त्ति वएज्जा ?
उ ता सूरलेस्साइ य आयवेइ य ।

२ प ता सूरलेस्साइ य, आयवेइ य के अट्ठे किलक्खणे ?
उ ता एगट्ठे, एगलक्खणें

१ प ता कह ते छायालक्खणें ? आहिए त्ति वएज्जा ।
उ ता छायाइ य, अधकाराइ य ।

२ प ता छायाइ य अधकाराइ य के अट्ठे किलक्खणे ?
उ ता एगट्ठे एगलक्खणे ।



सत्तरहवाँ प्राभृत

चंद-सूरियाणं चवणोववाया

८८ प. ता कहं ते चयणोववाया, आहिए त्ति वएज्जा ?

उ. तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

तत्थ एगे एवमाहंसु—

१ ता अणुसमयमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता अणुमुहुत्तमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति ।

३-२४ एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव[1]

---

१ "एवं जहा हिट्ठा तहेव जावेत्यादि—

एवं उक्तेन प्रकारेण यथा अधस्तात् षष्ठे प्राभृते पञ्चविंशति प्रतिपत्तयस्तथैवात्रापि वक्तव्या यावद् अणुओ सप्पिणि-उस्सप्पिणिमेवेत्यादि चरमसूत्रम् ।

तावच्चैव भणितव्या —

एगे पुण एवमाहंसु —

ता अणुराइंदियमेव चंदिम सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता अणुपक्खमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता अणुमासमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहंसु,

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता अणु-उउमेव

एगे पुण एवमाहंसु—

७ ता अणु-अयणमेव,

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता अणु-संवच्छरमेव,

एगे पुण एवमाहंसु—

९ ता अणुजुगमेव,

एगे पुण एवमाहंसु—

(शेष टिप्पणियाँ अगले पृष्ठ पर)

२५ एगे पुण एवमाहसु—
ता अणुओसप्पिणी, उस्सप्पिणीमेव चंदिम-सूरिया अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति,
एगे एवमाहंसु।

१० ता अणुवाससयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
११ ता अणुवाससहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१२ ता अणु वाससयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१३ ता अणुपुव्वमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१४ ता अणुपुव्वसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१५ ता अणुपुव्वसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१६ ता अणुपुव्वसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१७ ता अणुपलिओवमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१८, ता अणुपलिओवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
१९ ता अणुपलिओवमसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२० ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२१ ता अणुसागरोवमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२२ ता अणुसागरोवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहंसु—
२३ ता अणसागरोवमसहस्समेव।
एगे पुण एवमाहंसु—
२४ ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव।
पंचविंशतितम प्रतिपत्तिसूत्र तु साक्षादेव सूत्रकृता दर्शितम् तदेवमुक्ता परतीर्थिकप्रतिपत्तय:। —टीका

वय पुण एव वयामो—

ता चंदिम-सूरियाण देवा महिड्ढीया, महाजुईया-महाबला, महाजसा, महासोक्खा, महाणुभावा ।

वर वत्थधरा, वरमल्लधरा, वरगंधधरा, वराभरणधरा, अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए काले अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति, चयणोववाया आहिए त्ति वएज्जा ।



अठारहवाँ प्राभृत

चंदाइच्चाइणं भूमिभागाओ उड्ढत्तं

८९ प ता कहं ते उच्चत्ते आहितेति वदेज्जा ?

उ तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तिओ, पण्णत्ताओ, तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं दिवड्ढं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्डातिज्जाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता तिन्नि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धघुट्ठाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

४ ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

५ ता पंच जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धछट्ठाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

६ ता छ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धसत्तमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु —

७ ता सत्तजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धअट्ठमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

८ ता अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धनवमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

९ ता नवजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धदसमाइं चंदे, एगे एवमाहंसु।

एगे पुण एवमाहंसु—

१० ता दसजोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धएक्कारस चंदे, एगे एवमाहंसु।

मंदरपव्वयाओ जोइसचार

९२ १ प ता मंदरस्स ण पव्वयस्स ण केवइय अबाहाए जोइसे चार चरइ ?

उ ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अबाहाए जोइसे चार चरइ ।[1]

लोअताओ जोइसठाण

प ता लोअताओ ण केवइय अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ?

उ ता एक्कारस एक्कारे जोयणसए अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ।[2]

णक्खत्ताण अब्भतराइ चार

९३ १ प ता जबुद्दीवे ण दीवे
कयरे णक्खत्ते सव्वब्भतरिल्ल चार चरइ ?

२ प कयरे णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्ल चार चरइ ?

३ प कयरे णक्खत्ते सव्वुवरिल्ल चार चरइ ?

४ प कयरे णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्ल चार चरइ ?

१ उ अभिई णक्खत्ते सव्वब्भतरिल्ल चार चरइ ।[3]

छावट्ठीसहस्साइ, णव चेव सयाइ पचसयराइ ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ॥
—जीवा प ३, उ २, सु १९४

ग जीवाभिगम प्रति ३, उ २, सू १९४ मे—"चन्द्र और सूर्य दोनो के सयुक्त प्रश्नोत्तर हैं। मूल मैं प्रश्नसूत्र का केवल प्रतीक है और उत्तर के रूप मे दो गाथाएँ हैं।

टीका मे—"प्रश्नसूत्र का यह प्रतीक है— 'एगमगस्स ण भते ! चदिम-सूरियस्सेयर्या" इस प्रतीक के सम्बन्ध मे टीकाकार का स्पष्टीकरण यह है—

"एकैकस्य भदन्त ! चद्र सूर्यस्य" अनेन च पदन यथा नक्षत्रादीनां चद्र स्वामी तथा सूर्योऽपि, तस्यापी द्रष्टव्यात्

इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेदो गलितानि च सूत्राणि बहुषु पुस्तकेषु ततो यथावस्थित वाचनाभेदप्रतिपत्यर्थ गलितसूत्रोद्धरणार्थ चव सुगमान्यपि विव्रियन्ते

१ सम ■ ११, सु ३

२ क सम स ११ सु २
ख जम्बु वक्ख ७, सु १५४

३ "सर्वाभ्यन्तर सर्वेभ्यो मण्डलेभ्योऽभ्यन्तर सर्वाभ्यन्तर अनेन द्वितीयादि मण्डलचारव्युदास "
"यद्यपि सर्वाभ्यन्तरमण्डलचारीण्यभिजिदादीनि द्वादशनक्षत्राण्यभिहितानि, तथापीद शेषद्वादशनक्षत्रापेक्षया मेरु दिशि स्थित सत् चार चरतीति सर्वाभ्यन्तरचारीत्युक्तम्" ।

२ उ मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ।[1]

३ उ साई णक्खत्ते सव्वुवरिल्लं चारं चरइ।[2]

४ उ भरणी णक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं चारं चरइ।

चंद-सूर-गह-णक्खत्तविमाणाणं संठाणाइं

९४ प ता चंदविमाणे णं किंसंठिए पण्णत्ते ?

उ ता अद्धकविट्ठग संठाणसंठिए[3] सव्वफालियामए अब्भुग्गयमूसियपहसिए विविह-मणि रयण-भत्तिचित्ते, वाउद्धुय विजय वेजयंतीपडागा छत्ताइछत्तकलिए, तुंगे गगणतलमणुलिहंत-सिहरे, जालंतररयण-पंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागे, वियसिय सयवत्त-पुंडरीय-तिलयरयणद्धचंदचित्ते, अंतो बहिं च सण्हे, तवणिज्जबालुगापत्थडे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

एवं सूरविमाणे, गहविमाणे, नक्खत्तविमाणे ताराविमाणे।[4]

---

१ 'सर्वबाह्यं सर्वतो नक्षत्रमण्डलिकाया बहिश्चारं चरति'।
"यद्यपि पंचदशमण्डलादवहिश्चारीणि मृगशिर प्रभृतीनि षड् नक्षत्राणि पूर्वाषाढोत्तराषाढयोश्चतुर्णां तारकाणां मध्ये द्वे द्वे च तारे उक्तानि, तथाप्येतदपरवहिश्चारिनक्षत्रापेक्षया लवणदिशि स्थितं सच्चारं चरतीति सर्वबहिश्चारीत्युक्तम्"।

२ क "दशोत्तरशतयोजनरूपे ज्योतिश्चक्रबाहुल्ये यो नक्षत्राणां क्षेत्रविभागश्चतुर्योजनप्रमाणस्तदपेक्षयोक्तनक्षत्रयो क्रमेणाधस्तनोपरितनभागो ज्ञेयो। इस टिप्पण में उद्धृत उद्धरण जम्बू. वक्ख. ७, सू. १६५ टीका से है।
ख जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के सूत्र १६५ के समान यह सूर्यप्रज्ञप्ति का सूत्र भी है।

३ गाहाओ—
अद्धकविट्ठागारा उदयत्थमणम्मि कहं न दीसंति,
ससि-सूराण विमाणा, तिरियक्खेत्तट्ठियाण च ?
उत्ताणद्धकविट्ठागारं, पीढं तदुवरिं च पासाओ।
वट्टालेखेण तओ, समवट्टं दूरभावाओ॥
जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणेन विशेषणवत्यामाक्षेपपुरस्सरमुक्तम्॥
"यदि चन्द्रविमानमुत्तानीकृतार्द्धमात्रकपित्थफलसंस्थानसंस्थितं ततः उदयकाले अस्तमयकाले वा,
यदि वा तिर्यक् परिभ्रमत् पौर्णमास्यां कस्मात्तदर्धकपित्थफलाकारं नोपलभ्यन्ते ?
काम शिरस उपरि वर्तमानं वर्तुलमुपलक्ष्यते अधकपित्थस्य उपरि दूरमवस्थापितस्य परभागादर्शनतो वर्तुलतया दृश्यमानत्वात् उच्यते।
इहार्द्धकपित्थफलाकारं चन्द्रविमानं न सामस्त्येन प्रतिपत्तव्यं, किन्तु तस्य चन्द्रविमानस्य पीठं, तस्य च पीठस्योपरि चन्द्रदेवस्य ज्योतिश्चक्रराजस्य प्रासादः स च प्रासादस्तथा कथंचनापि व्यवस्थितो यथा पीठेन सह भूयान् वर्तुलाकारो भवति, स च दूरभावादेकान्ततः समवृत्ततया जनानां प्रतिभासते, ततो न कश्चिद्दोषः॥
—सूर्य. टीका,

४ जंबु. वक्ख. ७ सु. १२५

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराविमाणाणं आयाम-विक्खंभ-परिक्खेव-बाहल्लाइं

प. क. ता चंदविमाणे णं –
केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ. क. ता छप्पण्णं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेणं।
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं।
ग. अट्ठावीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते।[1]

प. क. ता सूरविमाणे णं केवइयं आयाम विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ. क. ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेणं ?
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं।
ग. चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते।

प. क. ता गहविमाणे णं केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?

उ. क. ता अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं।
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं।
ग. कोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते।

---

१ प. क. चंदमंडले णं भंते !
केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ?
ख. केवइयं परिक्खेवेणं ?
ग. केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ?
उ. क. गोयमा ! छप्पन्नं एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम विक्खंभेणं,
ख. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं,
ग. अट्ठावीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स बाहल्लेणं, पण्णत्ते। —जम्बु. वक्ख. ७, सु. १४५
चंदमंडले णं एगसट्ठिविभाग विभाइए समंसे पण्णत्ते। —सम. ६१, सु. ३
इस सूत्र से यह स्पष्ट है कि चन्द्रविमान और चन्द्रमण्डल एक ही है।

प क ता णक्खत्तविमाणे ण केवइय आयाम विक्खभेण ?
ख केवइय परिक्खेवेण ?
ग केवइय बाहल्लेण ?

उ क ता कोस आयाम विक्खभेण ।
ख त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण ।
ग अद्धकोस बाहल्लेण पण्णत्ते ।

प क ता ताराविमाणे ण केवइय आयामविक्खभेण ?
ख केवइय परिक्खेवेण ?
ग केवइय बाहल्लेण ?

उ क ता अद्धकोस आयामविक्खभेण ।
ख त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण ।
ग पचधणुसयाइ बाहल्लेण पण्णत्ते ।[1]

चद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराण विमाणपरिवहण

प ता चदविमाणे ण कइ देवसाहस्सीओ परिवहति ?
उ सोलस देवसाहस्सीओ परिवहन्ति, तजहा—
पुरत्थिमेण सीहरूवधारीण चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहति,

---

१ क प चदविमाणे ण भत ! केवइय आयाम विक्खभेण ? केवइय बाहल्लेण ?
उ गाहाओ—
छप्पण्ण खलु भाए विच्छिण्ण चदमडल होइ ।
अट्ठावीस भाए बाहल्ल तस्स बाद्धव्व ॥ १ ॥
अडयालीस भाए, विच्छिण्ण सूरमडल होइ ।
चउवीस खलु भाए बाहल्ल तस्स बोद्धव्व ॥ २ ॥
दो कोस अ गहाण णक्खत्ताण तुहवइ तस्सद्ध ।
तस्सद्ध ताराण, तस्सद्ध चेव बाहल्ले ॥ ३ ॥ —जबु वक्ख ७, सु १६५
'एकस्य प्रमाणागु लयाजनस्यकषष्टिभागाकृतस्य षटपचाशता भागे समुदितैयत्प्रमाण भवति, तावत्प्रमाणोऽस्य विस्तार"
'वत्तवस्तुन स आयाम विष्कम्भात्"
परिक्षेपस्तु स्वयमभ्यूह्य वृत्तस्य सविशेषस्त्रिगुण परिधिरिति प्रसिद्धे ।
यह स्पष्टीकरण जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के वत्तिकार ने ऊपर लिखित सूत्र का दिया है ।
ख यद्यपि जीवा प ३ उ २, सू १९७ प्रश्नोत्तरात्मक सूत्र हैं किन्तु उसमे 'भते' और "गोयमा' का प्रयोग अधिक है ।

दाहिणेणं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,
पच्चत्थिमेणं वसभरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति,
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति।
एवं सूरविमाणं पि,

प ता गहविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
उ ता अट्ठ देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—
पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति,
एवं जाव—
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति।

प ता णक्खत्तविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
उ ता चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—
पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहइ,
एवं जाव—
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहइ।

प ता ताराविमाणे णं कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
उ ता दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तंजहा—
पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंचदेवसया परिवहंति,
एवं जाव—
उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं पंचदेवसया परिवहंति।[1]

---

१ प चंदविमाणे णं भंते ! कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ?
गोयमा ! सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति।
उ चंदविमाणस्स णं पुरत्थिमेणं,
सेयाणं, सुभगाणं, सुप्पभाणं, संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण रययणिगरप्पगासाणं, थिर-लट्ठ
पउट्ठ वट्ट-पीवर सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढा-विडंबिय-मुहाणं,
रत्तुप्पलपत्त-मउय सूमालतालु-जीहाणं,
महु-गुलिय-पिंगलक्खाणं,
पीवरवरोरु-पडिपुण्ण-विउल-खंधाणं,
मिउ-विसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ वरवण्ण-केसरसडोवसोहियाणं,
ऊसिय-सुनमिय-सुजाय-अप्फोडिय-लंगूलाणं,
वइरामय-णक्खाणं, वइरामय-दाढाणं, वइरामय दंताणं,

तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्ज-तालुआण, तवणिज्ज-जुत्त-जोत्तगसुजोइआण कामगमाण, पीइगमाण, मणोगमाण, मणोरमाण, अभिजिअगईण,
अमिअ-बल-वीरिअ-पुरिसक्कार-परक्कमाण,
महया अप्फोडिअ-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेण महुरेण मणहरेण पूरेंता अंबर, दिसाओ य सोभयता,
चत्तारि देवसाहस्सीओ सीहरूवधारीण पुरित्थिमिल्लं बाहं वहंति
चंदविमाणस्स णं दाहिणेणं,
सेआण, सुभगाण, सुप्पभाण, सखतल विमल-णिम्मल-दधिघण-गोखीरफेण रयय-णिगरप्पगासगाण,
वइरामय-कुंभयुगल-सुट्ठिअ-पीवर-वरवइरसोंड-वट्टिअ-दित्त-सुरत्त, पउमप्पगासाण, अब्भुण्णय-मुहाण,
तवणिज्ज-विसाल-कण्णचंचल-चलंत-विमलुज्जलाण,
महुवण्ण-भिसंत णिद्ध-पत्तल-णिम्मल-तिवण्ण-मणि-रयण-लोयणाण,
अब्भुग्गय मउल-मल्लिआधवलसरिससंठिय णिव्वणदढ-कसिण-फालिआमय सुजाय-दंतमुसलोवसोभिआण,
कंचणकोसी-पविट्ठ-दंतग्ग-विमल-मणि-रयण-रुइल-पेरंत-चित्तरूवग-विराइआण,
तवणिज्ज-विसाल-तिलगप्पमुह-परिमण्डियाण,
णाणामणि-रयण-मुद्ध-गेविज्ज-बद्ध-गलयवरभूसणाण,
वेरुलिय-विचित्त-दण्ड-निम्मल-वइरामय-तिक्खलट्ठ-अंकुस कुंभजुयलयंतरोडिआण,
तवणिज्ज-सुबद्ध-कच्छ-दप्पिअ-बलुद्धराण,
विमल-घण-मंडल-वइरामय-लालाललियतालण,
णाणामणि-रयण-घंट-पासग-रजतमय-बद्ध-रज्जु-लंबिअ-घंटाजुयल-महुरसरमणहराण,
अल्लीण पमाणजुत्त-वट्टिअ-सुजाय-लक्खण-पसत्थ-रमणिज्ज-वालगत्तपरिपुंछणाण,
उवचिअ-पडिपुण्ण-कुम्म-चलण-लहुविक्कमाण,
अंकामयणक्खाण, तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्जतालुआण, तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइआण
कामगाण, पीइगाण, मणोगमाण, मनोरमाण, अमियगईण, अमिअ-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमाण,
महया-गंभीर-गुलगुलाइतरवेण महुरेण मणहरेण, पूरेंता अंबर, दिसाओ य सोभयता,
चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरूवधारीण देवाण दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति,
चंदविमाणस्स णं पच्चत्थिमेणं,
सेआण, सुभगाण सुप्पभाण, चल-चवल-ककुह-सालीण, घण-निचिअ-सुबद्ध-लक्खणुण्णयईसिआणय-वसभोट्ठाण चंकमिअ-ललिअ-पुलिअ-चलचवल-गविअ-गईण, सन्नतपासाण संगतपासाण सुजायपासाण,
पीवरवट्टिअ-सुसंठिअ-कडीण,
ओलंब-पलंब-लक्खण-पमाणजुत्त-रमणिज्ज-वालगंडाण
समखुरवालिधाणाण,
समलिहिअ-सिंग तिक्खग्ग-संगयाण,
तणु-सुहुम-सुजाय-णिद्ध-लोमच्छवीण,
उवचिअ-मसल-विसाल-पडिपुण्ण-खंध-पएस-सुंदराण, वेरुलिअ-भिसंत-कडक्ख-सुनिरिक्खणाण,

जुत्तप्पमाण-पहाणलक्खण-पसत्थ रमणिज्ज-वागर-गत्त-सोभियाण,

घरघरग-सुगड्-बद्ध कड-परिमड्डियाण,

णाणामणि-कणग-रयणघडिश्रा-वेगच्छिग-सुकयमालिश्राण,

वरघटा-गलय-मालुज्जल-सिरिधराण,

पउमुप्पल सगल-सुरभि-माला विभूसिश्राण,

वइरखुराण विविहखुराण,

फालिश्रामय दताण, तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्जतालुश्राण,

तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइयाण,

कामगमाण पीइगमाण मणोगमाण मणोरमाण

श्रमिश्रगईण श्रमिश्र-बलवीरिश्र-पुरिसक्कारपरक्कमाण महया गज्जिश्र-गभीर-रवेण, महुरेण, मणहरेण,

पूरेंता अबर दिसाओ य सोभता,

चत्तारि देवसाहस्सीओ वसहरूवधारीण देवाण पच्चत्थिमिल्ल बाह परिवहति,

चदविमाणस्स ण उत्तरेण—

सेयाण सुभगाण, सुप्पभाण, तरमल्लिहायणाण तरमल्लिमच्छाण चपुच्चिय-सेयाण,

ललिय-पुलिय-चलचवल-चचलगईण, ललतलाम-चलताय-वरभूसणाण,

सन्नयपासाण सगयपासाण, सुजायपासाण,

पीवर-वट्टिय-सुसठिय-कडीण,

श्रोलब, पलब-लक्खण-पमाण-जुत्त-रमणिज्ज-वालपुच्छाण,

तणुसुहुम सुजाय-णिद्ध लोमच्छविहराण,

मिउविसय-सुहुम-लक्खण-पसत्य-विच्छिण्ण-केसरवालिहराण

ललत थासग-ललाट-वरभूसणाण,

मुहमण्डग-श्रोचूलग-चामर-थासग-परिमण्डिश्र-कडीण

तवणिज्ज-खुराण, तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्ज-तालुश्राण, तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइश्राण,

कामगमाण पीइगमाण, मणोगमाण, मणोरमाण,

श्रमिश्रगईण श्रमिश्र-बलवीरिश्र-पुरिसक्कारपरक्कमाण,

महया गज्जिश्र महुरणरवेण, गभीर-मणहरेण पूरेंता अबर, दिसाओ य सोभयता,

चत्तारि देवसाहस्सीओ आस हयरूवधारीण देवाण पच्चत्थिमिल्ल बाह परिवहति,

चदविमाणस्स ण उत्तरेण —

सेयाण सुभगाण, सुप्पभाण तरमल्लिमच्छाण चपुच्चिय-सेयाण, ललिय पुलिय-चलचवल-चचलगईण,

ललतलाम-चलताय-वरभूसणाण

—जबु वक्ख ७, सु १६०

जोइसियाणं सिग्घ-मंदगइपरूवणं

९५ प. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारा-रूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा,
मंदगई वा ?

उ. ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा।[1]

जोइसियाणं अप्प-महिड्ढिपरूवणं

प. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-ताराख्वाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढिया वा
महिड्ढिया वा ?

उ. ता ताराहिंतो महिड्ढिया णक्खत्ता,
णक्खत्तेहिंतो महिड्ढिया गहा।
गहेहिंतो महिड्ढिया सूरा,
सूरेहिंतो महिड्ढिया चंदा,
सव्वप्पड्ढिया तारा, सव्वमहिड्ढिया चंदा।[2]

ताराणं अबाहा अंतरपरूवणं

९६ प. ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स तारारूवस्स य एस णं केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?

उ. दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तंजहा—
१ वाघाइमे य, २ निव्वाघाइमे य।

क. तत्थ णं जे से वाघाइमे, से णं जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसए।
उक्कोसेणं, बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बायाले जोयणसए तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

ख. तत्थ णं जे से णिव्वाघाइमे से णं जहण्णेणं पंच धणुसयाइं,
उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।[3]

---

१ क. सूत्र ८३ और इस सूत्र में साम्य है।
ख. जंबू. वक्ख. ७ सु. १६९
२ जंबू. वक्ख. ७ सु. १७०
३ जंबु. वक्ख. ७, सु. १७१

जुत्तप्पमाण-पहाणलक्खण-पसत्थ-रमणिज्ज-गग्गर-गल्ल-सोभियाण,
घरघरग-सुसद्द-बद्ध-कंठ-परिमंडियाण,
णाणामणि-कणग-रयणघंटिआ-वेगच्छिग-सुकयमालिआण,
वरघंटा-गलय-मालुज्जल-सिरिधराण,
पउमुप्पल-सगल-सुरभि-माला विभूसिआण,
वइरखुराण विविहविक्खुराण, '
फालिआमय-दंताण, तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्जतालुआण,
तवणिज्ज-जोत्तग सुजोइयाण,
कामगमाण पीइगमाण, मणोगमाण मणोरमाण
अमिअगईण अमिअ-बलवीरिअ-पुरिसक्कारपरक्कमाण महया गज्जिअ-गंभीर-रवेण महुरेण, मणहरेण
पूरेंता अंबर दिसाओ य सोभयंता,
चत्तारि देवसाहस्सीओ वसहरूवधारीण देवाण पच्चत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति,
चंदविमाणस्स णं उत्तरेण—
गणाण, सुभगाण, सुप्पभाण, तरमल्लिहायणाण तरमल्लिअच्छाण चंचुच्चिअ ललिअ-पुलिअ-चलचवल-चंचलगईण, ललंतलाम-गललाय-वरभूसणाण,
सन्नयपासाण संगयपासाण सुजायपासाण,
पीवर-वट्टिअ-सुसंठिअ-कडीण,
ओलंब पलंब-लक्खण-पमाण जुत्त-रमणिज्ज-वालपुच्छाण,
तणुसुहुम सुजाय-णिद्ध-लोमच्छविहराण,
मिउविसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ विच्छिण्ण केसरवालिहराण
ललंत-थासग-ललाड-वरभूसणाण,
मुहमण्डग-ओचूलग-चामर-थासग-परिमण्डिअ-कडीण,
तवणिज्ज-खुराण तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्ज-तालुआण, तवणिज्ज-जोत्तग-सुजोइआण,
कामगमाण पीइगमाण मणोगमाण, मणोरमाण,
अमिअगईण, अमिअ-बलवीरिअ-पुरिसक्कारपरक्कमाण
महया गज्जिअ महुरेणरवेण, गंभीर-मणहरेण पूरेंता अंबर, दिसाओ य सोभयंता
चत्तारि देवसाहस्सीओवरा हयरूवधारीण देवाण पच्चत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति
चंदविमाणस्स णं उत्तरेण —
सेयाण सुभगाण, सुप्पभाण तरमल्लिअच्छाण चंचुच्चिअ-सेयाण, ललिअ पुलिअ-चलचवल चंचलगईण,
ललंतलाम गललाय-वरभूसणाण,

—जंबु. वक्ष. ७, सु. १६८

जोइसियाण सिग्घ-मंदगइपरूवणं

९५ प सा एएसि णं चंदिम सूरिय-गह णक्खत्त-तारा-रूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगई वा, मंदगई वा ?

उ ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहिंतो गहा सिग्घगई,
गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चंदा, सव्वसिग्घगई तारा ।[1]

जोइसियाणं अप्प-महिड्ढिपरूवणं

प ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढिया वा महिड्ढिया वा ?

उ ता ताराहिंतो महिड्ढिया णक्खत्ता,
णक्खत्तेहिंतो महिड्ढिया गहा ।
गहेहिंतो महिड्ढिया सूरा,
सूरेहिंतो महिड्ढिया चंदा,
सव्वप्पड्ढिया तारा, सव्वमहिड्ढिया चंदा ।[2]

ताराणं अबाहा अंतरपरूवणं

९६ प ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स तारारूवस्स य एस णं केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?

उ दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तंजहा—

१ वाघाइमे य, २ निव्वाघाइमे य ।

क तत्थ णं जे से वाघाइमे, से णं जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसए ।
उक्कोसेणं, बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बायाले जोयणसए तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

ख तत्थ णं जे से णिव्वाघाइमे से णं जहण्णेणं पंच धणुसयाइं,
उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।[3]

---

१ क सूत्र ८३ और इस सूत्र में साम्य है ।
ख जंबू वक्ख ७, सु १६९
२ जंबू वक्ख ७ सु १७०
३ जंबु वक्ख ७, सु १७१

चंदस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवारविउव्वणा य

९७ प ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—

१ चंदप्पभा, २ दोसिणाभा, ३ अच्चिमाली, ४ पभंकरा ।

तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्सीपरिवारो पण्णत्तो ।

प पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं चत्तारि चत्तारि देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए ?

उ पभू णं ताओ एगमेगा देवी देवीसाहस्सीपरिवारं विउव्वित्तए ।
एवामेव सपुव्वावरेणं सोलसदेवीसहस्सा पण्णत्ता, से त्तं तुडिए ।

प ता पभू णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

उ णो इणट्ठे समट्ठे ।

प ता कह ते णो पभू जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

उ क ता चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए माणव एसु चेइयखंभेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुये जिणसकहाओ सण्णिक्खित्ताओ चिट्ठंति ।

ताओ णं चंदस्स जोइसिंदस्स जोइसरण्णो अण्णेसिं च बहूण जोइसियाण देवाण य, देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माण णिज्जाओ, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ ।

एवं खलु णो पभू चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ।

ख पभू णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहा सणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं, अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्ख देव साहस्सीहिं, अण्णेहि य बहूहिं जोइसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं, संपरिवुडे, महयाहय णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय घण-मुइंग

भोगाइ भुजमाणे विहरित्तए केवल परिवारणिड्ढीए।
णो चेव ण मेहुणवत्तियाए।

सूरस्स अग्गमहिसीओ देवीपरिवारविउव्वणा य

प ता सूरस्स ण जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ?

उ ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तजहा—
१ सूरप्पभा, २ आतवा, ३ अच्चिमाली, ४ पभकरा।
सेस जहा चदस्स,
णवर सूरवडेंसए विमाणे जाव नो चेव ण मेहुणवत्तियाए।

जोइसियाण देवाण ठिई

९८ प ता जोइसियाण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता?
उ ता जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम,
उक्कोसेण पलिओवम, वाससयसहस्समब्भहिय।

प ता जोइसिणीण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता?
उ ता जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम,
उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहि अब्भहिय।

प ता चदविमाणे ण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता?
उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्समब्भहिय।

प ता चदविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता?
उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहि अब्भहिय।

प ता सूरविमाणे ण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता?
उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेण पलिओवम वाससयहस्समब्भहिय।

प ता सूरविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता?
उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिओवम,
उक्कोसेण अद्ध पलिओवम पचहि वाससएहि अब्भहिय।

प ता गहविमाणे ण देवाण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिग्रोवम,
उक्कोसेण पलिग्रोवम ।

प ता गहविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिग्रोवम,
उक्कोसेण ग्रद्धपलिग्रोवम ।

प ता णक्खत्तविमाणे ण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहन्नेण चउब्भागपलिग्रोवम,
उक्कोसेण ग्रद्धपलिग्रोवम ।

प ता णक्खत्तविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहन्नेण ग्रट्ठभागपलिग्रोवम,
उक्कोसेण चउब्भागपलिग्रोवम ।

प ता ताराविमाणे ण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहण्णेण ग्रट्ठभागपलिग्रोवम,
उक्कोसेण चउब्भागपलिग्रोवम ।

प ता ताराविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

उ ता जहन्नेण ग्रट्ठभागपलिग्रोवम,
उक्कोसेण साइरेगग्रट्ठभागपलिग्रोवम ।[1]

जोइसियाण अप्प-बहुत्त

९९ प ता एएसि ण चदिम-सूरिय गह णक्खत्त-ताराण कयरे कयरेहिंतो ग्रप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

उ ता चदा य, सूरा य, एएण दोवि तुल्ला,
सव्वत्थोवा णक्खत्ता,
सखिज्जगुणा गहा,
सखिज्जगुणा तारा ।[2]



१ जंबु वक्ख ७, सु १७३
२ जबु वक्ख ७, सु १७४

उन्नीसवाँ प्राभृत

चंद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराण परिमाण

१०० प ता कइ णं चंदिम-सूरिया सव्वलोयं ओभासंति, उज्जोएंति, तवेंति, पभासेंति ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—

तत्थेगे एवमाहंसु—

१ ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोयं ओभासइ, उज्जोएइ, तवेइ, पभासइ, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

२ ता तिण्णि चंदा, तिण्णि सूरा सव्वलोयं ओभासेंति उज्जोएंति, तवेंति, पभासेंति, एगे एवमाहंसु ।

एगे पुण एवमाहंसु—

३ ता अद्धट्ठ चंदा अद्धट्ठ सूरा सव्वलोयं ओभासेंति जाव पभासेंति, एगे एवमाहंसु ।

एएणं अभिलावेणं णेयव्वं,

४ सत्त चंदा, सत्त सूरा,

५ दस चंदा, दस सूरा,

६ बारस चंदा, बारस सूरा,

७ बायालीसं चंदा, बायालीसं सूरा,

८ बावत्तरीं चंदा, बावत्तरीं सूरा,

९ बायालीसं चंदसयं बायालीसं सूरसयं,

१० बावत्तरं चंदसयं बावत्तरं सूरसयं,

११ बायालीसं चंदसहस्सं बायालीसं सूरसहस्सं,

१२ बावत्तरं चंदसहस्सं, बावत्तरं सूरसहस्सं, सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति, पभासेंति एगे एवमाहंसु,

वयं पुण एवं वयामो —

जम्बूद्दीवो-जवुद्दोवे जोइसियपरिमाण

ता श्रयण्ण जवुद्दोवे दोवे सव्वदीवसमुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डाए जाव एग जोयणसयसहस्स श्रायाम विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, सोलस सहस्साइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे, श्रट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ, श्रद्धगुल च किंचि विसेसाहिय परिक्खेवेण पण्णत्ते।

१ प ता जवुद्दोवे दोवे —

केयइया चदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प केयइया सूरा तविसु वा, तवेंति वा, तविस्सत्ति वा ?

३ प केयइया गहा चार चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ?

४ प केयइया णक्खत्ता जोअ जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ?

५ प केयइया तारागणकोडि-कोडोश्रो सोभ सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ?

१ उ ता जवुद्दोवे दोवे—

दो चदा पभासेंसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ।

२ उ दो सूरिया तविसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ।

३ उ छावत्तरिं गहसय चार चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ।

४ उ छप्पण्ण णक्खत्ता जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ।

५ उ एग सयसहस्स तेत्तीस च सहस्सा णव सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ।

गाहाश्रो—

दो चदा दो सूरा, णक्खत्ता खलु हवति, छप्पणा ।
छावत्तर गहसय, जवुद्दोवे विचारीण ॥
एग च सयसहस्स तेत्तोस खलु भवे सहस्साइ ।
णव य सया पण्णासा, तारागणकोडिकोडीण ॥

लवणसमुद्दो

ता जवुद्दीव दीव लवणे नाम समुद्दे वट्टे वलयाकारसठाणसठिए सव्वश्रो समता सपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ।

प ता लवणे ण समुद्दे किं समचक्कवालसठिए विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसठिए, नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता लवणसमुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, पण्णरस जोयणसयसहस्साइं एक्कासीयं च सहस्साइं सयं च एगूणचालीसं किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं । गाहा—

पण्णरस सयसहस्सा, एक्कासीयं सयं च ऊतालं ।
किंचि विसेसेणूणो, लवणोदहिणो परिक्खेवो ।।

१ प ता लवणसमुद्दे—
केवइया चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प केवइया सूरा तविंसु वा, तविंति वा, तविस्संति वा ?

३ प केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा चरिस्संति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प केवइया तारागण कोडाकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा ?

१ उ ता लवणसमुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ।

२ उ चत्तारि सूरिया तविंसु वा, तविंति वा, तविस्संति वा ।

३ उ तिण्णि बावण्णा महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ बारस णक्खत्तसयं जोगं जोएंसु वा जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ दो सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा णव य सया तारागणकोडाकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा, सोभिस्संति वा ।

गाहाओ—

चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ।
बारस णक्खत्तसयं, गहाण तिण्णेव बावण्णा ।।
दोच्चेव सयसहस्सा, सत्तट्ठिं खलु भवे सहस्साइं ।
णव य सया लवणजले, तारागणकोडिकोडीणं ।।

धायईसंडदीवे

ता लवणसमुद्दं धायईसंडे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ।

प ता धायईसंडे णामं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता धायईसंडे णामं दीवे समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प धायईसडे ण दीवे केवइय चक्कवालविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण ?
आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता चत्तारि जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण, ईयालीस जोयणसयसहस्साइ दस य सहस्साइ णव य एगट्ठे जोयणसए किंचि विसेसूण परिक्खेवेण, आहिए त्ति वएज्जा

गाहा—
धायइसड परिरश्रो, ईयाल दसुत्तरा सयसहस्सा ।
णव य सया एगट्ठा, किंचि विसेसेण परिहीणा ॥

१ प धायईसडे दीवे—
केवइया चदा पभासेंसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प केवइया सूरिया तवेंसु वा, तविति वा, तविसिस्सति वा ?

३ प केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरति वा चरिस्सति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ?

५ प केवइया तारागणकोडाकोडीश्रो, सोभ सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ?

१ उ बारस चदा पभासेंसु वा, पभासति वा, पभासिस्सति वा ।

२ उ बारस सूरिया तवेंसु वा, तविंति वा, तविसिस्सति वा ।

३ उ एग छप्पण्ण महग्गहसहस्स चार चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ।

४ उ तिण्णि छत्तीसा णक्खत्तसया जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ।

५ उ गाहाश्रो—
अट्ठेव सय सहस्सा, तिण्णि सहस्साइ सत्त य सयाइ ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ॥

चउवीस ससि रविणो, णक्खत्तसया य तिण्णि छत्तीसा ।
एग च गहसहस्स, छप्पण धायईसडे ॥

अट्ठेव सयसहस्सा, तिण्णि सहस्साइ सत्त य सयाइ ।
धायइसडे दीवे, तारागण कोडिकोडीण ॥

कालोए समुद्दे

ता धायईसड ण दीव कालोए णाम समुद्दे वट्टे वलयागारसठाणसठिए सव्वश्रो समता सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ।

प ता कालोए ण समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए, विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता कालोए ण समुद्दे समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए।

प ता कालोए ण समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता कालोए ण समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते।

एक्काणउइं जोयणसयसहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पंचुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा। गाहा—

एक्काणउई सयसहस्सं, सत्तरिं सहस्साइं परिरओ तस्स।

अहियाइं छच्च पंचुत्तराइं, कालोदधि वरस्स॥

१ प ता कालोये ण समुद्दे—

केवइया चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प केवइया सूरा तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ?

३ प केवइया गहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा, सोभिस्संति वा ?

१ उ ता कालोये ण समुद्दे बायालीसं चंदा पभासेंसु वा पभासिंति वा, पभासिस्संति वा।

२ उ बायालीसं सूरा तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा।

३ उ तिण्णि सहस्सा छच्च छन्नउया महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा।

४ उ एक्कारस छावत्तरा णक्खत्तसया जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा।

५ उ अट्ठावीसं सयसहस्साइं, बारस सहस्साइं नव य सयाइं पण्णासा तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा।

गाहाओ—

बायालीसं चंदा, बायालीसं च दिणकरादित्ता।
कालोदहिंमि एए, चरंति संबद्धलेसागा॥

णक्खत्तसहस्सं, एगमेव छावत्तरं च सतमण्णं।
छच्चसया छण्णउया, महग्गहा, तिण्णि य सहस्सा॥

अट्ठावीस सयसहस्सं, बारस य सहस्साइं ।
णवयसया पण्णासा, तारागण कोडिकोडीणं ।।

पुक्खरवरदीवे

ता कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ।

प ता पुक्खरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता पुक्खरवरे णं दीवे समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प ता पुक्खरवरे णं दीवे केवइयं समचक्कवालविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं ?

उ ता सोलस जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं ।

एगा जोयणकोडी बाणउइं च सयसहस्साइं अउणावन्नं च सहस्साइं अट्ठ चउणउए जोयणसए परिक्खेवेणं, आहिए त्ति वएज्जा । गाहा—

कोडी बाणउई खलु, अउणाणउइं भवे सहस्साइं ।
अट्ठसया चउणउया, परिरओ पोक्खरवरस्स ।।

१ प ता पुक्खरवरे णं दीवे—
केवइया चंदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ?

२ प केवइया सूरा तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ?

३ प केवइया गाहा चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोगं जोइंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ?

५ प केवइया तारागण कोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा सोभिस्संति वा ?

१ उ ता चोयालं चंदसयं पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा

२ उ चोयालं सूरियाणं सयं तविंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा ।

३ उ बारस सहस्साइं छच्च बावत्तरा महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा ।

४ उ चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं च णक्खत्ता जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा ।

५ उ छण्णउइसयसहस्साइं चोयालीसं सहस्साइं चत्तारि य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा ।

गाहाओ

चत्ताल चदसय, चत्ताल चेव सूरियाण सयं।
पोक्खरवरदीवम्मि य, चरंति एए पभासता॥

चत्तारि सहस्साइ, बत्तीस चेव हुंति णक्खत्ता।
छच्च सया बावत्तर, महग्गहा बारह सहस्सा॥

छण्णउइ सयसहस्सा, चोत्तालीस खलु भवे सहस्साइं।
चत्तारि य सया खलु, तारागण कोडि कोडी ण॥

माणुसुत्तरे पव्वए

ता पुक्खरवरस्स ण दीवस्स बहुमज्झदेसभाए माणुसुत्तरे णाम पव्वए पण्णत्ते, वट्टे वलयाकार-सठाणसठिए जे ण पुक्खरवर दीव दुहा विभयमाणे विभयमाणे चिट्ठइ, तजहा—

१ अब्भितरपुक्खरद्ध च, २ बाहिरपुक्खद्धरद्ध च।

अब्भितर-पुक्खरद्धे

प ता अभितर-पुक्खरद्धे ण कि समचक्कवालसठिए, विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता समचक्कवालसठिए, नो विसमचक्कवालसठिए।

प ता अब्भितर-पुक्खरद्धे ण केवइय चक्कवालविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण ?
आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता अट्ठ जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभे ण,

एक्का जोयणकोडी बायालीस च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइ दो अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेण, आहिए त्ति वएज्जा,

"अट्ठेव सयसहस्सा अब्भितरपुक्खरस्स विक्खभो।"[1]

१ प ता अब्भितरपुक्खरद्धे ण केवइया चदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प केवइया सूरा तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ?

३ प केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोएसु वा, जोएंति वा, जोइस्सति वा ?

५ प केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ?

१ उ बावत्तरि चदा पभासेंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्सति वा।

---

१ ये गाथा के प्रारम्भ के दो पद हैं।

२ उ बावत्तरिं सूरिया तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा।

३ उ छ महग्गहसहस्सा तिन्नि सए य छत्तीसा चार चरेंसु वा, चरंति वा, चरिस्सति वा।

४ उ दोण्णि सोला णक्खत्तसहस्सा जोग जोएसु वा, जोएंति वा, जोइस्सति वा।

५ उ अडयालीस सयसहस्सा, बावीस च सहस्सा दोण्णि य सया तारागणकोडिकोडीण सोभ सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्सति वा।

गाहाओ —

बावत्तरिं च चदा बावत्तरिमेव दिणकरादित्ता।
पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एए पभासेंता॥

तिण्णि सया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाण तु।
णक्खत्ताण तु भवे, सोलाइ दुवे सहस्साइ॥

अडयालसयसहस्सा, बावीस खलु भवे सहस्साइ।
दो य सय पुक्खरद्धे, तारागणकोडिकोडीण॥

समयक्खेत्ते

प ता समयक्खेत्ते ण केवइय आयाम-विक्खभेण केवइय परिक्खेवेण? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयाम विक्खभेण—
एगा जोयणकोडी, बायालीस च सयसहस्साइ दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा,

गाहा--

पणयाल सय सहस्सा, समयखेत्तस्स विक्खभो।[1]
कोडी बायालीस, सहस्स दुसया य अउणपण्णासा।
समयखेत्तस्स परिरओ, एमेव य पुक्खरद्धस्स॥

१ प ता समयक्खेत्ते ण केवइया चदा पभासेंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्सति वा?

२ प केवइया सूरा तवेंसु वा, तवति वा, तवस्सति वा?

३ प केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्सति वा?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोइसु वा, जोइति वा, जोइस्सति वा?

५ प केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा सोभंति वा, सोभिस्सति वा?

---

१ ये गाथा के उत्तरार्ध के दो पद हैं।

१ उ ता बत्तीस चंदसयं पभासेंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा।

२ उ ता बत्तीसं सूरसयं तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्संति वा।

३ उ ता एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसया चारं चरिंसु वा, चरंति वा, चरिस्संति वा।

४ उ ता तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया णक्खत्तसया जोगं जोएंसु वा, जोएंति वा, जोइस्संति वा।

५ उ ता अट्ठासीइं सयसहस्साइं चत्तालीसं च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा।

गाहाओ—

बत्तीसं चंदसयं, बत्तीसं चेव सूरियाण सयं।
सयलं माणुसलोयं चरंति एए पभासेंता॥

एक्कारस य सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाण तु।
छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा॥

अट्ठासीइं चत्ताइं, सय सहस्साइं मणुयलोगंमि।
सत्त य सया अणूणा, तारागणकोडिकोडीणं॥

एसो तारापिंडो, सव्वसमासेण मणुयलोगंमि।
बहिया पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया असंखेज्जा॥

एवइयं तारग्गं, जं भणियं माणुसंमि लोगंमि।
चारं कलंबुया पुप्फसंठियं जोइसं चरइ॥

रवि ससि गह णक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए।
जेसिं णामागोत्तं, न पागया, पण्णवेहिंति॥

जोइसियाण पिडगाइं—

छावट्ठिं पिडगाइं, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि।
दो चंदा दो सूरा, य हुंति एक्केकए पिडए॥

छावट्ठिं पिडगाइं, महागहाणं मणुयलोगंमि।
छावत्तरं गहसयं, होइ एक्केकए पिडए॥

छावट्ठि पिडगाइ णक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि ।
छप्पण्ण णक्खत्ता हुंति एक्केक्कए पिडए ॥

जोइसियाण पंतीओ—

गाहाओ—

चत्तारि य पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि च, हवइ एक्केक्किया पंती ॥
छायत्तर गहाणं, पंतिसयं हवंति मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि य हवइ एक्केक्किया पंती ॥
छप्पन्न पंतीओ, णक्खत्ताणं तु मणुयलोगंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि हवइ एक्केक्किया पंती ॥

जोइसियाणं मंडला—

गाहाओ—

ते मेरुमणुचरंता, पयाहिणावत्त मंडला सव्वे ।
अणवट्ठिय जोगेहिं, चंदा सूरा गहगणा य ॥
णक्खत्त-तारगाणं, अवट्ठिया, मंडला मुणयव्वा ।
तेऽवि य पयाहिणावत्तमेव मेरु अणुचरंति ॥

जोइसियाणं मंडलसंकमणं—

रयणिकर दिणकराणं, उड्ढं च अहेव संकमो नत्थि ।
मंडलसंकमणं पुण, सब्भंतर-बाहिरं तिरिए ॥

जोइसाणं चार सुह दुहस्स निमित्तकारणं—

रयणिकर-दिणकराणं, णक्खत्ताणं महग्गहाणं च ।
चारविसेसेण भवे, सुह-दुक्खविही मणुस्साणं ॥

जोइसाणं तावक्खेत्तं—

तेसिं पविसंताणं तावक्खेत्तं तु वड्ढए नियमा ।
तेणेव कमेण पुणो, परिहायइ निक्खमंताणं ॥
तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया हुंति तावक्खेत्तपहा ।
अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंद-सूराणं ॥

चदस्स परिवुड्ढि-परिहाणी—

गाहाओ—

केणइ वड्ढइ चदो ? परिहाणी केण हुति चदस्स ?
कालो वा जोण्हो वा ? केणऽणुभावेण चदस्स ?

किण्हं राहुविमाणं णिच्चं चदेण होइ अविरहियं।
चउरगुलमसपत्तं, हिच्चा चदस्स तं चरइ॥

बावट्ठि बावट्ठि, दिवसे दिवसे तु सुक्कपक्खस्स।
ज परिवड्ढइ चदो, खवेइ तं चेव कालेणं॥

पण्णरसइ भागेण य चद पण्णरसमेव त वरइ।
पण्णरसइ भागेण य, पुणोऽवि तं चेव वक्कमइ॥

एव वड्ढइ चदो, परिहाणी एव होइ चदस्स।
कालो वा जोण्हो वा, एवऽणुभावेण चदस्स॥

अणवट्ठिया अवट्ठिया वा जोइसिया —

गाहाओ—

अतोमणुस्स खेत्ते, हवति चारोवगा उ उववण्णा।
पचविहा जोइसिया, चदा सूरा गहगणा य॥

तेण पर जे सेसा, चदाइच्च गह तार-णक्खत्ता।
णत्थि गई णवि चारो, अवट्ठिया ते मुणेयव्वा॥

अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्द ेसु जोइसियाण पमाण—

गाहाओ—

एव जंवुद्दीवे, दुगुणा, लवणे चउग्गुणा हुति।
लावणगा य तिगुणिया, ससि सूरा धायइसडे॥

दो चदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए।
धायइसडे दीवे, बारस चदा य सूरा य॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाण पमाण —

गाहाओ —

धायइसडप्पभिइस्स, उद्दिट्ठा तिगुणिया भवे चदा।
आइल्लचद सहिया, अणतराणतरे खेत्तेग॥

छावट्ठि पिडगाइं णक्खत्ताण तु मणुयलोगम्मि ।
छप्पण्ण णक्खत्ता हुंति एक्केक्कए पिडए ॥

जोइसियाण पंतीओ—

गाहाओ—

चत्तारि य पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगम्मि ।
छावट्ठि छावट्ठि च, हवइ एक्केक्किया पंती ॥
छावत्तर गहाण, पंतिसयं हवति मणुयलोगम्मि ।
छावट्ठि छावट्ठि च हवइ एक्केक्किया पंती ॥
छप्पन्न पंतीओ, णक्खत्ताण तु मणुयलोगम्मि ।
छावट्ठि छावट्ठि हवइ एक्केक्किया पंती ॥

जोइसियाण मंडला—

गाहाओ—

ते मेरुमणुचरंता, पयाहिणावत्त मंडला सव्वे ।
अणवट्ठिय जोगेहिं, चंदा सूरा गहगणा य ॥
णक्खत्त-तारगाणं, अवट्ठिया, मंडला मुणेयव्वा ।
तेऽवि य पयाहिणावत्तमेव मेरुं अणुचरंति ॥

जोइसियाण मंडलसंकमण—

रयणिकर-दिणकराणं, उड्ढं च अहेय संकमो नत्थि ।
मंडलसंकमणं पुण, सब्भंतर-बाहिरं तिरिए ॥

जोइसाण चार सुह दुहस्स निमित्तकारण—

रयणिकर दिणकराणं, णक्खत्ताण महग्गहाण च ।
चारविसेसेण भवे, सुह-दुक्खविही मणुस्साणं ॥

जोइसाण तावक्खेत्त—

तेसिं पविसंताण तावक्खेत्तं तु वड्ढए णियय ।
तेणेव कमेण पुणो, परिहायइ निक्खमाणाणं ॥
तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिया हुंति तावक्खेत्तपहा ।
अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंद-सूराणं ॥

चंदस्स परिवुड्ढि-परिहाणी—

गाहाओ—

केणइ वड्ढइ चंदो ? परिहाणी केण हुंति चंदस्स ?
कालो वा जोण्हो वा ? केणऽणुभावेण चंदस्स ?

किण्हं राहुविमाणं णिच्चं चंदेण होइ अविरहियं।
चउरंगुलमसपत्तं, हिच्चा चंदस्स तं चरइ॥

बावट्ठिं बावट्ठिं, दिवसे दिवसे उ सुक्कपक्खस्स।
जं परिवड्ढइ चंदो, खवेइ तं चेव कालेणं॥

पण्णरसइ भागेण य चंदं पण्णरसमेव तं वरइ।
पण्णरसइ भागेण य, पुणोऽवि तं चेव वक्कमइ॥

एवं वड्ढइ चंदो, परिहाणी एवं होइ चंदस्स।
कालो वा जोण्हो वा, एवऽणुभावेण चंदस्स॥

अणवट्ठिया अवट्ठिया वा जोइसिया -

गाहाओ—

अंतोमणुस्स खेत्ते, हवंति चारोवगा उ उववण्णा।
पंचविहा जोइसिया, चंदा सूरा गहगणा य॥

तेण परं जे सेसा, चंदाइच्च गह तार-णक्खत्ता।
णत्थि गई णवि चारो, अवट्ठिया ते मुणेयव्वा॥

अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु जोइसियाणं पमाणं—

गाहाओ—

एवं जंबुद्दीवे, दुगुणा, लवणे चउग्गुणा हुंति।
लावणगा य तिगुणिया, ससि सूरा धायइसंडे॥

दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए।
धायइसंडे दीवे, बारस चंदा य सूरा य॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाणं पमाणं—

गाहाओ -

धायइसंडप्पभिइस्स, उद्दिट्ठा तिगुणिया भवे चंदा।
आइल्लचंद सहिया, अणंतराणंतरे खेत्ते॥

रिक्खग्गह-तारागग्ग, दीव-समुद्दे जहिच्छसी णाउ ।
तस्ससीहि तग्गुणिय, रिक्ख-ग्गह-तारग्ग तु ॥

बहिया उ माणुसणगस्स चद-सूराणऽवट्ठिया जोण्हा ।
चदा अभिईजुत्ता, सूरा पुण हुति पुस्सेहि ॥

माणुसनगस्स बहिया जोइसियाण अतर—

गाहाम्रो —
चदाम्रो सूरस्स य, सूरा चदस्स अतर होइ ।
पण्णाससहस्साइ तु जोयणाण अणूणाइँ ॥

सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अतर होई ।
बाहि तु माणुसनगस्स जोयणाण सयसहस्सा ॥

सूरतरिया चंदा, चदतरिया य दिणयरा दित्ता ।
चित्ततरलेसागा, सुहलेसा मदलेसा य ॥

माणुसनगस्स बहिया एगससीपरिवारो -

घणमुइंग-पडुप्पवाइयरवेण, महया उक्किट्ठ सीहणादबोलकलकलरवेण, अच्छ पव्वयराय पयाहिणावत्तमंडलचारं मेरु अणुपरियट्टंति ।

पुव्वइंदस्स चवणाणंतरं अण्णइंदस्स उववज्जणं

प ता तेसिं णं देवाणं जाहे इंदे चयइ से कयमिदाणिं पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पंच सामाणिया देवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव अण्णे इत्थ इंदे उववण्णे भवइ ।

प ता इंदठाणे णं केवइएणं कालेणं विरहिय पण्णत्ते ?

उ ता जहण्णेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे ।

माणुसखेत्तस्स बहियाजोइसियाणउड्ढोववण्णगाइपरूवणं

प ता बहिया णं माणुस्सखेत्तस्स जे चंदिमसूरिया गहगण णक्खत्त तारारूवा, ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठिइया, गइरईया गइसमावण्णगा ?

उ ता ते णं देवा नो उड्ढोववण्णगा, नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, नो चारोववण्णगा, चारट्ठिइया नो गइरइया, नो गइसमावण्णगा ।

पगिट्ठगसंठाणसंठिएहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाहस्सिएहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहय-णट्ट गीय वाइय-तंती-तल ताल-तुडिय-घणमुइंग-पडुप्प-वाइयरवेणं, महया उक्किट्ठसीहणाद-बोलकलकलरवेणं, दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।

सुहलेसा मंदलेसा मंदायवलेसा, चित्ततरलेसा, अण्णोऽण्ण समोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिया ते पदेसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ।

प ता तेसिं णं देवाणं जाहे इंदे चयइ, से कहमिदाणिं पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पंच सामाणिया देवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जाव अण्णे इत्थ इंदे उववण्णे भवइ ।

प ता इंदठाणे णं केवइएणं कालेणं विरहिय पण्णत्ते ।

उ ता जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासे ।

सेसाणं दीव-समुद्दाणं आयामाइ

१०१ ता पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठइ ।

रविउग्गह-तारागग्ग, दीव-समुद्दे जहिच्छसी णाउ ।
तस्ससीहिं तग्गुणिय, रविउ ग्गह-तारग्ग तु ॥

बहिया उ माणुसणगस्स चद-सूराणऽवट्ठिया जोण्हा ।
चदा अभिईजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥

माणुसनगस्स बहिया जोइसियाण अतर—

गाहाओ —
चदाओ सूरस्स य, सूरा चदस्स अतर होइ ।
पण्णाससहस्साइ तु जोयणाण अणूणाइं ॥

सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अतर होई ।
बाहिं तु माणुसनगस्स जोयणाण सयसहस्स ॥

सूरतरिया चदा, चदतरिया य दिणयरा दित्ता ।
चित्ततरलेसागा, सुहलेसा मदलेसा य ॥

माणुसनगस्स बहिया एगससीपरिवारो —
गाहाओ —
अट्ठासीइ च गहा, अट्ठावीस च हुंति णक्खत्ता य ।
एगससी परिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ॥

छावट्ठि सहस्साइ, णव चेव सयाइपचसयराइ ।
एगससी परिवारो, तारागण कोडिकोडीण ॥

अतोमणुस्सखेत्ते जोइसियाण उड्ढोववण्णगाइपरूवण

प अतो मणुस्सखेत्ते जे चदिम-सूरिया गह णक्खत्त-तारारूवा ते ण देवा किं उड्ढोव वण्णगा, कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठितिया, गतिरतिया गतिसमावण्णगा ?

उ ता ते ण देवा नो उड्ढोववण्णगा नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोव वण्णगा नो चारट्ठिईया गइरइया गइसमावण्णा ।

उड्ढामुह-कलबुयपुप्फसठाणसठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिएहिं बाहिराहिं य वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहयणट्टगीयवाइय-तती तल ताल-तुडिय

घणमुइंग-पडुप्पवाइयरवेण, महया उक्किट्ठ सीहणादबोलकलकलरवेण, अच्छ पव्वयराय पयाहिणावत्तमंडलचार मेरु अणुपरियट्टंति ।

पुव्वइंदस्स चवणाणंतर अण्णइंदस्स उववज्जण

प ता तेसि ण देवाण जाहे इंदे चयइ से कयमिदाणि पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पंच सामाणिया देवा त ठाण उवसपज्जित्ताण विहरति जाव अण्णे इत्थ इंदे उववण्णे भवइ ।

प ता इंदठाणे ण केवइएण कालेण विरहिय पण्णत्त ?

उ ता जहण्णेण इक्क समय उक्कोसेण छम्मासे ।

माणुसखेत्तस्स बहियाजोइसियाणउड्ढोववण्णगाइपरूवण

प ता बहिया ण माणुस्सखेत्तस्स जे चदिमसूरिया गहगण णक्खत्त तारारूवा, ते ण देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठिइया, गइरईया गइसमावण्णगा ?

उ ता ते ण देवा नो उड्ढोववण्णगा, नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, नो चारोववण्णगा, चारट्ठिइया नो गइरइया, नो गइसमावण्णगा ।

पगिट्ठगसठाणसठिएहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाहस्सिएहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहय णट्ट-गीय वाइय-तंती-तल ताल-तुडिय घणमुइग-पडुप्प-वाइयरवेण, महया उक्किट्ठसीहणाद-बोलकलकलरवेण, दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।

सुहलेसा मदलेसा मदायवलेसा, चित्तंतरलेसा, अण्णोऽण्ण समोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिया ते पदेसे सव्वओ समता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ।

प ता तेसि ण देवाण जाहे इंदे चयइ, से कहमिदाणि पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पंच सामाणिया देवा त ठाण उवसपजित्ताण विहरति, जाव अण्णे इत्थ इंदे उववण्णे भवइ ।

प ता इंदठाणे ण केवइएण कालेण विरहिय पण्णत्ते ।

उ ता जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासे ।

सेसाण दीव-समुद्दाण आयामाइ

१०१ ता पुक्खरवर ण दीव पुक्खरोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयाकारसठाणसठिए सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ण चिट्ठइ ।

प ता पुक्खरोदे ण समुद्दे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प ता पुक्खरोदे ण समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं ? केवइयं परिक्खेवेणं ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,
संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहिए त्ति वएज्जा ।

प ता पुक्खरोदे ण समुद्दे केवइया चंदा पभासेंसु वा, जाव केवइया तारागण-कोडिकोडीओ सोभं सोभिस्संति वा ।

उ ता पुक्खरोदे ण समुद्दे संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव संखेज्जाओ तारागणकोडिकोडिओ सोभं सोभिस्संति वा ।

एवं एएणं अभिलावेणं—

१ वरुणवरे दीवे, २ वरुणोदे समुद्दे,

१ खीरवरे दीवे, २ खीरोदे समुद्दे,

१ घयवरे दीवे, २ घयोदे समुद्दे,

१ खोयवरे दीवे, २ खोयोदे समुद्दे,

१ नंदीसरवरे दीवे, २ नंदीसरे समुद्दे,

१ अरुणे दीवे, २ अरुणोदे समुद्दे,

१ अरुणवरे दीवे, २ अरुणवरोदे समुद्दे

१ अरुणवरोभासे दीवे, २ अरुणवरभासोदे समुद्दे,

१ कुंडले दीवे, २ कुंडलोदे समुद्दे,

१ कुंडलवरे दीवे, कुंडलवरोदे समुद्दे,

१ कुंडलवरोभासे दीवे, २ कुंडलवरभासोदे समुद्दे ।

सव्वेसिं विक्खंभ-परिक्खेवो जोइसाइं च पुक्खरोदसागरसरिसाइं ।

ता कुंडलवरभासोदं समुद्दं रुयए दीवे वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए, सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ।

प ता रुयए णं दीवे किं समचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए ?

उ ता समचक्कवालसंठिए, नो विसमचक्कवालसंठिए ।

प ता रुयए ण दीवे केवइय समचक्कवालविक्खभेण, केवइय परिक्खेवेण ?

उ ता असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण,

असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण आहिए त्ति वएज्जा।

प ता रुयगे ण दीवे केवइया चदा पभासेंसु वा जाव केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु सोभिस्सति वा ?

उ ता रुयगे ण दीवे असखेज्जा चदा पभासेंसु वा जाव असखेज्जाओ तारागण-कोडि-कोडीओ सोभ सोभिस्सति वा।

एव रुयगोदे समुद्दे,

१ रुयगवरे दीवे, २ रुयगवरोदे समुद्दे।

१ रुयगवरोभासे दीवे, २ रुयगवरभासोदे समुद्दे।

एव तिपडोयारा दीव-समुद्दा णायव्वा,

जाव, १ सूरे दीवे, २ सूरोदे समुद्दे,

१ सुरवरे दीवे, २ सूरवरोदे समुद्दे,

१ सूरवरोभासे दीवे, २ सूरवरभासोदे समद्दे।

सव्वेसि विक्खभ परिक्खेवो जोइसाइ रुयगवरदीवसरिसाइ।

ता सूरवरोभासोद ण समुद्द देवे णाम दीवे वट्टे वलयाकारसठाणसठिए सव्वओ समता सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ।

प ता देवे ण दीवे कि समचक्कवालसठिए, विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता समचक्कवालसठिए नो विसमचक्कवालसठिए।

प ता देवे ण दीवे केवइय चक्कवालविक्खभेण केवइय परिक्खेवेण ? आहिए त्ति वएज्जा।

उ ता असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण आहिए त्ति वएज्जा।

प ता देवे ण दीवे केवइया चदा पभासेंसु वा जाव केवइया तारागण-कोडिकोडीओ सोभ सोभिस्सति वा ?

उ ता देवे ण दीवे असखेज्जा चदा पभासेंसु वा जाव असखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभिस्सति वा।

एवं देवोदे समुद्दे —

१ णागे दीवे, २ णागोदे समुद्दे,

१ जक्खे दीवे, २ जक्खोदे समुद्दे,

१ भूए दीवे, २ भूओदे समुद्दे,

१ सयंभूरमणे दीवे, २ सयंभूरमणे समुद्दे ।

सव्वेसिं विक्खंभ परिक्खेवे जोइसाइं देवदीवसरिसाइं ।



बीसवाँ प्राभृत

चंदिम-सूरियाण अणुभावो

१०२ प ता कह ते अणुभावे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, तजहा—

१ तत्थेगे एवमाहंसु—

ता चंदिम-सूरिया ण—
नो जीवा, अजीवा,
नो घणा, झुसिरा,
नो बादरबोंदिधरा कलेवरा ।

नत्थि ण तेसिं १ उट्ठाणेइ वा, २ कम्मेइ वा, ३ बलेइ वा, ४ वीरिएइ वा, ५ पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।

नो विज्जु लवति, नो असणिं लवति, नो थणिय लवति ।

अहे य ण बादरे वाउकाए समुच्छइ, समुच्छित्ता विज्जु पि लवति, असणिं पि लवति, थणिय पि लवति "एगे एवमाहंसु" ।

१ एगे पुण एवमाहंसु—

ता चंदिम-सूरिया ण—
जीवा, नो अजीवा,
घणा, नो झुसिरा,
बादरबोंदिधरा, नो कलेवरा ।

अत्थि ण तेसिं १ उट्ठाणेइ वा, २ कम्मेइ वा, ३ बलेइ वा, ४ वीरिएइ वा, ५ पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।

ते विज्जु पि लवति, असणिं पि लवति, थणिय पि लवति, "एगे एवमाहंसु" ।

वय पुण एव वयामो

ता चंदिम-सूरिया ण देवाण महिड्ढिया, महज्जुइया, महब्बला, महाजसा, महासोक्खा, महाणुभागा वरवत्थधरा, वरमल्लधरा, वराभरणधरा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए अन्ने चयति, अन्ने उववज्जति ।

राहु-कम्मपरूवण

१०३ प ता कह ते राहुकम्मे ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तजहा –

एत्थेगे एवमाहसु—

१ अत्थि ण से राहू देवे जे ण चद वा सूर वा गिण्हइ, "एगे एवमाहसु"।

एगे पुण एवमाहसु—

२ नत्थि ण से राहू देवे जे ण चद वा सूर वा गिण्हइ, "एगे एवमाहसु"।

तत्थ जे ते एवमाहसु—

ता अत्थि ण से राहू देवे जे ण चद वा सूर वा गिण्हइ, ते एवमाहसु—

ता राहू ण देवे चद वा सूर वा गेण्हमाणे—

१ बुद्धतेण गिण्हित्ता, बुद्धतेणमुयइ,
२ बुद्धतेण गिण्हित्ता, मुद्धतेणमुयइ,
३ मुद्धतेण गिण्हित्ता, बुद्धतेणमुयइ,
४ मुद्धतेण गिण्हित्ता, मुद्धतेणमुयइ,

१ वामभुयतेण गिण्हित्ता वामभुयतेण मुयइ,
२ वामभुयतेण गिण्हित्ता, दाहिणभुयतेण मुयइ,
३ दाहिणभुयतेण गिण्हित्ता वामभुयतेण मुयइ,
४ दाहिणभुयतेण गिण्हित्ता दाहिणभुयतेण मुयइ ॥

तत्थ जे ते एवमाहसु—

ता नत्थि ण से राहू देवे जे ण चद वा, सूर वा गेण्हइ, ते एवमाहसु—

तत्थ ण इमे पण्णरसकसिणपोग्गला, पण्णत्ता, तजहा—१ सिघाणए, २ जडिलए, ३ खरए, ४ खतए, ५ अजणे, ६ खजणे, ७ सीतले, ८ हिमसीतले, ९ केलासे, १० अरुणाभे, ११ परिज्जए, १२ णभसूरए, १३ कविलिए, १४ पिगलए, १५ राहू।

ता जया ण एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला सया चदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवति, तया ण माणुसलोयसि माणुसा एव वयति—"एव खलु राहू चद वा सूर वा गेण्हइ"।

एव ता जया ण एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला णो सया चदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवति, णो खलु तया माणुसलोयसि माणुसा एव वयति—"एव खलु राहू चद वा सूर वा गेण्हइ, ते एवमाहसु।

वय पुण एव वयामो—

ता राहू ण देवे महिड्ढीए महज्जुइए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभावे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे वराभरणधारी ।

राहुस्स णव णामाइ

ता राहुस्स ण देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, तजहा—१ सिंघाडए, २ जडिलए, ३ खरए, ४ खेत्तए, ५ ढड्डुरे, ६ मगरे, ७ मच्छे, ८ कवच्छभे, ९ कण्णसप्पे ।

राहुस्स विमाणा पचवण्णा

ता राहुस्स ण देवस्स विमाणा पचवण्णा पण्णत्ता, तजहा—१ किण्हा, २ नीला, ३ लोहिया, ४ हालिद्दा, ५ सुक्किल्ला ।

अत्थि कालए राहुविमाणे खजणवण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि लोहिए राहुविमाणे मजिट्ठावण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि हालिद्दए राहुविमाणे हालिद्दावण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाण वा, चदस्स वा, सूरस्स वा लेस्स पुरत्थिमेण आवरित्ता पच्चत्थिमेण वीईवयइ, तया ण पुरत्थिमेण चदे वा सूरे वा उवदसेइ पच्चत्थिमेण राहू ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा सूरस्स वा लेस दाहिणेण आवरित्ता उत्तरेण वीईवयइ, तया ण दाहिणेण चदे वा सूरे वा उवदसेइ, उत्तरेण राहू ।

एएण अभिलावेण पच्चत्थिमेण आवरित्ता पुरत्थिमेण वीईवयइ, उत्तरेण आवरित्ता दाहिणेण वीईवयई ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा सूरस्स वा लेस दाहिणपुरत्थिमेण आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेण वीईवयइ, तया ण दाहिण पुरत्थिमेण चदे वा सूरे वा उवदसेइ, उत्तरपच्चत्थिमेण राहू ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा चदस्स

या सूरस्स वा लेस दाहिणपच्चत्थिमेण आवरित्ता उत्तरपुरत्थिमेण वोईवयइ, तया णं दाहिणपच्चत्थिमेण चदे वा, सूरे वा उवदसेइ उत्तरपुरत्थिमेण राहू ।

एएण अभिलावेण उत्तरपच्चत्थिमेण आवरेत्ता दाहिणपुरत्थिमेण वोईवयई, उत्तरपुरत्थिमेण आवरत्ता दाहिणपच्चत्थिमेण वोईवयइ ।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स या सूरस्स वा लेस्स आवरेत्ता वोईवयइ तया णं माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति "राहुणा चदे वा, सूरे वा गहिए ।"

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स या सूरस्स या लेस आवरेत्ता पासेण वोईवयइ, तया णं माणुसलोयंसि मणुस्सा एव वयति "चदेण वा, सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा ।

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा, सूरस्स वा लेस आवरेत्ता पच्चोसक्कइ तया णं माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति "राहुणा चदे वा सूरे वा वते ।"

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स या, सूरस्स वा लेस आवरेत्ता मज्झ मज्झेण वोईवयइ, तया णं माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति—"राहुणा चदे वा, सूरे वा विइयरिए ।"

ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा सूरस्स वा लेस आवरेत्ता अहे अपक्खि सपडिदिसि चिट्ठइ, तया णं माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति—"राहुणा चदे वा सूरे वा घत्थे ।"

राहुस्स दुविहत्त

प कइविहे णं राहू पण्णत्ते ?

उ दुविहे पण्णत्ते, तजहा—ता धुवराहू य पव्वराहू य ।

क तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पण्णरसइ भागेण भाग चदस्स लेस आवरमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ, तजहा—पढमाए पढम भाग, जाव पण्णरसमीए पण्णरसम भाग ।

चरमे समए चदे रत्ते भवइ,

अवसेसे समए चदे रत्ते य, विरत्ते य भवइ ।

तमेव सुक्कपक्खे उवदसेमाणे उवदसेमाणे चिट्ठइ, तजहा—पढमाए पढम भाग जाव पण्णरसमीए पण्णरसम भाग ।

चरमे समए चदे विरत्ते य भवइ,
अवसेसे समए चदे रत्ते विरत्ते य भवइ ।

ख तत्थ ण जे ते पव्वराहू से जहण्णेण छण्ह मासाण,
उक्कोसेण बायालीसाए मासाण चदस्स, अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स ।

चदस्स ससी-अभिहाण

१०४ प ता कह ते चदे ससी चदे ससी आहिए ? त्ति वएज्जा ।

उ ता चदस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णो मियके विमाणे कता देवा, कताओ देवीओ, कताइ आसण सयण-खभ-भड-मत्तोवगरणाइ ।

अप्पणा वि ण चदे देवे जोइसिदे जोइसराया सोमे कते सुभे पियदसणे सुरूवे ।
ता एव खलु चदे ससी, चदे ससी आहिए त्ति वएज्जा ।

सूरस्स आइच्चाभिहाण

प ता कह ते सूरिए आइच्चे सूरिए आइच्चे आहिए ? त्ति वएज्जा ।

उ ता सूरादीया समयाइ वा आवलियाइ वा आणापाणूइ वा थोवेइ वा, जाव उस्सप्पिणी, ओसप्पिणीइ वा । ता एव खलु सूरे आइच्चे सूरे आइच्चे आहिए त्ति वएज्जा ।

चद-सूराईण काम-भोगपरूवण

१०५ प ता चदस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

उ ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तजहा—१ चदप्पभा, २ दोसिणाभा, ३ अच्चिमाली, ४ पभकरा ।

जहा हेट्ठा नेव जाव णो चेव ण मेहुणवत्तिय ।

एव सूरस्स वि णेयव्व ।

प ता चदिम-सूरिया जोइसिदा जोइसरायाणो केरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरति ?

उ ता से जहाणामए केई पुरिसे,
पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थे,
पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थाए भारियाए सद्धि,
अचिरवत्तविवाहे,

अत्थत्थी अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवसिए,

से ण ततो लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियगघर हव्वमागए,

ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउयमगलपायच्छित्ते सुद्धप्पवेसाइ मगलाइ वत्थाइ पवरपरिहिए,

अप्प महग्घाभरणालकियसरीरे,

मणुण्ण थालीपाकसुद्ध अट्ठारसवजणाउल भोयण भुत्ते समाणे,

तसि तारिसगसि वासघरसि अतो सचित्तकम्मे,

बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोग्र चिल्लियतले बहुसमसुविभत्तभूमिभाए, मणिरयण-पणासियधयारे।

कालागुरु पवरकु दुरुक्क-तुरुक्क धूव मघमघेतगधुद्धुयाभिरामे सुगधवरगधिए, गधवट्टिभूए,

तसि तारिसगसि सयणिज्जसि दुहओ उण्णए मज्झे णयगभीरे उभओ सालिगणवट्टिए, उभओ पण्णत्तगडविब्बोयणे,

सुरम्मे गगापुलिण वालुया-उद्दाल-सालिसए सुविरइयरयत्ताणे, ओयविय-खोमिय खोमदुगूलपट्टपडिच्छायणे, रत्तसुयसवुडे,

सुरम्मे आईणग-रूय बूर णवणीय तूलफासे, सुगधवर-कुसुमचुण्ण-सयणोवयारकलिए, ताए तारिसाए भारियाए सद्धि सिगारागारचारुवेसाए सगत-हसित भणित चिट्ठित सलाव विलास णिउणजुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्ताविरत्ताए मणोऽणुकूलाए सद्धि एगतरतिपसत्ते अण्णत्थ कत्थई मण अकुव्वमाणे इट्ठे सद्द-फरिस रस-रूव गधे पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरिज्जा।

प ता से ण पुरिसे विउसमणकालसमयसि केरिसए सायासोक्ख पच्चणुभवमाणे विहरइ ?

उ उराल समणाउसो।

ता तस्स ण पुरिसस्स कामभोगेहिंतो एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव वाणमतराण देवाण कामभोगा,

वाणमतराण देवाण काम-भोगेहिंतो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिंदवज्जियाण भवणवासीण देवाण कामभोगा,

असुरिंदवज्जियाण देवाण काम भोगेहिंतो एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराण इदभूयाण देवाण कामभोगा,

असुरकुमाराणं देवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव गहगण णक्खत्त तारा-रूवाणं कामभोगा,

गहगण णक्खत्त-तारारूवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव चंदिम-सूरियाणं देवाणं कामभोगा,

ता एरिसए णं चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ।



अट्ठासीई महग्गहा

१०६ तत्थ खलु इमे अट्ठासीई महग्गहा पण्णत्ता, तंजहा—

१ इंगालए, २ वियालए, ३ लोहियक्खे, ४ सणिच्छरे, ५ आहुणिए, ६ पाहुणिए, ७ कणे, ८ कणए, ९ कणकणए, १० कणवियाणए, ११ कणसंताणए।

१२ सोमे, १३ सहिए, १४ अस्सासणे, १५ कज्जोवए, १६ कब्बडए, १७ अयकरए, १८ दुंदुभए, १९ संखे, २० संखवण्णे, २१ संखवण्णाभे, २२ कंसे।

२३ कंसवण्णे, २४ कंसवण्णाभे, २५ णीले, २६ णीलोभासे, २७ रुप्पी, २८ रुप्पोभासे, २९ भासे, ३० भासरासी, ३१ तिले, ३२ तिलपुप्फवण्णे, ३३ दगे।

३४ दगपंचवण्णे, ३५ काले, ३६ काकंधे, ३७ इंदग्गी, ३८ धूमकेऊ, ३९ हरी, ४० पिंगले, ४१ बुहे, ४२ सुक्के, ४३ बहस्सई, ४४ राहू।

४५ अगत्थी, ४६ माणवगे, ४७ कामे, ४८ फासे, ४९ धुरे, ५० पमुहे, ५१ वियडे, ५२ विसंधी, ५३ णियल्ले, ५४ पयल्ले, ५५ जडियाइल्ले।

५६ अरुणे, ५७ अग्गिल्लए, ५८ काले, ५९ महाकाले, ६० सोत्थिए, ६१ सोवत्थिए, ६२ वद्धमाणगे, ६३ पलंबे, ६४ णिच्चालोए, ६५ णिच्चुज्जोए, ६६ सयंपभे।

६७ ओभासे, ६८ सेयंकरे, ६९ खेमंकरे, ७० आभंकरे, ७१ पभंकरे, ७२ अपराजिए, ७३ अरए, ७४ असोगे, ७५ वीयसोगे, ७६ विमले, ७७ वितत्ते।

७८ वितत्थे, ७९ विसाले, ८० साले, ८१ सुव्वए, ८२ अनियट्टी, ८३ एगजडी, ८४ दुजडी, ८५ करकरिए, ८६ रायग्गले, ८७ पुप्फकेऊ, ८८ भावकेऊ[1]।

---

१ स्थानांग अ २, उ ३, सू ९५ में जंबूद्वीप के दो चन्द्रों दो सूर्यों के ८८ ग्रहों की संख्या दो दो की दी गई है।

संगहणीगाहाओ

१ इंगालए, २ वियालए, ३ लोहियक्खे, ४ सणिच्छरे चेव।
५ आहुणिए, ६ पाहुणिए, ७-११ कणगसनामा उ पंचेव ॥

२ १२ सोमे, १३ सहिए, १४ आसासणे य, १५ कज्जोवए य, १६ कब्बडए।
१७ अयकरए, १८ दुंदुहए, १९-२१ संखसनामाओ तिन्नेव ॥

३ २२-२४ तिन्नेव कंसनामा, २५-२६ णीला, २७-२८ रुप्पी य होंति चत्तारि।
२९-३० भास, ३१-३२ तिलपुप्फवण्णे, ३३-३४ दग-पणवण्णे य, ३५ काय, ३६ काकंधे ॥

४ ३७ इंदग्गि, ३८ धूमकेऊ, ३९ हरि, ४० पिंगलए, ४१ बुहे य, ४२ सुक्के य।
४३ बहस्सई, ४४ राहु, ४५ अगत्थी, ४६ माणवए, ४७ कास, ४८ फासे य ॥

५ ४९ धुरे, ५० पमुहे, ५१ वियडे, ५२ विसंधि, ५३ णियले, ५४ तहा पयल्ले य।
५५ जडियाइलए, ५६ अरुणे, ५७ अग्गिल्ल, ५८ काले, ५९ महाकाले य ॥

६ ६० सोत्थिय, ६१ सोवत्थिय, ६२ वद्धमाणगे, ६३ तहा पलंबे य।
६४ णिच्चालोए, ६५ णिच्चुज्जोए, ६६ सयपभे, ६७ चेव ओभासे ॥

७ ६८ सेयंकर, ६९ खेमंकर, ७० आभंकर, ७१ पभंकरे य बोद्धव्वे।
७२ अरए, ७३ विरए य तहा, ७४ असोगे, ७५ वीयसोगे य ॥

८ ७६ विमल, ७७ वितत्त, ७८ वितत्थे, ७९ विसाल, ८० तह साल, ८१ सुव्वए चेव।
८२ अनियट्टी, ८३ एगजडी य, ८४ होइ बिजडी य बोद्धव्वे ॥

९ ८५ करकरए, ८६ रायग्गल, ८७ बोद्धव्वे पुप्फ, ८८ भावकेऊ य।
अट्ठासीई गहा खलु णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥



उवसंहारो

१०७ इह एस पाहुडत्था, अभव्वजणहिययदुल्लाहा इणमो ।
उक्कित्तिया भगवई, जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥

एस गहियाऽवि सन्ता, थद्धे गारविय माणि-पडिणीए ।
अबहुस्सुए ण देया, तव्विवरीए भवे देया ॥

सद्धा धिति उट्ठाणुच्छहह-कम्म बल विरिय पुरिसकारेहिं ।
जो सिक्खिओऽवि सन्तो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ॥

सो पवयण-कुल-गण सघबाहिरो णाण विणय परिहीणो ।
अरहत थेर गणहरमेर किर होइ वोलीणो ॥

तम्हा धितिउट्ठाणुच्छाह कम्म-बल विरियसिक्खिअ णाण ।
धारेयव्व णियमा ण य अविणएसु दायव्व ॥

वीरवरस्स भगवओ, जर मरण-किलेस-दोसरहियस्स ।
वदामि विणयपणओ, सोक्खुप्पाए सया पाए ॥

॥ सूरियपण्णत्ती समत्ता ॥



सुयत्थविरयणीयं चंदपण्णत्तिसुत्तं

नमो अरिहंताण ।।

जयइ नव-नलिण-कुवलय वियसिय-सयवत्त-पत्तलदलच्छो ।
वीरो गइद-मयगल सललिय गयविक्कमो भयव ।। १ ।।
नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयग-परिवदिए गयकिलेसे ।
अरिहे सिद्धायरिय उवज्झाए सव्वसाहू य ।। २ ।।
फुड वियड-पागडत्थ, वुच्छ पुव्व-सुय-सार-नीसद ।
सुहुम गणिणोवइट्ठ, जोइस-गणरायपण्णत्ति ।। ३ ।।
नामेण इदभूइत्ति गोयमो वदिऊण तिविहेण ।
पुच्छइ जिणवर-वसह, जोइसरायस्स पण्णत्ति ।। ४ ।।
कइ मडलाइ वच्चइ १, तिरिच्छा किं च गच्छई २ ।
ओभासइ केवइय ३, सेयाइ किं ते सठिई ४ ।। ५ ।।
कहिं पडिहया लेसा ५, कह ते ओयसठिई ६ ।
के सूरिय वरयते ७, कह ते उदयसठिई ८ ।। ६ ।।
कइकट्ठा पोरिसीच्छाया ९, जोगेत्ति किं ते आहिए १० ।
किं ते सवच्छराणाई ११, कइ सवच्छराइ य १२ ।। ७ ।।
कह चदमसो वुड्ढी १३, कया ते दो (जो) सिणा बहू १४ ।
के सिग्घगई वुत्ते १५, किं ते दो (जो) सिणलक्खण १६ ।। ८ ।।
चयणोववाय १७, उच्चत्ते १८, सूरिया कइ आहिया १९ ।
अणुभावे केरिसे वुत्ते २०, एवमेयाइ वीसई ।। ९ ।। सूत्र १ ।।
वड्ढोवड्ढी १, मुहुत्ताण मद्धमडलसठिई २ ।
के ते चिण्ण परियरइ ३, अतर किं चरति य ४ ।। १० ।।
ओगाहइ केवइय ५, केवइय च विकपइ ६ ।
मडलाण य सठाणे ७, विक्खभो ८, अट्ठ पाहुडा ।। ११ ।। सूत्र २ ।।
छप्पच य सत्तेव य, अट्ठ य तिण्णि य हवति पडिवत्ती ।
पढमस्स पाहुडस्स उ, हवति एयाओ पडिवत्ती ।। १२ ।। सूत्र ३ ।।

पडिवत्तीओ उदए, अवुव अत्यमणेसु य।
भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥ १३ ॥
निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य।
चुलसीइसय पुरिसाण, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥ १४ ॥
उदयम्मि अट्ठ भणिया, भेयग्घाए दुवे च पडिवत्ती।
चत्तारि मुहुत्तगईए, होंति तइयम्मि पडिवत्ती ॥ १५ ॥ सूत्र ४
आवलिय १, मुहुत्तग्गे २, एवभागा ३ य, जोगस्सा ४।
कुलाइं ५, पुण्णमासी ६ य, संनिवाए ७ य संठिई ८ ॥ १६ ॥
तारग्ग ९, च णेता य, १०, चंदमग्गत्ति ११ यावरे।
देवताण य अज्झयणा १२, मुहुत्ताण नामया १३ इय ॥ १७ ॥
दिवसा राई य वुत्ता १४ य, तिहि १५, गोत्ता १६ भोयणाणि य १७।
आइच्चचार १८, मासा १९ य, पच संवच्छरा २० इय ॥ १८ ॥
जोइसस्स य दाराइं २१, नक्खत्तविचए २२ विय।
दसमे पाहुडे एए, बावीस पाहुड-पाहुडा ॥ १९ ॥ सूत्र ५ ॥

तेण कालेण तेण समएण मिहिला णाम णयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव पासादीया, वण्णओ ॥ १ ॥

तीसे ण मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ ण माणिभद्दे णाम चेइए होत्था चिराईए, वण्णओ ॥ २ ॥

तीसे ण मिहिलाए णयरीए जियसत्तूणाम राया, धारिणी देवी, वण्णओ ॥ ३ ॥

तेण कालेण तेण समएण तंमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया जाव राया जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ४ ॥ सूत्र ६ ॥

तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णाम अणगारे गोयमगोत्ते ण सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी ॥ सूत्र ७ ॥

प ता कह ते वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताण आहितेत्ति वदेज्जा ?

उ गोयमा ! ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसते सत्तावीस च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेत्ति वदेज्जा ॥ सूत्र ८ ॥

जाव

इय एस पागडत्था, अभव्वजणहियय-दुल्लभा इणमो।
उक्कित्तिया भगवती जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥ १ ॥

एस गहियावि सतो, थद्धे गारवियमाणपडिणीए।
अबहुस्सुए ण देया, तव्विवरीए भवे देया ॥ २ ॥

(सद्धा) धिइउट्ठाणुच्छाह-कम्मबलविरिय-पुरिसकारेहिं।
जो सिक्खिओवि सतो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ॥ ३ ॥

सो पवयण कुल गण-संघबाहिरो णाणविणय-परिहीणो।
अरहंत थेरगणहरमेर किर होइ वोलीणो ॥ ४ ॥

तम्हा धिइउट्ठाणुच्छाह कम्मबलवीरियसिक्खियं नाणं।
धारेयव्व णियमा, ण य अविणएसु दायव्वं ॥ ५ ॥

वीरवरस्स भगवतो, जरमरण-किलेस-दोसरहियस्स।
वंदामि विणयपणतो सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ सूत्र १०७ ॥

॥ वीसइम पाहुड समत्त ॥
॥ चंदपन्नत्ती समत्ता ॥



श्री सूर्य-चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का गणित विभाग

सूत्रसंख्या ८

मुहूर्त के परिमाण की हानि-वृद्धि नक्षत्रमास के मुहूर्त का परिमाण

एक युग के अहोरात्र १८३० होते हैं। एक युग के नक्षत्रमास की संख्या ६७ है। एक नक्षत्रमास के दिवस १८३०—६७ करने से २७ दिन २१/६७ मुहूर्त प्रमाण होता है। वह इस प्रकार

```
६७)१८३०(२७
   १३४
   ───
    ४९०
    ४६९
   ───
     २१
```

२१/६७ के मुहूर्त करने के लिए ३० से गुणा करने पर २१ × ३० = ६३० होते हैं। उनको ६७ से भाग देने पर (६३० — ६७) ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होते हैं। अर्थात् नक्षत्रमास २७ दिवस ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होता है। उसके मुहूर्त करने पर २७ × ३० = ८१० होते हैं। उनमें ९ जोड़ने से ८१९ होते हैं। अतएव नक्षत्रमास के मुहूर्तों की संख्या ८१९। २७/६७ होती है।

सूर्यमास के मुहूर्तों की संख्या

एक युग के दिवस १८३० हैं और एक युग के सूर्यमास ६० हैं। सूर्यमास के दिवस करने के लिए १८३० को ६० से भाग देने पर ३० दिन और ३०/६० होंगे। उनके मुहूर्त करने के लिए सूर्यमास के दिनों को ३० से गुणा करने पर ३० × ३० = ९०० होते हैं और ३०/६० को ३० से गुणा करने पर ३० × ३०—६० करने पर १५ मुहूर्त होते हैं। इनको ९०० में जोड़ने पर ९१५ मुहूर्त होते है। अर्थात् सूर्यमास के मुहूर्तों की संख्या ९१५ होती है।

चन्द्रमास के मुहूर्तों की संख्या

एक युग के चन्द्रमास ६२ होते हैं और एक युग के दिवस १८३० है। चन्द्रमास के दिन बनाने के लिए १८३०—६२ करने से २९ दिन ३२/६२ प्राप्त होते हैं। इनके मुहूर्त बनाने के लिए ३० से गुणा करने पर २९ × ३० = ८७० होंगे और ३२/६२ × ३० करने पर ९६०/६२ होंगे एवं मुहूर्त क

रूप मे १५ मुहूत ३०/६२ होगे। इस सख्या को पूर्वोक्त ८७० मे मिलाने पर ८८५ मुहूर्त पूण एव ३०/६२ मुहूत की सख्या होगी।

कममास के मुहूर्तों की सख्या

एक युग मे ३० दिन का एक कममास होता है। उसके मुहूत बनाने के लिए ३० से गुणा करने पर ३०×३०=९०० होते हैं। यह कममास के मुहूर्तो को सख्या है।

मास	मुहूर्तों की सख्या
१ नक्षत्रमास	८१९×२७/६७ मु
२ सूयमास	९१५ मु
३ च द्रमास	८८५। ३०/६२ मु
४ कममास	९०० मु

॥ प्रथम प्राभृत का आठवा सून समाप्त ॥

सूत्रसख्या ९, १०, ११

३६६ रात्रि दिवस का प्रमाण

सर्वाभ्यतरमडल के सर्ववाह्य मडल मे गमन करने पर एव सर्ववाह्य मडल के सर्वाभ्यतर मडल में गमन करने पर सूय को (३६६ रात्रि दिवस) लगते है। —सून स ९

सूर्य ३६६ दिवस मे १८४ मडल मे सचार करता है। —सून स १०

रात्रि दिवस की हानि-वृद्धि का प्रमाण

सूय ३६६ दिवस मे सर्वाभ्य तर मडल मे से सववाह्य मडल मे, सववाह्य मडल मे स सर्वाभ्यन्तर मडल म परिक्रमा करता है। सर्वाभ्यन्तर मडल मे से सववाह्य मडल तक १८३ दिवस मे परिक्रमा करता है। जव सूय सर्वाभ्यन्तर मडल मे होता है तब १८ मुहत का दिन एव १२ मुहूत को रात्रि होती है। सर्वाभ्यन्तर मडल मे से सर्ववाह्य मडल तक जाने मे १८३ दिन होते हैं और उस समय में ६ मुहत को हानि वृद्धि होती है।

एक दिवस मे मुहूत के २/६१ भाग को वृद्धि-हानि होती है। अर्थात् दिवस के परिमाण मे मुहूत के २/६१ भाग की हानि होती है और रात्रि के परिमाण मे मुहूर्त के २/६१ भाग की वृद्धि होती है।

सूय जसे-जैसे बाह्यमडल की ओर गमन करता है। वसे-वसे दिवस के परिमाण मे हानि और रात्रि के परिमाण मे वृद्धि होती है।

सूय जव सर्वबाह्यमडल मे वतमान होता है तव १२ मुहूत का दिन और १८ मुहूत की रात्रि होती है। सूय जसे-जसे सर्वाभ्यन्तरमडल की तरफ गमन करता है वैसे-वैसे दिन मे वृद्धि और रात्रि म हानि होती है।

प्रथम ६ मास मे दिवस घटता है और रात्रि बढती है। दूसरे ६ मास मे दिवस बढ़ता है और रात्रि घटती है।

हानि वृद्धि का प्रमाण मुहूर्त के २/६१ भाग जितना होता है।—सूत्र ११

॥ प्रथम प्राभृत का प्रथम प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

तृतीय प्राभृत प्राभृत मे 'सयमेग चोयाल' गाथा अपूर्ण होने से अर्थ नही कर सकते हैं। यह व्यवच्छेद है। इस प्रकार श्री अमोलक ऋषिजी ने सूर्यप्रज्ञप्ति की भाषा मे लिखा है तथा टीकाकार मलयगिरिवृत्त टीका से भी यथार्थ गणित १४४ आता नही है। जिनके ध्यान मे गणित की प्रक्रिया हो, यदि वे बताने की कृपा करेंगे तो श्रुतसेवा मानी जायेगी।

॥ प्रथम प्राभृत का तृतीय प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र १५

दो सूर्यों के (भरत और ऐरवत के) सचरण समय मे परस्पर अन्तर

सचरण करते समय दोनो सूर्यों के बीच प्रत्येक मडल मे ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर होता है। जब दोनो सूर्य सर्वाभ्यन्तरमडल मे वर्तमान हो तब दोनो सूर्यों के बीच ९९६४० योजन अन्तर होता है।

जम्बूद्वीप क्षेत्र एक लाख योजन के विष्कम्भ वाला है। प्रत्येक सूर्य १८० योजन अवगाहन करके सचार करता है।

१००००० योजन में से दोनो सूर्य का अवगाहन क्षेत्र १८० और १८० योजन कुल मिलाकर ३६० योजन कम करने पर ९९६८० योजन शेष रहते है। जो सर्वाभ्यन्तरमडल मे वर्तमान दोनों सूर्यों का अन्तर होता है।

१८४ सूर्यमडल के १८३ अन्तर होते है और एक मडल का दूसरे मडल तक २ योजन ४८/६१ भाग का अन्तर होता है। अत जब सूर्य एक मडल से दूसरे मडल मे जाता है तब दोनों ओर के मडल के अन्तर २ योजन ४८/६१ और २ योजन ४८/६१ का जोड करने पर ५ योजन ३५/६१ भाग होता है।

सर्वबाह्यमडल मे वर्तमान दोनो सूर्यों का परस्पर अन्तर

दोनो सूर्यों की अपेक्षा प्रतिमडल ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर पूर्व मे बताया है। सर्व आभ्यन्तर मडल से सर्वबाह्यमडल १८३ वा होता है। १८३ को ५ योजन ३५/६१ से गुणा करने पर $\frac{३ \times ३८०}{६१}$ इस प्रकार १०२० योजन अन्तर आता है। इस १०२० योजन अन्तर को ९९६४० मे मिलाने पर १००६६० योजन होता है। जो सर्वबाह्यमडल मे वर्तमान दो सूर्यों का परस्पर अन्तर है।—सूत्र १५

॥ प्रथम प्राभृत का चौथा प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

एक अहोरात्र मे सूर्य का सचरण-क्षेत्र

सूय एक अहोरात्र मे २ योजन ४८/६१ भाग सचरण करता है। सूय १८३ दिवस मे ५१० योजन सचरण करता है, जिससे एक दिवस मे २ योजन ४८/६१ भाग सचरण करता है।

१८३ मडल का १८३ दिवस मे सूय सचरण करता है। एक दिवस मे एक मडल मे सचार करता है। सूय के सवमडलो का सचरण क्षेत्र ५१० योजन का है। एक मडल का एक दिवस का सचरण २ योजन ४८/६१ भाग होता है। —सूत्र १८

॥ प्रथम प्राभृत का छठा प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र २०

प्रत्येक मडल का विष्कम्भ आयाम

जब सूय सर्वाभ्यन्तरमडल मे हो तब १ लाख योजन का ४८/६१ भाग बाहल्य से ९९६४० योजन आयाम विष्कम्भ से ३१५०८९ योजना परिक्षेप से सक्रमण करता है तब १८ मुहूत का उत्कृष्ट दिवस और जघन्य १२ मुहूर्त की रात्रि होती है।

जब सूय सर्वाभ्यन्तरमडल के अनन्तरवर्ती मडल मे सक्रमण करता है तब १ योजन का ४८/६१ भाग बाहल्य से ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग आयाम विष्कम्भ से, ३१५१०७ योजन किंचित विशेष न्यून परिक्षेप से चार (गति) करता है। तब दिवस और रात्रि का प्रमाण सर्वाभ्यन्तर-मडल के समान ही होता है।

सर्वाभ्यन्तरमडल मे आयाम विष्कम्भ का प्रमाण

एक सूय १८० योजन अवगाहन करके गति करता है। जम्बूद्वीप के दोनो सूर्य की अपेक्षा ३६० योजन अवगाहना जम्बूद्वीप क्षेत्र के १ लाख योजन प्रमाण मे से कम करने पर ९९६४० योजन रहते हैं। जो सर्वाभ्यन्तरमडल का आयाम-विष्कम्भ है।

सूत्र २०

सर्वाभ्यन्तरमडल का परिक्षेप

सर्वाभ्यन्तरमडल का परिक्षेप (३१५०८९) योजन है। वह इस प्रकार है—

$\sqrt{(\text{सर्वाभ्यन्तरमडल का विष्कम्भ})^2 \times 10}$ इस सूत्र से परिक्षेप का विचार करने पर निम्न प्रकार से होगा।

$$\sqrt{(९९६४०)^2 \times १०}$$
$$\sqrt{९९२८१२९६०० \times १०}$$
$$\sqrt{९९२८१२९६०००}$$

)| | | | | |
९९२८१२९६०००
३१५०८९ योजन परिक्षेप
)| | | | | |

३	९२२८१२९६०००
+३	९
६१	०
+१	६१
६२५	३१८१
+५	३१२५
६३००८	००५६२९६०
+८	५०४०६४
६३०१६९	०५६८९६००
+९	५६७१५२१
६३०१७८	००१८०७९

उक्त प्रकार से गणित करने पर सर्वाभ्यंतरमंडल का परिक्षेप ३१५०८९ योजन होता है और १८०७९ शेष रहते हैं।

प्रत्येक मंडल का परिक्षेप

प्रत्येक मंडल में ५ योजन ३५/६१ भाग आयाम-विष्कंभ में वृद्धि होती है। तदनुसार सर्वाभ्यंतरमंडल के अनन्तरवर्ती मंडल का आयाम विष्कंभ ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग है। प्रत्येक मंडल का परिक्षेप निकालने के लिए (जानने के लिए) ५ योजन के इकसठिया भाग करने पर ५×६१=३०५ आते हैं। उनमें ३५ भाग और मिलाने पर ३४० होते हैं।

परिक्षेप निकालने की विधि—

(विष्कंभ का)² ×१०
) (३४०)²×१०
) ११५६००×१०
) ११५६०००

```
         १०७५
         | | | |
    १  )११५६०००
    १    १
  ----------------
  २०७    ०१५६०
   ७      १४४९
  ----------------
  २१४५   ०१११००
    ५     १०७२५
  ----------------
  २१५०    ००३७५
```

१०७५ के योजन बनाने के लिए ६१ से भाग देने पर [१०७५—६१] १७ योजन ३८/६१ आएगे। प्रत्येक मडल मे १७ योजन ३८/६१ भाग परिक्षेप बढता है।

प्रत्येक परिमडल का परिक्षेप व्यवहार से १८ योजन और निश्चय से १७ योजन ३८/६१ भाग है। प्रत्येक मडल का परिक्षेप मे १८ योजन मिलाने पर दूसरे मडल का परिक्षेप होता है। ऐसा करने पर सूर्य सक्रमण करता-करता सर्ववाह्य मडल मे आता है तब आयाम विष्कभ १००६६० होता है।

सर्ववाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१४ ८६९ है।

व्यवहार से ६१८३१५ योजन होता है।

सर्ववाह्य मडल का आयाम विष्कम-परिक्षेप निकालने की विधि

प्रत्येक मडल मे ५ योजन ३५/६१ भाग बढता है जिससे सर्ववाह्यमडल मे कितनी वृद्धि होगी ?

परिमडल १८३ होने से ५ योजन ३५/६१ भाग से गुणा करने पर १८३ मडल×५ योजन=९१५ योजन होते हैं।

३५ भाग×१८३ मडल=६४०५ होते हैं। इनके योजन बनाने के लिए ६४०५ को ६१ से भाग देने पर १०५ योजन आते हैं। पूर्वोक्त ९१५ योजन मे १०५ योजन मिलाने से १०२० योजन होते हैं। सर्वाभ्यतरमडल के आयाम ९९६४० योजन मे १०२० योजन जोडने से सर्ववाह्यमडल का १००६६० योजन आयाम होता है।

सर्ववाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१५ योजन है। जिसको प्राप्त करने की विधि इस प्रकार है—

सर्ववाह्यमडल का परिक्षेप निकालने की विधि

परिक्षेप निकालने के लिए।

$\sqrt{(\text{आयाम})^2 \times १०}$

$\sqrt{(१००६००)^2 \times १०}$

$\sqrt{१०१३२४३५६०० \times १०}$

३१८३१४ ८६९ योजन परिक्षेप

३	१०१३२४३५६०००
३	९
६१	११३
१	६१
६२८	५२२४
८	५०२४
६३६३	०२००३५
३	१९०८९
६३६६१	००९४६६०
१	६३६६१
६३६६२४	३०९९९००
४	२५४६४९६
६३६६२७८	०५५३४०४००
८	५०९३०३०४
६३६६२९६६	०४४१००९६००
६	३८१९७५७९६
६३६६२९७२९	५९०३३८०४००
९	५६२९६६७५६१

इस प्रकार ८६९ हजार से कम हैं, परन्तु 'अर्धादूर्ध्वमेव ग्राह्यम्' इस न्याय से ३१४ के स्थान पर ३१५ ग्रहण किये हैं। इस प्रकार सर्वबाह्यमंडल का परिक्षेप ३१८३१५ योजन (व्यवहार से) होता है।

सर्वाभ्यंतरमंडल का परिक्षेप ३१५०८९ योजन है। पूर्व में बताई गई रीति से प्रत्येक मंडल के परिक्षेप में १७ योजन ३८/६१ भाग की वृद्धि होती है तो १८३ मंडल में कितने योजन परिक्षेप की वृद्धि होती है?

१८३ मडल × १७ योजन = ३१११ योजन होते हैं ।

१८३ मडल × ३८ (योजन का भाग) करने पर ६९५४ भाग आयेंगे ।

६९५४ भाग के योजन करने के लिये ६१ से भाग देने पर ११४ योजन होंगे ।

३१११ योजन मे ११४ योजन मिलाने पर ३२२५ योजन १८३ परिमडल की परिक्षेप वृद्धि होती है ।

सर्वाभ्यंतरमडल के परिक्षेप ३१५०८९ योजन मे ३२२५ योजन के मिलाने पर सर्वबाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१४ होगा ।

इस सूत्र के मूल पाठ मे ३१८३१५ योजन सर्वबाह्यमडल का परिक्षेप कहा है। वह व्यवहार से समझना चाहिये । क्योकि पूर्व मे प्रत्येक मडल का परिक्षेप निकालने पर ३७५ शेष बढते हैं । उनको १८३ मडल मे गुणा करने पर ६८६२५ आते है । इस सख्या को २१५० से भाग देने पर ३१ आते है । जो ६१ के अर्धभाग की अपेक्षा विशेष होने से व्यवहार से पूर्ण मानकर ३१८३१५ कहे हैं ।

प्रत्येक मडल का अतर २ योजन ४८।६१ भाग है । दोनो सूर्य के मडल का अन्तर ५ योजन ३५/६१ भाग है । सर्वमडल का क्षेत्र ५१० योजन है । —सूत्र २०

॥ प्रथम प्राभृत का अष्टम प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र २३

सूर्य की प्रत्येक मडल मे प्रतिमुहूर्त्त की गति

सूर्य जब मडल मे सक्रमण करता है तब अपनी एक विशेष गति से सक्रमण करता है । भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र के दोनो सूर्य अपनी विशिष्टगति से सक्रमण करके ६० मुहूर्त्त मे १ मडल की परिक्रमा पूर्ण करते है ।

अर्थात् २ अहोरात्र मे दोनो सूर्य १ मडल की परिक्रमा पूर्ण करते है ।
प्रत्येक मुहूर्त्त की सूर्य की विशेष गति इस सूत्र से ज्ञात की जा सकती है—
१ मुहूर्त्त की गति = मडल की परिधि — २ अहोरात्र के मुहूर्त्त
१ अहोरात्र के ३० मुहूर्त्त के अनुसार २ अहोरात्र के ६० मुहूर्त्त होते हैं ।
सर्वाभ्यतरमडल की परिधि ३१५०८९ योजन है ।
सर्वाभ्यतरमडल की परिक्रमा दोनो सूर्य ६० मुहूर्त्त मे पूर्ण करते हैं ।

सर्वाभ्यतरमडल मे सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति

सर्वाभ्यतरमडल की परिधि — ६० मुहूर्त्त = १ मुहूर्त्त की गति ।

३१५०८९ योजन — ६० मुहूर्त्त = ५२५१ योजन २९/६० भाग सूर्य की १ मुहूर्त्त की गति है ।

प्रत्येक मडल की परिधि मे व्यवहार से १८ योजन का अतर होता है। अर्थात् सर्वाभ्यतर मडल की परिधि मे १८ योजन मिलाने पर सर्वाभ्यतरमडल के अनन्तरवर्ती दूसरे मे उसकी परिधि आती है। तदनुसार दूसरे मडल की परिधि मे १८ योजन मिलाने पर तीसरे मडल की परिधि आती है।

इस प्रकार प्रत्येक मडल की परिधि ज्ञात की जा सकती है।

प्रत्येक मडल मे सूर्य की एक मुहूर्त्त मे कितनी गतिवृद्धि होती है, यह जानने के लिये इस सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

प्रत्येक मडल मे परिधि की वृद्धि—६० मुहूर्त्त।

प्रत्येक मडल मे १८ योजन परिधि मे वृद्धि होती है। उसे ६० मुहूर्त्त से भाग देने पर १ मुहूर्त्त में होने वाली गतिवृद्धि प्राप्त होगी।

१८ योजन प्रत्येक मडल की परिधि मे होने वाली वृद्धि—६० मुहूर्त्त = १८।६० योजन १ मुहूर्त्त मे गति मे वृद्धि होती है।

सूर्य के दृष्टिपथ क्षेत्र का अतर ज्ञात करने की विधि

उस-उस मडल मे विद्यमान सूर्य दृष्टिपथ के क्षेत्र का अतर ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिए—

सूर्य की उस-उस मडल मे एक मुहूर्त्त की गति × दिनमान का अर्धभाग।

सर्वाभ्यतर मडल मे सूर्य के दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण ४७२६३ योजन २१।६० भाग है। उसको जानने के लिये उपर्युक्त सूत्र का उपयोग करने पर—५२५१ योजन २९।६० भाग।

(सर्वाभ्यतरमडल मे सूर्य की एक मुहूर्त्त की गति) × ९ मुहूर्त्त (दिनमान का अर्धभाग)

$$= \frac{३१५०८९ \times ९}{६०} \qquad = \frac{२८३५८०१}{६०}$$

= ४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यतर मडल मे सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र है।

सर्वाभ्यतर मडल मे सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण जानने की दूसरी विधि

$$\frac{\text{उस-उस मडल की परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$\frac{\text{सर्वाभ्यतरमडल की परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$\frac{३१५०८९ \times ९}{६०}$$

$$=\frac{२८३५८०१}{६०}$$

=४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यंतरमडल मे सूय का दृष्टिपथ क्षेत्र है।

सवबाह्यमडल मे सूय का दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण

सवबाह्यमडल मे सूर्य की एक मुहूर्त्त की गति

सवबाह्यमडल की परिधि

$$\text{मडल की परिक्रमा करते हुए लगता समय}=\frac{\text{३१८३१५ योजन}}{\text{६० मुहूर्त्त}}$$

=५३०५ योजन १५।६० भाग १ मुहूर्त्त मे सूय की गति।

सवबाह्यमडल मे सूय का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

सर्वबाह्यमडल मे सूर्य की १ मुहूर्त्त मे गति × दिनमान का अर्धभाग

$$=\frac{\text{३१८३१५} \times \text{६ मुहूर्त्त दिनमान का अर्धभाग}}{\text{६०}}$$

$$=\frac{१९०९८९०}{६०}$$

=३१८३१ योजन ३०।६० भाग सवबाह्यमडल मे दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण।

द्वितीय विधि—

$$\frac{\text{परिधि} \times \text{दिनमान का अर्धभाग}}{\text{६०}}$$

$$=\frac{३१८३१५ \times ६}{६०}$$

$$=\frac{१९०९८९०}{६०}$$

=३१८३१ योजन ३०।६० भाग सवबाह्यमडल मे दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण

१—उस-उस मडल मे सूय की १ मुहूर्त्त की गति निकालने के लिये उस-उस मडल की परिधि को ६० से भाग देने पर १ मुहूर्त्त की गति प्राप्त होती है।

२—दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण निकालने के लिये १ मुहूर्त्त की गति को (सूर्य की) दिनमान के अर्धभाग से गुणा करने पर जो लब्धि आये वह दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण जानना चाहिये। —सूत्र २३

॥ दूसरा प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र २४

सूर्य द्वारा प्रकाशमान क्षेत्र का प्रमाण

जब सूर्य सर्वाभ्यंतरमंडल में वर्तमान होता है तब जंबूद्वीप के कल्पित पाँच चक्रवाल में से डेढ़ भाग प्रकाशित करता है और एक भाग अप्रकाशित होता है।

जम्बूद्वीप में वर्तमान दोनों सूर्य की अपेक्षा पाँच चक्रवाल में से तीन भाग प्रकाशित करते हैं और दो भाग अप्रकाशित होते हैं। अर्थात् जम्बूद्वीप के कल्पित पाँच भाग में से तीन भाग दिन होता है और दो भाग रात्रि होती है।

जम्बूद्वीप के ३६६ भाग की कल्पना करने पर १ भाग (चक्रवाल) के ७३२ भाग होते हैं, ३ चक्रवाल के २१९६ भाग होते हैं। अर्थात् ३६६० भाग में से २१९६ भाग का दिवस होता है १४६४ भाग रात्रि होती है, अथवा दोनों सूर्य ६० मुहूर्त्त में १ मंडल की परिक्रमा पूर्ण करते हैं। जम्बूद्वीप में पाँच चक्रवाल की कल्पना करने पर १ चक्रवाल १२ मुहूर्त्तात्मक होता है। १२ मुहूर्त्त का काल जम्बूद्वीप के ३६६० भाग की कल्पना में ७३२ भागात्मक होता है।

सर्वाभ्यंतर मंडल से सूर्य जब सर्वबाह्यमंडल की ओर गमन करता है तब प्रतिमंडल में अहोरात्र में २।६१ भाग हानि-वृद्धि होती है।

सर्वाभ्यन्तर मंडल को कम करने पर सर्वबाह्य मंडल १८३ वा आता है। जिससे १८३×२ करने पर ३६६/६१ भाग की हानि-वृद्धि अहोरात्र में होती है। अर्थात् ६ मुहूर्त्त दिवस में हानि और रात्रि में वृद्धि होती है। दोनों सूर्य की अपेक्षा १२ मुहूर्त्त की हानि-वृद्धि होती है। सर्वबाह्यमंडल में सूर्य १ भाग प्रकाशित करता है और डेढ़ भाग अप्रकाशित रहता है।

पूर्व में बताये गये अनुसार एक-एक सूर्य की अपेक्षा १ भाग दिवस और डेढ़ भाग रात्रि रहती है। दोनों सूर्य की अपेक्षा २ भाग दिवस और तीन भाग रात्रि होती है।

सर्वाभ्यन्तरमंडल में ३ भाग दिवस और २ भाग रात्रि होती है।

सर्वबाह्यमंडल में २ भाग दिवस और ३ भाग रात्रि होती है।

१ भाग १२ मुहूर्त्तात्मक जानना चाहिए।

जम्बूद्वीप के ५ चक्रवाल की परिकल्पना... १ चक्रवाल होता है। क्योंकि दोनों सूर्य की अपेक्षा ६० मुहूर्त्त का काल होता है।

॥ तीसरा प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र २५

तापक्षेत्र की संस्थिति

तापक्षेत्र की संस्थिति की आभ्यन्तर-बाह्य का परिक्षेप

९४८६ योजन ९/१० भाग है।

उसका गणित निम्न प्रकार है—

परिक्षेप $= \sqrt{(\text{आयाम})^{२} \times १०}$

$= \sqrt{(\text{विष्कम्भ})^{२} \times १० \; (\text{उसका विष्कम्भ})^{२} \times १}$

$= \sqrt{(१००००)^{२} \times १०}$

$= \sqrt{१०००००००० \times १०}$

$= \sqrt{१००००००००००}$

३ १ ६ २ २ ० ७ ७ ६

३	$=\sqrt{}$ १००००००००००
३	९
६१	१००
१	६१
६२६	३९००
६	३७५६
६३२२	०१४४००
२	१२६४४
६३२४२	०१७५६००
२	१२६४८४
६३२४४७	०४९११६००
७	४४२७१२९
६३२४५४७	०४८४४७१००
७	४४२७१८२९

६३२४५५४६	०४२७५२७१००
६	३७९४७३२७६
६३२४५५५२	४८०५३८२४

७७६ एक हजार के अर्धभाग (५००) की अपेक्षा अधिक है। 'अर्द्धादूर्ध्वमेकं ग्राह्यम्' के विधान से पूर्व संख्या गिन कर व्यवहार से ३१६२३ योजन बतलाये हैं।

उनको तिगुने करने से ९४८६९ होते हैं। उनको १० से भाजित करने पर ९४८६ योजन ९/१० भाग सर्वाभ्यन्तर तापक्षेत्र संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर-बाहा का परिमाण है।

जम्बूद्वीप के परिक्षेप से सर्वबाह्य बाहा का परिमाण

परिक्षेप = (विष्कम्भ)^2 × १०

जम्बूद्वीप का परिक्षेप प्रसिद्ध है। उसे ३ से गुणा करके १० से भाग देने पर ९४८६८ योजन ४/१० होते हैं।

जम्बूद्वीप का परिक्षेप ३१६२२७ योजन, ३ गव्यूति १२८ योजन और १३½ अंगुल है। परन्तु व्यवहार में ३१६२२८ योजन मानकर इसे गुणा करने पर ९४८६८४ योजन होते हैं। उनको १० से भाग देने पर ९४८६८ योजन ४/१० भाग सर्वबाह्य बाहा का परिमाण होता है।

उत्तर-दक्षिण दिशा से तापक्षेत्र का आयाम

आयाम = उत्तर-दक्षिण दिशा का अन्तर
विष्कम्भ = पूर्व-पश्चिम दिशा का अन्तर
तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३ योजन १/३ भाग है।
मेरुपर्वत से जम्बूद्वीपपर्यन्त ४५००० योजन है।

लवणसमुद्र के विस्तार का छठा भाग ३३३३३ ३३३ योजन है। दोनों का जोड़ करने पर तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३ ३३३ योजन होता है।

अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा का परिमाण

अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा का परिमाण ६३२४ योजन ६/१० भाग है।

मेरुपर्वत के परिक्षेप को २ से गुणा कर १० से भाजित करने पर आभ्यन्तर बाहा का परिमाण ज्ञात होता है।

मेरुपर्वत की परिधि ३१६२३ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४६ योजन होते हैं। उन्हें १० से भाग देने पर ६३२४ योजन ६/१० अन्धकार संस्थिति की सर्वाभ्यन्तर बाहा आती है।

लवणसमुद्र की निकटवर्ती जम्बूद्वीप तक की अन्धकार संस्थिति की सर्वबाह्य बाहा

जम्बूद्वीप की परिधि को २ से गुणा कर १० से भाग देने पर सर्वबाह्य बाहा का परिमाण

प्राप्त होता है। जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२८ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४५६ योजन होते है। जिन्हे १०६३२४५ योजन ६/१० भाग सववाह्य वाहा का परिमाण होता है।

अ धकार सस्थिति की लम्बाई तापमान की लम्बाई जितनी जाननी चाहिए।

सर्वाभ्यन्तरमडल मे जो तापमान की स्थिति है वह सवबाह्य मडल मे अ धकार की स्थिति जानना चाहिये।

सर्वाभ्य तरमडल मे जो अन्धकार की स्थिति है वह सववाह्यमडल मे ताप की स्थिति जानना चाहिए। अर्थात् सववाह्यमडल मे तापमान की आभ्यान्तर वाहा ६३२४ योजन ६/१० भाग है। सववाह्य वाहा ६३२८५ योजन ६/१० भाग है। तापमान की लम्बाई ७८३३३ ३३३ योजन है।

अ धकार की सस्थिति सवबाह्य मडल मे आभ्यान्तर बाहा ९४८६ योजन ९/१० भाग है। शेष बाहा ९४८६८ योजन ८/१० भाग है। अ धकार सस्थिति की लम्बाई ७८३३३ ३३३ योजन है।

—सूत्र २५ समाप्त

॥ चतुर्थ प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र ३३

दसवें प्राभृत का दूसरा प्राभृत-प्राभृत

अहोरात्र के ६७ भाग की कल्पना करनी चाहिये।

अहोरात्र के ६७ भाग मे से भाग सख्या	नक्षत्र सख्या	च द्र के साथ योग मुहूत	नक्षत्रनाम
२१	१	९ मु २७/६७	अभिजित
३३ भाग १/२	६	१५ मु	शतभिषा भरणी, आर्द्रा आश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा
६७	१५	३० मु	श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा भा० रेवती, अश्विनी, कृतिका मृगशिर, पुष्य, मघा, पू० फा० हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, पूर्वापाढा
१०० भाग १/२	६	४५ मु	उ० भा० रोहिणी पुन० उ फा विशाखा उत्तरापाढा०

उपर्युक्त कोष्ठक नक्षत्र का चन्द्र के साथ कितने मुहूर्त का योग होता है, यह बतलाने के लिये है।

नक्षत्रों का सूर्य के साथ योग

नक्षत्र संख्या	सूर्य के साथ योग दिवस	मुहूर्त	नक्षत्रों का नाम
१	४	६	अभिजित
६	६	२१	शतभिषा, भरणी, आर्द्रा आश्लेषा, स्वाति, जेष्ठा
१५	१३	१२	श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा भा रेवती, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मघा, पू फा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल० पूर्वाषाढा
६	२०	३	उ भा, रोहिणी, पुनर्वसु उ फा, विशाखा, उ षाढा।

जो नक्षत्र चन्द्रमा के साथ १ दिवस के ६७ भाग मे से अथवा उससे विशेष जितने भाग गमन करता है, उसके पाँचवें भाग प्रमाण सूर्य के साथ दिवस और मुहूर्त के परिमाण से गमन करता है।

जैसे कि अभिजित नक्षत्र चन्द्र के साथ २१।६७ भाग गमन करता है तो सूर्य के साथ कितना गमन करता है ? यह जानने के लिये २१ भाग को ५ से भाग देने पर ४ दिवस १।५ भाग मुहूर्त आते हैं। १।५ के मुहूर्त निकालने के लिये ३० से गुणा करने पर ६ मुहूर्त आते हैं। जिसका आशय यह हुआ कि अभिजित नक्षत्र सूर्य के साथ ४ दिवस ६ मुहूर्त योग करता है। इस प्रकार अन्य स्थान पर भी समझना चाहिये।

१५ मुहूर्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

शतभिषा नक्षत्र चन्द्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग मे से ३३½ भाग योग करता है, तो सूर्य के साथ कितने दिवस और कितने मुहूर्त योग करता है ?

$$\frac{६७}{२} - ५ = \frac{६७}{२} \times \frac{१}{५} = \frac{६७}{१०}$$

अत ६ दिवस $\frac{७}{१०}$ मुहूर्त सूर्य के साथ योग करता है।

$\frac{७}{१०}$ के मुहूर्त जानने के लिए ३० से गुणा करने पर २१ मुहूर्त आते हैं। अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का सूय के साथ ६ दिवस और २१ मुहूर्त योग होता है।

इसी प्रकार अन्य नक्षत्रो के लिये जानना चाहिये।

३० मुहूर्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

श्रवण नक्षत्र चन्द्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग योग करता है तो सूर्य के साथ कितने समय योग करता है?

सूय के साथ होने वाले योग का समय जानने के लिये चन्द्र के साथ होने वाले योग के समय को ५ से भाग देने पर जो भाज्य-भाजक भाव से उपलब्ध होता है वह नक्षत्र का सूय के साथ का योगकाल समझना चाहिये।

६७—५ = १३$\frac{२}{५}$ दिवस

२।५ के मुहूर्त निकालने के लिये ३० से गुणा करने पर १२ मुहूर्त होते हैं। अतएव उस प्रकार से १३ दिवस १२ मुहूर्त अन्य नक्षत्र के साथ भी सूर्य का योगकाल जानना चाहिये।

४५ मुहूर्त चन्द्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

उत्तर भाद्रपद नक्षत्र चन्द्र के साथ $\frac{२०१}{२}$ भाग योग करता है। उसका सूर्य के साथ कितने समय योग होता है, यह समझने के लिये ५ से भाग देने पर $\frac{२०१}{२} \times \frac{१}{५}$ करने पर $\frac{२०१}{१०}$ आयेगा। उनके दिवस बनाने पर २० दिवस और ३ मुहूर्त समय होंगे। जो उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का सूय के साथ योगकाल है। —सूत्र ३४ समाप्त

॥ दसवें प्राभृत का दूसरा प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र ४०

पूर्णिमा और अमावस्या का चन्द्र योग को अधिकार कर सन्निपात

पूर्णिमा	अमावस्या	कुल नक्षत्र	उपकुल नक्षत्र	कुलोपकुल नक्षत्र
१ श्रावणी	माघ	धनिष्ठा	श्रवण	अभिजित
२ भाद्रपदी	फाल्गुनी	उ भाद्रपद	पू भाद्रपद	शतभिषा
३ अश्विनी	चैत्री	अश्विनी	रेवती	
४ कार्तिक	वैशाखी	कृत्तिका	भरणी	
५ मार्गशीर्षी	जेष्ठा	मृगशिर	रोहिणी	

६	पौषी	आषाढी	पुष्य	पुनर्वसु	आर्द्रा
७	माघी	श्रावणी	मघा	आश्लेषा	
८	फाल्गुनी	भाद्रपदी	उ फाल्गुनी	पू फाल्गुनी	
९	चैत्री	अश्विनी	चित्रा	हस्त	
१०	वैशाखी	कार्तिकी	विशाखा	स्वाति	
११	ज्येष्ठा	मार्गशीर्षी	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा
१२	आषाढी	पौषी	उ षाढा	पू षाढा	

—सूत्र ४० समाप्त

॥ दशम प्राभृत का सातवाँ प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

दशम प्राभृत का दसवाँ प्राभृत-प्राभृत

सूत्र ४३

दक्षिणायन

मास	पौरुषी	वृद्धि
१ श्रावण	२ पाद ४ अंगुल	४ अंगुल
२ भाद्रपद	२ पाद ८ अंगुल	८ अंगुल
३ आसोज	३ पाद	१ पाद
४ कार्तिक	३ पाद ४ अंगुल	१ पाद ४ अंगुल
५ मार्गशीर्ष	३ पाद ८ अंगुल	१ पाद ८ अंगुल
६ पौष	४ पाद	२ पाद

उत्तरायण

मास	पौरुषी	हानि
१ माघ	३ पाद ८ अंगुल	४ अंगुल
२ फाल्गुन	३ पाद ४ अंगुल	८ अंगुल
३ चैत्र	३ पाद	१ पाद
४ वैशाख	२ पाद ८ अंगुल	१ पाद ४ अंगुल
५ जेष्ठ	२ पाद ४ अंगुल	१ पाद ८ अंगुल
६ आषाढ	२ पाद	२ पाद

॥ दशम प्राभृत का दसवाँ प्राभृत-प्राभृत समाप्त ॥

दसवें प्राभृत का २२ (बाईसवां) प्राभृत-प्राभृत

सूत्र ६२

नक्षत्रसख्या		सीमाविष्कभ भाग	नक्षत्र का नाम
	२	६३०	दो अभिजित
अघक्षेत्र नक्षत्र	१२	१००५	दो शतभिष यावत् दो ज्येष्ठा
समक्षेत्र नक्षत्र	३०	२०१०	दो श्रवण यावत् दो पूर्वाषाढा
द्व्यधक्षेत्र नक्षत्र	१२	३०१५	दो उत्तराभाद्रपद यावत् दो उत्तराषाढा

५६ (नक्षत्र के नाम दसवें प्राभृत के दूसरे प्राभृत-प्राभृत मे देखें)
१ अहोरात्र के ६७ भाग की कल्पना करना चाहिये ।

—सूत्र ६२ समाप्त ।

सूत्र ७२ बारहवां प्राभृत

सवत्सरों का प्रमाण

सवत्सर ५ प्रकार के कहे गये हैं—

१ नक्षत्र सवत्सर, २ चन्द्र सवत्सर, ३ ऋतु सवत्सर, ४ आदित्य सवत्सर, ५ अभिवर्धित सवत्सर ।

१ नक्षत्र सवत्सर—नक्षत्र मास मे २७ दिवस २१/६७ मुहूत होते हैं। नक्षत्रमास ८१९ मुहूत २७/६७ भागात्मक है ।

नक्षत्र सवत्सर के दिवस कितने ?—३२७ दिवस ५१/६७ भाग होते है । नक्षत्र सवत्सर ९८३२ मुहूत ५५/६७ भागात्मक है ।

१ युग के ६७ नक्षत्र होते हैं ।

१ युग के १८३० दिवस होते हैं ।

नक्षत्रमास के दिवस ज्ञात करने के लिये १८३० को ६७ से भाग देने पर २७ दिवस २१/६७ भाग आते हैं ।

नक्षत्रमास के मुहूत्त जानने के लिये १ दिवस के ३० मुहूत्त से नक्षत्रमास के दिवसो को गुणा करने पर मुहूर्तों की सख्या प्राप्त होगी—

$$\frac{१८३० \times ३०}{६७} = \frac{५४९००}{६७} = ८१९ \text{ मुहूर्त्त } २७/६७ \text{ भाग}$$

नक्षत्रसवत्सर के दिवस ज्ञात करने के लिये नक्षत्रमास के दिवसो को १२ से गुणा करना चाहिये ।

$$\frac{१८३० \times १२}{६७} = \frac{२१९६०}{६७}$$ = ३२७ दिवस ५१/६७ मुहूत

नक्षत्रसंवत्सर के दिवस होते हैं।

नक्षत्रसंवत्सर के मुहूत बनाने के लिये नक्षत्रसंवत्सर के दिवसों को ३० से गुणा करना चाहिये।

ऐसा करने पर $$\frac{२१९६०}{६७} \times \frac{३०}{} = \frac{६५८८००}{६७}$$ = ९८३२ मुहूत ५६/६७ भाग नक्षत्रसंवत्सर के मुहूत हैं।

२ चन्द्रसंवत्सर

चन्द्रमास के २९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त हैं।
चन्द्रमास ८८५ मुहूर्त ३०/६० भागात्मक है।
चन्द्रसंवत्सर ३५४ दिवस १२/६२ मुहूर्तात्मक है।
चन्द्रसंवत्सर १०६२५ मुहूत ५०/६२ भागात्मक है।
१ युग के चन्द्रमास ६२ हैं।
१ युग के दिवस १८३० हैं।
१ चन्द्रमास के दिवस जानने के लिये १८३० को ६२ से भाग देना चाहिये।
१८३०—६२=२९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त होते हैं।

चन्द्रमास के मुहूर्त जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसों की संख्या को ३० से गुणा करना चाहिये—

$$\frac{१८३० \times ३०}{} = \frac{५४९००}{६२}$$ = ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हैं।

चन्द्रसंवत्सर के दिवस जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसों को १२ से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{१८३० \times १२}{६२} = \frac{२१९६०}{६२}$$ = ३५४ दिवस १२/६२ मुहूर्तात्मक चन्द्रसंवत्सर होता है।

चन्द्रसंवत्सर के मुहूत जानने के लिये वर्ष के दिवसों को ३० से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{२१९६० \times ३०}{६२} = \frac{६५८८००}{६२}$$ = १०६२५ मुहूत ५०/६२ भाग होते हैं।

३ ऋतुसंवत्सर

१ युग के ऋतुमास ६१ हैं।
१ ऋतुमास के दिवस ३० हैं।

१ ऋतुमास के मुहूत ९०० हैं।
१ ऋतुवष के दिवस ३६० हैं।
१ ऋतुवष के मुहूर्त १०८०० हैं।

४ आदित्यसवत्सर

१ युग के आदित्यमास ६० है।
१ आदित्यमास के ३०½ दिवस है।
१ आदित्यमास के ९१५ मुहूत होते हैं।
१ आदित्यसवत्सर के ३६६ दिवस होते हैं।
१ आदित्यसवत्सर के १०९८० मुहूर्त होते है।

५ अभिवर्धितसवत्सर

१ अभिवर्धित मास के ३१ दिवस २९ मुहूत १७/६२ भाग होते है।
१ अभिवर्धित मास के ९५९ मुहूत १७/६२ भाग।
१ अभिवर्धित सवत्सर के ३८३ दिवस २१ मुहूत १८/६२ भाग होते है।
१ अभिवर्धित सवत्सर के ११५११ मुहूर्त १८/६२ भाग होते हैं। —सूत्र ७२ समाप्त।

सूत्र ७३

नो युग के अहोरात्र का प्रमाण

	दिवस	मुहूत	बासठिया भाग	चूर्णित भाग
१ नक्षत्रसवत्सर	३२७	२२	५१	५५/६७
२ चन्द्रसवत्सर	३५४	५	५०	×
३ ऋतुसवत्सर	३६०	×	×	×
४ आदित्यसवत्सर	३६६	×	×	×
५ अभिवर्धितसवत्सर	३८३	२१	१८	×
	१७९१	१९	५७	५५/६७

नो युग के मुहूत

१७९१ × ३० = ५३७३० + १९ = ५३७४९ ५७/६२ ५५/६७ चूर्णित भाग।
नो युग मे कितने दिवस मिलाने पर युग पूण होता है?—
३८ दिवस १० मुहुत ४/६२ भाग १२/६७ चूर्णित भाग मिलाने से युग पूण होता है।
कितने मुहूर्त मिलाने मे युग के मुहूत पूर्ण होते हैं?
३८ × ३० = १०४० + १० = ११ मुहूत
११५० मुहूत ४/६२ भाग १२/६७ चूर्णित भाग मिलाने पर युग के मुहूत पूण हो

युग के दिवस कितने ?
१८३० दिवस।
युग के मुहूर्त कितने ?
१८३० × ३० = ५४९०० मुहूर्त।
५४९०० मुहूर्त के कितने बासठिया भाग होते हैं ?
५४९०० × ६२ = ३४०३८०० बासठिया भाग। —सूत्र ७३ समाप्त।

॥ बारहवाँ प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र ७९

तेरहवाँ प्राभृत

चन्द्रमा की हानि-वृद्धि

शुक्लपक्ष में वृद्धि होती है और कृष्णपक्ष में हानि होती है।
शुक्लपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की वृद्धि होती है।
कृष्णपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की हानि होती है।
चन्द्रमास का प्रमाण एवं चन्द्रमास के मुहूर्तों का प्रमाण सूत्र ७२ के अनुसार जानना चाहिये।
शुक्लपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग है।
कृष्णपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग हैं।
एकपक्ष १४ दिवस ४७/६२ भागात्मक है। —सूत्र ७९ समाप्त।

सूत्र ८०

१ युग में ६२ पूर्णिमा और ६२ अमावस्या होती हैं।
अमावस्या और पूर्णिमा तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हैं।
पूर्णिमा से अमावस्या तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हैं।
पूर्णिमा से पूर्णिमा तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हैं।
अमावस्या से अमावस्या तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हैं। —सूत्र ८० समाप्त।

॥ तेरहवाँ प्राभृत समाप्त ॥

सूत्र ८३

चन्द्रहवाँ प्राभृत

एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

एक मुहूर्त में चन्द्र उस-उस मंडल के १७६८ भाग गति करता है।
१ युग के अर्धमंडल १७६८ हैं। १ युग में १८३० दिवस हैं।
दो अर्धमंडल अर्थात् एक मंडल की परिक्रमा चन्द्र कितने रात्रि दिवस में पूर्ण करता है ?
यह ज्ञात करने के लिये—

$$\frac{१८३० \text{ दिवस} \times २ \text{ अधमडल}}{१७६८ \text{ भाग}} = \frac{३६६०}{१७६८}$$

= २ दिवस १२४/१७६८ भाग आते हैं।

१२४/१७६८ भाग के मुहूर्त बनाने के लिये उन्हे ३० से गुणा करने पर —

$$\frac{१२४ \times ३०}{१७६८} = \frac{३७२०}{१७६८} = \frac{४६५}{२२१}$$

=२ दिवस २ मुहूर्त २३/२२१ भाग मे चन्द्र एक मडल पूर्ण करता है।
एक मुहुत की गति कितनी ?

६२ मुहुत २३/२२१ भाग मे चन्द्र १०९८०० भाग (मडल का परिक्षेप) गति करता है तो एक मुहूत की गति जानने के लिये—

$$\frac{२२१ \times १०९८००}{१३७२५} = \frac{२४२६५८००}{१३७२५}$$

१७६८ भाग
चन्द्र एक मुहूत मे १७६८ भाग गमन करता है।
सूय एक मुहूत मे १८३० भाग गति करता है।
सूय दो दिवस मे एक मडल पूण करता है।
अर्थात् ६० मुहूत मे १०९८०० भाग गमन करता है।
एक मुहूत मे कितने भाग गमन करता है ?

$$\frac{१०९८००}{६०} = १८३०$$

सूय एक भाग मे १८३० भाग गमन करता है।
नक्षत्र एक मुहूत मे १८३५ भाग गमन करता है।
मुहूत जानने के लिये एक मडल का सक्रमण काल निकालना जरूरी है।
१८३५ अधमडल पूण करने मे १८३० दिवस लगते है।
दो अधमडल पूण करने मे कितने दिवस लगते हैं ?

$$\frac{२ \times १८३०}{१८३५} = १ \text{ दिवस } १८२५/१८३५ \text{ मुहूत}$$

१८२५ भाग के मुहूत बनाने के लिये $\frac{१८२५ \times ३०}{१८३५}$

$$= \frac{५४७५०}{१८३५} = २९ \text{ मुहूत } ३०७/३६७ \text{ आते हैं।}$$

अर्थात् नक्षत्र को एक मडल पूर्ण करने मे १ दिवस २९ मुहूत ३०७/३६७ भाग समय लगता है।
अर्थात् ५९ मुहूर्त मे ३०७/३६७ भाग समय लगता है।
अर्थात् ५९ मुहूर्त मे १०९८०० भाग परिक्षेप करता है।
एक मुहूर्त मे कितने भाग परिक्षेप करेगा ?

$५९ \frac{३०७}{३६७}$

$= \frac{२१९६०}{३६७}$

$\frac{३६७ \times १०९८००}{२१९६०}$

= १८३५ भाग एक मुहूर्त में गमन करता है।
सूय-चन्द्र की गति मे क्या विशेषता है ?
सूय-चन्द्र की अपेक्षा ६२ भाग विशेष गमन करता है।
सूय १८३० — चन्द्र १७६८ = ६२ भाग
जब चन्द्र गति समापन्न हो तब नक्षत्र की गति से क्या विशेष है ?
नक्षत्र ६७ भाग विशेष गति करता है। क्योकि नक्षत्र १८३५ भाग गमन करता है।
चन्द्र १७६८ भाग गमन करता है।
नक्षत्र १८३५ — चन्द्र १७६८ = ६७ भाग अधिक गमन करता है।

सूत्र ८५

नक्षत्रमास मे चन्द्र कितने मडल गति करता है ?

चन्द्र एक नक्षत्रमास मे १३ मडल १३/६७ भाग गति करता है। इसका कारण यह है कि एक युग के नक्षत्रमास ६७ हैं। चन्द्र मडल ८८४ है। ६७ नक्षत्रमास मे ८८४ चन्द्रमडल चन्द्र गति करता है। एक नक्षत्रमास म कितने मडल गति करता है ?

८८४ — ६७ = १३ मडल १३/६७ भाग गति करता है।
नक्षत्रमास मे सूय कितने मडल गति करता है ?
१३ मडल ४४/६७ भाग गति करता है।

एक युग के ६७ नक्षत्रमास म ९१५ सूयमडल की गति करे तो एक मास म कितने मडल गति करता है ?

$\frac{९१५}{६७}$ = १३ मडल ४४/६७ भाग गति करता है।

नक्षत्रमास मे नक्षत्र कितने मडल गति करता है ?

एक युग के ६७ नक्षत्रमास मे १८३५ अर्धमंडल गति करता है।

$\frac{१८३५}{६७}$=२७ अर्धमंडल २६/६७ भाग

उनके मडल बनाने के लिये २ से भाग देने पर

$\frac{१८३५}{६७}$÷२=१३ $\frac{४६॥}{६७}$ मडल

चन्द्रमास मे चन्द्र कितने मडल गति करता है ?
१२४ पर्व मे ८८४ मडल गति करता है।
२ पर्व मे कितने मडल गति करता है ?

$\frac{२×८८४}{१२४}$=$\frac{१७६८}{१२४}$=१४$\frac{३२}{१२४}$

१४ मडल तथा पन्द्रहवें मडल के ३२/१२४ भाग।
चन्द्रमास मे सूर्य कितने मडल गति करता है ?
१५ मडल मे चौथा भाग न्यून तथा १२४ भाग का एक अंश।
१४ मडल तथा पन्द्रहवें मडल के ९४/१२४ भाग।
वह किस प्रकार से ?
१२४ पर्व मे ९१५ सूर्यमडल गति करता है तो २ पर्व मे कितने सूर्यमडल गति करता है ?

$\frac{२×९१५}{१२४}$=$\frac{१८३०}{१२४}$=१४$\frac{९४}{१२४}$ मडल गति करता है।

चन्द्रमास मे नक्षत्र कितने मडल गति करता है ?

१४ मडल तथा १५ वें मडल के $\frac{९४}{१२४}$ भाग।

१२४ पर्व मे १८३५ नक्षत्र अर्धमडल गति करता है।
तो २ पर्व मे कितने नक्षत्र अर्धमडल गति करता है ?

$\frac{२×१८३५}{१२४}$=$\frac{३६७०}{१२४}$=२९$\frac{७४}{१२४}$

दो अर्धमडल का एक मडल होता है तो दो से भाग देने पर—

$\frac{३६७०÷२}{१२४}$ =१४ मडल तथा ९९/१२४ भाग।

ऋतुमास मे चन्द्र कितने मडल गति करता है ?
६१ कर्ममास मे ८८४ चन्द्रमडल गति करता है।

तो कममास में कितने चन्द्रमडल गति करेगा ?

$$\frac{८८४}{६१} = १४\frac{३०}{६१}$$

१४ मडल तथा पन्द्रहवें मडल में ३०/६१ भाग।
ऋतुमास म सूर्य कितने मडल की गति करता है ?
६१ कममास में ९१५ सूर्यमडल गति करता है।
१ कममास मे कितने सूयमडल गति करेगा ?

$$\frac{९१५}{६१}$$ = १५मडल गति करता है।

ऋतुमास मे नक्षत्र कितने मडल गति करता है ?
१२२ ऋतुमास मे १८३५ नक्षत्रमडल गति करता है।
तो १ ऋतुमास मे कितने नक्षत्रमडल गति करेगा ?

$$\frac{१८३५}{१२२} = १५\frac{५}{१२२}$$ मण्डल गमन करता है।

सूयमास मे चन्द्र कितने मण्डल गमन करता है ?
६० सूयमास मे ८८४ चन्द्रमण्डल गति करता है।
तो १ सूयमास में कितने चन्द्रमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{८८४}{६०} = १४\frac{११}{१५}$$

१४ मण्डल पन्द्रहवें मण्डल का ११/१५ भाग।
सूयमास मे सूय कितने मण्डल गमन करता है ?
६० सूयमास से ९१५ सूयमण्डल गमन करता है।
तो एक सूयमास में कितने सूयमण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{९१५}{६०} = १५\frac{१५}{६०}$$

१५ मण्डल १/४ भाग।
सूयमास म नक्षत्र कितने मण्डल गमन करता है।
१२० सूयमास मे १८३५ नक्षत्रमण्डल गमन करता है।
तो १ सूयमास कितने नक्षत्रमण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{१८३५}{१२०} = १५\frac{३५}{१२०}$$ मण्डल

१५ मण्डल १६वें मे ३५/१२० भाग

अभिवर्धित मास मे चन्द्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग के अभिवर्धित मास ५७$\frac{३}{१३}$ हैं।

क्योंकि एक अभिवर्धित मास के मुहूर्त पूर्व मे बताये गये अनुसार—

९५९ $\frac{१७}{६२}$ मुहूर्त का एक मास।

$९५९ \times ६२ + १७ = \frac{५९४७५}{६२}$

युग के मुहूर्त १८३० × ३० = ५४९०० मुहूर्त। उनके ६२ भाग करना चाहिये
५४९०० × ६२ = ३४०३८०० भाग।
५९४७५/६२ मुहूर्त का १ अभिवर्धित मास होता है।
५४९०० मुहूर्त के कितने मास होंगे ?

$\frac{५४९०० \times ६२}{५९४७५} = \frac{३४०३८००}{५९४७५}$

५७$\frac{१३७२५}{५९४७५}$ ५७$\frac{३}{१३}$ (४५७५ से छेद चलता है।)

५७ अभिवर्धित मास ३/१३ भाग।

५७$\frac{३}{१३}$ अभिवर्धित मास मे ८८४ चन्द्रमण्डल गमन करता है।

तो १ अभिवर्धित मास में कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

५७$\frac{३}{१३}$ = ७४४/१३ होते हैं।

७४४/१३ अभिवर्धित मास मे कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

$\frac{८८४ \times १३}{७४४} = \frac{११४९२}{७४४} = १५\frac{८३}{१८६}$

१५ मण्डल चन्द्र गति करता है। ८३/१८६ भाग।
अभिवर्धित मास मे सूर्य कितने मण्डल गमन करता है।
एक युग के अभिवर्धित मास ७४४/१३ हैं, उनमे ९१५ सूर्यमण्डल गति करता है तो एक अभिवर्धित मास मे सूर्य कितने मण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{९१५ \times १३}{७४४} = \frac{११८९५}{७४४} = १५\frac{२४५}{२४८}$$

१५ मण्डल तथा १६वें मण्डल में ३ भाग न्यून ।

अभिवर्धित मास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग में ७४४/१३ अभिवर्धित मास हैं । उसमें $\frac{१८३५}{२}$ मण्डल गमन करता है ।

तो एक अभिवर्धित मास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{१३ \times १८३५}{२ \times ७४४} = \frac{२३८५५}{१४८८} = १६\frac{४७}{१४८८}$$ मण्डल परिभ्रमण करेगा ।

—सूत्र ८५ समाप्त ।

सूत्र ८६

प्राभृत १५

चन्द्र रात्रि में कितने मण्डल परिभ्रमण करता है ?

एक युग के अहोरात्र १८३० हैं । उनमें १७६८ अर्धमण्डल गति करता है ।

तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$\frac{१७६८}{१८३०} = \frac{८८४}{९१५}$ एक अर्धमण्डल के ३१ भाग न्यून गति करता है ।

सूर्य एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० हैं, उनमें १८३० अर्धमण्डल गति करता है । तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$\frac{१८३०}{१८३०} = १$ अर्धमण्डल गति करेगा ।

नक्षत्र कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० हैं । उनमें १८३५ अर्धमण्डल गति करता है । तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$\frac{१८३५}{१८३०} = १$ अर्धमण्डल ५/१८३० भाग गति करता है ।

एक मण्डल गति करने पर चन्द्र को कितना समय लगता है ?

८८४ मण्डल गति करने पर चन्द्र को १८३० दिवस लगते हैं तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगेंगे ?

$\frac{१८३०}{८८४} = २\frac{३१}{४४२}$ = दो दिवस और ३१/४४२ भाग मे एक मण्डल गति करता है।

एक मण्डल सूय कितने रात्रि-दिवस मे गमन करता है।

९१५ मण्डल गति करने पर सूर्य को १८३० दिवस लगते हैं, तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगते हैं ?

$\frac{१८३०}{९१५}$ = २ अहोरात्र

नक्षत्र कितने दिवस मे एक मण्डल गति करता है ?

१८३५/२ मण्डल गति करने पर नक्षत्र को १८३० दिवस लगते हैं तो एक मण्डल की गति करने पर नक्षत्र को कितने दिवस लगेंगे ?

$\frac{१८३०}{१८३५} \times २ = \frac{७३२}{३६७} = १\frac{३६५}{३६८}$

दो अहोरात्र मे दो भाग कम
एक अहोरात्र के ३६७ भाग।

युग मे चन्द्र कितने मण्डल गति करता है ?

चन्द्र एक मुहूत मे मण्डल के १०९८०० भाग मे से १७६८ भाग गति करता है। युग के मुहूत ५४९०० हैं।

एक मुहूत मे १७६८/१०९८०० गति करता है। तो ५४९०० मुहूत मे कितनी गति करेगा ?

$\frac{५४९००}{१०९८००} \times १७६८ = \frac{९७०६३२००}{१०९८००} = ८८४$

= ८८४ मण्डल गति करता है।

युग मे सूर्य के मण्डलो की सख्या ?

अर्थात् एक युग मे सूय कितने मण्डल गति करता है ?

सूय एक मुहूत मे १८३०/१०९८०० भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूत मे कितनी गति करेगा ?

$\frac{५४९०० \times १८३०}{१०९८००}$ = ९१५ मण्डल गति करता है।

युग में नक्षत्रों की संख्या ?

अर्थात् एक युग में नक्षत्र कितने मण्डल गति करता है ?

नक्षत्र एक मुहूर्त में १८३५/१०९८०० भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूर्त में कितनी गति करेगा ?

$$\frac{५४९०० \times १८३५}{१०९८००} = \frac{१८३५}{२} = ९१७\frac{१}{२} \text{ मंडल}$$

९१७ मण्डल १/२ भाग गति करेगा।



सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्र
सूत्र २० व २४

सूरमडलस्स आयाम-विक्खभो परिक्खेवो बाहल्ल च

प सूरमडले ण भते ! केवइय आयाम विक्खभेण केवइय परिक्खेवेण केवइय बाहल्लेण पण्णत्ते ?

उ गोयमा ! सूरमडले अडयालोस एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खभेण[1] त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण चउवीस एगसट्ठिभाए जोयणस्स बाहल्लेण पण्णत्ते।

—जबु वक्ख ७, सु १३०

जबुद्दीवे सूरिया पडुप्पन्न खेत्त ओभासति

प जबुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिया कि तीय खेत्त ओभासति, पडुपन्न खेत्त ओभासति, अणागय खेत्त ओभासति ?

उ गोयमा ! नो तीय खेत्त ओभासेंति, पडुप्पन्न खेत्त ओभासेंति, नो अणागय खेत्त ओभासेंति।

प त भते ! कि पुट्ठ ओभासेंति, अपुट्ठ ओभासेंति ?

उ गोयमा ! पुट्ठ ओभासेंति, नो अपुट्ठ ओभासेंति जाव।[2]

प त भते ! कि एगदिसि ओभासेंति, छद्दिसि ओभासेंति ?

---

१ (क) सूरमडले ण अडयालीस एगसट्ठिभाए जोयणस्स विक्खभेण पण्णत्ते, —सम ४८, सु ३
(ख) सूरमडल जोयणे ण तेरसहि एगट्ठिभाएहि जोयणस्स ऊण पण्णत्त, —सम १३, सु ८

२ यावत् पद से सग्रहीत सूत्र

प त भते ! कि ओगाढ ओभासेंति, अणोगाढ ओभासेंति ?

उ गोयमा ! ओगाढ ओभासेंति, नो अणोगाढ ओभासेंति,

प त भते ! कि अणतरोगाढ ओभासेंति, परपरोगाढ ओभासेंति ?

उ गोयमा ! अणतरोगाढ ओभासेंति, नो परपरोगाढ ओभासेंति,

प त भते ! कि अणु ओभासेंति, बायर ओभासेंति ?

उ गोयमा ! अणु पि ओभासेंति, बायर पि ओभासेंति,

प त भते ! कि उड्ढ ओभासेंति, तिरिय ओभासेंति अहे ओभासेंति ?

उ गोयमा ! उड्ढ पि, तिरिय पि, अहे वि ओभासेंति। (क्रमश)

उ गोयमा ! नो एगदिसिं ओभासेंति, नियमा छद्दिसिं ओभासेंति ।[1]—विया स ८, उ ८, सु ३९, ४०

जम्बुद्दीवे सूरिया पडुप्पन्न खेत्त उज्जोवेंति

प जम्बुद्दीवे ण भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्त उज्जोवेंति, पडुप्पन्नं खेत्त उज्जोवेंति, अणागयं खेत्त उज्जोवेंति ?

उ गोयमा ! नो तीयं खेत्त उज्जोवेंति, पडुप्पन्न खेत्त उज्जोवेंति, नो अणागय खेत्त उज्जोवेंति, एवं तवेंति, एवं भासंति जाव नियमा छद्दिसिं भासंति ।[2]

जम्बुद्दीवे सूरियाणं ताव खेत्त पमाणं —विया स ८, उ ८, सु ४१-४२

प जम्बुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया केवइयं खेत्त उड्ढं तवंति ? केवइयं खेत्तं अहे तवंति ? केवइयं खेत्तं तिरियं तवंति ?

उ गोयमा ! एगं जोयणसयं उड्ढं तवंति,[3] अट्ठारसजोयणसयाइं अहे तवंति,[4] सीयालीसं जोयणसह

प त भंते ! किं आइं ओभासेंति, मज्झे ओभासेंति, अंते ओभासेंति ?
उ गोयमा ! आइं पि, मज्झे वि, अंते वि ओभासेंति,
प त भंते ! किं सविसए ओभासेंति, अविसए ओभासेंति ?
उ गोयमा ! सविसए ओभासेंति, नो अविसए ओभासेंति,
प तं भंते ! किं आणुपुव्विं ओभासेंति, नो अणाणुपुव्विं ओभासेंति,
उ गोयमा ! आणुपुव्विं ओभासेंति, नो अणाणुपुव्विं ओभासेंति,
प तं भंते ! कइ दिसिं ओभासेंति ?
उ गोयमा ! नियमा छद्दिसिं ओभासेंति, —विया स ८, उ ८, सु ३९ टिप्पण
[प त भंते ! किं एगदिसिं ओभासेंति, छद्दिसिं ओभासेंति ?
उ गोयमा ! नो एगदिसिं ओभासेंति, नियमा छद्दिसिं ओभासेंति ।] (पाठान्तर)

१ जंबु वक्ख ७, सु १३७
२ जंबु वक्ख ७ सु १३७
३ (क) जंबु वक्ख ७, सु १३९
(ख) सूरिय पा ४ सु २५
सूर्य के विमान से सौ योजन ऊपर शनैश्चर ग्रह का विमान है और यहीं तक ज्योतिष चक्र की सीमा है, अतः इससे ऊपर सूर्य का तापक्षेत्र नहीं है ।
४ जम्बुद्वीप के पश्चिम महाविदेह से जयंतद्वार की ओर लवणसमुद्र के समीप क्रमशः एक हजार योजन पर्यन्त भूमि नीचे है, इस अपेक्षा से एक हजार योजन तथा मेरु के समीप की समभूमि से ८०० योजन ऊंचा सूर्य का विमान है, ये आठ सौ योजन संयुक्त करने पर अठारह सौ योजन सूर्य विमान से नीचे की ओर का तापक्षेत्र है, अन्य द्वीपों में भूमि सम रहती है । इसलिए वहाँ सूर्य का नीचे का तापक्षेत्र केवल आठ सौ योजन का है । अठारह सौ योजन नीचे की ओर के तापक्षेत्र के और सौ योजन ऊपर की ओर के तापक्षेत्र के इन दोनों संख्याओं के संयुक्त करने पर १९०० योजन का सूर्य का तापक्षेत्र है ।

स्साइ दोण्णि तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीस च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरिय तवंति ।[1]

—विया स ८, उ ८, सु ४५

---

१. यहाँ तिरछे तापक्षेत्र का कथन पूर्व-पश्चिम दिशा की अपेक्षा से कहा गया है, अर्थात् उत्कृष्ट इतनी दूरी पर स्थित सूर्य मानव चक्षु से देखा जा सकता है।
उत्तर में १८० योजन न्यून पैंतालीस हजार योजन तथा दक्षिणदिशा में द्वीप में १८० योजन और लवणसमुद्र में तेतीस हजार तीन सौ तेतीस योजन तथा एक योजन के तृतीय भाग संयुक्त दूरी से सूर्य देखा जा सकता है।

अनध्यायकाल

[स्व० आचार्यप्रवर श्री आत्मारामजी म० द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत]

स्वाध्याय के लिए आगमों में जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल में स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियों में भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायों का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वरविद्या संयुक्त होने के कारण, इनका भी आगमों में अनध्यायकाल वर्णित किया गया है, जैसे कि—

दसविधे अंतलिक्खिते असज्झाए पण्णत्ते, तं जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, निग्घाते, जुवते, जक्खालित्ते, धूमिता, महिता, रयउग्घाते।

दसविहे ओरालिते असज्झातिते, तं जहा—अट्ठी, मंसं, सोणिते, असुतिसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराते, सूरोवराते, पडने, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे।

—स्थानाङ्ग सूत्र, स्थान १०

नो कप्पति निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करित्तए, तं जहा—आसाढपाडिवए, इंदमहापाडिवए, कत्तिअपाडिवए, सुगिम्हपाडिवए। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा, चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पडिमाते, पच्छिमाते, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते। कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा, चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पुव्वण्हे, अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।

—स्थानाङ्ग सूत्र, स्थान ४, उद्देश २

उपर्युक्त सूत्रपाठ के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या, इस प्रकार बत्तीस अनध्याय माने गए हैं, जिनका संक्षेप में निम्न प्रकार से वर्णन है, जैसे—

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१ उल्कापात-तारापतन—यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

२ दिग्दाह—जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पड़े कि दिशा में आग सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

३ गर्जित—बादलों के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४ विद्युत—बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास में नहीं मानना चाहिए। क्योंकि वह

गजन और विद्युत् प्राय ऋतु-स्वभाव मे ही होता है। अत आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नही माना जाता।

५ निर्घात—बिना बादल के आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गजना होने पर, या बादलो सहित आकाश मे कडकने पर दो प्रहर तक अस्वाध्याय काल है।

६ यूपक—शुक्लपक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनो प्रहर रात्रि पयन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

७ यक्षादीप्त—कभी किसी दिशा मे बिजली चमकने जैसा, थोडे-थोडे समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अत आकाश मे जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

८ धूमिका कृष्ण—कार्तिक से लेकर माघ तक का समय मेघो का गर्भमास होता है। इसमे धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध पडती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक यह धुंध पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

९ मिहिकाश्वेत—शीतकाल मे श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुंध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्याय काल है।

१० रज-उद्घात—वायु के कारण आकाश मे चारो ओर धूलि छा जाती है। जब तक यह धुलि फली रहती है, स्वाध्याय नही करना चाहिए।

उपरोक्त दस कारण आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय के हैं।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११-१२-१३ हड्डी, मास और रुधिर—पचेन्द्रिय तिर्यंच की हड्डी, मास और रुधिर यदि सामने दिखाई दें, तो जब तक वहा से यह वस्तुएं उठाई न जाएं तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आस-पास के ६० हाथ तक इन वस्तुओ के होने पर अस्वाध्याय मानते हैं।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, मास और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन-रात का होता है। स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक। बालक एव बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमश सात एव आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४ अशुचि—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५ श्मशान—श्मशानभूमि के चारो ओर सौ सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६ चन्द्रग्रहण—चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

१७ सूर्यग्रहण—सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमश आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८ पतन—किसी बड़े मान्य राजा अथवा राष्ट्रपुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाहसंस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए। अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ़ न हो, तब तक धीरे धीरे स्वाध्याय करना चाहिए।

१९ राजव्युद्ग्रह—समीपस्थ राजाओं में परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नहीं करें।

२० औदारिक शरीर—उपाश्रय के भीतर पंचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पड़ा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पड़ा हो तो स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

अस्वाध्याय के उपरोक्त १० कारण औदारिकशरीर सम्बन्धी कहे गये हैं।

२१-२८ चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा—आषाढ-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा और चैत्र पूर्णिमा ये चार महोत्सव हैं। इन पूर्णिमाओं के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते हैं। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२ प्रात, सायं, मध्याह्न और अर्धरात्रि—प्रातः सूर्य उगने से एक घड़ी पहिले तथा एक घड़ी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घड़ी पहले तथा एक घड़ी पीछे। मध्याह्न अर्थात् दोपहर में एक घड़ी आगे और एक घड़ी पीछे एवं अर्धरात्रि में भी एक घड़ी आगे तथा एक घड़ी पीछे स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।



अर्थसहयोगी सदस्यो की शुभ नामावली

महास्तम्भ

१ श्री सेठ मोहनमलजी चोरडिया, मद्रास
२ श्री गुलावचन्दजी मागीलालजी सुराणा, सिकन्दराबाद
३ श्री पुखराजजी शिशोदिया, ब्यावर
४ श्री सायरमलजी जेठमलजी चोरडिया, बेंगलोर
५ श्री प्रेमराजजी भवरलालजी श्रीश्रीमाल, दुर्ग
६ श्री एस किशनचन्दजी चोरडिया, मद्रास
७ श्री कवरलालजी बेताला, गोहाटी
८ श्री सेठ खीवराजजी चोरडिया मद्रास
९ श्री गुमानमलजी चोरडिया, मद्रास
१० श्री एस बादलचन्दजी चोरडिया, मद्रास
११ श्री जे दुलीचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१२ श्री एस रतनचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१३ श्री जे अन्नराजजी चोरडिया, मद्रास
१४ श्री एस सायरचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१५ श्री आर शान्तिलालजी उत्तमचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१६ श्री सिरेमलजी हीराचन्दजी चोरडिया, मद्रास
१७ श्री जे हुक्मीचन्दजी चोरडिया, मद्रास

स्तम्भ सदस्य

१ श्री अगरचन्दजी फतेचन्दजी पारख, जोधपुर
२ श्री जसराजजी गणेशमलजी सचेती, जोधपुर
३ श्री तिलोकचदजी, सागरमलजी सचेती, मद्रास
४ श्री पूसालालजी किस्तूरचदजी सुराणा, कटगी
५ श्री आर प्रसन्नचन्दजी चोरडिया, मद्रास
६ श्री दीपचन्दजी चोरडिया, मद्रास
७ श्री मूलचन्दजी चोरडिया, कटगी
८ श्री वर्द्धमान इण्डस्ट्रीज, कानपुर
९ श्री मांगीलालजी मिश्रीलालजी चेसती, दुर्ग

संरक्षक

१ श्री बिरदीचदजी प्रकाशचदजी तलेसरा, पाली
२ श्री ज्ञानराजजी केवलचन्दजी मूथा, पाली
३ श्री प्रेमराजजी जतनराजजी मेहता, मेडता सिटी
४ श्री शा० जडावमलजी माणकचन्दजी बेताला, बागलकोट
५ श्री हीरालालजी पन्नालालजी चौपडा, ब्यावर
६ श्री मोहनलालजी नेमीचन्दजी ललवाणी, चागाटोला
७ श्री दीपचदजी चन्दनमलजी चोरडिया, मद्रास
८ श्री पन्नालालजी भागचन्दजी बोथरा, चागाटोला
९ श्रीमती सिरेकुंवर बाई धर्मपत्नी स्व श्री सुगनचन्दजी झामड, मदुरान्तकम्
१० श्री बस्तीमलजी मोहनलालजी बोहरा (K G F) जाडन
११ श्री थानचन्दजी मेहता, जोधपुर
१२ श्री भरुदानजी लाभचन्दजी सुराणा, नागौर
१३ श्री खूबचन्दजी गादिया, ब्यावर
१४ श्री मिश्रीलालजी धनराजजी विनायकिया ब्यावर
१५ श्री इन्द्रचन्दजी वैद, राजनादगाव
१६ श्री रावतमलजी भीकमचन्दजी पगारिया, बालाघाट
१७ श्री गणेशमलजी धर्मीचन्दजी काकरिया, टगला
१८ श्री सुगनचन्दजी चोरडिया, इन्दौर
१९ श्री हरकचन्दजी सागरमलजी बेताला, इन्दौर
२० श्री रघुनाथमलजी लिखमीचन्दजी लोढ़ा, चागाटोला
२१ श्री सिद्धकरणजी शिखरचन्दजी बैद, चागाटोला

२२ श्री सागरमलजी नोरतमलजी पींचा, मद्रास
२३ श्री मोहनराजजी मुकनचन्दजी बालिया, अहमदाबाद
२४ श्री केशरीमलजी जवरीलालजी तलेसरा, पाली
२५ श्री रतनचन्दजी उत्तमचन्दजी मोदी, ब्यावर
२६ श्री धर्मीचन्दजी भागचन्दजी बोहरा, झूठा
२७ श्री छोगमलजी हेमराजजी लोढ़ा, डोंडीलोहारा
२८ श्री गुणचंदजी दलीचंदजी कटारिया, बेल्लारी
२९ श्री मूलचन्दजी सुजानमलजी सचेती, जोधपुर
३० श्री सी० अमरचन्दजी बोथरा, मद्रास
३१ श्री भवरलालजी मूलचंदजी सुराणा, मद्रास
३२ श्री बादलचंदजी जुगराजजी मेहता, इन्दौर
३३ श्री लालचंदजी मोहनलालजी कोठारी, गोठन
३४ श्री हीरालालजी पन्नालालजी चौपड़ा, अजमेर
३५ श्री मोहनलालजी पारसमलजी पगारिया, बैंगलोर
३६ श्री भवरीमलजी चोरड़िया, मद्रास
३७ श्री भवरलालजी गोठी, मद्रास
३८ श्री जालमचंदजी रिखबचंदजी बाफना, आगरा
३९ श्री घेवरचंदजी पुखराजजी भुरट, गोहाटी
४० श्री जबरचन्दजी गेलड़ा, मद्रास
४१ श्री जड़ावमलजी सुगनचन्दजी, मद्रास
४२ श्री पुखराजजी विजयराजजी, मद्रास
४३ श्री चेनमलजी सुराणा ट्रस्ट, मद्रास
४४ श्री लूणकरणजी रिखबचंदजी लोढ़ा, मद्रास
४५ श्री सूरजमलजी सज्जनराजजी मेहता, कोप्पल

सहयोगी सदस्य

१ श्री देवकरणजी श्रीचन्दजी डोसी, मेड़तासिटी
२ श्रीमती छगनीबाई विनायकिया, ब्यावर
३ श्री पूनमचन्दजी नाहटा, जोधपुर
४ श्री भवरलालजी विजयराजजी कांकरिया, विल्लीपुरम
५ श्री भवरलालजी चौपड़ा, ब्यावर
६ श्री विजयराजजी रतनलालजी चतर, ब्यावर
७ श्री बी. गजराजजी बोकड़िया, सेलम
८ श्री फूलचन्दजी गौतमचन्दजी कांठेड़, पाली
९ श्री के. पुखराजजी बाफणा, मद्रास
१० श्री रूपराजजी जोधराजजी मूथा, दिल्ली
११ श्री मोहनलालजी मंगलचंदजी पगारिया, रायपुर
१२ श्री नथमलजी मोहनलालजी लूणिया, चण्डावल
१३ श्री भंवरलालजी गौतमचन्दजी पगारिया, कुशालपुरा
१४ श्री उत्तमचंदजी मांगीलालजी, जोधपुर
१५ श्री मूलचन्दजी पारख, जोधपुर
१६ श्री सुमेरमलजी मेड़तिया, जोधपुर
१७ श्री गणेशमलजी नेमीचन्दजी टांटिया, जोधपुर
१८ श्री उदयराजजी पुखराजजी संचेती, जोधपुर
१९ श्री बादरमलजी पुखराजजी बंट, कानपुर
२० श्रीमती सुन्दरबाई गोठी W/o श्री ताराचन्दजी गोठी, जोधपुर
२१ श्री रायचन्दजी मोहनलालजी, जोधपुर
२२ श्री घेवरचन्दजी रूपराजजी, जोधपुर
२३ श्री भंवरलालजी माणकचंदजी सुराणा, मद्रास
२४ श्री जंवरीलालजी अमरचन्दजी कोठारी, ब्यावर
२५ श्री माणकचन्दजी किशनलालजी, मेड़तासिटी
२६ श्री मोहनलालजी गुलाबचन्दजी चतर, ब्यावर
२७ श्री जसराजजी जंवरीलालजी धारीवाल, जोधपुर
२८ श्री मोहनलालजी चम्पालालजी गोठी, जोधपुर
२९ श्री नेमीचंदजी डाकलिया मेहता, जोधपुर
३० श्री ताराचंदजी केवलचंदजी कर्णावट, जोधपुर
३१ श्री आसूमल एण्ड क०, जोधपुर
३२ श्री पुखराजजी लोढ़ा, जोधपुर
३३ श्रीमती सुगनीबाई W/o श्री मिश्रीलालजी सांड, जोधपुर
३४ श्री बच्छराजजी सुराणा, जोधपुर
३५ श्री हरकचन्दजी मेहता, जोधपुर
३६ श्री देवराजजी लाभचंदजी मेड़तिया, जोधपुर
३७ श्री कनकराजजी मदनराजजी गोलिया, जोधपुर
३८ श्री घेवरचन्दजी पारसमलजी टांटिया, जोधपुर
३९ श्री मांगीलालजी चोरड़िया, कुचेरा

४० श्री सरदारमलजी सुराणा, भिलाई
४१ श्री श्रीकचदजी हेमराजजी सोनी, दुग
४२ श्री सूरजकरणजी सुराणा, मद्रास
४३ श्री घीसूलालजी लालचदजी पारख, दुर्ग
४४ श्री पुखराजजी वोहरा, (जैन ट्रासपोर्ट क) जोधपुर
४५ श्री चम्पालालजी सकलेचा, जालना
४६ श्री प्रेमराजजी मीठालालजी कामदार, बगलोर
४७ श्री भवरलालजी मूथा एण्ड स स, जयपुर
४८ श्री लालचदजी मोतीलालजी गादिया, बगलोर
४९ श्री भवरलालजी नवरत्नमलजी साखला, मेट्टूपालियम
५० श्री पुखराजजी छल्लाणी, करणगुल्ली
५१ श्री आसकरणजी जसराजजी पारख, दुग
५२ श्री गणेशमलजी हेमराजजी सोनी, भिलाई
५३ श्री अमृतराजजी जसव तराजजी मेहता, मेडतासिटी
५४ श्री घेवरचदजी किशोरमलजी पारख, जोधपुर
५५ श्री मागीलालजी रेखचदजी पारख, जोधपुर
५६ श्री मुन्नीलालजी मूलचदजी गुलेच्छा, जोधपुर
५७ श्री रतनलालजी लखपतराजजी, जोधपुर
५८ श्री जीवराजजी पारसमलजी कोठारी, मेडता सिटी
५९ श्री भवरलालजी रिखबचदजी नाहटा, नागौर
६० श्री मागीलालजी प्रकाशचन्दजी रूणवाल, मसूर
६१ श्री पुखराजजी बोहरा, पीपलिया कला
६२ श्री हरखचदजी जुगराजजी बाफना, बगलोर
६३ श्री च दनमलजी प्रेमचदजी मोदी, भिलाई
६४ श्री भीवराजजी बाघमार, कुचेरा
६५ श्री तिलोकचदजी प्रेमप्रकाशजी, अजमेर
६६ श्री विजयलालजी प्रेमचदजी गुलेच्छा, राजनादगाँव
६७ श्री रावतमलजी छाजेड, भिलाई
६८ श्री भवरलालजी डूगरमलजी कांकरिया, भिलाई
६९ श्री हीरालालजी हस्तीमलजी देशलहरा, भिलाई
७० श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावकसघ, दल्ली-राजहरा
७१ श्री चम्पालालजी बुद्धराजजी बाफणा, ब्यावर
७२ श्री गगारामजी इन्द्रचदजी बोहरा, कुचेरा
७३ श्री फतेहराजजी नेमीचदजी कर्णावट, कलकत्ता
७४ श्री बालचदजी थानचन्दजी भुरट, कलकत्ता
७५ श्री सम्पतराजजी कटारिया, जोधपुर
७६ श्री जवरीलालजी शातिलालजी सुराणा बोलारम
७७ श्री कानमलजी कोठारी, दादिया
७८ श्री पन्नालालजी मोतीलालजी सुराणा, पाली
७९ श्री माणकचदजी रतनलालजी मुणोत, टगला
८० श्री चिम्मनसिंहजी मोहनसिंहजी लोढा, ब्यावर
८१ श्री रिद्धकरणजी रावतमलजी भुरट, गौहाटी
८२ श्री पारसमलजी महावीरचदजी बाफना, गोठन
८३ श्री फकीरचदजी कमलचदजी श्रीश्रीमाल, कुचेरा
८४ श्री मांगीलालजी मदनलालजी चोरडिया, भरूदा
८५ श्री सोहनलालजी लूणकरणजी सुराणा, कुचेरा
८६ श्री घीसूलालजी, पारसमलजी, जवरीलालजी कोठारी, गोठन
८७ श्री सरदारमलजी एण्ड कम्पनी, जोधपुर
८८ श्री चम्पालालजी हीरालालजी बागरेचा, जोधपुर
८९ श्री पुखराजजी कटारिया, जोधपुर
९० श्री इन्द्रच दजी मुकन्दच दजी, इन्दोर
९१ श्री भवरलालजी बाफणा, इन्दोर
९२ श्री जेठमलजी मोदी, इन्दोर
९३ श्री बालच दजी अमरच दजी मोदी, ब्यावर
९४ श्री कुन्दनमलजी पारसमलजी भडारी, बगलोर
९५ श्रीमती कमलाकवर ललवाणी धमपत्नी श्री स्व पारसमलजी ललवाणी, गोठन
९६ श्री अखेचदजी लूणकरणजी भण्डारी, कलकत्ता
९७ श्री सुगनचन्दजी सचेती राजनांदगांव

२२ श्री गागरमलजी नोरतमलजी पीचा, मद्रास
२३ श्री मोहनराजजी मुकनचन्दजी बालिया, अहमदाबाद
२४ श्री केशरीमलजी जवरीलालजी तलेसरा, पाली
२५ श्री रतनचन्दजी उत्तमचन्दजी मोदी, ब्यावर
२६ श्री धर्मीचन्दजी भागचन्दजी बोहरा, झूठा
२७ श्री धासमलजी हेमराजजी लोढा, डाईलोहारा
२८ श्री गुणचंदजी दलीचंदजी कटारिया, बेल्लारी
२९ श्री मूलचन्दजी सुजानमलजी संचेती, जोधपुर
३० श्री सा० अमरचन्दजी बोथरा, मद्रास
३१ श्री भंवरलालजी मूलचंदजी सुराणा, मद्रास
३२ श्री बादलचन्दजी जुगराजजी मेहता, इन्दौर
३३ श्री लालचंदजी मोहनलालजी कोठारी, गोठन
३४ श्री हीरालालजी पन्नालालजी चोपड़ा, अजमेर
३५ श्री मोहनलालजी पारसमलजी पगारिया, बंगलौर
३६ श्री भंवरीमलजी चोरडिया, मद्रास
३७ श्री भंवरलालजी गोठी, मद्रास
३८ श्री जालमचन्दजी रिखबचंदजी बाफना, आगरा
३९ श्री घेवरचंदजी पुखराजजी भुरट, गोहाटी
४० श्री जबरचन्दजी गेलड़ा, मद्रास
४१ श्री जड़ावमलजी सुगनचन्दजी, मद्रास
४२ श्री पुखराजजी विजयराजजी, मद्रास
४३ श्री चैनमलजी सुराणा ट्रस्ट, मद्रास
४४ श्री लूणकरणजी रिखबचंदजी लोढा, मद्रास
४५ श्री सूरजमलजी सज्जनराजजी मेहता, कोप्पल

सहयोगी सदस्य

१ श्री देवकरणजी श्रीचन्दजी डागा, मडतासिटी
२ श्रीमती छगनीबाई विनायकिया, ब्यावर
३ श्री पूनमचन्दजी नाहटा, जोधपुर
४ श्री भंवरलालजी विजयराजजी कांकरिया, विल्लीपुरम
५ श्री भंवरलालजी चोपड़ा, ब्यावर
६ श्री विजयराजजी रतनलालजी चतर, ब्यावर
७ श्री बी. गजराजजी बोकड़िया, सेलम
८ श्री फूलचन्दजी गौतमचन्दजी कांठेड़, पाली
९ श्री के. पुखराजजी बाफणा, मद्रास
१० श्री रूपराजजी जोधराजजी मूथा, दिल्ली
११ श्री मोहनलालजी मंगलचंदजी पगारिया, रायपुर
१२ श्री नथमलजी मोहनलालजी लूणिया, चण्डावल
१३ श्री भंवरलालजी गौतमचन्दजी पगारिया, कुशालपुरा
१४ श्री उत्तमचंदजी मांगीलालजी, जोधपुर
१५ श्री मूलचन्दजी पारख, जोधपुर
१६ श्री सुमेरमलजी मेड़तिया, जोधपुर
१७ श्री गणेशमलजी नेमीचन्दजी टांटिया, जोधपुर
१८ श्री उदयराजजी पुखराजजी संचेती, जोधपुर
१९ श्री बादरमलजी पुखराजजी बंट, कानपुर
२० श्रीमती सुन्दरबाई गोठी W/o श्री ताराचन्दजी गोठी, जोधपुर
२१ श्री रायचन्दजी मोहनलालजी, जोधपुर
२२ श्री घेवरचन्दजी रूपराजजी, जोधपुर
२३ श्री भंवरलालजी माणकचंदजी सुराणा, मद्रास
२४ श्री जवरीलालजी अमरचन्दजी कोठारी, ब्यावर
२५ श्री माणकचन्दजी किशनलालजी, मेड़तासिटी
२६ श्री मोहनलालजी गुलाबचन्दजी चतर, ब्यावर
२७ श्री जसराजजी जवरीलालजी धारीवाल, जोधपुर
२८ श्री मोहनलालजी चम्पालालजी गोठी, जोधपुर
२९ श्री नेमीचंदजी डाकलिया मेहता, जोधपुर
३० श्री ताराचन्दजी केवलचंदजी कर्णावट, जोधपुर
३१ श्री आसूमल एण्ड कं०, जोधपुर
३२ श्री पुखराजजी लोढा, जोधपुर
३३ श्रीमती सुगनीबाई W/o श्री मिश्रीलालजी सांड, जोधपुर
३४ श्री बच्छराजजी सुराणा, जोधपुर
३५ श्री हरकचन्दजी मेहता, जोधपुर
३६ श्री देवराजजी लाभचंदजी मेड़तिया, जोधपुर
३७ श्री कनकराजजी मदनराजजी गोलिया, जोधपुर
३८ श्री घेवरचन्दजी पारसमलजी टांटिया, जोधपुर
३९ श्री मांगीलालजी चोरड़िया, कुचेरा

४० श्री सरदारमलजी सुराणा, भिलाई
४१ श्री श्रीकचदजी हेमराजजी सोनी, दुग
४२ श्री सूरजकरणजी सुराणा, मद्रास
४३ श्री घीसूलालजी लालचदजी पारख, दुग
४४ श्री पुखराजजी बोहरा, (जन ट्रासपोट क) जोधपुर
४५ श्री चम्पालालजी सकलेचा, जालना
४६ श्री प्रेमराजजी मीठालालजी कामदार, बैंगलोर
४७ श्री भवरलालजी मूथा एण्ड स स, जयपुर
४८ श्री लालचदजी मोतीलालजी गादिया, बैंगलोर
४९ श्री भवरलालजी नवरत्नमलजी साखला, मैट्टूपालियम
५० श्री पुखराजजी छल्लाणी, करणगुल्ली
५१ श्री ग्रासकरणजी जसराजजी पारख, दुग
५२ श्री गणेशमलजी हेमराजजी सानी, भिलाई
५३ श्री ग्रमृतराजजी जसवन्तराजजी मेहता, मेडतासिटी
५४ श्री घेवरचदजी किशोरमलजी पारख, जोधपुर
५५ श्री मागीलालजी रेखचदजी पारख, जोधपुर
५६ श्री मुन्नीलालजी मूलचदजी गुलेच्छा, जोधपुर
५७ श्री रतनलालजी लखपतराजजी, जोधपुर
५८ श्री जीवराजजी पारसमलजी कोठारी, मेडता सिटी
५९ श्री भवरलालजी रिखबचदजी नाहटा, नागौर
६० श्री मागीलालजी प्रकाशच दजी रूणवाल, मैसूर
६१ श्री पुखराजजी बोहरा, पीपलिया कला
६२ श्री हरकचदजी जुगराजजी बाफना, बैंगलोर
६३ श्री च दनमलजी प्रेमचदजी मोदी, भिलाई
६४ श्री भींवराजजी बाघमार, कुचेरा
६५ श्री तिलोकचदजी प्रेमप्रकाशजी, अजमेर
६६ श्री विजयलालजी प्रेमचदजी गुलेच्छा, राजनादगांव
६७ श्री रावतमलजी छाजेड, भिलाई
६८ श्री भवरलालजी डूगरमलजी काकरिया, भिलाई
६९ श्री हीरालालजी हस्तीमलजी देशलहरा, भिलाई
७० श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावकसघ, दल्ली-राजहरा
७१ श्री चम्पालालजी बुद्धराजजी बाफणा, ब्यावर
७२ श्री गगारामजी इन्द्रचदजी बोहरा, कुचेरा
७३ श्री फतेहराजजी नेमीचदजी कर्णावट, कलकत्ता
७४ श्री बालचदजी थानच दजी भुरट, कलकत्ता
७५ श्री सम्पतराजजी कटारिया, जोधपुर
७६ श्री जवरीलालजी शातिलालजी सुराणा, बोलारम
७७ श्री कानमलजी कोठारी, दादिया
७८ श्री पन्नालालजी मोतीलालजी सुराणा, पाली
७९ श्री माणकचदजी रतनलालजी मुणात, टगला
८० श्री चिम्मनसिहजी मोहनसिहजी लोढा, ब्यावर
८१ श्री रिद्धकरणजी रावतमलजी भुरट, गोहाटी
८२ श्री पारसमलजी महावीरचदजी बाफना, गोठन
८३ श्री फकीरचदजी कमलचदजी श्रीश्रीमाल, कुचेरा
८४ श्री मांगीलालजी मदनलालजी चोरडिया, भैरूदा
८५ श्री सोहनलालजी लूणकरणजी सुराणा, कुचेरा
८६ श्री घीसूलालजी, पारसमलजी, जवरीलालजी कोठारी, गोठन
८७ श्री सरदारमलजी एण्ड कम्पनी, जोधपुर
८८ श्री चम्पालालजी हीरालालजी बागरेचा, जोधपुर
८९ श्री पुखराजजी कटारिया, जोधपुर
९० श्री इ द्रच दजी मुकन्दच दजी, इन्दौर
९१ श्री भवरलालजी बाफणा, इन्दौर
९२ श्री जेठमलजी मोदी, इ दौर
९३ श्री बालच दजी ग्रमरच दजी मोदी, ब्यावर
९४ श्री कु दनमलजी पारसमलजी भडारी, बगलौर
९५ श्रीमती कमलाकवर ललवाणी धर्मपत्नी श्री स्व पारसमलजी ललवाणी, गोठन
९६ श्री ग्रखेचदजी लूणकरणजी भण्डारी, कलकत्ता
९७ श्री सुगनच दजी सचेती राजनादगांव

९८ श्री प्रकाशचंदजी जैन, भरतपुर
९९ श्री कुशालचंदजी रिखबचन्दजी सुराणा, बोलारम
१०० श्री लक्ष्मीचंदजी अशोककुमारजी श्रीश्रीमाल, कुचेरा
१०१ श्री गुदड़मलजी चम्पालालजी, गोठन
१०२ श्री तेजराजजी कोठारी, मांगलियावास
१०३ सम्पतराजजी चोरडिया, मद्रास
१०४ श्री अमरचन्दजी छाजेड़, पादु बड़ी
१०५ श्री जुगराजजी धनराजजी बरमेचा, मद्रास
१०६ श्री पुखराजजी नाहरमलजी ललवाणी, मद्रास
१०७ श्रीमती कान्तादेवी व निर्मलादेवी, मद्रास
१०८ श्री दुलेराजजी भवरलालजी कोठारी, कुशालपुरा
१०९ श्री भवरलालजी मांगीलालजी बेताला, डेह
११० श्री जीवराजजी भवरलालजी चोरडिया, भैरूंदा
१११ श्री मांगीलालजी शांतिलालजी रूणवाल, हरसोलाव
११२ श्री चांदमलजी धनराजजी मोदी, अजमेर
११३ श्री रामप्रसन्न ज्ञानप्रसार केन्द्र, चन्द्रपुर
११४ श्री भूरमलजी दुलीचंदजी बोकड़िया, मेड़तासिटी
११५ श्री मोहनलालजी धारीवाल, पाली
११६ श्रीमती रामकुंवरबाई धर्मपत्नी श्री चांदमलजी लोढा, बम्बई
११७ श्री मांगीलालजी उत्तमचंदजी बाफणा, बेंगलोर
११८ श्री सांचालालजी बाफणा, औरंगाबाद
११९ श्री भीकमचन्दजी माणकचन्दजी खाबिया, (कुडालोर), मद्रास
१२० श्रीमती अनोपकुंवर धर्मपत्नी श्री चम्पालालजी संघवी, कुचेरा
१२१ श्री सोहनलालजी सोजतिया, थांवला
१२२ श्री चम्पालालजी भण्डारी, कलकत्ता
१२३ श्री भीकमचन्दजी गणेशमलजी चौधरी, धूलिया
१२४ श्री पुखराजजी किशनलालजी तातेड़, सिकन्दराबाद
१२५ श्री मिश्रीलालजी सज्जनलालजी कटारिया, सिकन्दराबाद
१२६ श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बगड़ीनगर
१२७ श्री पुखराजजी पारसमलजी ललवाणी, बिलाड़ा
१२८ श्री टी. पारसमलजी चोरडिया, मद्रास
१२९ श्री मोतीलालजी आसूलालजी बोहरा एण्ड क., बैंगलोर
१३० श्री सम्पतराजजी सुराणा, मनमाड ❑❑